दिगम्बर जैन व्रतोद्यापन संग्रह

हस्तलिखित ग्रन्थोंसे संशोधक और सम्पादक :

फुलचन्द सूरचन्द दोशी,
ईड़र (साबरकांठा)

प्रकाशक :—

दिगम्बर जैन पुस्तकालय
गांधीचौक—सूरत—३

मुद्रक :—

शैलेश डाह्याभाई कापड़िया,
"जैनविजय" प्रि० प्रेस, गांधीचौक-सूरत-३.

मूल्य - रु० [illegible]-०० 30)

दि. जैनव्रतोद्यापनसंग्रह

हस्तलिखित ग्रन्थोंसे संशोधक और सम्पादक :—

फूलचन्द सूरचन्द दोशी,

ईडर (साबरकांठा)

प्रकाशक :—

दिगम्बर जैन पुस्तकालय, गांधीचौक–सूरत ।

मुद्रक :—

शैलेश डाह्याभाई कापड़िया,

"जैनविजय" प्रिं० प्रेस, गांधीचौक-सूरत – ३.

वीर सं० २५१२] ❀ [सन १९८६

तृतीय आवृत्ति] ❀

मूल्य – रु०

उद्यापन करनेकी विधि

सबसे पहिले उद्यापन करनेवालेको स्नान आदिसे शुद्ध होकर जैन मन्दिरमें जाना चाहिए और जिस व्रतका उद्यापन करना हो उसका संकल्प करे या वर्तमानतामें गुरुकी आज्ञा लेनी चाहिए। बाद पूजनोपयोगी तथा मण्डलोपयोगी (साथियाके उपयोगी) हरएक द्रव्य सामग्री शुद्ध लाना चाहिए। फिर शुभ मुहूर्तमें जिस व्रतका उद्यापन करना हो उसका मण्डल (साथिया) नीचे लिखे माफिक कोष्टक (कोठे) का निकाले।

उद्यापनके कोष्टक (कोठों) की संख्या

१-रविवार व्रतोद्यापन ९×९ कोष्टक ८१

२-षोडशकारण व्रतोद्यापन (दर्शनविशुद्धि ९८, विनयसंपन्नता ४, शीलभावना १०, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४२, संवेग १४, शक्तित्याग ४, शक्तिस्तप २४, साधु समाधि ४, वैयावृत्य ४, अर्हद्भक्ति १३, आचार्य भक्ति १२, बहुश्रुत भक्ति २, प्रवचन ५, आवश्यक-परिहाणि ६, मार्ग प्रभावना १०, प्रवचन वात्सल्य ४)

= कुल कोष्टक २५६

३-रत्नत्रय व्रतोद्यापन (सम्यक्‌दर्शन १२, सम्यक्‌ज्ञान ४८, सम्यक्‌चारित्र ३३) = कोष्टक ९३

४-अनंत व्रतोद्यापन	१४×१४	=	,,	१९६
५-अष्टाह्निका व्रतोद्यापन	१३×४	=	,,	५२
६-नवग्रह* व्रतोद्यापन		=	,,	९
		=	,,	१४१+१

---

* नवग्रह उद्यापनमें मंडलके नव कोष्टक निकाले वह पूजनमें पृष्ठ २९० पर छपे माफिक रंगके और उसमें छपी हुई दिशामें निकाले।

७-शांतिचक्रोद्यापन+, (पंचपरमेष्ठि ५, मंगल ४, लोकोत्तम ४, शरणभूत ४, जैनधर्म १, जयादि अष्टदेवी ८, विद्यादेवता १६, शासनदेवता २४, भवनवासी १०, व्यंतर ८, ज्योतिष्केन्द्र २, कल्पवासी १२ दिग्पाल १०, यक्षदेवता २४, नवग्रह ९)=१४१ और ईशान दिशामें मंडलके बहार अनावृतका १ कुल १४२

उपर छपे माफिक व्रतोंके उद्यापनका मंडल वर्तु लाकार या चतुष्कोण, निकाले। मंडलमें पांच प्रकारके रंग पूरना चाहिए। ये पांच प्रकारके धान्य (जैसे उड़द, मूंग, चनाको दाल सफेद चावल, पोले चावल और कुंकुमसे सुशोभित बनावे।

कोष्टक निकालनेवालेको याद रखना चाहिए कि मध्यम कमल कर्णिकामें सबसे पहिले ॐकार निकाले। फिर उसके आगे पुष्पोंसे (पोले चावलोंसे) धाराकार निकालकर उसके आगे अष्टकोष्टक वर्तु लाकार निकाले। जो ज्ञानावरणादि अष्टकर्म रहित सिद्धपरमेष्ठिके गिने जाते हैं। या उसको अष्टदल कमल भी कहते हैं। वह कोष्टक उद्यापनके कोष्ठककी गिनतीमें नहीं गिने जाते हैं। मंडपको चारों तरफसे ध्वजाओंकी पंक्ति-ओंसे सुशोभित करे और तोरण चांदोवा, चन्दनमाला (आशोपालवके पत्तोंके तोरण) और केलेके स्तम्भोंसे सुशोभित बनावें मंडलके बीचमें सिंहासन रक्खे, जिसमें अभिषेकके बाद भगवानकी प्रतिमा और यंत्र बिराजमान करे।

+ शांतिचक्र मंडलमें (नवग्रहके कौष्टक) मंडलके बाहर मंडलके वर्तु लको अडकर दशो दिशामें निकाले और अनावृतका कोष्टक मंडलको ईशान दिशामें बाहर निकालें।

उद्यापन करनेवालेको प्रथम स्नान कर शुद्ध वस्त्र (धोती-दुपट्टा) धारण करके पूजनोपयोगी द्रव्य सामग्री इकट्ठी करके पृष्ठ १ से ३ तक छपे हुये विधानसे अभिषेक और पूजनके लिए जल लाना चाहिए। बाद पृष्ठ "१५" में छपा हुआ "ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लौं ह्लः नमोऽर्हते भगवते०" इत्यादि मंत्रसे उस जलकी शुद्धि करना चाहिए। बाद पूजन सामग्री धोकर "ॐ ह्रीं अर्हं झौं झौं वं मं ह्वं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं मं असि आ उ सा पवित्र जलेन शुद्ध पात्रे निक्षिप्त पुष्पाणि पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।" इस मंत्रसे द्रव्यशुद्धि करना चाहिए।

बाद मंडपमें वेदी स्थापन कर पृष्ठ १२ से अभिषेक प्रारम्भ करे। इन्द्रस्थापन क्रियाके पीछे पुरा कर्म (वेदी प्रक्षालन, श्रीकार लेखन आदि क्रिया) करके भगवान और जिस व्रतका उद्यापन हो उसके यंत्रका स्थापन करना चाहिए। भगवानकी स्थापन क्रियाके समय पृष्ठ "५६" में दिया हुआ मंगलाष्टक पढ़ना चाहिए।

फिर नीरांजन और पाद्याचमन क्रिया करके पृष्ठ "१२" में छपा हुआ "ॐ ह्रीं अर्हं नमः परम ब्रह्मणे विनष्टाष्टकर्मणे अर्घ्यम्" इत्यादि पश्चात् पृष्ठ ४ से ११ तक छपा हुआ दश दिग्पाल पूजन करना चाहिए।

उसके बाद पृष्ठ "१९" में छपा हुआ क्षेत्रपाल पूजन करके चतुः कलश स्थापन और गन्धोदक कलश स्थापन करके अभिषेक विधिसे पंचामृताभिषेक क्रमसे करना चाहिए। अंतमें पृष्ठ "५८" में दिये हुए शांति मंत्रसे अभिषेकके समय दक्षिण तरफ स्थापित किया हुआ पूर्ण कलश भगवानके ऊपर ढालना चाहिए। (शांति मंत्र और अविच्छिन्न कलश जलधारा साथ२ होना चाहिए।)

अभिषेक पूर्ण होनेके बाद भगवानको प्रतिमाको और यन्त्रको मण्डलके बोचमें रक्खे हुए सिंहासनके उपर स्थापन करे। स्थापन विधिके बाद पृष्ठ "२९" में दिये हुये "ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु णमो अरहंताणंसे विघ्नौघा प्रलयंयांति" तक पढ़के पृष्ठ "३०" में दिया हुआ सकलीकरण, करन्यास और अंगन्यास क्रमसे करना चाहिए (सकलीकरणमें छपा हुआ "जलयन्त्र" को नागरवेलके पान ऊपर निकालकर सकलीकरण पूर्ण होनेके बाद उस यन्त्रको एक थालोमें रखकर साथमें एक कटोरीमें या खोपराकी कटोरीमें खड़ी सक्कर (मिश्री) या फल रखकर उस थालोको मण्डलके बीचमें सिंहासनके नोचे रक्खे। उसमें कुछ द्रव्य और पुष्प आदि डालना चाहिये।

पश्चात् सहस्रनाम पूर्ण पढ़के स्वस्ति विधान करके देव, शास्त्र, गुरुपूजा, सिद्धपूजा और कलिकुण्ड पूजा ये पंच पूजा करके उद्यापन प्रारम्भ करे।

उद्यापन पूर्ण होनेके बाद पुण्याहवाचन, आरती, शांति और विसर्जन अनुक्रमसे करना चाहिए। तथा शक्ति अनुसार उपकरण मन्दिरमें देना चाहिए और आहार औषधि, शास्त्र और अभयदान ये चार प्रकारके दान शक्ति अनुसार करना चाहिए। पश्चात् गुरुको आशोष लेकर घर जाना चाहिए।

सेवक—

फूलचन्द सूरचन्द दोशी-ईडर।

विषय सूची

नं०	नाम	पृष्ठ
१.	उद्यापन करनेकी विधि	१
२.	अभिषेककार्य जलशुद्धि विधान	१
३.	दश दिक्पाल पूजन	४
४.	श्रीमदाशाधरकृत महाभिषेक	१२
५.	स्वस्तिमङ्गल विधान	२९
६.	सकलीकरण	३०
७.	करन्यास, अंगन्यास	३८
८.	पुण्याहवाचन	४१
९.	मङ्गलाष्टक	५६
१०.	शान्तिमन्त्र	५८
११.	सहस्रनाम आदि स्वस्ति विधान	६०
१२.	रविवार व्रत उद्यापन	६४
१३.	षोडशकारण व्रत उद्यापन	८५
१४.	रत्नत्रय व्रत कथा	१४९
१५.	रत्नत्रय व्रत उद्यापन	१५१
१६.	अनन्त व्रत उद्यापन	१७६
१७.	अष्टाह्निका (नन्दीश्वर) व्रत उद्यापन	२५३
१८.	नवग्रह उद्यापन	२८९
१९.	शांतिचक्र उद्यापन	३३७

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

दि० जैन व्रतोद्यापनसंग्रहः

अथाभिषेकार्थ जलशुद्धिविधानम् ।

अभिषेक प्रारम्भ करनेके पहिले अभिषेक तथा पूजनके लिए जल आवश्यक है इसलिए सौभाग्यवती स्त्रियें अथवा कन्याएं अपने२ माथे पर नारियलसे ढके हुए कलश ले जावें और निम्नलिखित विधान पूर्वक जल लावें। नीचेके श्लोक प्रमाण जलाशय पर अर्घ चढ़ावे।

पद्मापादनतो महामृतभवानंदप्रदानानृणाम् ।
जैनो मार्ग इवावभासि विमलो योगीव शीतीभवन् ।
जैनेन्द्रस्नपनोचितोदकतया क्षीरोदवत्तत्सताम् ।
पूज्यं त्वां शुभशुद्धजीवननिधिं कासार संपूजये ॥१॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीमुख्यदेवीः कुलशैलमूर्धपद्मादिपद्माकरसद्मसक्ताः ।
पयः पटीराक्षतपुष्पहव्यप्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभृतिदेवताभ्यः इदं जलादि अर्घं निर्व० स्वाहा।

गंगादिदेवीरतिमंगलांगा गंगादिविख्यातनदीनिवासाः ।
पयः पटीराक्षत पुष्पहव्य प्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ॥३॥

ॐ ह्रीं गंगादि देवीभ्यः इदं जलादि अर्घं० ।

सीतानदीविद्धमहाह्रदस्थान् ह्रदेश्वरान्नागकुमारदेवान् ।
पयः पटीराक्षतपुष्पहव्यप्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयक्ष्ये ॥४॥

ॐ ह्रीं सीताविद्धमहाह्रददेवेभ्यः इदं जलादि अर्घं० ।

सीतोत्तरामध्यमहाह्रदस्थान् ह्रदेश्वरान्नागकुमारदेवान् ।
पयः पटीराक्षत० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं सीतोदाविद्ध महाह्रददेवेभ्यः इदं जलादि अर्घं० ।

क्षीरोदकालोदकतीर्थवर्ति श्रीमागधादीनमरानशेषान् ।
पयः पटीराक्षत० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं लवणोदकालोदमागधादि तीर्थ देवेभ्यः इदं जलादि० ।

सीतातदन्त्यद्वयतीर्थवर्ति श्रीमागधादीन्नमरानशेषान् ।
पयः पटीराक्षत० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सीतासीतोदामागधादि तीर्थ देवेभ्यः जलादि० ।

समुद्रनाथांल्लवणोदमुख्यसंख्याव्यतीतांबुधिभूतिभोक्तॄन् ।
पयः पटीराक्षत० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं संख्यातीत समुद्रदेवेभ्यः जलादि अर्घं० ।

लोकप्रसिद्धोत्तमतीर्थदेवान्नंदीश्वरद्वीपसरः स्थितादीन् ।
पयः पटीराक्षत० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं लोकाभिमततीर्थ देवेभ्यः इदं जलादि अर्घं० ।

गंगादयः श्रीप्रमुखाश्चदेव्यः श्रीमागधाद्याश्च समुद्रनाथाः ।
ह्रदेशिनोऽन्येऽपि जलाशयेशास्ते
धारयन्त्वस्य जिनोचितांभः ॥ १० ॥

ऊपरका "गंगादयः" आदि श्लोक मंत्र बोलकर जलाशयसे जल निकालना चाहिये । कलशों पर चंदन लगाकर नीचे लिखा मंत्र बोल कलशोंमें जल भरना चाहिये ।

ॐ ह्रीं श्री-ह्रीं-धृति-कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी-शांतिपुष्टयः श्री दिक्कुमार्यो जिनेन्द्रमहाभिषेककलशमुखेष्वेतेषु नित्यविशिष्टा भवत भवतेति स्वाहा ।

तीर्थेनानेन तीर्थान्तरदुरधिगमोदारदिव्यप्रभावः-
स्फूर्जत्तीर्थोत्तमस्य प्रथितजिनपतेः प्रेषितप्राभृताभान् ।
श्रीमुख्यख्यातदेवीनिवहकृतमुखाध्यासनोद्भुतशक्ति-
प्रागल्भ्यानुद्धरामो जयजयनिनदे शातकुंभीयकुंभान् ।११।

उपरका श्लोक बोल जलशुद्धि विधान पूर्णकर वे जल कलश सौभाग्यवती स्त्रियों अथवा कन्याओंके द्वारा मस्तकसे धारण कराकर लाना चाहिये ।

इति जलशुद्धिविधानम् ।

अथ दश दिक्पाल पूजा ।

दिक्पाल तथा क्षेत्रपालकी पूजाके लिए सामग्री अलग रखना चाहिये ।

विस्तीर्णे स्वर्णपात्रे सलिलमलयजैश्चारु पुष्पाक्षतान्नैः
पक्वान्नैः क्षीरसर्पिर्दधिफलनिकरैरर्घ्यमुद्धार्यवर्यं ।
यज्ञांगैर्दीपधूपैः परमजिनपतेः पादयोस्त्रिः परीत्य ।
प्रत्येकं प्रार्थयेऽहं निखिलदिगधिपान् यज्ञनिर्विघ्नसिध्ये ।१।

दिगीशाः शब्दये युष्मानायात सपरिच्छदाः
अत्रोपविशतैत यजे प्रत्येकमादरात् ॥ २ ॥

पूर्वस्यां दिशि ।

द्वात्रिंशद्वक्रदंतह्रदनळिननटन्नाकयोषिन्निकार्यं
कांत्या कैलाशशैलच्छविमलिनिकराक्रांतदानाग्रगंडं ।
आरुह्यैरावतं ही कुलिशधर इहैवागतः पूर्वकाष्ठा–
मव्याच्छच्या सहायो वरकनकरुचिर्वासबोऽर्हन्मखोर्वीम् ।१।

ॐ आं क्रां ह्रीं सुवर्णवर्ण प्रशस्त सर्वलक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधुचिन्ह सपरिवार हे इन्द्रदेव ! अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा । ॐ आं०–अत्र तिष्ठ२ ठः ठः स्वाहा । ॐ आं०–अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् स्वाहा ।

ॐ इन्द्राय स्वाहा । इन्द्रपरिजनाय स्वाहा । इन्द्रानुचराय इन्द्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा ।

वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे इन्द्रदेव ! स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं दीपं चरुं बलिं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा, तस्य शांतिर्भवेत् सदा ।
शांतिके पौष्टिके, चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा ॥ २॥

शांतिधारा । इन्द्राह्वानं ।

अग्निकोणे ।

शुम्भज्जांबूनदाभा मणिगणविलसच्छृङ्गमुर्णायुरूढः ।
प्राप्ताह्वानो जपाभः करविधृतलसच्छक्तिरग्नींद्र एषः ॥
भास्वज्ज्वालाकलापः पुरयमककुभोरंतरालं प्रयातो ।
भूयात् स्वाहाप्रियोऽस्मिन् जिनपतिसवने दीपधूपादिकाले ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्तवर्ण प्रशस्तसर्वलक्षणसम्पूर्ण स्वायुध वाहनवधूचिन्हसपरिवार हे अग्निदेव ! अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा ॐ आं क्रों० अत्र तिष्ठ२ ठः ठः स्वाहा । ॐ आं क्रों० अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् स्वाहा ।

ॐ अग्निन्द्राय स्वाहा । अग्निपरिजनाय स्वाहा । अग्निन्द्रा-नुचराय स्वाहा । अग्निन्द्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे अग्निन्द्रदेव ! स्वगुणपरिवार परिवृत

इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां२ स्वाहा । यस्यार्थं क्रियते पूजा० शांतिधारा ॥ २ ॥

दक्षिणस्यां दिशि

जीमूतश्यामलांगं कलुषितनयनं कासरं चाधि रूढः ।
छायाजायासहायः स्फुरदुरगमनोभूषणो माषवर्णः ॥
अस्यामाहूयमानो मखभुवि यमराट् कुन्तलोदंबुदालिः ।
सोऽयं दंडोद्धपाणिः प्रथयतुधरणीं दक्षिणाशावकाशां ।३।

ॐ आं क्रों ह्रीं कृष्णवर्ण प्रशस्त सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न सपरिवार हे यमदेव ! अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा । ॐ आं क्रों ह्रीं० अत्र तिष्ठ२ ठः ठः स्वाहा । ॐ आं क्रों० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

ॐ यमाय स्वाहा । यम परिजनाय स्वाहा । यमुनाचराय स्वाहा । यममहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे यमदेव ! इदमर्घ्यं मित्यादि० । यस्यार्थं क्रियते पूजा० इत्यादि । शांतिधारा ॥ ३ ॥

नैऋतकोणे ।

धर्मध्यानार्कभीत्यांतकवरुणदिशोरंतरेऽप्यौक्यदेशे ।
पुञ्जीभूतांधकारांजनगिरिसदृशं श्यामरक्षोऽधिरूढः ॥
नीलांगो यज्ञभूम्यामतिनिशित महामुद्गरव्याप्तमुष्टिः ।
सोऽस्यां पायादपायान्निजदिशि वसुधां यातुधानप्रधानः ॥४॥

ॐ आं क्रों ह्रीं श्यामवर्ण प्रशस्तसर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहन बधुचिह्न सपरिवार हे नैर्ऋतदेव ! अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा । ॐ आं० अत्र तिष्ठ२ ठः ठः स्वाहा । ॐ आं० अत्र सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

ॐ नैर्ऋताय स्वाहा । नैर्ऋत परिजनाय स्वाहा । नैर्ऋतानुचराय स्वाहा । नैर्ऋता महत्तराय स्वाहा । अग्नेये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे नैर्ऋतदेव ! स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यामित्यादि० यस्यार्थ० । शांतिधारा ।

पश्चिमायां दिशि ।

तालस्थूलायतोऽथ घृतकरकरकां भोजनीनागहारो ।
ग्रैवेयाकल्परम्यं करिमकरमारुह्य कान्तासमेतः ॥
आयत्तोह्यध्वरोवर्मिरुणमणिगणालंकृतोद्दामवेषः ।
प्रत्यक्काष्टां प्रवालद्युतिरवतु पतियादशां पाशपाणिः ॥५॥

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण प्रशस्तसर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहन-वधूचिन्ह सपरिवार हे वरुणदेव ! अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा ।

ॐ आं० अत्र तिष्ठ२ ठः ठः स्वाहा । ॐ आं० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

ॐ वरुणाय स्वाहा । वरुणपरिजिनाय स्वाहा वरुणानुचराय स्वाहा । वरुण महत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वा. । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः

स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे वरुणदेव ! स्वगुणपरिवार परिवृत्त इदमर्घ्यं पाद्यं जलमित्यादि । यस्यार्थं० । शांतिधारा ।

वायव्यकोणे ।

चञ्चच्चन्द्रावदात तुरगमरुजवं मुष्टिसम्मेयमध्य
मारूढो वायुवेगी प्रिययुवतियुतः पादयाप्तप्रशस्तः ॥
निष्टप्तस्वर्णवर्णोऽवतु वरुणधनाध्यक्षयोः श्रीगरिष्ठां ।
स्वां काष्ठां यागनिष्ठां परिमणितजगद्बन्धुरो गन्धवाहः ।६।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण प्रशस्तसर्व लक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनवधुचिह्न सपरिवार हे पवनदेव ! अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा । ॐ आं० अत्र तिष्ठ२ ठः ठः स्वाहा । अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ पवनाय स्वाहा । पवनपरिजनाय स्वाहा । पवनानुचराय स्वाहा । पवन महत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा ! ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे पवनदेव ! स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यंमित्यादि० । यस्यार्थं० शांतिधारा ॥

उत्तरस्यां दिशि ।

कुन्देंदुद्योतितांशद्युतिपटललसद्राजहंसायमानं ।
सौरभ्यामोदितांत भुवमणि विलसत्पुष्पकाख्यं विमानम् ।
अध्यासीनः कुलस्त्रीनिवहपरिवृतो व्यावृतोऽयां नुयत्र,
स्वामाशां पातु शश्वद्वितरितविभवस्तारकः कुक्कुबेरः ।७।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण प्रशस्तसर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे धनदेव ! अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा। ॐ आं० अत्र तिष्ठ२ ठः ठः स्वाहा। ॐ आं० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ धनदाय स्वाहा। धनदपरिजनाय स्वाहा। धनदानुचराय स्वाहा। धनदमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा। हे धनदेव ! स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यं मित्यादि०। यस्यार्थं। शांतिधारा।

ईशानकोणे।

भाङ्कारस्फारभेरी समदलनिनदं पांडुरांगं गवीन्द्रं
पार्वत्यामाधिरूढः शशिकरधवलः सर्वभूषाभिरामः।
श्रीकंठः कालकंठो विमलविधुकलालोलमौली कदर्पी
शूली व्याहूयतेऽसौ धनदसुरदिशोरन्तरोर्वीत्र नेतु ॥ ८ ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण प्रशस्त सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिह्न सपरिवार हे ईशानदेव ! अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा। ॐ आं० अत्र तिष्ठ२ ठः ठः स्वाहा। ॐ आं० अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ ईशानाय स्वाहा। ईशानपरिजनाय स्वाहा। ईशानानुचराय स्वाहा। ईशानमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। स्वधा स्वाहा। हे ईशानदेव ! स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यं मित्यादि० यस्यार्थं० शांतिधारा।

अधोभूमि दिशायां।

आशामातङ्गकुम्भस्थलकठिनमहा कच्छपं धूपधूम्रं
पद्मावत्या सहोढो जलधरपटलश्यामलं कोमलाङ्गं ॥
रक्तत्वक्षूमलक्ष्म्या हरिहरहरितोरंतराले मखोर्व्वी।
भास्वत्सस्वस्तिकांको मकुटतरमणिद्योतिताशः फणीशः ।९।

ॐ आं क्रों ह्रीं धवलवर्ण प्रशस्त सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुध-वाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे धरणींन्द्र! अत्रागच्छागच्छ संवौषट्, स्वाहा। ॐ आं० अत्र तिष्ठ२ ठः ठः स्वाहा। ॐ आं० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ धरणीन्द्राय स्वाहा। धरणीन्द्रपरिजनाय स्वाहा। धरणी-न्द्रानुचराय स्वाहा। धरणीन्द्रमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। स्वधा स्वाहा। हे धरणीन्द्रदेव! स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यं० यस्यार्थं० शांतिधारा।

उपरि दिशायां।

उद्यत्तिग्मांशुभिः सुस्फुरितनिजजटाच्छादितस्कंधगौरं।
बालेन्दुस्पर्द्धिदंष्ट्रांकुरकलितमहाभीष्मवक्त्रं मृगेन्द्रं ॥
रोहिण्यामाधिरूढं भगवदभिषवक्षीरगौरांगशुभिश्च।
चाये लक्ष्मांकितांगं निऋतवरुणयोरन्तरेकुन्तहस्तं ॥१०॥

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण प्रशस्तसर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुध-वाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे सोमदेव! अत्रागच्छागच्छ संवौ-

षट् स्वाहा । ॐ आं क्रों० अत्र तिष्ठ:२ ठ: ठः स्वाहा । ॐ आं क्रों ह्रीं० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

ॐ सोमाय स्वाहा । सोमपरिजनाय स्वाहा । सोमानुचराय स्वाहा । सोममहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भू: स्वाहा । भुव: स्वाहा । स्व: स्वाहा । ॐ भूर्भुव: स्व: स्वाहा । हे सोमदेव ! स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यं मित्यादि । यस्यार्थं० शांतिधारा ।

इति दशदिक्पाल पूजा ।

अभिषेक करनेके स्थानपर जहां प्रतिमाजी स्थापन करना हो वहीं दश दिशाओंमें दश दिक्पालोंकी स्थापना तथा उक्त रीतिसे पूजन करना चाहिये ।

श्री वीतरागाय नमः ।

श्रीमदाशाधरकृतः महाभिषेकः ।

ॐ जय जय नमः सिद्धेभ्यः ।

श्रीमन्मन्दरमस्तके शुचिजलैर्धौते सुदर्भाक्षते ।
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितास्तत्पादपुष्पस्रजः ॥
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे ।
मुद्राकङ्कणशेखरानपि तथा जन्माभिषेकोत्सवे ॥

इति इन्द्रस्थापनं ।

ॐकार बिंदुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥
मंगलं भगवानर्हन् मंगलं भगवाञ्जिनः ।
मंगलं प्रथामाचार्यो मंगलं वृषभेश्वरः ॥ २ ॥
मंगलं प्रथमं लोकेषूत्तमं शरणं जिनं ।
नत्वायमर्हतां पूजाक्रमः स्याद्विधिपूर्वकं ॥ ३ ॥
विज्ञानं विमलं यस्य भासते विश्वगोचरं ।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चितांघ्रये ॥ ४॥
श्रीमद्भिर्जिनराजजन्मसमये स्नानक्रमप्रक्रियां ।
मेरोर्मूर्ध्निपयः पयोनिधिपयः पूर्णैः सुवर्णात्मकैः ॥
कामं मामितश्रियं घटशतैः शक्रादयश्चक्रिरे ।
तामत्रार्यजनानुरागजननीं जातोत्सवे प्रस्तुवे ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्रीं भूः स्वाहा (प्रस्तावनाय पुष्पांजलिः) ।

श्रीमज्जिनेन्द्रकथिताय सुमङ्गलाय
लोकोत्तमाय शरणाय विनेजयन्तोः ।
धर्माय कायवचनादि त्रिशुद्धितोऽहं
स्वर्गापवर्गफलदाय नमस्करोमि ॥ ६॥

पुण्यवीजोर्जितक्षेत्रं स्नानक्षेत्रं जगद्गुरोः ।
शोधये शातकुम्भोरु कुंभ संभृतवारिभिः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं क्षीं भूः स्वाहा पवित्रतर जलेन भूमि शुद्धि करोमि (जलके छींटोंसे भूमि शोधन करना चाहिये) ।

दुरंतमोह सन्तान कांतारदहन क्षमं ।
दर्भैः प्रज्वालयाम्यग्नि ज्वालापल्लवितांबरं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं अग्नि प्रज्वालयामि स्वाहा (कर्पूर प्रज्वलन करके अग्नि प्रज्वलन करना चाहिये) ।

तुष्टषष्टि सहस्रास्याप्यहीनां मोदहेतवे ।
सिञ्चामि सुधया भूमिं भव्यभानोर्महामहे ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं क्षीं भूः षष्टि सहस्र संख्येभ्यो नागेभ्योऽमृतांजलिं प्रसिञ्चामि स्वाहा (जलके छींटे देना) ।

ब्रम्हेंद्रहव्यवाहानां धर्मनैऋत्युदन्वतां ।
मरुद्यक्षेन्द्रमौलीनां दिक्षु दर्भान् क्षिपाम्यहं ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा । ब्रह्मादि दश दिक्षु-दर्भाः । (दश दिशाओंमें दर्भ क्षेपण करना) ।

तोय गन्धाक्षतैः पुष्पैः सन्नाद्यैश्च यजामहे ।
यागभूमिं जिनेन्द्रस्य दीपधूपफलैरपि ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः । जलं । ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः। चन्दनं । ॐ ह्रीं अक्षताय नमः। अक्षतं । ॐ ह्रीं विमलाय नमः । पुष्पं । ॐ परमसिद्धाय नमः । नैवेद्यं । ॐ ज्ञानोद्योतनाय नमः । दीपं । ॐ श्रुतधूपाय नमः स्वाहा । धूपं । ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः स्वाहा । फलं । ॐ ह्रीं भूर्भूमिदेवता इदं जलादिकमर्चनं गृहोष्वां२ नमः स्वाहा । अर्घं।

यस्यार्थं क्रियते पूजा, तस्य शान्तिर्भवेत् सदा ।

शांतिकं पौष्टिक चैव, सर्व कार्येषू सिद्धिदा ॥ १२ ॥

शांतिधारा । पुष्पांजलिः । मदीय परिणाम समान विमलतम सलिलस्नान पवित्रीं भूत सर्वाङ्गयष्टिः । सर्वाङ्गीणार्द्रं हरिचन्दन सौगन्धि दिग्ध दिग्विवरो हंसांस धवलदुकूलांतरीयोत्तरीयः ।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णं सर्वोपद्रव हारिणो सर्वजन मनोरंजिनी परिधानोत्तरीय धारिणि हं हं झं झं सं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा । वस्त्रावरणं ।

अतिनिर्मलमुक्ताफलललितं यज्ञोपवीतमतिपूतं ।

रत्नत्रयमिति मत्वा करोमि कलुषापहरणभिरामं ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राय नमः स्वाहा । अनेन मंत्रेण यज्ञोपवीतं धारयेत् ।

स्नातानुलिप्त सर्वाङ्गो धृत धौतांम्बरः शुचिः ।

दधे यज्ञोपवीतादीन् मुद्रा कंकण शेखरान् ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय नमः स्वाहा । शेखरमंत्रः । तिलक मन्त्रः ।

धृत्वा शेखरपट्टहारपदकं ग्रैवेयकालम्बकं।
केयूरांगदमध्यबंधुरकटीसूत्रं च मुद्रान्वितं ॥
चांचत्कुंडलकर्णपूरममलं पाणिद्वये कंकणं।
मञ्जीरं कटकं पदे जिनपतेः श्रीगंधमुद्रांकितं ॥ १५ ॥

षोडशाभरण

श्वेतसूत्रावृतान् पूर्णकुम्भान् सदकभूषितान् ॥
संस्थाप्य कोणकोष्टेषु पुष्पाणि प्रक्षिपाम्यहं ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशं स्थापयामि स्वाहा।

इति चतुःकलश स्थापनं।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म-महापद्म तिगिंछकेशरीपुण्डरीकमहापुण्डरीकगंगासिंधुरोहिद्रोहि-तास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णकूलारूप्यकू-लारक्तारक्तोदाक्षीरांभोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालितपरिपूरि-तनवरत्नगंधपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं असि आ उ सा नमः स्वाहा। इतिकलशजलशुद्धिः। पुष्प अक्षत चन्दन ले ऊपर मन्त्र बोल कर चारो कलशोंमें क्षेपण करना।

अभ्यर्च्यां कलशांस्तोय प्रवाहैश्चन्दनैरहं।
अक्षतैः कुसुमैरन्नैर्दीपधूपफलैरपि ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा। कलशार्चनं। अर्घं।

पाण्डुकाख्यशिलां मत्वा पीठ मेतन्महीतले।
स्थापयामि जिनेन्द्रस्य मज्जनाय महत्तरं ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठः ठः श्रीपीठ स्थापनं करोमि स्वाहा ।
श्रीपीठ स्थापनं भगवान स्थापन करनेकी जगह पुष्प क्षेपण करना ।

पादपीठकृतस्वर्गपादमूलजिनेशिनः ।
शैलेन्द्रस्नानपीठस्य पीठं प्रक्षालयाम्यहं ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर-
जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि ।

क्षिपामि हरितानदर्भान् पीठे पूतमनोहरान् ।
विधूताशेषसंतापान् दीप्तकांचननिर्मिते ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमःस्वाहा पीठे दर्भान् क्षिपेत् (दर्भक्षेपना)

प्रक्षाल्य पीठिका प्रार्चे तोयैं गंधैः सु तंदुलैः ।
प्रसूनैश्चरुभिर्दीपैधूपैर्नानाफलैरपि ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय नमः स्वाहा । पीठार्चनं । अर्घं ।

श्रीवर्णं विदधे शुभ्रैः सदकैः शुचिभिः फलैः ।
देवदेवस्य पीठेऽस्मिन् सर्वलक्षणसंयुतैः ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीकार लेखनं करोमि । श्रीकार लेखनं ।

जलगंधाक्षतकुसुमैश्चरुप्रदीपधूपफलनिवहैः ।
जितकर्मरिपुं जितपतिमर्चामि प्रबलया भक्त्या ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीयंत्रार्चनं करोमि स्वाहा । यंत्रार्चनं । (जहां प्रतिमा अभिषेकार्थ स्थापित करनी हो उस जगह अर्घ चढाना ।

जिनराज प्रतिबिम्बं सकलजगद्भव्यपुण्यपुंजावलम्बं ।
भक्त्या स्पृशामि परया निभूषमखिललोकभूषणममलं ।२४।

ॐ ह्रीं धात्रे वषट्प्रतिमास्पर्शनंकरोमि स्वाहा। उपरका मंत्र बोल प्रतिमा स्पर्श करना और अभिषेकके लिए प्रतिमाजी लेना।

द्वीपे नंदीश्वराख्ये स्वयममृतभुजोऽकृत्रिमांस्नापयेयु-।
र्भावे भावार्हतो वा भवभयभिदया भाक्तिकाश्चैत्यगेहात्॥
आनीयास्मिन् स्थवीयस्यतिविमलतमे कृत्रिमां स्नानपीठे।
सद्भावैः स्थापयेऽर्हत्प्रतिकृतिमधुना यक्षयक्षीसमेतां॥२५॥
प्रणमदखिलामरेश्वरमणिमुकुटतटांशुखचितचरणाब्जं।
श्रीकामं श्रीनाथं श्रीवर्णं स्थापयामि जिनं॥ २६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्व शांतिं कुर्वंति श्रीवर्ण प्रतिमा स्थापनं करोमि स्वाहा। श्रीवर्णे प्रतिमा स्थापनं।

श्रीपादपद्म युगलं सलिलैर्जिनस्य।
प्रक्षाल्य तीर्थ जलपूततमोत्तमांग॥
आव्हानमंबुकुसुमाक्षतचन्दनाद्यैः
संस्थापनं च विदधेऽत्र च सन्निधानं॥२७॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन श्रीपाद प्रक्षालनं करोमि स्वाहा। श्रीपाद प्रक्षालनं।

करोमि परमां मुद्रां पञ्चानां परमेष्ठिनां।
श्रीनिधेर्भव्यनाथस्य सन्निधौ त्रिजगद्गुरोः॥२८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं अर्हं असि आ उ सा नमः पंचगुरुमुद्रावतरणं करोमि स्वाहा। पंचगुरु मुद्रावतरण।

ॐ उसहाय दिव्यदेहाय सज्जोजादाय महापण्णाय अणंतचउट्ठयाय परमसुहाय पइट्ठियाय णिम्मलाय सयंभुवे अजरामरपदपत्ताय चउमुहाय परमेट्ठिणे अरहंते तिलोयणाहाय

तिलोयपूज्जाय अट्ठदिव्वदेवाय देवपरिपूज्जाय परमपदाय ममत्तहे सण्णिधाय स्वाहा।

अनंतज्ञानदृग्वीर्य सुखरूप जगत्पतेः ।
पाद्य समर्चयाम्यद्भिर्निर्मलैः पाद पंकजे ॥२९॥

ॐ ह्रीं अर्हंत इदं पाद्यं गुण्हीध्वं २ नर्मोऽर्हद्भ्यः स्वाहा। जलधारा। (भगवान ऊपर)।

कनत्कनकभृङ्गारनालाद्गलित वारिभिः ।
जगत्त्रितय नाथस्य करोम्योचमनक्रियां ॥३०॥

ॐ ह्रीं स्वीं क्ष्वीं यं मं हं सं तं पं द्रां द्रों हं स्वाहा।

॥ इति पाद्य आचमन क्रिया ॥

नीराजनबिधिद्रव्यैर्वर्धमानैः फलैरपि ।
विदधामि जिनेंद्रावतारं पापोपशांतये ॥३१॥

ॐ ह्रीं समस्तनीराजनद्रव्यैर्नीराजनं करोमि स्वाहा। दुरितमस्माकमपनयतु भगवान् स्वाहा। नीराजनावतरणं। (कर्पूर जलाकर आरती करना)।

करोमिभक्त्या कुसुमाक्षताद्यैः सुसंभृतैः पाणिपवित्रपात्रे ।
जिनेश्वराणामिह पादपीठे प्रकाशमाह्वाननपूर्वमादौ ॥३२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अत्र एहि २ संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्वाहा। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं परमेष्टिने नमः जलं। ॐ ह्रीं परमात्मकेवलिभ्योनमः गन्धं। ॐ ह्रीं अनादिनिधनेभ्यो नमः अक्षतान्। ॐ ह्रीं सर्व नृसुरासुरपूजितेभ्यो नमः पुष्पं। ॐ ह्रीं अनन्तानन्त सुखसंतृप्तेभ्यो नमः चरुं। ॐ ह्रीं अनन्तानन्त दर्शनेभ्यो नमः दीपं।

ॐ ह्रीं अनन्तानन्त वीर्येभ्यो नमः धूपं। ॐ ह्रीं अनन्तानन्त सौख्येभ्यो नमः फलं।

सामोदैः स्वच्छतोयैरुपहिततुहिनैश्चन्दनै स्वर्गलक्ष्मी–
लीलार्घ्यैरक्षतोघैर्मिलदलिकुसुमैरुद्गमैर्नित्यहृद्यैः ॥
नैवेद्यैर्नव्यजांबूनद मददमकैर्दीपकैः काम्यधूम–
स्तूपैर्धूपैर्मनोज्ञैर्गृहसुरभिफलैः पूजये त्वाऽर्हदीशं ॥२३॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परम ब्रह्मणे विनष्टाष्टकर्मणे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

अथ क्षेत्रपाल पूजा।

अस्मिन् जैनमहामहोत्सवविधाविंद्रादिक्पालक
स्थित्यर्थंपरितो दिशास्वभिमुखंनिक्षिप्यदर्भासनं।
आरोप्यार्घ्यमनर्घ्यमंत्र यजनैर्विघ्नौघविच्छित्तये
शक्राद्यैरभिपूज्यते तरुभुवि श्रीक्षेत्रपालाधिपः ॥१॥

ॐ ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्णं सर्वलक्षणसपूर्ण स्वायुधवाहनाचिह्नसपरिवार हे क्षेत्रपाल अत्रागच्छागच्छ संवौषटस्वाहा। ॐ ह्रीं० अत्रतिष्ठतिष्ठ ठः ठः स्वाहा। ॐ ह्रीं० अत्रमम संन्निहितो भव भव वषट स्वाहा।

सन्मंगलार्घ्यैर्वरभाजनस्थैः संपूर्णतोयादिसमन्वितैश्च।
रक्षन्तु चैत्पालयभूमिमार्गं श्रीक्षेत्रपालं परिपूजयामि ॥२॥

ॐ ह्रीं क्रों क्षेत्रपालाय अर्घ्यं समर्पयामि। शांतिधारा ॥

अथ अर्हद्गद्यं।

निहतघनघातिदोषः, संप्राप्तातिशयपंचकल्याणः।
समवसृतिसभानाथो, जिनेश्वरोददातु मे बोधं ॥

घातिघनपटल विघटनबात बिंबाय जातिजरारोगादि-दोषगिरिशंबाय कल्याणपंचकांचितवीतरागाय शल्यत्रया-तीतनित्यसुख बोधाय प्रातिहार्याष्टकालंकृतजिनेंद्राय भूतहित-समवसृतिराजितजिनेंद्राय समवसरणादिबहिरंगविभवेशाय । विमलगुणमणि गणविभूतिपरमेशाय द्रव्यगुणपर्यययुक्तचिद्-रूपाय भव्यजनवंदितानंदचिद्रूपाय वरगणधरप्रभृतिमुनि-निवहनाथाय निरुपमानंतबलकलितगुणयूथाय नवनरामर-सरसिजवहत्कमलसूर्याय नवलब्धिलब्धशुद्धात्मसत्कार्याय त्रिषष्टिकर्ममलविलयनसमर्थाय दोषाष्टदशदूरपरमचित्स्वार्थाय दिव्यध्वनिप्रगटितात्मस्वरूपाय सुव्यक्तचैतन्यनित्यप्रभावाय स्याद्वादविद्याविलासिनीनंदाय विद्वज्जनानंदकदनीकंदाय निर्मलनिजानंदभावार्थसौख्याय भर्माभतीर्थकरपुण्यपुंजा-ख्याय चंद्रार्ककोटिसन्निभदिव्यदेहाय इन्द्रशतनमितवर-गुणगणसमूहाय लोकत्रयाशेषवस्तुविज्ञाताय नाकनायक-नमितपदकंजाताप परमपावनरूप देवाधिदेवाय परमकारु-ण्यरससंतृप्तजीवाय वृन्दारकवृन्दवंदनसमक्षाय वन्दनामग-लोत्तम शरणभूताय जातात्मनेनमः पूतात्मनेनमः । शुद्धा-त्मनेनमः ।

अथ बिरुदावलिः ।

श्रेयःपद्मबिकासवासरमणिः स्याद्वादरक्षामणिः ।
संसारोरगदर्पगारुडमणिर्भव्यौघ चिंतामणिः ॥
अश्रांताक्षय शांतयुक्तिरमणिःसामंतमुक्तामणिः ।
श्रीमान् देवशिरोमणिर्विजयते श्रीवीतरागः प्रभुः ॥१॥

आहारभयभेषज्यशास्त्रदानदत्तवधानानां खण्डस्फुटित-जीर्णजिनचैत्यचैत्यालयोद्धारणैकधीराणां यात्राप्रतिष्ठादि

सप्तक्षेत्रधनवितरणैकशीलानां तर्कव्याकरणच्छंदोऽलंकारसाहित्य-संगीतकाव्यनाटकाभिधान शास्त्रसरोजरसास्वादनमदोत्करमधुकर-समाभरणानां निजकुल कमलविकाशनैक मार्तंडावताराणां श्रीकरवीरक्षेत्र श्रीवृषभदेवपदकमलाराधकानां श्री जैनसंघ-पुण्यार्थं मंगलार्थं तुष्टिपुष्टयारोग्यार्थं भव्यजनक्रियमाणे जिनेश्व-राभिषेके सर्वेजनाः सावधाना भवंतु। पूर्वाचार्येभ्यो नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ॥

अथ कलशोद्धारणम्।

सूर्यगीतस्तुति ध्वानव्रातैः सब्दलिरोदसी।
मया जिनाभिषेकाय पूर्ण कुम्भोऽयमुद्धृतः ॥ १ ॥

ॐ ह्रों स्वस्तये कलशोद्धारणम्। पूर्ण कलश भगवान् के दक्षिण तरफ स्थापन करना। उसमें पुष्प अक्षत चन्दन ये द्रव्य (ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमः ते भगवते श्रीमते पद्म महा.) यह मंत्र बोलकर क्षेपण करना कलश ऊपर श्रीफल रखना चाहिये।

अथ जलाभिषेकः।

मतैरिव जिनेन्द्रस्य वारिभिस्तापहारिभः।
निर्मल स्नापयामीशं विशुद्धं मद्विशुद्धये ॥ १ ॥

श्रीमद्भिः सुरसैर्निसर्गविमलैः पुण्याशयाभ्याहृतैः
शीतैश्चारुघटाश्रितैरवितथैः सन्तापविच्छेदकैः।
तृष्णोद्रेकहरैरजः प्रशमनैः प्राणोपमैः प्राणिनां
तोयैर्जैनवचोमृतातिशायिभः संस्नापयामो जिनं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं हं हं सं सं तं तं

पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रावय द्रावय नमः तै भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

इति जलस्नपनं ।

शीतैर्जलैर्मलयजैर्बहुलैरखंडैः
शाल्यक्षतैः सुखकरैः कुसुमैर्हविर्भिः ॥
दीपप्रदीपपटलैः रुचिरैर्विचित्रैः
धूपैः फलैरपि यजे जिनमर्चयामि ॥

अर्घ ।

अथ नालिकेरादिरसाभिषेकः ।

सुस्निग्धैर्नवनालिकेरफलजै राम्रादि जातैस्तथा ।
पुण्ड्रेक्ष्वादिसमुद्भवैश्च गुरुभिर्पापापहैरञ्जसा ॥
पीयूषद्रवसन्निभैर्वररसैः संज्ञानसम्प्राप्तये ।
सुस्वादैरमलैरलं जिनविभुं भक्त्याऽनघं स्नापये ॥१॥

ॐ ह्रीं नालिकेराम्रकदलीद्राक्षादिरस स्नपनं ।

नालिकेरजलैः स्वच्छैः शीतैः पूतैर्मनोहरैः ।
स्नानक्रियां कृतार्थस्य विदधे विश्वदर्शिनः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं नालिकेररसेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा । नालिकेर-स्नपनं नारोयेल केला द्राक्ष आदिसे अभिषेक करना ।

वनसुनन्दसदक्षत पुष्पकैर्मनसि जातसुहव्यप्रदीपकैः ।
अनुपमागरुधूपसुसत्फलैर्जिनपतेः पदपद्मयुगं यजे ॥ ३ ॥

अथ आम्ररसाभिषेकः।

सुपक्वैः कनकच्छायैः सामोदैर्मोदकादिभिः।
सहकाररसैः स्नानं कुर्मः शर्मैकसद्मनः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं पवित्रतर चूतरसेन जिनमभिषेचयामि। आम्ररस स्नपनं।

उदक चन्दनतंदुल पुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुलैर्जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥

अर्घं ॥

अथ शर्कराभिषेकः।

मुक्त्यंगनानामविकीर्यमाणैरिष्टार्थकपूररजोविलासैः।
माधुर्यधुर्यैर्वरशर्करौघैर्भक्त्या जिनस्य स्नपनं करोमि ॥१॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरशर्करौघेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ॥ शर्करास्नपनं ॥

जलेन गंधेन सदक्षतैश्च पुष्पेण शाल्यन्नचरुष्करेण।
दीपेन धूपेन फलेन भक्त्या सुरासुरार्च्यं जिनमर्चयामि ॥२॥

अर्घं ॥ २ ॥

अथ इक्षुरसाभिषेकः।

देवानीकैरनेकैः स्तुतिशतमुखरैर्वीक्षिता याऽतिहृष्टैः।
शक्रेणोच्चैः प्रयुक्ता जिनचरणयुगे चारुचामीकराभा ॥
धारांभोजक्षितीक्षुप्रचुरवररसश्यामला वो विभूत्यै।
भूयात् कल्याणकाले सकलकलिमलक्षालनेऽतीवदक्षा ॥१॥

प्राणिनां प्रीणनं कर्तुं दक्षैरिक्षुरसैर्मुदा ।
सौवर्णकलशैः पूर्णैः स्नापयेऽहं निरंजनं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरेक्षुरसेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।
॥ इक्षुरसस्नपनम् ॥

शीतोदकैर्मंजुलगंधलेपैः सत्तंडुलैः पुष्पवरैश्च हव्यैः ।
दीपैश्च धूपैरुचिरैः फलौघै रंचामि भक्त्या जिननाथमेनं ॥

अर्घ ॥ ३ ॥

अथ घृताभिषेकः ।

दंडीभूततडिद्गुणप्रगुणया हेमाद्रिवर्त्स्निग्धया ।
चञ्चच्चम्पकमालिकारुचिरया गोरोचनापिंगया ॥
हेमाद्रिस्थलसूक्ष्मरेणुविलसद्धातूलिकालीलया ।
द्राघीयोघृतधारया जिनपतेः स्नानं करोम्यादरात् ।१।
कनत्कनकसंजातपालिकारुचिरत्विषा ।
प्राज्येनाज्येन निर्वाणराज्यार्थी स्नापयाम्यहं ॥२॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरघृतेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा । घृतस्नपनं ।

अंचामि सलिलमलयजतंडुलपुष्पान्नदीपधूप फलनिवहैः ।
नमदमरमौलिमालालालितपदकमलयुगलमर्हंतं ॥३॥

अर्घ० ।

अथ क्षीराभिषेकः ।

माला तीर्थकृतः स्वयंवरविधौ क्षिप्ताऽपवर्गश्रिया ।
तस्येयं सुभगस्य हारलतिका प्रेम्णा तया प्रेषिता ॥

वर्त्मन्यस्य समीक्षितेति विनतदृग्वीथि शंकाकृता ।
कुर्मः शर्म समृद्धये भगवतः स्नानं पयोधारया ॥२॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरक्षीरेण जिनमभिषेचयामि स्वाहा । क्षीरस्नपनं ।

सलिलघनसारसदकप्रसवहविर्दीपधूपफलनिवहैः ।
नमदमरमौलिमालालालितपदकमलयुगलमर्हंतं ॥३॥

अर्घं० ।

अथ दध्यभिषेकः ।

शुक्लध्यानमिदं समृद्धिमथवा तस्यैव भर्तुर्यशो
राशीभूतमितं स्वभावविशदं वाग्देवतायाः स्मितं ।
आहो श्वेतसुपुष्पवृष्टिरियमित्याकारमातन्वता
दध्नैनं हिमखंडपांडुररुचा संस्नापयामो जिनं ॥१॥
लोकत्रयपतेः कीर्तिमूर्तिसाम्यादिव स्वयं ।
संलब्धस्तब्धभावेन दध्ना मज्जनमारभे ॥२॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरदध्ना जिनमभिषेचयामि स्वाहा । दधिस्नपनम् ।

सलिलमलयजसदक कुसुमसान्नायप्रदीपधूपफलैः ।
तवक शांतिधाराद्यन्त ? मंगलद्रव्यैराराधयामि ॥३॥

अर्घं० ।

अथ कल्कचूर्णोद्वर्तनम् ।

पिष्टैश्च कल्कचूर्णैश्च गंधद्रव्यसमुद्भवैः ।
जिनांगं संगताज्याद्यैः स्नेहपूतं करोम्यहं ॥१॥

ॐ ह्रीं पवित्रतर कल्कचूर्णेन जिनांगोद्वर्तनं करोमि स्वाहा। सुगन्ध कल्कचूर्णोद्वर्तनम् ।

सुगन्धित द्रव्योंसे भगवानकी प्रतिमाजीका लेपन करना ।

अथ लाजादिचूर्णोद्वर्तनम् ।

सुगन्धित (खस आदि) से लेपन करना ।

सकलकलमलाजैर्मल्लिकाफुल्लजातै—
रिव सितसमवर्णैर्लाजचूर्णप्रपूर्णैः ।
बहुलपरिमलौघैर्हारिहारिद्रचूर्णैः ।
जिनपतिमहमुच्चैः संप्रसिंचे रजोभिः ॥१॥

ॐ ह्रीं पवित्रलाजादिचूर्णोद्वर्तनम् ।

अथ नीराजनावतरणम् ।

वर्णानां प्रमुखैद्र व्यैर्जिनेन्द्रमवतारये ।
संसारसागरोत्तारं पूतं पूतगुणालयं ॥१॥

ॐ ह्रीं समस्त नीराजनद्रव्यैर्दु रितमस्माकमपनयतु भगवान् स्वाहा । नीराजनावतरणं । कपूर अगरादिसे भगवानकी आरती करना ।

अथ कषायोदकस्नपनम् ।

कंकोलैर्ग्रन्थिपर्णागरुतुहिनजटाजातिपत्रैर्लवंगैः
श्रीखंडैलादिचूर्णैः प्रतनुभिरवधूलींदुधूलीविमिश्रैः ॥
आलिप्तोद्वर्तशुद्धैः समलयजरसैः कालमैः पिष्टपिंडैः
प्लक्षादित्वक्कषायै जिनतनुमभितः स्नेहमाक्षालयामि ॥१॥

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधिप्रवाहैः
सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्वलाभिः ।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेवं
कालेयकुंमकुरसोत्कटचारुपूरैः ॥ २ ॥

क्षीरभूरुहसंजातत्वक्कषायजलैरहं ।
मज्जातमविच्छित्यै मज्जनं विदधे विभोः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पवित्रतर कषायादकेन जिनमभिषेचयानि स्वाहा । इति सर्वोषधिरस स्नपनं ।

अथ चतुष्कोणकुम्भोदकस्नपनं ।

हृद्योद्वर्तनकल्कचूर्णनिवहैः स्नेहापनोदं तनोः
वर्णाढ्यैर्विविधैः फलैश्च सलिलैः कृत्वाऽवतारक्रियां ।
संपूर्णैः सकृदुद्धृतैर्जलधराकारैश्चतुर्भिर्घटैः
रंभःपूरितदिङ्मुखैरभिषवं कुर्मास्त्रिलोकीपतेः ॥ १ ॥

आम्भोभिः सम्भृतैः कुम्भैरंभोधरनिभैः शुभैः ।
कोणस्थैरभिषिंचामि चतुर्भिर्भुवनप्रभुं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरचतुष्कोणकुंभोदकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा । चतुः कलशस्नपनं ।

अथ चन्दनानुलेपनम् ।

संसिद्धशुद्ध्या परिहारशुद्ध्या कर्पूरसंमिश्रितचंदनेन ।
जिनेंद्रदेवे सुरपुष्पवृष्टिं विलेपनं चारु करोमिभक्त्या ॥

चन्दनानुलेपनम् ॥

अथ पुष्पोद्धारणम् ।

वासंतिकाजातिशिरीषवृन्दैर्बधूकवृन्दैरपि चंपकाद्यैः ।
पुष्पैरनेकैरलिभिर्हृताग्रैः श्रीमज्जिनेंद्रांघ्रियुगं यजेऽहं ॥१

पुष्पोद्धारणम् ॥

अथ गंधोदकस्नपनं ।

कर्पूरोल्वणसांद्रचंदनरसप्राचुर्यशुभ्रत्विषा
सौरभ्याधिकगंधलुब्धमधुपश्रेणीसमाश्लिष्टया ।
सद्यः संगतगांगयामुनमहास्रोतोबिलासश्रिया
सद्गंधोदकधारया जिनपतेः स्नानं करोमि श्रियै ॥१॥

गंधोदकैश्च मद्भृङ्गसंगीतध्वनिबन्धुरैः ।
अभिषिंचामि सम्यक्त्वरत्नाढ्यविमलप्रभुम् ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हंनमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तयेनमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा पवित्रतर गन्धोदकेन जिनमभिषिंचामि । मम सर्वशांतिं कुरु कुरु । तुष्टिं कुरु कुरु । पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा । गंधोदक स्नपन ।

स्नानानंतरमर्हतः स्वयमपि स्नानांबुशेषार्द्रितो
वार्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैर्दीपैः सुधूपैः फलैः ।
कामोद्दामगजांकुशं जिनपतिं स्वभ्यर्च्य संस्तौति यः
स स्यादारविचंद्रमक्षयसुखः प्रख्यातकीर्तिध्वजः ॥१॥

इति अर्घ, अर्चनाफलम् ।

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं ।
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवी राज्याभिषेकोदकम् ॥
सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलतासंबृद्धिसंपादकं ।
कीर्तिश्रीजयसाधकं तब जिन स्नानस्य गन्धोदकं ॥१॥

स्नानस्य गंधोदकं । गंधोदकं लेना ।

इति महाभिषेकः ।

अथ पूजा प्रारभ्यते । तत्र स्वस्ति मंगल विधानं ।

ॐ जय जय जय । नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु । णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं । णमो उवज्झायाणं, णमो लोये सव्व साहूणं । ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः । पुष्पांजलि क्षिपेत् । चत्तारि मंगलं-अरहंत मंगलं । सिद्धमंगलं साहूमंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंतलोगुत्तमा । सिद्धलोगुत्तमा । साहूलोगुत्तमा । केवलि-पण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि । अरहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्ध सरणं पव्वज्जामि । साहू सरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि । ॐ नमोऽर्हते स्वाहा ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥

अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ २ ॥

अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥ ३ ॥

एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥ ४ ॥

अर्हतित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्टिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतःप्रणम्याम्यहं ॥ ५ ॥

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनं ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ६ ॥

विघ्नोघाः प्रलयं यांति शाकिनीभूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥ ७ ॥

पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

અથ સકલી કરણમ્

स्वयंभुवं महादेवं ब्रह्माणं पुरुषोत्तमं ।
जिनेन्द्रचांद्रमानम्य वक्ष्ये देवार्चनक्रमं ॥ १ ॥
इन्द्रश्चैत्यालयं गत्वा वीक्ष्य यज्ञांगसज्जनम् ।
यागमंडलपूजार्थं परिकर्माचरेदिदं ॥ २ ॥
स्नानानुस्नानभागंतधौतवस्त्रो रहःस्थितः ।
कृतेर्यापथ संशुद्धिः पर्यङ्कस्थोऽमृतोक्षितः ॥ ३ ॥
दहनप्लावने कृत्वा दिव्यस्वांगेषु दीक्ष्य च ।
न्यस्य पञ्चनमस्कारान् प्रयुक्तगुरुमुद्रिकः ॥ ४ ॥

व्युत्सृज्यांग पूरकेण व्याप्ताशेषजगत्रयं ।
शुद्धस्फटिकसंकाशं प्रातिहार्यादिभूषितं ।। ५ ।।
पादांतेन नमद्विश्वं स्फूर्जितं ज्ञानतेजसा ।
परमात्मानमात्मनं ध्यायन् जप्त्वाऽपराजितं ।।६।।
परिणामविशुद्ध्यास्तपापौघः पुण्यपुञ्जभाक् ।
ध्वस्तपापचयः कुर्याज्जिनयज्ञांगसंविधीन् ॥ ७ ।

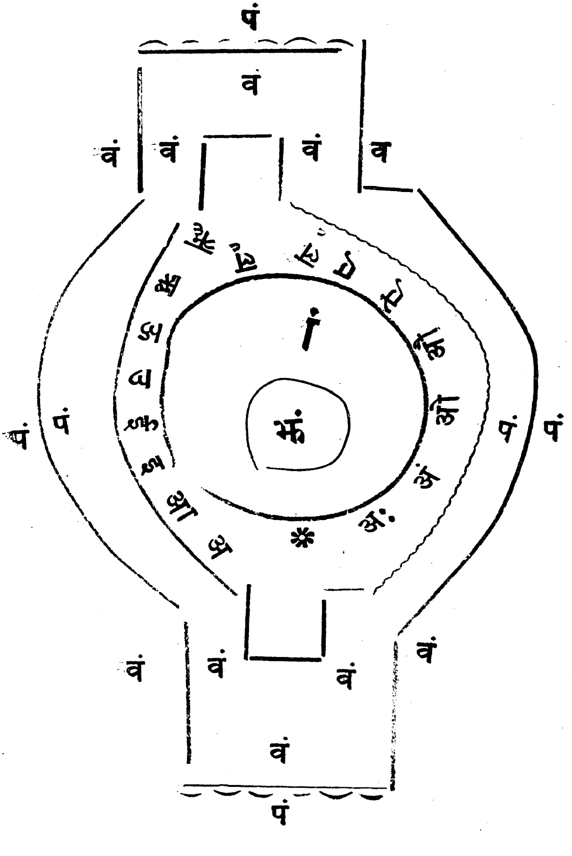

झं ठं स्वरावृतं तोय मंडलद्वय वेष्टितं ।
तोये न्यस्याग्रतर्जन्या तेनानुस्नानमावहेत् ॥ १ ॥
अर्धचंद्रघटीरूपं पंचपत्रांबुजाननं ।
नांतलांताप्तदिक्कोणं धवलं जलमंडलं । २ ॥

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा । इत्यमृतस्नान मंत्रः अनुस्नानं ।

इस मंत्रसे अमृत स्नान करे ।

इस मंत्रको एक रकाबीमें लिखे और सकलीकरण करनेवाला जीमणां हाथकी तर्जनी अंगुलीसे ऊपरका मंत्र बोल, माथे ऊपर छांटै—

पृथग्विद्धैकवाक्यांतमुक्तोच्छ्वासं जपेन्नव ।
वारान् गाथान् प्रतिक्रम्य निषिध्यालोचयेत्तथा ॥ १ ॥

पडिक्कमामि भंते ईरियावहियाए । विराहणाए । अणागुत्ते । आइग्गमणे । णिग्गमणे । ठाणे गमणे । चक्कमणे । पाणुग्गमणे । बीजुग्गमणे । हरिदुग्गमणे । उच्चारपस्सवण खेल सिंहाणय-वियडिपइट्ठावणियाए । जे जीवा । ए इंदिया वा । वी इंदिया वा । ति इंदिया वा । चउरिंदिया वा । पंचेंदिया वा । पणोल्लिदा वा । पिल्लिदा वा । संघट्ठिदा वा । संघादिदा वा । ओद्दाविदा वा । परिदाविदा वा । किरिंच्छिदा वा । लेस्सिदा वा । छिंदिदा वा । भिंदिदा वा । ठाणदो वा । ठाणचक्कमणदो वा । तस्स उत्तरगुणं । तस्स पायछित्तकरणं । तस्स विसोहीकरणं । णमोकारं पज्जुवासं करेमि । तावकायं । पावकम्मं । दुच्चरियं वोस्सरामि । ॐ णमो अरहंताणं । णमो सिद्धाणं ।

णमो आइरियाणं । णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।
(णमोकार मंत्रका नव बार जाप करना)

ॐ नमः परमात्मने नमोऽनेकांताय शांतये ।

ईर्यापथि प्रचलताद्यमया प्रमादा-
देकेन्द्रियप्रमुखजीवनिकायबाधा ।
निर्वर्तिता यदि भवेदयुगांतरीक्षा
मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरुभक्तितो मे ॥१॥

इच्छामिभंते ईरियावहमालोचेउं । पुव्वुत्तरदक्षिणपश्चिम चउदिसु । विदिसासु । विहरमाणेण । जुगुत्तरदिठ्ठिणा । दठ्ठवा । डवडवचरियाए । पमाददोसेण । पाणभूद जीवसत्ताणं । सत्ताणं एदेसिं उवघादो । कदोवा । कारिदो वा । किरन्तो वा । सयणुमणिथं । तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

पापिष्ठेन दुरात्मना जडधिया मायाविना कोभिना ।
रागद्वेषमलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्निर्मितं ॥
त्रैलोक्याधिपते जिनेन्द्र ! भवतः श्रीपादमूलेऽधुना ।
निंदापूर्वमहं जहामि सततं निर्वृत्तये कर्मणां ॥

ईर्यापथ शोधनं ।

गुरुमुद्राग्रे भूः झं वं ह्वः पोहोम्योऽमृतैः स्वकीयप्रवहद्भिः सिच्यमानं स्वं ध्यायन्मंत्रमिमं पठेत् । ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां ह्रीं ह्रीं द्रावय द्रावय हं झं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा ।

(यह मंत्र अमृत स्नानका है)

दोनों हाथोंकी पांचों अंगुलियां लम्बी करके दाहिने हाथकी सब अंगुलियों पर अंगुष्ठकी तरफसे अ सि आ उ सा लिखना चाहिये और अ सि आ उ सा के ऊपर की

तरफ सां वं ह्वः पः हः लिखना चाहिये । फिर दोनों हाथ जोड़ मस्तक नमा कर हाथ माथे पर रख और पूर्वोक्त यंत्रसे जल ले उक्त मंत्र बोल माथे पर छींटना चाहिये ।

अग्निमंडलमध्यस्थरेफैर्ज्वाला शतांकुरैः ।
सर्वांगदेशगैर्विश्वग्धूयमानैर्नभस्वता ॥

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते भगवते जिन भास्करस्य बोध सहस्र किरणैर्ममकर्मेन्धनद्रव्यं शोषयामि घे घे स्वाहा । द्रव्य शोषणं ।

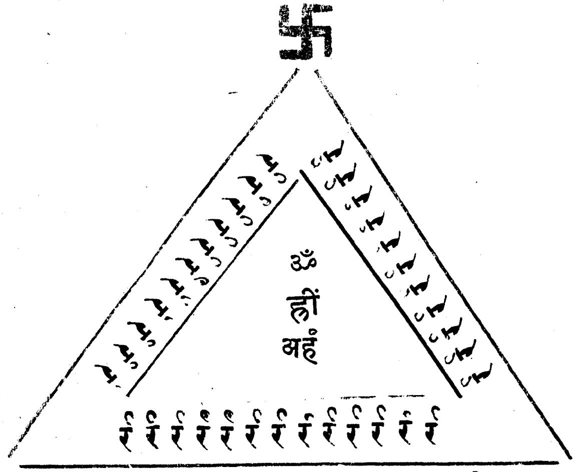

(अग्नि मंडल) यह यंत्र पान पर लिख कपूर जलाना चाहिये ।

स्वस्तिकाग्रत्रिकोणांतर्गतरेफं शिखावृतं ।
अग्निमंडलमोंकारं गर्भरक्ताभमास्थितं ॥
सप्तधातुमयं देहं देहेन्द्रं प्रार्चिषां चयैः ।
सर्वाङ्गदेशगैर्विश्वग्धूयमानैर्नभस्वता ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ ४ रं ४ हम्ल्व्यूं जं २ सं २ दह २

विकर्ममलं दह २ दु:खं दह २ हूँ फट् घे २ स्वाहा। इत्युच्चार्यं कर्मेन्धनानि स्मरेत्। दहनं ॥

(ऊपरका मंत्र बोल यंत्र जो प्रथम पान ऊपर लिखा है उस पर जो कर्पूर जलै उससे यह समझना चाहिये कि ये कर्म जल रहे हैं।

नाभिस्तु सुस्वरद्व्यष्ट पत्राब्जांतरमर्हतः।
दहेद्दीपौघरुध्यद्भिरष्टकर्ममयं वपुः ॥

वृत्तात्सबिन्दुदिक्कोण स्वायाद्गोमूत्रिकाकृतेः।
कृष्णाद्वायुपुराद्वातैः प्रेरयेद्भस्मवायुभिः ॥

व्योमव्यापिघनासारैः स्वमालाव्यामृतस्रुतं।
स्वे स्वं ध्यायन् सृजेदेवममृतैरन्यदिदुवत् ॥

नाभि मंडल।

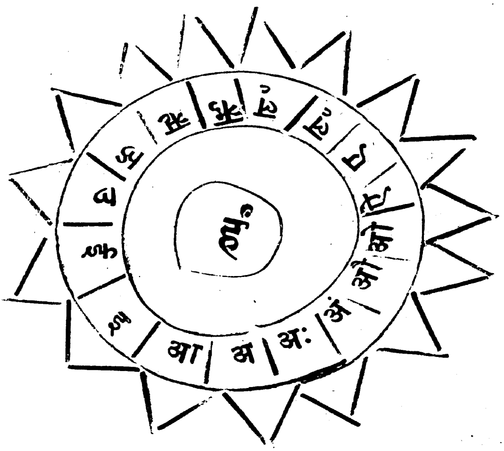

वायु मंडल ।

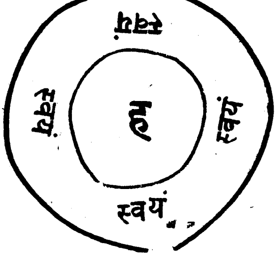

वरुण मंडल ।

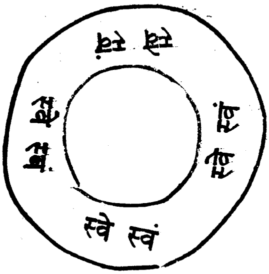

आकाश मंडल ।

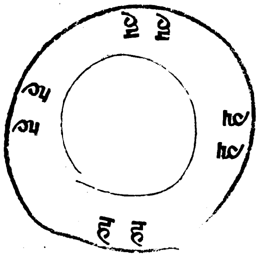

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिन प्रभञ्जनाय कर्मभस्म विधूननं कुरु कुरु स्वाहा ।

उपरका मंत्र बोल कर कर्म भस्म हुये बाद उसकी राख उड़ गई ऐसा विचार करना चाहिये और उक्त अग्निमंडल आदि पांचों यंत्रोंका मनमें ध्यान करना चाहिये ।

अथ हस्त संघटनम् ।

करमध्ये लिखेद्यंत्रं काश्मीरादिसुमिश्रितैः ।
रविसोमसमुद्धार्यं तन्मध्ये च स्वनाहतं ॥ १ ॥

चन्द्रप्रभाऽनाहतयंत्रम् ।

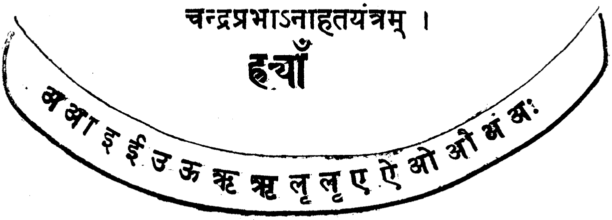

प्रथमप्रमाऽनाहतयंत्रम् ।

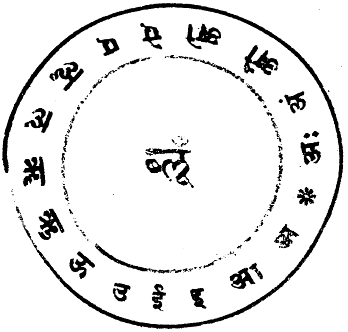

उपरके दोनों यंत्रोंको सकलीकरण करनेवाला एकको दाहिनें और एकको वाम हाथमें लिखे। यदि ऐसा न करे तो पान पर लिखकर पानोंको दोनों हाथोंमें रख लें।

हस्तद्वयकनीयस्याद्यंगुलीनां यथाक्रमं ।

मूलरेखात्रयस्योर्ध्वमग्रे च युगपत्सुधीः ॥

न्यसोंहामादि होमाढ्यान् नमस्कारान् करौ मिथः ।

संयोज्यांगुष्टयुग्मेन व्यस्तान् स्वांगेषु विन्यसेत् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वं मं हं सं तं पं अ सि आ उ सा हस्त संघटनं करोमि स्वाहा। हस्त संघटनं ॥

ऊपरके दोनों यंत्रोंसे उल्लिखित हाथोंकी पांचों अंगुलियां लम्बी कर दाहिने हाथकी पांच अंगुलियों ऊपर अंगुलियोंके मूलमें अगूठाके अनुक्रमसे।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं स्वाहा, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा, ॐ णमो ह्रूं आइरियाणं स्वाहा, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा।

(इस प्रमाण णमोकार मंत्र लिख हाथ जोड़ना।

इति सकलीकरणम्।

अथ करन्यासः ।

हृदि न्यसेन्नमस्कारमों ह्रां पूर्वक मर्हतां ।
पूर्वे शिरसि सिद्धानामों ह्रीं पूर्वा नमस्कृतिं ॥ १ ॥
ॐ ह्रूँ पूर्वकमाचार्यस्तोत्रं शीर्षस्य दक्षिणे ।
ॐ ह्रौं पूर्वमुपाध्यायस्तवं पश्चिमदेशतः ॥ २ ॥
ॐ ह्रः पूर्वा ततो वामे सर्वसाधुनमस्कृतिं ।
न्यसेत्पंचाप्यमून्मंत्रान् शिरस्येवं पुनः सुधीः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं स्वाहा हृदये[१] । ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा ललाटे[२] । ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं स्वाहा शिरसो[३] दक्षिणे । ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा[४] पश्चिमे । ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा[५] वामे ।

पुनस्तानिमान् मंत्रान् प्राग्भागे दक्षिणे पश्चिमे उत्तरे च क्रमेण विन्यसेत् ॥ इति प्रथमांगन्यासः ॥

प्राग्भागे शिरसो मध्ये दक्षिणे पश्चिमे तथा ।
वामे चैतेषु विन्यासक्रमो वारे द्वितीयके ॥ ४ ॥

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं स्वाहा शिर-मध्ये । ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा ललाटे । ॐ ह्रूं आइरियाणं स्वाहा शिरसो

---

१ सकलीकरण करते समय हाथ जोड़, जुड़े हाथसे हृदय, कपाल, माथा, पश्चिम आदि जो शरीरके अवयवोंके नाम आवें वहां वहां हाथ लगाना ।

दक्षिणे । ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा पश्चिमे । ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा वामे ।

पुनरप्यमूनेव मंत्रान् शिरोमध्ये तत्पूर्वादिषु च विन्यसेत्

॥ इति द्वितीयांगन्यासः ॥

भुजयुग्मे च नाभौ च पार्श्वयुग्मे तृतीयके ।
कवचास्त्रतनुन्यासं कुर्यान्मंत्रेण मंत्रवित् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं स्वाहा नाभौ । ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा नाभेर्दक्षिणे । ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं स्वाहा नाभेर्वामे । ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणां स्वाहा । कवचाय ह्रूं दक्षिण भाग भुजे । ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा अस्त्राय फट् वामभुजे ।

ॐ णमो अरहंताणं क्ष्म्ल्व्यूं मम हृदयं रक्ष २ ह्रां स्वाहा । ॐ णमो सिद्धाणं ह्म्ल्व्यूं मम शिरं रक्ष २ ह्रीं स्वाहा । ॐ णमो आइरियाणां छ्म्ल्र्व्यूं मम शिखां रक्ष २ ह्रूं स्वाहा । ॐ णमो उवज्झायाणं म्म्ल्र्व्यूं मम वज्राणि वज्र कवचं रक्ष२ ह्रौं स्वाहा । ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ह्म्ल्र्व्यूं मम दुष्टं निवारय २ अस्त्राय फट् स्वाहा ।

॥ इति तृतीयांगन्यासः ॥

अथ अङ्गन्यास भेदः ।

तथा वामप्रदेशिन्यां न्यस्य पंच नमस्कृतिं ।
पूर्वादिदिक्षु रक्षार्थं दशस्वपि निवेशयेत् ॥ ६ ॥

अ सि आ उ सा एतानि पंचाक्षराणि तर्जन्यंगुल्यां संस्थाप्य कूटबीजानि ।

(ऊपरके पांच बीजाक्षर दक्षिण हाथकी तर्जनी अंगुली ऊपर लिख नीचे लिखे दश मंत्र बोल नीचे मंत्रमें बताई दिशाओंमें हाथ दिखाना चाहिये) ।

आँ ह्राँ क्षाँ पूर्वे । ईं ह्रीं क्षीं अग्नौ । ॐ ह्रूँ क्षूँ यमे । ॠँ ह्रैं क्षौं नैऋते । एँ ह्रैं क्षैं वरुणे । ऐं ह्रों क्षों वायव्ये । ओं ह्रौं क्षौं कुबेरे । ओं ह्रं ईशाने । अं ह्रः क्षः भूतले । अः ह्रों क्षीं आकाशे । दिशा बंधनं ।

वर्मितोऽनेन मंत्रेण सकलीकरणे सुधीः ।
कुर्वन्निष्टानि कर्माणि केनाप्येनानि विन्यसेत् ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष २ ह्रूँ फट् स्वाहा ।

अनेन पुष्पाक्षतं सप्त वारान् प्रजाप्य परिचारकाणां शीर्षेषु क्षिपेत् ।

(ऊपरका मंत्र सात वक्त बोल सात वक्त पुष्प अक्षत साथ परिचारकोंके मस्तक उपर क्षेपना ।)

ॐ ह्रूँ फट् किरीट घातय २ परविघ्नान् स्फोटय २ सहस्र खंडान् कुरु २ परमुद्रांछिद २ परमंत्रान् भिद २ क्षः फट् स्वाहा ।

(ऊपरका "ॐ ह्रूँ फट्" ए मंत्र बोल पुष्पाक्षत दश दिशाओंमें सर्व विघ्नोंकी शांतिके लिए क्षेपण करना ।)

॥ इति सकलीप्रकरण विधानम् ॥

ॐ

अथ पुण्याहवाचनं ।

श्री निर्जरेशाधिपचक्रपूर्वं श्रीपादपंकेरुहयुग्ममीशं ।
श्री वर्धमानं प्रणिपत्य भक्तया संकल्पमेनं कथयामि सिद्धयै ॥

ॐ स्वस्ति श्रीयजमानाचार्यप्रभृतिसमस्तभव्यजनानां सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु ।

अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मते त्रैलोक्यमध्यमध्यासीने मध्यलोके श्रीमदनावृतपक्षसंसेव्यमाने दिव्यजम्बूवृक्षोपलक्षितजंबूद्वीपे, महनीयमहामेरोर्दक्षिणभागे, अनादिकालसंसिद्धभरतनामधेयप्रविराजितषट्खंडमंडितभरतक्षेत्रे, सकलशलाकापुरुषसंभूतिसम्बन्धविराजितार्यखंडे,परमधर्मसमाचरणगुज्जरदेशे, अस्मिन् विनेयजनताभिरामे, [1]ईडरग्रामे, श्रीदिगंबरजैनकाष्ठासंघे नंदीगच्छे आदि श्रीमद्भट्टारक श्रीरामसेनाम्नाये महाशांतिकर्मणोचित्ते, अत्र [2]वृषभनाथस्य (आदिनाथस्य) दिव्यमहा चैत्यालयप्रदेशे, एतदवसर्पिणीकालावसाने प्रवृत्तसुवृत्तचतुर्दशमनूपमान्वितसकललोकव्यवहारे, श्रीवृषभस्वामिपौरस्त्यमंगलमहापुरुषपरिषत्प्रतिपादितपरमोपशमपवक्रमे, वृषभसेनसिंहसेनचारुसेनादिगणधरस्वामिनिरूपितविशिष्टधर्मोप्रदेशे। दुःखमसुखमानंतर-

---

१-जहां पूजन होता हो उस ग्रामका नाम लेवें, २-मंदिरमें जो मूलनायक हो उनका नाम लेवें ।

प्रवर्तमानकलियुगापरनामधेयदुःखमाभिधानपंचमकालप्रथम-पादे, महतिमहावीरवर्धमानतीर्थंकरोपदिष्टसद्धर्मव्यतिकरे, श्रीगौतमस्वामिप्रतिपादितसन्मार्गप्रवर्त्तमाने, श्रेणिकमहा-मंडलेश्वरसमाचरितसन्मार्गावशेषे, विक्रमांकनृपालपालित-प्रवर्त्तमानानुकूलशकनृपकाले, १९९३[१] वर्षसंमिते, प्रवर्तमान आनंदनांम[२] संवत्सरे, अमुकमासे[३] शुक्लपक्षे[४] अष्टमितियौ[५] अमुकवासरे[६] (...) प्रशस्ततारकायोगकरणद्रेकाणहोरा-मुहूर्तलग्नयुक्तायां, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभितश्रीमदर्हत्पर-मेश्वरसन्निधौ, श्री शारदासन्निधौ, राजर्षिपरमर्षिब्रह्मर्षि-सन्निधौ, विद्वत्समाजसन्निधौ, अनादिश्रोतृसन्निधौ, देव-ब्राह्मणसन्निधौ सुब्राह्मणसन्निधौ, यागमंडलभूमिशुद्धयर्थं द्रव्यशुद्धयर्थं पात्रशुद्धयर्थं क्रियाशुद्धयर्थं मंत्रशुद्धयर्थं महा-शांति कर्मसिद्धिसाधनयंत्रमंत्रतंत्रविद्याप्रभावसंसिद्धिनिमित्त-विधीयमानस्य अमुक[७] (......)क्रियामहोत्सवसमये पुण्या-हवांचनं करिष्ये । सर्वैःसभाजनैरनुज्ञायतां, विद्वद्भिशिष्टज-नैरनुज्ञायतां, महाजनैरनुज्ञायतां तद्यथा ।

प्रस्थमात्रतंदुलस्योपरि ह्रींकारसंवेष्टितस्वस्तिकयंत्रे मंत्रपरिपूजितमणिमयमंगलकलशं संस्थाप्य, यजमाना-

---

१-वतमान सवतका नाम लेवें, २-संवत्सर जो चलता हो उनका नाम लेवें, ३-चालू मासका नाम, ४-चालू पक्षका नाम लेवें, ५-चालू तीथीका नाम लेवें ६-जो वार हो उसका नाम लेवें, ७-जिस उद्यापन क्रियामें पुण्याहवाचन होता हो उस क्रियाका नाम लेवें ।

चार्योऽपसव्यहस्तेन धृत्वा पुण्याहमंत्रमुच्चारयन् सिंचेत् ।
ॐ स्वस्तिककलश स्थापनं करोमि ।

(पासमें छपे हुए यंत्र अनुसार करीब एक सेर चावल लेकर जमीनपर यंत्र बनावें, फिर उसके ऊपर जलसे भरा हुआ कलश रखकर उसमें नागरवेलका पत्ता रखें और पुण्याहवाचन पढते जावे और कलशका पानी उस पत्तेसे दाहने हाथसे छिडकते जावे ।)

अथ पुण्याहमंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्तगंगासिंध्वादिनदीनदतीर्थजलं भवतु स्वाहा । जलपवित्रीकरणं ॥

अभ्यर्च्य कलशं तोयप्रवाहैश्चंदनैः शुभैः ।
अक्षतैः कुसुमैरन्नदीपधूपफलैरपि ॥

ॐ ह्रीं पुण्याहकलशार्चनं करोमि स्वाहा ।

(साथीयाके उपरके कलशको अर्घ चढावें ।)

॥ कलशार्चनं ॥

आर्या—

जयतु जिनेश्वरशासनमखिलसुखं मे भवतु जगति जनानां ।
देशे भवतु सुभिक्षं पांतु चिरं वसुमतिं राज्ञः ॥

ॐ अर्हद्भ्यो नमः । ॐ सिद्धेभ्यो नमः । ॐ सूरिभ्यो नमः । ॐ पाठकेभ्यो नमः । ॐ सर्वसाधुभ्यो नमः ।

ॐ अतीतानागतवर्तमानत्रिकालगोचरानन्तद्रव्यगुणपर्यायात्मकवस्तुपरिच्छेदकसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राद्यनेकगुणगणाधारपंचपरमेष्ठिभ्यो नमो नमः । ॐ पुण्याहं ३ प्रीयंतां३

भगवंतोऽर्हंतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः सकलवीर्याः सकलसुखाः त्रिलोकेशाः त्रिलोकेश्वरपूजिताः त्रिलोकनाथाः त्रिलोकमहिताः त्रिलोकप्रद्योतनकराः । ॐ श्रीमद् भगवदर्हत्सर्वज्ञपरमेष्ठिपरमपवित्रशांतिभट्टारकपादपद्मप्रसादात् सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु ।

ॐवृषभादयो महतिमहावीरवर्धमानपर्यंताः परमतीर्थंकरदेवाश्चतुर्विंशत्यर्हंतो भगवन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः संभिन्नतमस्का वीतरागद्वेषमोहास्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकप्रद्योतनकरा जातिजरामरणविप्रमुक्ताः सकलभव्यजनसमूहकमलवनसम्बोधदिनकराः देवाधिदेवाः । अनेकगुणगणशतसहस्त्रालंकृतदिव्यदेहधराः । पंचमहाकल्याणाष्टमहाप्रातिहार्यचतुस्त्रिंशदतिशयविशेषसंप्राप्ताः । इन्द्रचक्रधरबलदेववासुदेवप्रभृतिदिव्यसमानभव्यवरपुण्डरीकपरमपुरुषवरमकुटतटनिबिडनिबद्धमणिगणकरनिकरवारिधाराभिषिक्तचारुचरणकमलयुगलाः । स्वशिष्यपरशिष्यवर्गं प्रसीदंतु वः परममांगल्यनामधेयाः सद्धर्मकार्येष्विहामुत्र च सिद्धाः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ।

अतीतकालसंजातविविधविबुधनिवहप्रार्थितार्थप्रदानसद्धर्मपारिजातपादपप्रभावोद्भूतसंपत्समेताः । निखिलभुवनकुहरविश्रुतयशोराशिधवलितहरिद्वलयनिलयनिर्लिपनितंबिनीजनमनोवितर्कमानकल्याणपरम्पराः । अनवरतविनमदखिलसुरनरोरगखेचरपतिमुकुटतटताटितमाणिक्यमयूखमालालंकृतक्रमकमलयुगलाः ।

ॐ निर्वाण सागर, महासाधु, विमलप्रभ, श्रीधर, सुदत्त, अमलप्रभ, उद्धर, अंगिर, सन्मति, सिंधु, कुसुमांजलि, शिवगण, उत्साह, ज्ञानेश्वर, परमेश्वर विमलेश्वर, यशोधर, कृष्ण, ज्ञानमति, शुद्धमति, श्रीभद्र, अतिक्रांत, शांताश्चेति चतुर्विंशत्यतीतकालतीर्थंकर परमजिनदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

ॐ संप्रतिकालश्रावकश्रेयस्करस्वर्गावतरणजन्माभिषवणपरिनिष्क्रमणकेवलज्ञाननिर्वाणकल्याणविभूतिभूषितमहाभ्युदयाः । सिद्धविद्याधरराजमहाराजमण्डलीकमहामण्डलीकमुकुटबद्धबलकेशवसार्वभौमादि विजयदानवोरगेन्द्रकिरीटप्रभामणिगणप्रभामरुद्धानि जलप्रवाहप्रक्षालितचारुचरणनखकिरणचन्द्रिकाप्रतिहतपापांधकाराः ।

ॐ वृषभ, अजित, शंभव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, पुष्पदन्त, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शांति, कुन्थु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व, श्रीवीर वर्धमानाश्चेति चतुर्विंशतिवर्तमानकालतीर्थंकरपरम जिनदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

ॐ भविष्यत्कालभव्याभ्युदयनिमित्तनिखिलकल्याणरमणीयकत्रिभुवनैश्वर्यशोभितमहाप्रभावाः । सहर्षसंभ्रमप्रणुतचतुर्निकायामरपतिनिकरमौलिविलसितरत्नरंजितानेकमणिगणखचितसुवर्णसिंहासनालंकृत सहस्रदलकमल विष्टराधिष्ठित पादपद्मयुगुलाः ।

ॐ महापद्म, सुरदेव, सुपार्श्व, स्वयंप्रभ, सर्वात्मभूत, देवपुत्र, कुलपुत्र, उदंक, प्रौष्ठिल, जयकीर्ति, मुनिसुव्रत,

अर, निःपाप, निष्कषाय, विपुल, निर्मल, चित्रगुप्त, समाधिगुप्त, स्वयंभू, अनिवर्तिक, जय, विमल, देवपाल, अनन्तवीर्याश्चेति चतुर्विंशति अनागतकालतीर्थंकरपरमजिनदेवाश्च वः प्रीयंतां २ ।

ॐ अनाद्यविद्याविलासदुस्तरतमःपटलपटावगुण्ठितजगदूर्जितज्योतिः स्वरूपयथावस्थितसमस्तवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवीणादिब्रह्मवदनकंजसंजातद्वादशांगचतुर्दशपूर्वप्रपंचप्रवचनपारावारपारीणाः ।

ॐ वृषभसेन, कुम्भ, दृढरथ, शतधनु, देवशर्म, धनदेव, नन्दन, सोमदत्त, सूरदत्त, वायुशर्म, यशोबाहु, मार्गदेव, अग्नि, अग्निदेव, अग्निगुप्त, चित्राग्नि, हलधर, महिधर, माहेन्द्र, वासुदेव, वसुन्धर, अचल, मेरुधर, मरुभूति, सर्वयश, सर्वयज्ञ सर्वगुप्त, सर्वप्रिय, सर्वदेव, सर्वविजय, विजयगुप्त, विजयमित्र, विजयदल, अपराजित, वसुमित्र, विश्वसेन, सुसेन, सत्यदेव, देवसत्य, सत्यगुप्त, सत्यमित्र, शर्मद, विनत, शंबर, मुनिगुप्त, मुनियज्ञ, मुनिदेव, गुप्तयज्ञ, मित्रयज्ञ, स्वयंभू, भगदेव, भगदत्त, भगफल्गु, मित्रफल्गु, प्रजापति, सर्वसह, वरुण, धनपाल, मघव, तेजोराशि, महावीर, महारथ, विशाल, महाज्वाल, सुविशाल, वज्र, वज्रशाल; चन्द्र, चन्द्रचूल, मेघेश्वर, कच्छ, महाकच्छ, नमि, विनमि बल, अतिबल, वज्रबल, नंदी, महानुभोगी, नंदिमित्र, महानुभाव, कामदेवानुपमाश्चेति आदिब्रह्म समवशरण प्रवर्तमान चतुरशीतिगणधरदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ॥

ॐ वृषभसेन, सिंहसेन, चारुसेन, वज्रनाभि, चमर, वज्र-चमर, बलदत्त, विदर्भ, अनगार, कुन्थु, धर्म, मंदर, जयार्य, अरिष्टसेन, चक्रायुध, स्वयंभू, कुमार्य, विशाल, मल्लि, सुप्रभ, बरदत्त, स्वयंभू, गौतमाश्चेति चतुर्विंशतितीर्थंकरसभाभासमानगणधर मुख्याश्च वः प्रीयंतां२ ।

ब्राह्मी, आत्मगुप्ता, धर्मश्री, मेरुषेणा, अनंतमति, रतिषेणा, मीनश्री, वरुणश्री, घोषावती, धरणश्री, धारणा, वरसेना, पद्मश्री, सर्वश्री, सुव्रता, हरिषेणा, भावश्री, कूर्मश्री, अमरसेना, पुष्पदंता, मार्गश्री, यक्षश्री, सुलोचना, चन्दनाश्चेति चतुर्विंशतिगणिनीमुख्याश्च वः प्रीयंतां२ ।

श्रेयांस, ब्रह्मदत्त, सुरेन्द्रदत्त, इन्द्रदत्त, पद्मदत्त, सोमदत्त, महेंद्रदत्त, पुष्पमित्र, पुनर्वसु, नंदन, सौंदर, जय, विशाख, धान्यसेन, धर्ममित्र, सुमित्र, अपराजित, नांदी, नंदिसेन, वृषभसेन, दत्त, बरदत्त, धान्य, नंदनाश्चेति चतुर्विंशतिदातृमुख्याश्च वः प्रीयंतां२ ।

भरत, सत्यभाव, सत्यवीर्य, मित्रभाव, मित्रवीर्य, धर्मवीर्य, दानवीर्य, मघव, युद्धवीर्य, श्रीमन्दर, त्रिपिष्ट, द्विपिष्ट, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, पुरुषवर, पुण्डरीक, दत्त कुनाल, नारायण, सुभौम, अजितंजय, उग्रसेन, अजित, श्रेणिकाश्चेति चतुर्विंशतिश्रोतृमुख्याश्च वः प्रीयंतां२ ॥

गोमुख, महायक्ष, त्रिमुख, यक्षेश्वर तुम्बरु, कुसुम, वरनंदी,

विजय, अजित, ब्रह्मेश्वर, कुमार, षन्मुख, पाताल, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गंधर्व, महेंद्र, कुबेर, वरुण, विद्युत्प्रभ, सर्वाण्ह, धरणींद्र, मातंगनामानश्चेति चतुर्विंशतियक्षेन्द्राश्च वः प्रीयंतां२

चक्रेश्वरी, रोहिणी, प्रज्ञप्ती, वज्रशृंखला पुरुषदत्ता, मनोवेगा, काली, ज्वालामालिनी, महाकाली, मानवी गौरी गांधारी, वैरोही, अनंतमति, मानसी, महामानसी, जया विजया, अपराजिता, बहुरूपिणी, चामुण्डी, कूष्माण्डी, पद्मावती, सिद्धायिन्यश्चेति चतुर्विंशतिशासनदेवताश्च वः प्रीयंतां२ ॥

नाभिराज, जितशत्रु दृढराज, स्वयंवर, मेघरथ, धरणराज, सुप्रतिष्ट, महासेन, सुग्रीव, दृढरथ विष्णुराज, वसुपूज्य, कृतवर्मा, सिंहसेन, भानुराज, विश्वसेन, सुरसेन, सुदर्शन, कुम्भराज, सुमित्र, विजयराज, समुद्रविजय, विश्वसेन, सिद्धार्थाश्चेति चतुर्विंशति जिनजनकाश्च वः प्रीयंतां२ ।

मरुदेवी विजया, सुषेणा, सिद्धार्था, सुमंगला, सुषीमा, पृथ्वी, लक्ष्मणा, जयरामा, सुनन्दा, नन्दा, जयावती, आर्याश्यामा, लक्ष्मीमती, सुप्रभा, एरादेवी, श्रीकांता, मित्रसेना, प्रभावती, सोमा, वर्मिला, शिवदेवी, ब्राह्मी, प्रियकारण्यश्चेति चतुर्विंशतिजिनमातृकाश्च वः प्रीयंतां२ ।

प्रतिश्रुति, सन्मति, क्षेमंकर, क्षेमंधर, सीमंकर, सीमंधर, विमल, वाहन, चक्षुष्म, यशश्वि, अभिचन्द्र, चन्द्राभ, प्रसेनजित, नाभिराजाश्चेति वर्तमानचतुर्दशकुलधराश्च वः प्रीयंतां२ ।

कनक, कनकप्रभ, कनकराज, कनकध्वज, कनकपुंगव, नलिन, नलिनप्रभ, नलिनराज, नलिनध्वज, नलिनपुंगव, पद्म, पद्मप्रभ, पद्मराज, पद्मध्वज, पद्मपुंगव, महापद्माश्चेति भविष्यत्कुलधराश्च वः प्रीयंतां २।

श्रीषेण, पुंडरीक, वज्रनाभि, वज्रदन्त, चारुघोष, चारुदत्त श्रीदत्त, सुवर्णप्रभ, भूवल्लभ, गुणपाल, धर्मसेन, कीर्त्योघाश्चेति अतीतद्वादशचक्रवर्तिनश्च वः प्रीयंतां २।

भरत, सगर मघव, सनत्कुमार, शांति, कुन्थु, अर, सुभौम, महापद्म, हरिषेण, जयसेन, पद्म दत्ताश्चेति वर्तमान-द्वादशचक्रवर्तिनश्च वः प्रीयांतां २।

भरत, दीर्घदन्त, मुक्तदन्त, गूढदन्त, श्रीषेण, श्रीभूति, श्रीकांता, पद्म, महापद्म, चित्रवाहन, विमलवाहन, अरिष्टसेना-श्चेति अनागतद्वादशचक्रवर्तिनश्च वः प्रीयांतां २।

श्रीकांत, शांतचित्त, वरबुद्धि, मनोरथ, दयामूर्ति, विपुलकीर्ति, श्रीराम, प्रभाकर, संजयन्ताश्चेति अतीतनवबल-देवाश्च वः प्रीयांतां २।

विजय, अचल, सुधर्म, सुप्रभ सुदर्शन, नंदि, नंदिमित्र, राम, पद्माश्चेति, वर्तमान नवबलदेवाश्च वः प्रीयांतां २।

चन्द्र, महाचन्द्र, चन्द्रधर, हरिचन्द्र, सिंहचंद्र, वरचंद्र, पूर्णचन्द्र, शुभचन्द्र, श्रीचन्द्राश्चेति अनागतनवबलदेवाश्च वः प्रीयांतां २।

काकुत्स, वरभद्र, सुभद्र, सुश्लिष्ट, वरवीर, शत्रुञ्जय, अमितारि, प्रियदत्त, विमलवाहनाश्चेति अतीतनववासुदेवाश्च वः प्रीयंता २ ।

त्रिपिष्ट, द्विपिष्ट, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, पुरुषसिंह, पुरुषवर, पुण्डरीक, लक्ष्मीधर, कृष्णाश्चेति वर्तमाननववासुदेवाश्च वः प्रीयंतां २ ।

नन्दि नन्दिमित्र, नन्दिषेण, नन्दिभूति, बल, महाबल, अतिबल, त्रिपिष्ट, द्विपिष्टाश्चेति अनागतनववासुदेवाश्च वः प्रीयंतां २ ।

निशुंभ, विद्युत्प्रभ, रणरसिक, मनोवेग, चित्रवेग दृढ़रथ, वज्रजंघ, विद्यज्जंघ, प्रल्हादश्चेति अतीतनवप्रतिवासुदेवाश्च, वः प्रीयंतां २ ।

अश्वग्रीव तारक, मेरुक, निशुंभ, कटभ, बलि प्रहरण, रावण जरासंघश्चेति वर्तमाननवप्रतिवासुदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

श्रीकण्ठ हरिकण्ठ, नीलकण्ठ, अश्वकण्ठ, सुकण्ठ, शिखिकण्ठ, अश्वग्रीव, हयग्रीव, मयूरग्रीवाश्चेति अनागतनवप्रतिवासुदेवाश्च वः प्रीयंतां २ ।

भीम, महाभीम, रुद्र, महारुद्र, काल, महाकाल. दुर्मुख, निर्मुख, अधोमुखाश्चेति वर्तमाननवनारदाश्च वः प्रीयंता २ ।

भीमावली, जितशत्रु रुद्र, महारुद्र, विश्वानल, सुप्रतिष्ठा, अचल, पुंडरीक, अजितंजय, जितनाभि, पीठ, सत्यकीपुत्राश्चेति वर्तमानएकादशरुद्राश्च वः प्रीयंतां २ ।

प्रमद्, संमद्, प्रकाम, कामद्, भवहर, मनोहर, मनोभव, मार, काम, रुद्र, अङ्गजाश्चेति, अनागत एकादशरुद्राश्च वः प्रीयंतां २ ।

असुर, नाग, सुपर्ण, द्विपर्ण, द्विपोदधि स्तनित, विद्युत, अग्नि,वात दिक्कुमाराश्चेति दशविधभवनेन्द्राश्च वः प्रीयांतां२ ।

चमर, वैरोचन, धरण, भूतनाद, वेणुदेव, वेणुधारी, पूर्णवशिष्ठ, जलप्रभ, जलकांत,घोष, महाघोष, हरिषभ, हरिकांत अमितगति, अमितवाहन, अग्निशिखि, अग्निमाणव, वेलम्ब, प्रलम्ब प्रभंजनाश्चेति विंशतिभवनेन्द्राश्च वः प्रीयांतां २ ।

किन्नर, किंपुरुष गरुड, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाचाश्चेति अष्टविधव्यन्तरेन्द्राश्च वः प्रीयांतां २ ।

किन्नर, किंपुरुष, तत्पुरुष, महापुरुष, महाकाय, अतिकाय, गीतरति, गीतयशः, पूर्णभद्र, मणिभद्र, भीम, महाभीम, सुरूप, प्रतिरूप काल महाकालाभिधानाश्चेति षोडश व्यन्तरेन्द्राश्च वः प्रीयांतां २ ।

चन्द्रादित्यग्रह नक्षत्र प्रकीर्णक तारकाश्चेति पञ्चविध ज्योतिष्केन्द्राश्च वः प्रीयांतां २ ।

सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेंद्र, ब्रह्म, ब्रह्मोतर, लांतव; कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण अच्युतेन्द्राश्चेति षोडशकल्पेन्द्राश्च वः प्रीयांतां२

हिट्ठिमहिट्ठिम हिट्ठिममज्झिम हिट्ठिमोपरिम मज्झिमहिट्ठिम मज्झिममज्झिमोपरिमउपरिमहिट्ठिम उपरिममज्झिम उपरिमो-

परिमाख्य नवग्रैवेयकनिवासिनोऽहमिंद्रदेवाश्च वः प्रीयंतां २ ।

त्रिलोकविषयलोकालोकवर्तिसर्वद्रव्यपर्यायक्रमकरणव्यव-धानातिक्रमसाक्षात्करणकेवलाख्यपरंज्योतिप्रमुखस्वभाविका-नंतगुणविशेषविभूषिताः सकलचक्रिकुरुभवार्यफणींद्राहमिंद्रत्रि-कालपंभवितसुखानंतगुणितदुखसभावितक्षीणपर्यायसर्वकालशाश्वतपरमोत्कृष्टसुखानन्दमन्दिरायमाणाः ।

वीतरागद्वेषमोहाः जातिजरामरणविप्रमुक्ताः देवाधिदेवाः परमनिर्वाणसंप्राप्ताः परममांगल्यनामधेयाः अष्टकर्ममलवि-लयस्पष्टीभूतपरमावगाढसम्यक्त्वाद्यष्टगुणविशिष्टसकलसि-द्धसमुहाश्च वः प्रीयंतां २ ।

रोहिणी, प्रज्ञप्ती, वज्रशृंखला, वज्रांकुशा, अप्रतिचक्रा । पुरुषदत्ता, काली, महाकाली गौरी, गांधारी, ज्वालामालिनी, मानवी, वैरोही, अच्युता, मानसी, महामानस्यश्चेति षोडश-विद्यादेवताश्च वः प्रीयंतां २ ।

जया, विजया, अजिता, अपराजिता, जंभा, मोहा, स्तंभा, स्तंभिन्यश्चेति अष्ट महादेवताश्च वः प्रीयंतां २ ।

श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी, शांति, पुष्टयश्चेति अष्टदिक्कन्यकाश्च वः प्रीयंतां २ ।

नित्यप्रवृत्ततारकायोगकरणाद्युपेतपक्षतिप्रभृतिसमस्ततिथि-प्रभावप्रयोजनप्रधानाः यक्ष, वैश्वानर, राक्षस, नधृत, पन्नग, असुरकुमार, पितृ, विश्वमालिनी, चमर, वैरोचन, महाविद्य-मार, विश्वेश्वर, पिण्डाशिनश्चेति, पंचदशतिथिदेवाश्च वः प्री. २

अनन्त, कुलिक, वासुकी, शंखपाल, तक्षक पद्म, महापद्म, कर्कोटक, जयविजयादि अष्ट महानागाश्च वः प्रीयंतां २ ।

इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, धरणींद्र, चन्द्राश्चेति दशदिक्पालदेवाश्च वः प्रीयंतां २ ।

आदित्य, सोम मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, नाम नवग्रहाश्च वः प्रीयंतां २ ।

काल, निकाल, लोहित, कनक, कनकस्थान, अन्तरद, कच; यव, दुंदभि, रत्ननिभ, रूप; निर्भास; नीलनीलभास, अश्व; अश्वस्थान, कोश, केशवर्ण, शंख, शंखपरिमाण, शंखवर्ण, उदय, पंचवर्ण, तिल, तलपुच्छ, क्षारराशि, धूम, धूमकेतु, एकसस्थान, अज्ञ, कलेवर, वकट, अभिन्नसंधि, ग्रंथिमान, चतुः पाद, विद्युज्जिह्व नभ, सदृश, निलय, काल, कालकेतु, अनय, सिंहायु, विपुलकाल, महाकाल, रुद्र, सन्तान, सम्भव, सर्वाधीश, शांति वस्तून, निश्चल, प्रलंभ, निमंत्र, ज्योष्मित्, स्वयंप्रभ, भासुर, विरज, निर्दुःख, वीतशोक, सीमंकर, क्षेमंकर, अभयंकर, विजय, वैजयंत, अपराजित, विमाल, तस्त, विजयिष्णु विकस, करिकाष्ठ एकजटि, अग्निज्वाल, ज्वालकेतु, क्षीररस, अघ श्रवण, राहु, महाग्रह, भावग्रह, कुज, शनि; बुध, शुक्र, गुरवश्चेति. अष्टाशीति, ग्रहाश्च वः प्रीयंतां २ ।

ग्राम, नगर, खेड; खर्वड मडंब, पत्तन, द्रोणामुख संवाहन

घोष राजधानी,जिनधाम, प्रासाद, गोपुर,गृहमण्डप, समस्त, वास्तु वास्तव्यास्ताः समर्चनीयाः ब्रह्म, इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋति, वरुण,वायु,कुबेर,ईशान,आर्य,विवस्वत,भूधर,सविन्द्र साविन्द्र, इन्द्र, इन्द्रराज, रुद्र, रुद्रराज, अप, अपवत्स,पर्जन्य जयन्त, भास्कर, सत्यक, भृश, अंतरिक्ष,पुष, वितथ, राक्षस, गन्धर्व, भृंगराज, मृष, दौवारिक सुग्रीव, पुष्पदंत, असुर, शोष, रोग, नाग मुख्य मल्लाह, मृनदेव, अदिति, उदिति, विचारी, पूतना, पाप राक्षसी, चरकीनामधेया वास्तुदेवताः वः प्रीयंतां २ ।

सर्वे गुरुभक्ता अक्षोणकोशकोष्टागारा भवेयुः । दानतपो वीर्यधर्मानुष्ठानं नित्यमेवास्तु । मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्र गुरुसुहृतस्वजनसम्बन्धिबन्धुवर्गसहितस्य अस्य यजमानस्य धनधान्यैश्वर्यद्युतिबलायुयशकीर्तिबुद्धिवर्धनं भवतु । समोद प्रमदा भवंतु । ग्रामदेवता प्रसीदंतु, गृहदेवताः प्रसीदंतु, कुलदेवता प्रसीदंतु दीक्षागुरुवः प्रसदंतु शिक्षागुरुवः प्रसीदंतु विद्यागुरुवः प्रसीदंतु, चातुर्वर्णसंघाः प्रसीदंतु । शांतिभवतु, कांतिर्भवतु तुष्टिभवंतु, पुष्टिर्भवतु, सिद्धिर्भवतु, वृद्धिर्भवतु । अविघ्नमस्तु, आरोग्यमस्तु, आयुष्यमस्तु, शिवकर्मास्तु, कर्मसिद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु इष्टसम्पदस्तु अरिष्टनिरसनमस्तु, धनधान्यसमृद्धिरस्तु । काममांगल्योत्सवाः संतु । शाम्यंतु घोराणि, शाम्यंतु पापानि । पुण्यं वर्धतां, धर्मो वर्धतां, श्रीवर्धतां, आयुवर्धतां कुलं गोत्रं चाभिवर्धतां ।

स्वस्ति भद्रं चास्तु नः, हस्तास्ते परिपंथिनः, शत्रवो निधनं यांतु, निःप्रतिघमलमस्तु शिवमलमस्तु ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसनवर्जितं ।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते ॥ १ ॥

श्री शांतिरस्तु शिवमस्तु, जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव पुष्ठिसमृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु सुखमस्त्वभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनं सदास्तु ॥ २ ॥

भूता भवंतो भव्याश्च जिनाधीशागणाधिपाः ।
गणिन्योदातृसुख्याश्च श्रोतारो यक्षनायकाः ॥३।
यक्ष्यो जिनानां पितरो मातरो मानवस्तथा ।
चक्रिणो बलदेवाश्च केशवाः प्रतिकेशवाः ॥ ४ ॥
नारदाश्च ततो रुद्राश्चतुर्विधसुराधिपाः ।
रोहिण्याद्या जयाद्याश्च श्रयादयस्तिथिदेवताः ॥४॥
महानागाश्च दिक्पाला ग्रहाः वास्तु सुरास्तथा ।
ग्रामाधिदेवता क्षेत्रदेवताः कुलदेवताः ॥ ६ ॥
एते देवगणाः सर्वे भण्याः पुण्याहवाचने ।
ततो देवाः प्रसीदंतु विघ्ना नश्यंतु सर्वथा ॥ ७ ॥
महायज्ञसमारम्भे गंधाबुस्नपने तथा ।
गन्धोदकप्रदाने च शांतिपुष्टयाद्युपक्रमे ॥ ८ ॥
आधानादिक्रियारम्भे ग्रहवक्रत्वसंभवे ।
परमंत्र प्रयोगे च महोत्पाते महारुजि ॥ ९ ॥

सर्वेष्वपि च होमेषु बीजानां सेचने तथा ।
पुण्याहवाचना पुण्या भण्या संकल्पपूर्विका ॥ १० ॥

इति श्री पुण्याहवाचनम् ।

अथ मंगलाष्टक ।

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा ।
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनांमोधौ व्यवस्थायिनां ॥
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधव-
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु वो मंगलं ॥२॥
सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं ।
मुक्तिश्रीनगराधिपजिनपतेः स्वर्गापवर्गप्रदं ॥
धर्मं सूक्तिसुधावचैत्यमखिलं जैनालयं स्वालयं ।
प्रोक्तं तत्त्रिविधं चतुर्विधमिमं कुर्वन्तु वो मंगलं ॥२॥
नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवने ख्याताश्चतुर्विंशतिः ।
श्री मंतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादशाः ॥
ये विष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिका विंशतिः ।
त्रैलोक्याभयदास्त्रिषष्ठिपुरुषाः कुर्वन्तु वो मंगलं ॥३॥
ये पंचौषधिरिद्धयः श्रुततपोरिद्धिं गताः पंच ये ।
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टौ विधाश्चारणः ॥
पंचज्ञानधराश्च येऽपि बलिनो ये बुद्धिरिद्धिश्वराः ।
सप्तैते सकलाश्च ते गणधराः कुर्वंतु वो मंगलं ॥४॥

देव्यश्चाष्ट जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः ॥
श्री तीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्षीश्वराः ॥
द्वात्रिंशत्त्रिदशाग्रहा निधिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा ।
दिक्पाला दश इत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु वो मंगलं ॥५॥

ज्योतिर्व्यंतरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः ।
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररौप्याद्रिषु ॥
इक्ष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे ।
शैले ये मनुषोत्तरे जिनग्रहाः कुर्वंतु वो मंगलं ॥६॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृति महावीरस्य पावापुरे ।
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हतां ॥
शेषाणामपि चोर्ज्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो ।
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु वो मंगलं ॥७॥

ब्राह्मीचन्दनबालिका भगवती राजीमती द्रौपदी ।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा ॥
कुन्तीशीलवती नलस्य दुहिता चूला प्रभावत्यपि ।
पद्मावत्यपि सुन्दरी च प्रमुखाः कुर्वंतु वो मंगलं ॥८॥

यो गर्भावतरेऽर्हतामनु तथा जन्माभिषेकोत्सवे ।
यो जातः परिनिष्क्रमेण सततं यः केवलज्ञान भाक् ॥
यै कैवल्यपुरः प्रवेशमहिमा सम्भावितः स्वर्गिभिः ।
कल्याणानि च पंच सात सततं कुर्वंतु वो मंगलं ॥९॥
इत्थं श्रीजिन मंगलाष्टकमिदं कल्याणकालेऽर्हतां ।

पूर्वाह्ने च महोत्सवे च सततं श्रीसौख्य सम्पत्प्रदं ॥
ये शृण्वंति पठंति तैश्च मनुजैर्धर्मार्थकामान्वितैः ।
लक्ष्मीराश्रयते विपायरहिता कुर्वंतु वो मंगलं ॥१०॥

॥ इति मंगलाष्टकं ॥

॥ शांतिमंत्रः ॥

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । श्रीवीतरागाय नमः । ॐ नमोऽर्हते भगवते, श्रीमते. श्री पार्श्व तीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यानपवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्यमहीव्याप्ताय, अनन्तसंसार-चक्रपरिमर्दनाय, अनन्तदर्शनाय, अनन्तवीर्याय, अनंतसुखाय; सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डलमंडिताय, ऋष्यार्यिकाश्रावकश्राविकाप्रमुख-चतुस्संघोपसर्गविनाशाय, घातिकर्मविनाशाय, अघातिकर्म-विनाशाय । अपवादं अस्माकं छिद छिद, भिद भिद । मृत्युं छिंद२, भिद२ । अतिकामं छिंद२, भिद२ । रतिकामं छिंद२, भिंद२ । क्रोधं छिंद२, भिंद२ । अग्नि छिंद२, भिंद२ । सर्वशत्रु छिंद २, भिद २ । सर्वोपसर्ग छिंद २, भिद २ । सर्वविघ्नं छिंद २, भिंद २ । सर्वभयं छिंद २, भिद२ सर्व

राजभयं छिंद २, भिंद २ । सर्वचोरभयं छिंद२, भिंद२ । सर्वदुष्टभयं छिंद२, भिंद२ । सर्वमृगभयं छिंद२, भिंद२ । सर्वपरमंत्रं छिंद२, भिंद२ । सर्वमात्मकभयं छिंद२ भिंद२ । सर्वशूलभयं छिंद२; भिंद२ । सर्वक्षयरोगं छिंद२, भिंद२ । सर्वकुष्टरोगं छिंद२, भिंद२ । सर्व ज्वरमारिं छिंद२, भिंद२, सर्वगजमारिं छिंद२, भिंद२ । सर्वाश्वमारिं छिंद२, भिंद२ । सर्वगोमारिं छिंद२, भिंद२ । सर्व महिषमारिं छिंद२, भिंद२, सर्व धान्यमारिं छिंद२ भिंद२, । सर्व वृक्षमारिं छिंद२, भिंद२ । सर्वगुल्ममारिं छिंद२ भिंद२ । सर्वपत्रमारिं छिंद२, भिंद२ । सर्वपुष्पमारिं छिंद२ भिंद२ । सर्वफलमारिं छिंद२ भिंद२ । सर्वराष्ट्रमारिं छिंद२ भिंद२ । सर्वदेशमारिं छिंद२ भिंद२ । सर्वविषमारिं छिन्द२ भिन्द२ । सर्वक्रूररोगं छिंद२ भिंद२ । सर्ववेतालशाकिनीभयं छिंद२ भिंद२ । सर्ववेदनीयं छिंद२ भिन्द२ । सर्वमोहनीयं छिंद२ भिंद२ ।

ॐ सुदर्शनमहाराजचक्रविक्रमतेजोबलशौर्यशांतिं कुरु कुरु । सर्वजनानन्दनं कुरु२ । सर्वभव्यानन्दनं कुरु२ । सर्वगोकुलानन्दनं कुरु२ । सर्वग्रामनगरखेटखर्वटमडम्बपत्तनद्रोणामुखसहानन्दनं कुरु २ । सर्वलोकानन्दनं कुरु २ । सर्वदेशानन्दनं कुरु २ । सर्वयजमानानन्दनं कुरु २ । हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं व्याधिव्यसनवर्जितं अभयक्षेमारोग्यं स्वस्तिरस्तु । शांतिरस्तु । शिवमस्तु, कुलगोत्र-

धन धान्यं सदास्तु । चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य मल्लि, वर्द्धमान, पुष्पदंत, शीतल, मुनिसुव्रत, नेमिनाथ पार्श्वनाथ, इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहार्थं गंधोदकधारावर्षणम् ॥

॥ इति शांतिमंत्र सम्पूर्णः ॥

सहस्रनाम व स्वस्ति विधान ।

सकली करण किये बाद जिनसेनाचार्य कृत सहस्रनाम बोल एक एक दशकके दश अर्घ चढ़ाना ।

सहस्र नामके पाठके पश्चात् नीचे प्रमाण स्वस्ति विधान पढ़ना ।

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं
स्याद्वादनायकमनन्तचतुष्टयार्हं ।
श्री मूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु—
र्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेषमयाऽभ्यधायि ॥ १ ॥

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय
स्वस्ति स्वभावमहिमोदय सुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाशसहजोर्ज्जितदृङ्मयाय
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ॥ २ ॥

स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय
स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय
स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ॥३॥

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः ।

आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्यवल्गान्
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमियज्ञम् ॥ ४ ॥
अर्हत्पुराण पुरुषोत्तमपावनानि
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एवं ।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥ ५ ॥
पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः । श्री सम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः । श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः । श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः । श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः । श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः । श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनंतः । श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शांतिः । श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः । श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः । श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः । श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः । पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

नित्याप्रकम्पाद्भुतकेवलौघाः
स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ १ ॥
कोष्टस्थधान्योपममेकबीजं
संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ २ ॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा—
दास्वादनघ्राणविलोकनानि ।
दिव्यान्मतिज्ञानवलाद्वहंतः
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ३ ॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः
प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ४ ॥

जंघावलि श्रेणिफलांबुतन्तु—
प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः ।
नभोऽगणस्वैरविहारिणश्च
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ५ ॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्न
लघिम्नि शक्ता कृतिनो गरिम्णि ।
मनोवपुर्वाग्वलिनश्च नित्यं
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ६ ॥

सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं
प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ७ ॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं
घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।

ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ८ ॥

आमर्षसर्वौषधयस्तथाशी —

विषंविषाद्दष्टिविषं विषाश्च ।

सखिल्ल विड्जल्लमलौषधीशाः

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ९ ॥

क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो

मधुं स्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः ।

अक्षीणसंवासमहानसाश्च

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ १० ॥

इति स्वस्ति मङ्गल विधानम्

स्वस्ति मङ्गल विधान पीछे जो उद्यापन करना हो तो प्रथम देवपूजा, शास्त्रपूजा, गुरुपूजा, सिद्धपूजा, कलिकुंडपूजा, इस प्रमाणसे पांच पूजाएं करना और पीछे उद्यापन प्रारम्भ करना चाहिये ।

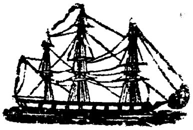

॥ ॐ ॥

अथ रविवारव्रत उद्यापनम् ।

नत्वा श्रीमज्जिनाधीशं सर्वज्ञं सुखदायकम् ।
वक्ष्ये सूर्यव्रतं यस्य पूजासौख्यं प्रदायिनी ॥ १ ॥

आदौ गंधकूटीपूजा ततस्नपनमाचरेत् ।
पश्चात् कोष्टगता पूजा कर्तव्या विबुधोत्तमैः ॥ २ ॥

पार्श्वनाथजिनेन्द्रस्य प्रतिमां परमां शुभाम् ।
आह्वाननादिविधिना स्थापयेत् स्वस्तिकोपरि ॥ ३ ॥

पश्चात् पूजा प्रकर्तव्या विधिवदष्टधा मुदा ।
उत्तमां सर्वसामग्रीं मेलयित्वा त्रिशुद्धितः ॥ ४ ॥

इति जिनपूजनप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ स्थापना ।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य, दिष्टं तेनोटङ्कितस्थापनस्य ।
स्वामीन् निर्नेतु वषट्कारजागृत्, सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टसिद्धिम् ॥

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणिपार्श्वनाथ अत्र अवतर २ संवौषट् स्वाहा ।
ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा (स्थापनं)
अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् सन्निधिकरणम् ॥

ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमो नमः ॥ ॐ ह्रीं स्वस्ति२, जीव२, नन्द२, वर्धस्व२, विजयस्व२, अनुसाधि२, पुनीहि२, पुण्याहं२, प्रियंताम्२, मंगलं२, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथाष्टकम्।

क्षीरहीरगौरनीरपूरवारिधारया।
मन्दकुन्दचन्दनादिसौरभेण सारया॥
चिन्ततार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्।
पूजयाम्यचिन्त्यतार्थदं हि पार्श्वनायकं॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री चितामणिपार्श्वनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्कतर्कवर्जनैरनर्घचन्दनद्रवैः।
कुंकुमादिमिश्रितैरनल्पषट्पदाश्रितैः।
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्॥
पूजयाम्य०॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री चितामणिपार्श्वनाथाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

औषधेन सिन्धुफेनहारभासमुज्वलै-
रक्षितैः सुलक्षितैरजोतखण्डवर्जितैः॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्।
पूजयाम्य०॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री चितामणिपार्श्वनाथाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजातवारिसूतकुन्दहेमकेतकैः।
मालतीसुचंपकादिसारपुष्पमालया॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्।
पूजयाम्य०॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री चितामणिपार्श्वनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजनेन पायसादिभिः समं च षट्रसैः ।
मोदकोदनादिभिः सुवर्णभाजनस्थितैः ॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नसोमसर्पिषादिदीपकैः कृतोज्वलैः ।
वातघाततोपकोपकंपरूपवर्जितैः ॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सीलिकासितागुरुप्रधूपकैः शुभप्रदैः ।
वानमानवर्धमानमाननीमनोहरैः ॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफलाम्रकर्कटीसुदाडिमादिभिः फलैः ।
वर्णमिष्टसौरभादिचक्षुरादिमोदनैः ॥
चिन्तितार्थकामधेनकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीवनासितागुरुद्रवाक्षतैः प्रसूनकैः ।
शुभैश्चरुप्रदीपकैः सुधूपरूपसत्फलैः ॥

सुवर्णभाजनस्थितैरमारमारमाभिधैः ।
ज्ञानभूषणायकं महामुनिगर्वीच्यते ।। ९ ।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ प्रत्येक पूजा । *

(१)

आषाढशुक्लपक्षस्य प्रथमो रविवासरः ।
तद्दिने प्रोषधं कुर्यात् सूर्यव्रतप्रसिद्धये ।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतप्रथमोपवासप्रोषधोद्योतनाय श्रीजिनेन्द्राय जलचंदनाक्षतपुष्पचरुदीपधूपफलार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीयादित्यवारे च प्रोषधं यः तपस्यति ।
पूर्वसूरिसदाचारी सूर्यव्रतप्रसिद्धये ।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० ।

तृतीयादित्यवारे च प्रोषधं हि करोति यः ।
तस्य स्यात् सर्वसिद्धिश्च सूर्यव्रतप्रसिद्धये ।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयोपवासप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

त्रिशुद्धया प्रोषधं कुयात् चतुर्थे रविवासरे ।
पुण्येन तेन संसिद्धिः सूर्यव्रतप्रसिद्धये ।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थोपवासप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

* श्रीफल साथिया पर चढाववां ।

य: कुर्यात् प्रोषधं भव्यं पंचमे सूर्यवासरे ।
धनधान्यागमस्तस्य सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० ।

षष्टे हि रविवारे च प्रोषधं परमादरात् ।
य: करोति स धन्यश्च सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्टमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० ।

सप्तमे रविवारे च प्रोषधो हि करोति य: ।
सर्वसिद्धिर्गृहे तस्य सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० ।

अष्टमे रविवारे च प्रोषधं सुखदायकम् ।
सुखार्थं कुरुते नित्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० ।

प्रोषधं सुखदं कुर्यात् नवमे रविवासरे ।
सर्वसंपद्गृहे तस्य सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतनवमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० ।

आषाढशुक्लादारभ्य नवेति सूर्यवासरा: ।
प्रोषधेन समं कुर्यात् स नर: सुखमेधते ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमवर्षे रविव्रतोपवासप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं नि० ।

(२)

आषाढ़ मासे खलु शुक्लपक्षे, सूर्यादिवारे द्वितीये च वर्षे ।
आचाम्लभुक्तं पुनरेकवारं, करोति य: सर्वसुखं लभेत ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे प्रथमकांजिकाहारप्रोषधो-द्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीयवर्षसम्बन्धिद्वितीये सूर्यवासरे ।
कांजिकाहारकं कुर्यात् स्वर्गसोपानप्राप्तये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे द्वितीयकांजिकाहारप्रोषधो-द्योतनाय जलादिकं नि० स्वाहा ।

द्वितीयवर्षसम्बन्धितृतीये रविवासरे ।
तद्दिने कांजिकाहारं कुर्वन्तु व्रतसिद्धये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे तृतीयकांजिकाहारप्रोषधो-द्योतनाय जलादिकं नि० स्वाहा ।

द्वितीये खलु वर्षे च चतुर्थे रविवासरे ।
तद्दिने कांजिकाहारं कर्तव्यं भव्यसत्तमैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे चतुर्थकांजिकाहारप्रोषधो-द्योतनाय जलादिकं नि० स्वाहा ।

द्वितीयवर्षसम्बन्धि पञ्चमे सूर्यवासरे ।
कांजिकाहारं कुर्यात् सुखसम्पत्तिहेतवे ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे पंचमकांजिकाहारप्रोषधो-द्योतनाय जलादिकं नि० स्वाहा ।

द्वितीये वर्षके रम्ये षष्ठे च रविवासरे ।
कांजिकाहारं भोक्तव्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे षष्ठमकांजिकाहारप्रोषधो-द्योतनाय जलादिकं नि० स्वाहा ।

वर्षे द्वितीये भो भव्याः कांजिकाहारमुत्तमं ।
कुर्वन्तु सर्वदा नित्यं सप्तमे सूर्यवासरे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे सप्तमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

द्वितीयवर्षे संजाते रविवारे चाष्टमे पुनः ।
कांजिकाहारभुक्तिश्च कर्तव्या व्रतशुद्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे अष्टमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

द्वितीयवर्षेसंजाते नवमे रविवासरे ।
सम्प्रोक्तं कांजिकाहारं व्रतसिद्धयै विदांबरैः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री द्वितीयवर्षे नवमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० स्वाहा ।

सूर्यव्रतस्य सम्बंधि कांजिकाहारकान्नव ।
कृत्वा च द्वितीये वर्षे पार्श्वनाथं च पूजयेत् ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री द्वितीयेवर्षे कांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं नि०

(३)

वर्षे तृतीये पुनरागते च क्षारं रसं त्याज्य करोति भुक्तिम् ।
आषाढमासे प्रथमे च पक्षे सूर्यादिवारे लभते सुखं स ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितप्रथमैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

तृतीयवर्षे सम्बन्धि द्वितीये रविवासरे ।
तद्दिने चैकभुक्तं च कर्तव्यं लवणं विना ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सुर्यव्रततृतोयवर्षे लवणरहितद्वितीयभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तृतीये रविवारे च तृतीये वर्षे पुनः ।
लवणेन रहिता भुक्तिः कर्तव्या व्रतसिद्धये ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रो सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहिततृतीयैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामोति स्वाहा ।

चतुर्थो रविवारे च तृतीये वर्षे मुदा ।
लवणेन विना भुक्तिः कारयेत् सुविचक्षणैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितचतुर्थैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचमे सूर्यवारे हि वत्सरे तृतीये पुनः ।
लवणेन विना भुक्तिः क्रियते व्रतधारकैः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रो सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितपंचमैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्टे हि रविवारे च लवणेन विना नरः ।
भुक्तिं कुर्यात् स पूतात्मा तृतीये वर्षे मुदा ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सुर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितषष्ठैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तमे सूर्यवारे च वत्सरे हि तृतीयके ।
लवणेन विना भुक्तिं कुर्वन्तु व्रतसिद्धये ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितसप्तमैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमे सूर्यवारे च तृतीये वत्सरे पुमान् ।
लवणेन विना भुक्तिं यः करोति स धर्मभाक् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितअष्टमैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

तृतीये वत्सरे जाते नवमे रविवासरे ।
लवणेन विना भुक्तिं कुर्वन्तु हितचिंतकाः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितनवमैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

अमुना हि प्रकारेण कुर्वन्ति ये नराः शुभम् ।
व्रतमादित्यसंज्ञं च ते नराः धर्मनायकाः ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं नि० ।

(४)

आषाढमासे खलु शुक्लपक्षे वर्षे चतुर्थे पुनरागते च ।
सूर्यादिवारे चटुकप्रमाणं भोक्तव्यमशनंव्रतधारकेण ।२।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे प्रथमैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चतुर्थे वत्सरे जाते द्वितीये रविवासरे ।
चाटूवैकमन्नं भोक्तव्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे द्वितीयैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर्षे चतुर्थे संजाते तृतीये रविवासरे ।
एकचाटुप्रमाणान्नं भोक्तव्यं व्रतसिद्धये ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे तृतीयैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि. ।
वर्षेचतुर्थेचतुर्थे हि वासरे रविसंज्ञके ।
चाटुप्रमाणमन्नं च भोक्तव्यं व्रतशुद्धये ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षेचतुर्थैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।
चतुर्थे वत्सरे जाते पंचमे सूर्यवासरे ।
एकचाटुप्रमाणान्नं भोक्तव्यं व्रतधारिणा ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षेपंचमैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।
चतुर्थे हि समायाते षष्टे रविदिने तथा ।
चाटुप्रमाणं भोक्तव्यं रविव्रतविशुद्धये ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षेषष्टैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।
वर्षे चतुर्थे संजाते सप्तमे रविवासरे ।
एकचाटुप्रमाणान्नं भोक्तव्यं परमादरात् ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षेसप्तमैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।
अष्टमे रविवारे च वर्षे चतुर्थे मुदा ।
चाटूवैकमन्नं भोक्तव्यं सूर्यव्रत विशुद्धये ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षेअष्टैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।
वर्षे चतुर्थे नवमे च वासरे सूर्यसंज्ञके ।
चाटुप्रमाणं भोक्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षेनवमैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

चतुर्थे वर्षमध्ये च सूर्ये सूर्ये हि वासरे ।
नवमं चाटुकं कृत्वा पार्श्वनाथं प्रपूजयेत् ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे चाट्वेकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं नि०

(५)

आषाढशुक्लपक्षस्य प्रथमादित्यवासरे ।
तक्रोदनं च भोक्तव्यं केवलं वर्षपंचमे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यपंचमेवर्षे प्रथमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

वर्षे पंचमे जाते द्वितीये सूर्यवासरे ।
निवेडनामभुक्तिश्च कर्तव्या व्रतधारिणा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमेवर्षे द्वितीयनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि.।

तक्रोदनं हि भोक्तव्यं वत्सरे पंचमे तथा ।
तृतीये सूर्यवारे च सूर्यव्रतविधायकः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमेवर्षे तृतीयनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि. ।

वर्षे पंचमके भव्यैः कर्तव्यं हि निवेडकं ।
चतुर्थे सूर्यवारे च रविव्रतविशुद्धये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमेवर्षे चतुर्थनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

पंचमेष्टे समायाते पचमे रविवासरे ।
निवेडनामभुक्तिश्च कर्तव्या व्रतधारकैः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमेवर्षे पंचमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

पंचमेष्टे समायाते षष्ठे च रविवासरे ।
निवेडप्रोषधं कुर्यात् सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमेवर्षे षष्ठमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

सप्तमे रविवारे च निवेडं च प्रकारयेत् ।
पंचमे वत्सरे भव्यः आदित्यव्रतसिद्धये ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमेवर्षेसप्तमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

अष्टमे सूर्यवारे च पंचमे वत्सरे मुदा ।
निवेडभुक्तिमादाय पार्श्वनाथं प्रपूजयेत् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमेवर्षे अष्टमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

पंचमेष्टे समायाते नवमे रविवासरे ।
तक्रोदनं च भोक्तव्यं केवलं व्रतधारिणा ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमेवर्षे नवमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

निवेडं नवमे प्रोक्तं पंचमे वत्सरे शुभे ।
पूजनं पार्श्वनाथस्य स्मरणं भजनं कुरु ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमेवर्षे निवेडप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं नि० ।

(६)

एकान्नं च भोक्तव्यं वर्षे षष्ठे समागते ।
आषाढशुक्लपक्षस्य प्रथमे रविवासरे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे प्रथमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

षष्ठे संवत्सरे जाते द्वितीये रविवासरे ।
एकान्नमेव भोक्तव्यमपरान्नं न सर्वथा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत षष्ठमे वर्षे द्वितीयैकान्नप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

द्रव्यप्रमाणवर्षे हि तृतीये सूर्यवासरे ।
एकान्नभुक्तिः कर्तव्या सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत षष्ठमेवर्षे तृतीयैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

चतुर्थे सूर्यवारे च वर्षे षष्ठे तथैव च ।
एकान्नभुक्तिः संप्रोक्ता सूर्यव्रतप्रकाशकैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे चतुर्थैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

वर्षे षष्ठे समायाते पंचमे रविवासरे ।
एकान्नमेव भुंजीत सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे पंचमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

एकान्नभुक्तिः संप्रोक्ता सूर्यव्रतप्रकाशकैः ।
षष्ठे वर्षे प्रयाते च षष्ठे मार्तंडवासरे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे षष्ठैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

षष्ठेष्टे सम्प्रयाते च सप्तमे भानुवासरे ।
एकान्नभुक्तिः कर्तव्या सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे सप्तमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

अष्टमे रविवारे च षष्ठे वर्षे सुखार्थिभिः ।
एकमन्नं हि भोक्तव्यं सूर्यव्रतप्रकाशकैः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे अष्टमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

षष्ठे संवत्सरे जाते नवमे सूर्यवासरे ।
एकान्नभुक्तिः संप्रोक्ता सूर्यव्रतप्रकाशकैः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे नवमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

षष्ठे वर्षे प्रकर्तव्या नव चैकान्नभुक्तयः ।
आषाढ़मासमारम्भ सूर्ये सूर्ये च वासरे ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे एकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(७)

आषाढ़मासे शुभशुक्लपक्षे मार्तण्डवारे खलु सप्तमाब्दे ।
निगोरसं भोजनमेकवारम् कर्तव्यमादित्यव्रताय भव्यैः ।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत सप्तमवर्षे प्रथमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

सप्तमेष्टे समायाते द्वितीये रविवासरे ।
गोरसं नैव भोक्तव्यं दधिदुग्धघृतादिकं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत सप्तमवर्षेद्वितीयनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

सप्तमे वत्सरे जाते तृतीये सूर्यवासरे ।
गोरसेन विना सर्वं भोक्तव्यं व्रतधारिणा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत सप्तमवर्षे तृतीयनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

चतुर्थे रविवारे च वर्षे सप्तमके तथा ।
गोरसं नैव भोक्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे चतुर्थनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

सप्तमेष्टे समायाते पंचमे रविवासरे ।
दुग्धं दधि घृतं नैव भोक्तव्यं व्रतधारिणा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे पंचमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

षष्ठे हि रविवारे च वर्षे सप्तमके ध्रुवं ।
गोरसं सर्वथा त्याज्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत सप्तमवर्षे निगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

सप्तमे वर्षे संप्राप्ते सप्तमे रविवासरे ।
गोरसं नैव भोक्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे सप्तमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

अष्टमे रविवारे हि सप्तमे वत्सरे मुदा ।
दधिदुग्धघृतं त्याज्यं सूर्यव्रतविशुद्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे अष्टमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय नि० स्वाहा ।

संजाते सप्तमे वर्षे नवमे रविवासरे ।
गोरसं सर्वथा त्याज्यं सूर्यव्रतविशुद्धये ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत सप्तम वर्षे नवम निगोरसभुक्तिप्रोषधो-द्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

सप्तमे वर्षमध्ये हि विना गोरसभोजनं ।
कुर्वन्ति जनास्तेषां सुखं स्यात् सर्वमोक्षजं ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत सप्तमवर्षे निगोरसभुक्तिप्रोषधो-द्योतनाय पूर्णार्घं नि० स्वाहा ।

(८)

अष्टमाब्दे समायाते रूक्षाहारस्तु कारयेत् ।
आषाढ़शुक्लपक्षस्य प्रथमे रविवासरे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे प्रथम रूक्षाहारप्रोषधोद्योत-नाय अर्घं नि० स्वाहा ।

अष्टमे हायने जाते द्वितीये रविवासरे ।
भोजनं एकवारं च घृततैलविना बुधैः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे द्वितीय रूक्षाहारप्रोषधोद्योत-नाय अर्घं नि० स्वाहा ।

अष्टमे वत्सरे प्राप्ते तृतीये रविवासरे ।
रूक्षाहारो हि कर्तव्योः सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे तृतीयारूक्षाहारप्रोषधोद्योत-नाय अर्घं नि० स्वाहा ।

अष्टमे वत्सरे प्राप्ते चतुर्थे भानुवासरे ।
रूक्षाहारस्तु कर्तव्यः सूर्यव्रतविशुद्धये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे चतुर्थेरूक्षाहारप्रोषधोद्योत-नाय अर्घं नि० स्वाहा ।

सम्वत्सरेऽष्टमे प्राप्ते पञ्चमे रविवासरे ।
रूक्षाहारस्तु कर्तव्यः सूर्यव्रत प्रसिद्धये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे पंचमरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

वर्षाष्टमे हि संजाते षष्ठे मार्तण्डवासरे ।
घृततैलं हि संत्याज्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे षष्ठमरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

सप्तमे सूर्यवारे च वसु संवत्सरे गते ।
रूक्षाहारं च कर्तव्यं प्राशुकैः व्रतधारिकैः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे सप्तमरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

अष्टमे हायने प्राप्ते रविवारेऽष्टमे पुनः ।
रूक्षाहारं हि कर्तव्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे अष्टमरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

अष्टमेष्टे समायाते नवमे रविवासरे ।
रूक्षाहारस्तु कर्तव्यः रविव्रतविशुद्धये ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे नवमरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

अष्टमे वर्षमध्ये च रूक्षाहारस्तु कारयेत् ।
घृततैलं च संत्याज्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे रूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं नि० स्वाहा ।

(९)

आषाढ़मासे खलु शुक्लपक्षे,
मार्तण्डवारे नवमे हि वर्षे ।
भुक्तिश्च कुर्यात् खलु चैकवारं,
एषा विधिः श्रीमुनिभिः प्रयुक्ता ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमे वर्षे प्रथमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

नवमेष्टे समायाते द्वितीये सूर्यवासरे ।
एकस्थानं च कर्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमे वर्षे द्वितीयैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

हायने नवमे जाते तृतीये रविवासरे ।
एकस्थानं विधेयं च सूर्यव्रतविशुद्धये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमे वर्षे तृतीयैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

नवमे वत्सरे प्राप्ते चतुर्थे सूर्यवासरे ।
एकस्थानं प्रकर्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमे वर्षे चतुर्थैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

नवमे वर्षे मध्ये च पंचमे रविवासरे ।
तद्दिने युगपद् ग्राह्यं भोजनं व्रतशुद्धये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमे वर्षे पंचमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

नवमे हायने प्राप्ते षष्ठे मार्तण्डवासरे ।
एकस्थानं प्रकर्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतनवमे वर्षे षष्ठमेकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

नवमे च वर्षे प्राप्ते दिने सूर्यभिधानके ॥
सप्तमे युगपद्ग्राह्यं भोजनं व्रतधारिना ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमे वर्षे सप्तमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

अष्टमे भानुवारे च नवमेष्टे प्रकारयेत् ।
एकस्थानं हि भो भव्याः सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमे वर्षे अष्टमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० स्वाहा ।

नवमे वत्सरे जाते नवमे सूर्यवासरे ।
युगपद् भोजनं ग्राह्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमे वर्षे नवमैकप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अमुना हि प्रकारेण कर्तव्यं सूर्यसद्व्रतम् ।
पूजनम् पार्श्वनाथस्य नववर्षप्रमाणकम् ॥ १० ॥

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैः नैवेद्यैः दीपधूपकैः ।
फलार्घेण समभ्यर्च्य पूर्णव्रतम् समाचरेत् ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रत नवमे वर्षे एकस्थानप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं नि० स्वाहा ।

अथ जाप्य मन्त्र ।

ॐ नमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावति-सहिताय दुष्टग्रहशोकसर्वज्वररोगाल्पमृत्युविनाशनाय सूर्य-व्रतद्योतनाय नमः ।

उपरोक्त मन्त्रका १०८ वार जाप करना चाहिये ।

अथ जयमाला ।

त्रिभुवनपतिपूज्यं देवदेवेन्द्रवन्द्यं ।
जननमरणहारं पापसंतापवारं ॥
सकलसुखनिधानं सर्वदोषावसानं ।
फणिमणिसहितं तं संस्तुवे पार्श्वनाथम् ॥१॥

× × × ×

अमरासुर नर सेवितचरणं, वन्दे पार्श्व जिनं नरशरणं ।
दूरीकृतनरपापाचरणं, संसृति संभवजनदुखहरणं ॥ १ ॥
क्रोध मान माया संवरणं, संसाराम्बुधि तारण तरणं ।
वारित जनमजराभयमरणं, तर्जितदर्शन ज्ञानावरणं ॥ २ ॥
कृत पंचेन्द्रिय द्विप वशकरणं, दर्शनज्ञानं चरिताभरणं ।
येन सुविहितं सेतूद्धरणं, यत्र न स्यात् जरामाचरणं ॥३॥
धर्माराम विवर्धनमेहं, नीलमणि प्रभु शोभित देहं ।
सिद्धिवधू सम्भावित नेहं, नागनरामर वन्दित देहं ॥ ४ ॥

धर्माधर्म प्रकाशन धीरं, मोहमहारिपु भंजन वीरं ।
दुःखदावानल शमन सुनीरं, दर्शित जनता भवजल तीरं ।५।
महीचन्द्रायतिराजैर्महितं मेरुचन्द्र स्तुतिवाक्यैः सहितं ।
पापतिमिरनाशनरविभूरं, जयसागर वांछित सुखपूरं ।।६।।

घत्ता—इति वरजयमाला, ये पठन्ति त्रिशुद्धया ।
रविव्रत सुखकारं, कुर्वंते ये नराश्च ।
दिविजखगनरा वा ते लभंते नितान्तं ।
सकलसुखसमाजं मोक्षसौख्यास्पदं च ।। ७ ।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय दुष्टग्रहशोक-सर्वज्वररोगाल्पमृत्युविनाशनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शांतिं पुष्टिं च तुष्टिं च, कल्याणं कमलाकरं ।
पार्श्वनाथप्रसादेन, देयात् पद्मावती च सा ।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

इति भट्टारक श्री महीचन्द्र शिष्य ब्रह्मश्री जयसागरविरचितं सूर्यव्रतोद्यापनं सम्पूर्णम् ।

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

अथ षोडशकारणोद्यापनं ।

पीठिका ।

आदौ नमामि वृषभं जिनेन्द्रं, ततो गरिष्टं श्रुतमंगपूर्वं ।
विद्याविभूषं व्रतिनांवरिष्ठं, श्रीभूषणं शारदचन्द्रकीर्ति ॥
जिनसेनादयो देवा ते भवा मोक्षमार्गगाः ।
ते सर्वे मे शुभं दद्युः पूजा प्रारम्भ कर्मणि ॥२॥
नत्वा जिनं श्रुतं चैव, गुरुं चापि विशेषतः ।
वक्ष्ये बुद्धयानुसारेण व्रतं षोडशकारणं ॥ ३ ॥
पूजाकारकैः भव्यैः ह्यादौ श्रीमज्जिनालये ।
गत्वा नत्वा गुरुं देवं कर्तव्या प्रार्थना परा ।४॥
भो स्वामिन् ! कर्तुमिच्छामि व्रतस्योद्यापनं महत् ।
तत्कथं क्रियते भव्यैः मोक्षाप्तयै कर्महानये ॥ ५ ॥
गुरुस्ततोऽवदद्वाक्यं गम्भीरं गुणगर्भितं ।
उपकाराय भव्यानां पापघ्नं मोक्षदायकं ॥ ६ ॥
वर्षषोडशपर्यन्तं कर्तव्यं व्रतमुत्तमम् ।
पूजाद्रव्यविधानैश्च ध्येयाः षोडशभावना ॥ ७ ॥
अभिषिच्यामृतैः[1] सारैः पूजाद्रव्यैश्च पूजयेत् ।
गद्यपद्यनुतिस्तोत्रैर्जयमाला प्रकीर्तनैः ॥८॥
जाते षोडशमे वर्षे व्रतोद्यापनमाचरेत् ।
चतुर्विधमहासंघैः साक्षीकृत्य महोत्सवैः ॥ ९ ॥

१—पंचामृत ।

गीतनर्तमहावाद्यैश्चन्दोपकविराजितैः ।
छत्रचामरसंकीर्णैर्नारंगविचित्रितैः ॥ १० ॥
सुशब्दार्थभरैस्तोत्रैः पंतितैश्च विशारदैः ।
पुष्पचन्दनकर्पूरैः केशरैश्चाक्षतैः फलैः ॥ ११ ॥
नालिकेरलवंगादिसामग्री प्रथम रचेत् ।
मंडलं विशदं कार्यं चतुष्कोणं स्फुरत्प्रभं ॥ १२ ॥
रम्यैर्मणिमयैश्चूर्णैः सुकोष्टं चिंतितार्थदं ।
संख्यायां दिव्यरूपं च रस बाण कलाधरैः× ॥१२॥
विधानं परमं कार्यं मन्त्रोचारणपूजितैः ।
तांबूलैस्तिकैर्वस्त्रैः कुर्यात्संघस्य चर्चनं ॥ १४ ॥
अनेकविधिना सारं तीर्थेशपदकारणं ।
व्रतं संपाद्यते भव्यैः प्रीणितं परमेश्वर ॥ १५ ॥

इति पिठिका विधान ।

अथ पूजा ।

अनन्तसौख्यामृतकूपरूपंजिनेन्द्रसेव्य परमं पवित्रं ।
कर्मारिनाशाय हि वज्रतुल्यं संस्थापये षोडशकारण सत् ॥

ॐ ह्रीं षोडशकारणानि अत्रावतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अमलक्षीरसमुद्रसंभव वारिपूरितधारया ।
कनककुम्भसमाश्रिताद्भुत पापतापनिवारया ॥

× २५६ कोठा ।

नमामि षोडशभावनां भवनाशहेतु शिवाप्तये ।
इन्द्रचन्द्रनरेन्द्रनागखगेन्द्रयतिपतिपूजितं ॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो जलं ॥ १ ॥
सरसकेशरमलयचन्दनपरिमलाकृतषट्पदैः ।
भव भयातपभंजकैः शिवसौख्यदानविधायकै ॥
नमामि षोडश० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥
विशदमौक्तिकमालशाली गगनतारकसद्दशैः ।
कमलसम्भवकमलवासितखण्डवर्जिततंदुलैः ॥
नमामि षोडश० ।। अक्षतान् ॥ ३ ॥
भ्रमरगुंजतकमलकेतकीजातिचम्पकपुष्पकैः ।
कुन्दसारलवंगपाटलगन्धगन्धितदिग्मुखैः ॥
नमामि षोडश० । पुष्पम्० ॥ ४ ॥
विविधलड्डुकपरमखज्जकपायसान्नधरोदनैः ।
पूतस्तूपघृतान्वितैर्वरशाकपानसमन्वितैः ॥
नमामि षोडश० । नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
तिमिरसंचयनाशकारकदीपमणिमयभासुरैः ॥
घृतवरैर्हि विकारवर्जितज्ञानदीपकदायकैः ।
नमामि षोडश० । दीपम् ॥ ६ ॥
नविनजलधरपटलमेचकधूपसुरभवासितैः ।
यक्षधूपसुदेवकष्टममोहअगुरुविमिश्रितैः ॥
नमामि षोडश० । धूपम् ॥ ७ ॥

फनसचोच सदा फलाम्रकपित्थदाडिममाधवी ।
वीजपूरपवित्रचिर्भटमूगलकुचसुकर्कटैः ॥
नमामि षोडश० । फलं ॥ ८ ॥

जलेन गन्धेन शुभाक्षतेन पुष्पेण हव्येन सुदीपकेन ।
फलेन धूपेन व्रत सुखाप्त्य श्रीभूषणानां परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अर्घं ।

अथ जयमाला ।

सुगुणभण्डारं विगतविकारं, संसाराणव भयहरणं । कलिमलनाशणं सुमइपयासणं, पंचमगइमय सुहकरणं ॥ १ ॥ इह षोडशभावण परम तत्त, इह परभवगमण सहाय सत्त । इह तित्थेसर पद दाण सार, इह तारह रवि संसार पार ॥ २ ॥ इह भावणदोविभोग होइ, इह भावणदो सेवेसु लोय । इह भावणदो विहडे कुकम्म, इह भावणदो मह होइ धम्म, ॥ ३ ॥ इह भावण, इंदर पदवी सहाय, इह भावणदो सीयरिसिय राय । इह भावणदो होउ सफल जम्म, इह भावणदो सवि पुण्य कम्म ॥ ४ ॥ इह भावण अम्मजरा विणास, इह भावण शिवपद धरइ पास । इह भावण कम्म-कलङ्क दूर इह भावण सुहसम्पति पूर ॥ ५ ॥ इह भावण भवतारण सुणाव, इह भावणदो पद अमर-गाव । इह भावणदो कुलदोसनास, इह भावणदो

सविवय पयास ॥ ६ ॥ इह भावण तस थावर हरंति, इह भावण सुहसंपय करन्ति । इह भावण गयण सु प्राणभंग, इह भावणदो तणु कणयरंग ॥ ७॥

घत्ता—सिरिभूषण कहियं, गुणगण सहियं,
चन्द्रकीर्ति समपद कमलं ।
सविकम्म विसुद्धं, पापविमुक्कं,
बभणाण भणियं विमलं ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धादिषोडशकारणेभ्यो महार्घ्यं ।

अथ प्रत्येक पूजा ।

षट्पंच द्विकोष्टकमांडलं शुभं,
वेद्यां स्थितं पंडितलोकमान्यं ।
सदक्षतैः पुष्पचयैः क्षिपामि,
संस्थापये मोक्षसुखाय सारं ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

सम्यक्तमूलतो ज्ञेयं पंचविंशमलोज्झितं ।
सत्यशौचाद्योपेतं सर्वज्ञप्रतिपादितं ॥

ॐ ह्रीं अष्टानवतिसांगोपांगरहितदर्शनविशुद्धये जलं, चन्दनं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं धूपं, फलं अर्घं, नि० स्वाहा ।

निशंकितांगांकितमाद्यमर्घ्यं, मुनींद्रवंद्यं भवतापमुक्तं ।
गंधैः सुपुष्पाक्षतहव्यदीपैर्यजे सदा कर्मकलङ्कहीनं ॥

ॐ ह्रीं निशंकितगुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥१॥

सर्वकांक्षविनिर्मुक्तं सर्वदोषविवर्जितं ।
निष्कांक्षाव्रतसम्पन्नं पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं निकांक्षितगुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥२॥

सुगन्धे चापि दुर्गन्धे सन्मुखं न पराङ्मुखं ।
विचिकित्साविनिर्मुक्तं पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सागुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥३॥

संसारे कुत्सिते धर्मे व्रते शास्त्र विशेषतः ।
मूढता यस्य नास्त्येव पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं निर्मूढ्यगुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥४॥

सर्वदा सर्वसंघेषु चोपगूहनमातनोत् ।
मौनधारी व्रतो धारी पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं उपगूहनगुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥५॥

व्रतात्संचलितो धीरस्तस्य तस्मिन् व्रते दृढः ।
यत्करोति मुनीशं हि पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं संस्थितिकरणगुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥६॥

व्रतयुक्त विशेषेण वात्सल्यांगरतो मुनिः ।
विष्णुकुमारसादृश्य पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं वात्सलांगयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥७॥

चतुरो यः कृपायुक्तः प्रभावांगेषु तत्परः ।
धर्मध्यानरतो नित्यं पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं प्रभावनागुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥८॥

सूर्याचन्द्रादिनां पूजा न करोति कदाचन ।
गंगासिन्धुजलैर्दिव्यैः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं सूर्यार्घदानमिथ्यात्वरहितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥९॥

नवग्रहाणां दानेभ्यो विरतो मुनिसत्तमः ।
त्रिवर्णशुद्धो मोक्षार्थी पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं नवग्रहदानरहितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥१०॥

संक्रांतिसमये दानं मिथ्यादृष्टिप्रकल्पितं ।
तस्माद्यो रहितः साधुः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं संक्रांतिदानरहितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥११॥

नीचकर्म ग्रहजारिं संध्यावन्दनं मुञ्चति ।
विश्वतत्त्वप्रकाशार्कं पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं गायत्रीमन्त्रजाप्यरहितायदर्शन जलादिकं ॥१२॥

ध्यानाध्ययनहोमेषु कर्मकाष्टाहुतिं क्षिपेत् ।
हिंसाहोमविनिर्मुक्तः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं अग्निसत्काररहितदर्शन० जलादिकं ॥१३॥

करोति गृहपूजां न दुष्टवाक्याद्विशेषतः
तत्कर्मरहितः साधुः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं गृहपूजारहितदर्शन० जलादिकं ॥१४॥

वपुपूजादिमिथ्यात्वाद्विरतो यो मुनीश्वरः ।
तत्त्वार्थगिमचेता यः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं शरीरपूजारहितदर्शन० जलादिकं ॥१५॥

गोमूत्रसेवनं धत्ते नैवं गोपृच्छवन्दनं ।
तत्कर्मरहितो योगी पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं गोपुच्छमूत्रसेवारहितदर्शन० जलादिकं ॥१६॥

अनन्तभवसन्तानं रत्नपाषाणसेवनं ।
तस्माद्यो विरतो योगी पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं रत्नपाषाणसेवारहितदर्शन० जलादिकं ॥१७॥

मुक्तो गजादिसेवातो धर्मध्यानेषु तत्परः ।
रागद्वेषविनिर्मुक्तः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं गजादिवाहनसेवारहितदर्शन० जलादिकं ॥१८॥

क्षमादयातपोयुक्तः पृथ्वीसेवा पराङ्मुखः ।
सावद्यरहितो धीरः पूजये तं शुभार्चनैः ।
ॐ ह्रीं भूमिसेवारहितदर्शन० जलादिकं ॥१९॥

तरुसेवादिपापेभ्यो विरतो यतिपुङ्गवः ।
स विवेको विचारज्ञः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं वृक्षसेवारहितदर्शन० जलादिकं ॥२०॥

शुद्धज्ञानरतो शांतः कुशास्त्रमतिदूरगः ।
तत्त्वातत्त्वं विजानाति पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं कुशास्त्रसेवारहितदर्शन० जलादिकं ॥२१॥

आयुधानां महापूजावन्दनाविरतो मुनिः ॥
कलाविज्ञानपूर्णो यः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं आयुधपूजारहितदर्शन० जलादिकं ॥२२॥

गङ्गासिंधुनदीस्नाने विरतो व्रतवल्लभः ।
गङ्गासिंधुनदीतोयैः पूजये तम शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं गंगादिस्नानरहितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥२३॥
शिकतापूजने योगी विरतो व्रतरक्षकः ।
मोक्षाभिलाषवान् विद्वान् पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं वालूकादिपूजारहितदर्शन० जलादिकं ॥२४॥
पर्वतादिषु स्थानेषू आरुह्य न पतन्ति यः ।
तत्पापाद्विरतो वाग्मी पूजये तम् शुभार्चनैः ।
ॐ ह्रीं गिरिपातरहितदर्शन० जलादिकं ॥२५॥
अग्निपातादिपापेभ्यो विरतो धर्मतत्परः ।
ध्यानाग्निकुण्डसम्पोषी पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं अग्निपातरहितदर्शन० जलादिकं ॥२६॥
व्रतहीनो दयाहीनो मिथ्यात्वमतपूरितः ।
तस्यसङ्गविनिमुक्तः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं कुगुरुसेवारहितदर्शन० जलादिकम् ॥२७॥
शंकराग्रे शिरोछेदो मिथ्यात्वे प्रतिपादितः ।
तद्भव्यानां विनिर्मुक्तं पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं शंकरादिग्रेमस्तकछेदमिथ्यातत्वरहितदर्शन० ॥२८॥
शास्त्रज्ञानधरो मूढो ज्ञानाहंकारपूरितः ।
तद्भवरहितः ज्ञानी पूजये तं शुभार्चनैः ।
ॐ ह्रीं ज्ञानमदररहितदर्शन० जलादिकं ॥२९॥

अर्चामदविनाशाय स्वगौरवविवर्जितां ।
स्वात्मतत्वविलीन हि पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं पूजामदरहितदर्शन० जलादिकं ॥३०॥

उच्चैस्तरकुले जन्म तस्याहंकारवर्जितः ।
धर्मानुष्ठानसंलीनः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं कुलमदरहितदर्शन० जलादिकं ॥३१॥

जातिमदातिगः शांतः सु जातो जातमुल्वणः ।
दर्शनज्ञानसंपन्नः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं जातिमदरहितदर्शन० जलादिकं ॥३२॥

शरीरादौ बलं यस्य तेन गर्वेण पुरितः ।
तत्गर्वरहितः साधुः पूजयेतम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं बलमदरहितदर्शन० जलादिकं ॥३४॥

रत्नहेमपदार्था ये संसारे लोभकारणं ।
तप्पापाद्रहितो दक्षः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं ऋद्धिमदरहितदर्शन० जलादिकं ॥३४॥

मासपक्षोपवासादीन् तपः कुर्वन्ति साधवः ।
तपो गर्वं विनिमुक्तः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं तपोमदरहितदर्शन० जलादिकं ॥३५॥

कामदेवसमं रूपं कामदं कामदायकं ।
कायक्लेशकृशीभूतः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं रूपमदरहितदर्शन० जलादिकं ॥३६॥

सप्तानां व्यसनानां हि द्यूतव्यसनमग्रिमम् ।
द्यूतव्यसनसंत्यक्तः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं द्यूतव्यसनविरतिदर्शन० जलादिकं ॥३७॥
मांसस्य दर्शने त्रासे भक्षणप्राणनिर्गमः ।
त्यक्तं मांसं सदा येन पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं मांसव्यसनरहितदर्शन० जलादिकं ॥३८॥
मद्यपानं महापापं भयभीतो यतीश्वरः ।
तद्गन्धेऽपि मनो नास्ति पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं मद्यपानव्यसनरहितदर्शन० जलादिकं ॥३९॥
गणिकाव्यसनेदूरशीलाभरणभूषितः ।
संयम स्त्रीसमाश्लिष्टः पूजये तम् शुभार्चनैः
ॐ ह्रीं वेश्याव्यसनरहितदर्शन० जलादिकं ॥४०॥
षट्काय रक्षणे दक्षः सर्वसत्त्वाभयप्रदः ।
पापाद्विरतो योमी पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं पापार्द्धिव्यसनरहितदर्शन० जलादिकं ॥४१॥
शीलसन्नाहसंपन्नः परदारा पराङ्मुखः ।
ब्रह्मचारी त्रिशुद्धयाय पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं परदरागमनविरतिदर्शन० जलादिकं ॥४२॥
त्रसजीववधोत्पन्नं मधुजीवशताकुलं ।
तस्य त्यागस्ततो येन पूजये तम् शुभार्चनैः
ॐ ह्रीं मधुत्यागदर्शन० जलादिकं० ॥४३॥

त्रसजीवशतैर्युक्तं उदम्बरफलवर्ज्जनं ।
कृत जीवदयादक्षः पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं उदम्बरफलविरतिदर्शन० जलादिकं ॥४४॥

अनेकांगिसमाकीर्णं नीचयोग्य कठुम्बरं ।
तस्याहारविनिर्मुक्तं पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं कठुम्बरफलविरतिदर्शन० जलादिकं ॥४५॥

न्याग्रोधवृक्षसम्भूतम् फलं जन्तुविमिश्रितं ।
यत्फले यो विराकांक्षिः पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं वटफलविरतिदर्शन० जलादिकं ॥४६॥

काकयोग्यं कलाहीनं पीप्पलादिफलोज्झनं ॥
कृतं येन दया बुद्धया पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं पिप्फलीफलविरतीदर्शन० जलादिकं ॥४७॥

सर्वंजीवदयाधारो निष्कषायो दिगम्बरः ।
पिप्पलीफलसंत्यागी पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं पिप्पलीफलसंविरतिदर्शन० जलादिकं ॥४८॥

त्रसस्थावरपापेभ्यो विरतः सर्वदा मनः ।
तस्य चितम् द्रवीभूतम् पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं हिंसाविरतिदर्शन० जलादिकं ॥४९॥

मनसा वचसा चैव सत्यं वदति सर्वदा ।
भाषासमितिसम्पन्नः पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं सत्यसंयुक्त दर्शन० जलादिकं ॥५०॥

विस्मृतं पतितं नष्टं कदाचित्पथिकाजनैः ।
निर्लोभी न तु गृह्णाति पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं चौर्यविरतिदर्शन० जलादिकं ॥५२॥

ब्रह्मचर्यव्रते धीरो नवभेदपरायणः ।
तुर्ये व्रते सदारक्तः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जला० ॥५३॥

मनोवचनयोगेन अन्तर्बाह्यपरिग्रहान् ।
त्यक्त्वा सन्तोषमापन्न पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं परिग्रहविरतिदर्शन० जलादिकम् ॥५४॥

पूर्वपश्चिमयोर्नूनं दक्षिणोत्तर भागयोः ।
प्रमाणं योजनैर्यस्य पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं दिग्व्रतयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥५५॥

अग्निनैऋत्य कोणेषु व्रतं दधाति यो मुनिः ।
अहिंसाव्रतरक्षार्थं पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं विदिग्संख्यायुक्तदर्शन० जलादिकं ॥५६॥

शुककुर्करमार्जारकुठारासि ह्यनर्थकान् ।
न पुष्णाति कदा साधुः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं अनर्थदण्डविरतिदर्शन० जलादिकं ॥५७॥

सामायिकव्रताशक्तं द्वात्रिंशद्दोषदूरगं ।
समता भावसम्पन्नं पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं सामायिकसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥ ८॥

भूताष्टमीषु पर्वेषु प्रोषधे लीनमानसं ।
सद्धर्म्मामृतसन्तुष्टः पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं प्रोषधोपवाससंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥५९॥
भोगोपभोगसंख्यानं यः करोति विशुद्धये ।
रत्नत्रयव्रताधारः पूजयो तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं भोगोपभोगविरतिदर्शन० जलादिकं ॥६०॥
अतिथीनां यतीनां च करोत्योदरशुश्रूषां ।
सल्लेखनां करोत्येव पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं अतिथिसंविभागसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥६१॥
विविक्तशय्यासनानां हि पापारम्भपराङ्मुखः ।
नैव स्पर्श करोत्येव पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं विवित्तशय्याशनकृतदर्शन० जलादिकं ॥६२॥
करोति सर्वदा नूनं कायक्लेशतपोमहत् ।
धनाहारेण पुष्टांगः पूजये तां शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं कायक्लेशसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥६३॥
व्रतेन जायते दोषः पूर्वकर्मानुसारिणः ।
तद्दोषरहितः योगी पूजये तां शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं स्वाध्यायसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥६४॥
हस्तपादादिसंभारवर्जितं काष्टवत् मुनिः ।
कायोत्सर्गव्रतारूढः पूजये तां शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं कायोत्सर्गसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥६५॥

पिंडस्थध्यानयोगेन रूपस्थेन विशेषतः ।
करोति स्वात्मनो ध्यानं पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं स्वात्मध्यानसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥६६॥

त्रसस्थावरजीवेषु कृपाक्रांतमनो वचः ।
रागद्वेषमदाद्धीनः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं समताभावसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥६७॥

भव्यसत्त्वहितोदेशी दर्शनप्रतिमावरा ।
विस्तारयति यो भव्यः पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं दर्शनप्रतिमायुक्तदर्शन० जलादिकं ॥६८॥

अव्रतीषु जनेष्वेव दोषाः सन्ति विशेषतः ।
व्रतं करोति यो धीरः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं व्रतप्रतिमायुक्तदर्शन० जलादिकं ॥६९॥

पर्वते निर्जने स्थाने चारण्ये पितृभूमिषु ।
सामायिकं व्रताशक्तं पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं सामायिकयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥७०॥

उपवासरतो धीरो गतशोको विचक्षणः ।
प्रोषधव्रतमाधत्ते पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं प्रोषधव्रतप्रतिमायुक्तदर्शन० जलादिकं ॥७१॥

सचित्तवस्तु संत्यक्त्वा सचित्तप्रतिमा मता ।
प्रासुके वस्तुनि बोधः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं सचित्तविरतियुक्तदर्शन० जलादिकं ॥७२॥

रात्रिभोजनयोगेन हिंसाकर्म प्रजायते ।
निशिभोजनसंत्यागी पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रींरात्रिभोजनविरतिदर्शन० जलादिकं ॥७३॥

दिवे हि मिथुनात्पापं जायते सर्वदेहिनां ।
तत्पापाद्विरताब्रह्मः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं दिवामैथुनत्यागप्रतिमायुक्तदर्शन० जलादिकं ॥७४॥

मनोवाक्कायसंशुद्धया मैथुनं त्यजति व्रती ।
ब्रह्मचारी महापूतं पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यप्रतिमायुक्तदर्शन० जलादिकं ॥७५॥

सर्वारम्भपरित्यागः सर्वपापनिवारकः ।
प्रारम्भं न करोत्येव पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं आरम्भत्यागप्रतिमायुक्तदर्शन० जलादिकं ॥७६॥

अन्तबाह्यद्विधा संगान् यो दूरी कुरुते व्रती ।
तद्दोषाद्विरतः शुद्धं पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं परिग्रहविरतिप्रतिमायुक्तदर्शन० जलादिकं० ॥७७॥

कस्यापि वस्तु न चित्ते न कस्येत्यनुमोदनं ।
दशमीप्रतिमा युक्तः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं अनुमतित्यागप्रतिमायुक्तदर्शन० जलादिकं ॥७८॥

प्रासुकाहार संग्राही चोद्दिष्टाहारवर्जितः ।
सर्वदोषविनिर्मुक्तः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं उद्दिष्टाहाररहितदर्शन० जलादिकं ॥७९॥

मुहूर्तैकगते नीरं मुहुर्गालयते सुधीः ।
सद्वस्त्रं द्विगुणी कृत्य पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं जलगालणसहितदर्शन० जलादिकं ॥८०॥

सर्वेषां सज्जनानां यो निशाहारविवर्जकः ।
रात्रिभोजनसत्यक्तः पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं रात्रिभोजनविरतिदर्शन० जलादिकं ॥८१॥

जीवादिसप्ततत्त्वानां श्रद्धानं हि करोति यः ।
शुद्ध सम्यक्तमापन्नः पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं सम्यक्तशुद्धिदर्शन० जलादिकं ॥८२॥

मतिश्रुतावधिश्चेति मनः पर्ययकेवलम् ।
ज्ञानं चाष्टविधं यस्य पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं सत्यज्ञानदर्शन० जलादिकं ॥८३॥

महाव्रतानि पंचैव त्रिगुप्तिसमतिस्तथा ।
चारित्रं यस्य चित्तेस्ति पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं शुद्धचारित्रदर्शन० जलादिकं ॥८४॥

प्रथमे भारते क्षेत्रे जिनाः कर्मविनाशकाः ।
तेषां सद्दर्शनं यस्य पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं प्रथमजिनोद्भवदर्शन० जलादिक ॥८५॥

द्वात्रिंशत् विदेहाश्च तेषू जाता जिनोत्तमाः ।
यस्य तेषां पराभक्तिः पूजये तम् शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रो[illegible] जलादिकं ॥८६॥

येऽत्रसंजाता जैनेन्द्राःक्षेत्रे ऐरावतावनौ ।
दर्शनं यस्य तेषां हि पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रोद्भवदर्शन० जलादिकं ॥८७॥

प्रथमे भारते क्षेत्रे कर्म नष्टा जिनोत्तमः ।
मानसे दर्शनं येषां पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डप्रथमभरतोद्भवजिनदर्शन० जलादिकं ॥८८॥

भारते द्वितीये क्षेत्रे ये सन्ति जिनपुंगवाः ।
यस्य तेषां हृदि ध्यानं पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वितीयभरतोद्भवजिनदर्शन० जलादिकं ।८९।

धातक्या च जिनान् सर्वान् विदेहे पूर्वपश्चिमे ।
विभावयति सम्यक्तं पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं धातकीविदेहजिनप्रणीतदर्शन० जलादिकं ॥९०॥

धातक्यैरावतेक्षेत्रे प्रथमे जिनपुंगवान् ।
यो धारयति सम्यक्तं पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं धातक्यैरावतक्षेत्रप्रणीतजिनदर्शन० जलादिकं ॥९१॥

धातक्यैरावतक्षेत्रे द्वितीये जिनपुंगवान् ।
यो धारयति सम्यक्तं पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं धातक्यैरावतद्वितीयजिनप्रणीतदर्शन० जलादिकं ॥९२॥

भारते पुष्करे जाता पूर्वमेरुजिनाश्च ये ।
तेषां सद्दर्शनं यस्य पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं पुष्करपूर्वभरतेजिनप्रणीतदर्शन० जलादिकं ॥९३॥

पश्चिमे पुष्करे मेरु जिना द्वितीय भारते ।
तेषां सद्दर्शनं यस्य पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपे द्वितीयभरतजिनप्रणीतदर्शन० जला० ॥९४॥

विदेहे पूर्वके देवा महाद्वीपे च पुष्करे ।
तेषां सद्दर्शनं यस्य पूजये तां शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपेपूर्वविदेहेजिनप्रणीतदर्शन० जलादिकं ॥९५॥

पुष्करे पश्चिमे सारे विदेहे जिननायकाः ।
यो बिभ्रति सुसम्यक्त पूजये तां शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपेपश्चिमविदेहेजिनप्रणीतदर्शन० जलादिकं ॥९६॥

ऐरावते शुभे क्षेत्रो पूर्वे च मेरुपर्वते ।
यो धारयति सम्यक्तं पजये तम् शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं पुश्करैरावतपूर्वमेरुजिनप्रणीतदर्शन० जलादिकं ॥९७॥

पुष्करैरावते क्षेत्रो पश्चिमे मेरुपर्वते ।
यो धारयति सम्यक्तं पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं पुष्करैरावतेपश्चिममेरुजिनप्रणीतदर्शन० जलादिकं ॥९८॥

सुनीरगंधैः कुसुमैश्च तंदुलैः द्रव्यैश्च गंधैर्वरमातुलिंगकैः ।
सदशनाख्यां परमां पवित्रां श्रीभूषणानां परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धये महार्घं निर्वपामोति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

त्रिभुवननिर्जित चरणं, भवभय हरणं सन्निपातिक दूरी करणं । किल शिवसुख करणं, भवजल तरणं हतभय मरणं सुगुणमई ॥१॥ दंसण हीण भमई संसारह, दसण हीण लहइ अवतारह । दंसण हीणय कुगइ पामइ, दंसण हीण भमइ संसारह ॥ २ ॥ दंसण हीण लहइ अवतारह, दंसण हीण णर दुह गमइ । दंसण हीण भमइ छहु कालह, दंसण हीण पडइ जंजालह ॥ ३ । दंसण हीण निगोद जावइ, दंसण हीण भमइ त्रसथावर । दसण हीण लहह महादुःखह, दंसण हीण न पामइ सुखह ॥४॥ दंसण होई सुरपद दाता, दंसण सुगति रमणी सुह साता । दंसण केसरपद धरइ, दंसण इन्द अमर सुह करइ ॥५॥ दंसण कम्मकलङ्क विणासण, दंसण धम्म-करण्ड णिवासण । दंसण भव सायर वर तारण दंसण अविचल शिवपदकारण ॥६॥ भुवि दंसण सारह कम्म णिवारण, धम्म रहण शिव सुहभण्डारह । सिरिभूषण भव्व गतमदगव्व, चन्द्रकीर्ति सिद्धांत कहे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धये पूर्णार्घं ।

अथ विनय भावना।

सर्वज्ञदेवेन विनिर्मितायां
भव्यात्मनां कर्मकलंकशांत्यै ।
संस्थापये तां विनयादि जातां
चतुर्विधां श्रीजिनधर्मरूपां ॥

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नतात्रवतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ: ठ: ठ: । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

देवशास्त्रगुरूणां च दुविधां च तपस्विनां ।
तथा च गुणवृद्धानां कर्तव्यो विनयो महान् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विधसांगोपांगयुक्तविनयसम्पन्नतायै जलादिकं ॥१॥

रोगसंक्रातवृद्धानां तथा विद्यावतां मतां ।
करोति विनयं यो हि पूजये तं सुभावतः ॥

ॐ ह्रीं दर्शनचारित्रसंयुक्ततपस्वीविनयसम्पन्नतायै जलादिकं ॥२॥

समाधानं करोत्येव आर्यिकाणां विशेषतः ।
जैनधर्मसुवृद्धयर्थं पूजये तं सुभावतः ॥

ॐ ह्रीं आर्यिकासंजातविनयसम्पन्नतायै जलादिकं ॥३॥

अणुव्रताधिकारिणां श्रद्धानां ब्रह्मचारिणाम् ।
करोति विनयं यो वै पूजये तं सुभावतः ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्तसंयुक्तश्रावकसंजातविनयसम्पन्नतायै जलादिकं ।४।

श्रावकाचारशुद्धानां श्राविकाणाम् विवेकवान् ।
करोति विनयं यो वै पूजये तं सुभावतः ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्तसंयुक्तश्राविकासंजातविनयसम्पन्नतायै जला० ।५।

सतोयगंधैः कुसुमैः शुभाक्षतैश्चरुसुदीपैवरधूपसत्फलैः ।
सद्भावनांतां विनयादि जातां चर्चे सदाकर्मकलङ्कशांत्यै ॥

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नतायै अर्घं ।

× × × ×

अथ जयमाला ।

सिरि जिन धम्मे गुणगण हम्मे, विणय विवेक समुच्चरिय । सिरि गोयम देवे कुन्द मुणिंदे चउविह संघ समुच्चरियं ॥१॥ विनयेण हवइ संसारकाज, विनयेण लहइ सुरपुरीय राज विनयेण हवइ पंचणाण विनयेण होसि शीवपुरीय वास ॥२॥ विनयेण होइ सवि अरीयमित्र, विनयेण हवइ वसणिय चित्त । विनयेण देव पसण्ण होय, विनयेण मण आनन्द लोय ॥ ३ ॥ विनयेण होइ धम्मादि काज, । विनयेण पसरह बहुय लज्ज । विनयेण हवइ जिन शुद्ध जाण, विनयेण णासइ जम्म मज्ज ।४। इय विण तिण गुणवंता मुनिजणसंता, धम्मखाण मुणिगण कहीयं । ते मवसु तारण ताप निवारण, सहीरी भूषयं सुख लहीयं ॥५॥

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नतायै जयमाला महार्घ्यं ।

अथ शील भावना ।

शीलाह्वयं कामगजेन्द्रसिंहं
कायेन वाचा मनसा च नित्यं ।
संस्थापये मोक्षप्रदाय सारं
त्रिकर्णशुद्धया जलचन्दनाद्यैः ॥

ॐ ह्रीं शीलभावनात्रावतर २ संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टादशसहस्रैश्च भेदैर्व्रतं महोत्तमं ।
पालनीयं सदा सद्भिः समताशीलभावना ॥

ॐ ह्रीं दशविधसांगोपांगयुक्तशीलव्रतेष्वनतीचाराय जलादिकं ॥

सुररामाविकारघ्नं मदनोद्गारवर्जितं ।
शीलरक्षासमापन्नं चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥

ॐ ह्रीं देवस्त्रीशीलभावनायै जलादिकं ॥ १ ॥

मानुषीरमणीत्यक्तं शुद्धं शीलसमन्वितं ।
विकारो नैव यस्यांगे चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥ २ ॥

मनसा वचसा वपुषा विकारो न तु सर्वथा ।
पशुस्त्रीविरति साधुं चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥

ॐ ह्रीं पशुस्त्रीविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥ ३ ॥

काष्टचित्रगता कांता विरतं वनवासिनम् ।
मकरध्वजदर्पघ्नं चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥

ॐ ह्रीं चित्रकाष्टविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥ ४ ॥

मनसा भोगविरतं जीवसंगनिराकृतं ।
ब्रह्मचर्यसमापन्नं चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥
ॐ ह्रीं मनसा भोगविरतिशीलभावनायै जला० ॥५॥
वचसा विरतं साधुं वक्रवाचानिराकृतं ।
धर्माधार व्रतैर्युक्तं चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥
ॐ ह्रीं वचसा कृतिभोगविरतिशीलभावनायै जला० ॥६॥
वपुषा विरतं साधुं कांताकटाक्षवर्जितं ।
मेरुधैर्य समापन्नं चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥
ॐ ह्रीं कायभोगविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥७॥
आत्माना विहिते भोगे विरतं मुनिपुङ्गवम् ।
शीलभावसमापन्नं चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥
ॐ ह्रीं आत्मकृतभोगविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥८॥
अन्यस्यात्मकृतस्योपभोगकर्मनिषेधनं ।
शीलभावसमापन्नं चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥
ॐ ह्रीं आत्मना कारितभोगविरतिशीलभावनायै जला० ॥९॥
अन्यस्मिन् विहिते भोगे नानुमोदयति यतिः ।
शीलरत्नसमापन्नं चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥
ॐ ह्रीं परानुमोदनविरतिशील० जलादिकं ॥१०॥
सर्वसिद्धिप्रदोलोके धर्मशर्मानुबंधिनी ।
चर्चये जलमुख्याष्टद्रव्यैः श्रीज्ञानसागरं ॥
ॐ ह्रीं शीलभावनायै महार्घं ।

अथ जयमाला ।

कृतकर्मविणासं सुगुण पयासं, सुरनरपतिसेवित चरणं जरमरणविणासण कुगइ निरासण सारशीलमानव सरणं ॥१॥ शील रयण बहुमूला सार, शीले तरइ संसार पार। शीलेन शुद्धणय। सद् विबोध, शीले हवइ इन्दिय निरोध ॥२॥ शीले नमइ सादुंल पाय, शीले हवइ सुरणर सहाय। शीलेन विणासय सव्व दुःख, शीलेन कलह नर मोक्ष सुख ॥३॥ शीलेन खग नित करइ सेव, शीलेन नमइ नित अखिलदेव। शीलेन विजय तियलोकमज्ज, शीलेन सरइ सविधम्म कज्ज ॥४॥ शीलेन भुवन तित्थरयकीर्ति, शीलेन लहइ णर अखय वित्ति। शीलेन वन्हि जल रुव होय, शीलेन माणव बहु करइ लोय ॥५॥ शीलेन होइ इह सफल जम्म, शीलेन सरइ सविपुण कम्म। शीलेन मोच्च पदवि णिवास, शीलेन होइ लीला विलास ॥६॥

घत्ता ।

भुविपार निकंद मुनिवचवृन्द, कम्म विखंडण धम्ममयं।
जगजयजयकरणं शीलसुसरणं, संसारांबुद्धि शुभतरणं ॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचाराय पूर्णार्घं ।

॥ इति शीलभावना ॥

अथ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना

प्रबोध पापनाशं च चिदानंदं महोदयं ।
स्थापयामि शुचिभक्त्या ब्रह्मज्ञानं सुखास्पदं ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानभावनात्रावतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

द्वादशांगं सुसिद्धांतं चतुर्विधसमुद्भवं ।
पठ्यं पाठयते नित्यं ज्ञानोपयोगभावना ॥

ॐ ह्रीं द्वाचत्वारिंशसांगोपांगयुक्ताभीक्षणज्ञानोपयोगाय जलं०

प्रथमानुयोगवेदांगं भेदं जानाति यो मुनिः ।
जलचन्दनपुष्पोघैः पूजये तं मुनीश्वरं ॥

ॐ ह्रीं प्रथमानुयोगवेदभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥१॥

करणानुयोगनामानं वेदं यो वेत्ति संयमी ॥जलचन्दन०

ॐ ह्रीं करणानुयोगवेदभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥२॥

चरणानुयोगसद्वेदं भेदाभेदेन वेत्ति यः ॥ जल० ॥

ॐ ह्रीं चरणानुयोगवेदभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३॥

द्रव्यानुयोगवेदं हि सदा यो वेत्ति तत्वतः ।जल०॥

ॐ ह्रीं द्रव्यानुयोगवेदभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥४॥

आचारांगमहाज्ञानं यो वेत्ति मुनिपुंगवः ।
जलचन्दनपुष्पोघैः पूजये तं मुनीश्वरं ॥

ॐ ह्रीं आचारांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥५॥

सारं सूत्रकृतागं यः प्रकाशयति संयमी ॥ जल० ॥

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥६॥

सुस्थानांगं परं पुण्यं भेदभावेन यः स्मरेत् ॥ जल०॥

ॐ ह्रीं स्थानांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥७॥

समवायांगमहत् ज्ञानं यो वेत्ति मुनिसत्तमः ।जल०॥

ॐ ह्रीं समवावांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥८॥

वादांगं वेत्ति यो साधुः सर्वसावद्यनाशकं ॥जल०॥

ॐ ह्रीं विवादांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥९॥

ज्ञातृकथांगज्ञातारं धीरवीरमहोदयं । जल० ।

ॐ ह्रीं ज्ञातृकथांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥१०॥

श्रावकाचारविस्तारदेशकम् भव्यबोधकम् । जल० ।

ॐ ह्रीं श्रावकाचारभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥११॥

अन्तःकृद्दशधर्मांगं भेदाभेद विदांवरं । जल० ।

ॐ ह्रीं अन्तकृतदशांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥१२॥

अनुत्तरोपपादांग विस्तारं वेत्ति यो मुनिः । जल० ।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥१३॥

विपाकसूत्रांगं सारं विपाककर्मसूचकं । जल० ।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥१४॥

शब्दापशब्दवेत्तारं प्रश्नव्याकरणस्य यः । जल० ।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥१५॥

दृष्टिवादं दयायुक्तं सर्वज्ञवदनोद्भवं । जल० ।

ॐ ह्रीं दृष्टिवादभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥१६॥

चन्द्रपज्ञप्तिज्ञातारं भव्यसत्वप्रबोधकम् ॥ जल० ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रज्ञप्तिभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥१७॥

सूर्यप्रज्ञप्तिवेत्तारं भेदाभेदप्रकाशकम् । जल० ॥

ॐ ह्रीं सूर्यप्रज्ञप्तिभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥१८॥

द्वीपसागरभेदज्ञं गणनामानकारकम् । जल० ॥

ॐ ह्रीं द्वीपसागरभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥१९॥

द्वीपपर्वतनद्यादिवेदकं शास्त्रदीपकम् । जल० ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥२०॥

व्याख्याप्रज्ञप्तिवेत्तारं भव्यजीवहितावहं । जल० ॥

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥२१॥

सूत्रार्थभेदज्ञातारं सर्वजीवादयापरं । जल० ।

ॐ ह्रीं सूत्रभेदभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥२२॥

पूर्वगतविचारज्ञं पवित्रं पापभंजकम् ॥

जलचन्दनपुष्पौघैः पूजये तं मुनीश्वरं ॥

ॐ ह्रीं पूर्वगतभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥२३॥

नीरागतमहाविद्यां यो वेत्ति भवतारकः । जल० ॥

ॐ ह्रीं नीरागतभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥२४॥

स्थलगामि महाविद्यां प्राप्तये च मुनीशिनं । जल० ॥

ॐ ह्रीं स्थलगतभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥२५॥

मायागतपराविद्यां तां वेत्ति यो मुनीश्वरः । जल० ॥

ॐ ह्रीं मायागतभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥२६॥

रूपप्राप्तमहाविद्यां बहुरूपप्रकाशिकां । जल० ॥
ॐ ह्रीं रूपगतभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥२७॥
आकाशगमने साधुं व्योमविद्या विशारदं । जल० ॥
ॐ ह्रीं आकाशगतभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥२८॥
उत्पादपूर्वांगंशुद्धं यो वेत्ति यतिनायकः । जल० ॥
ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥२९॥
अग्रायणीयपूर्वे हि गम्भीरं धीरमानसं । जल० ॥
ॐ ह्रीं अग्रायणिभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३०॥
वीर्यानुवादं पूर्वे च समर्थः यो यतीश्वरः । जल० ॥
ॐ ह्रीं वीर्यानुवादभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३१॥
अस्तिनास्तिप्रवादांगं यो वेत्ति धर्मनायकः ।
जलचन्दनपुष्पौघैः पूजते तं मुनीश्वरं ॥
ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३२॥
ज्ञानप्रवादज्ञातारं संघबोधनतत्परं । जल० ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३३॥
सत्यप्रवादपूर्वांगं तस्य ध्याने विचक्षणं । जल० ॥
ॐ ह्रीं सत्यप्रवाद भावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३४॥
आत्मप्रवादपूर्वांगं यो वेत्ति मुनिसत्तमः । जल० ॥
ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३५॥
कर्मप्रवादपूर्वांगं यो जानाति गुणाग्रणी । जल० ॥
ॐ ह्रीं कर्मप्रवादभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३६॥

प्रत्याख्यानमहापूर्वे यो श्रुतिशास्त्रपारगः । जल० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३७॥

विद्यानुवादपूर्वांगं येनांगीकृतमद्भुतं । जल० ॥

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३८॥

कल्याणपूर्वनाम्ना हि ज्ञात येन मुनिशिना । जल०॥

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥३९॥

प्राणानुवादपूर्वांगं धर्मध्यानविशारदं । जल० ॥

ॐ ह्रीं प्राणानुवादपूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥४०॥

विशालपूर्वसंशुद्धं विदग्धं बोधपारगं । जल० ॥

ॐ ह्रीं विशालपूर्व भावनाप्राप्तमुनये जला० ॥४१॥

लोकबिन्दुसुपूर्वांगे धातारं धर्मदेशकम् । जल० ॥

ॐ ह्रीं लोकबिदुतापूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥४२॥

ज्ञानं नराणां सुखदं प्रमाणं
तत् साधुनां सौख्यसहायभूतं ।
संपूजये सज्जलचन्दनौघैः
कर्मक्षयायामलबोधकाय ॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावना० महार्घं ।

अथ जयमाला ।

जिनवरमुखजातं जगविख्यातं, कुमइभाव दूरीकरणं। गण-धरवरगणियं मुनिवर भणियं, सकललोय पावण सरणं॥ णाण भावण भवभय भंजन, णाण तिलोय भविक मनरंजन। णाण जरामरणादिक वारण, णाण कषाय कलंक निवारण॥ णाण भट मद् माण णिकंदण, णाण भवनतप पाप निकं-दन। णाण भावना शिवगुरु दाता, णाण फले तिहुयण वरसाता॥ णाण जिणंद वदणदो जातं, अंगु उपांग वेद विख्यातं। णाण रिसिह णाण उत्रस्सं, णाण दाण दि जूइ अविछेणं॥ णाण सदा मद अठ विहंडण, णाण वस इंदिय परिखण्डण। णाण अपार संसार सुतारण, णाण सदा कल्लाणह कारण।

घत्ता।

शिव संपयकारण भवजलतारण
कम्म निवारण णाणवरं।
सिरिभूषण महियं बहुगुण सहियं
बंभणाण भणियं परमं॥

ॐ ह्रीं अभीक्षणज्ञानोपयोगभावनाय पूर्णार्घं।

अथ संवेगभावना ।

संसारसारसं त्यक्तं दुःखराशिक्षयंकरं ।
स्थापयामि त्रिशुद्धयाहं आह्वानन तत्पूर्वकं ॥

ॐ ह्रीं वैराग्यभावनात्रावतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठः ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पुत्रमित्रगृहारम्भदारेभ्यो निवृतं मनः ।
सा विरक्तिबुधैः ज्ञेया नरस्य बुद्धिदायनि ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशसांगोपांगयुक्तसंवेगनाय जलादिकं ॥

सप्तलक्षधराकायं कदापि न वीराधति ।
वैराग्यभावसम्पन्नं चर्चये जलचन्दनैः ॥

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायोद्भववैराग्यभावनाप्राप्तमुनये जला० ।१।

सप्तलक्षकुयोनिस्थजलकायनिरस्तधिः । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं जलकायोद्भववैराग्य० जला० ॥२॥

तेजस्कायोद्भवं दुःखं सप्तलक्षकुयोनिषु । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं तेयुकायोद्भववैराग्य० जला० ॥३॥

वायुकाये महादुःखे पूर्णसंख्ये[1] कुलक्षणे । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं वायुकायोद्भववैराग्य० जला० ॥४॥

दशलक्षकुयोनौ च छेदे भेदे परे तरौ । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं तरूकायोद्भववैराग्य० जला० ॥५॥

१–सप्तलक्ष वायुकाय ।

निगोददुःखसंत्रस्तं नित्यनामभयप्रदं ।
वैराग्यभावसंपन्नं चर्चये जलचन्दनैः ॥
ॐ ह्रीं नित्यनिगोद्भववैराग्यभावनाप्राप्तमुनये जला० ॥६॥
सप्तलक्षपरे भेदे त्वेतरे दुःखदे खले । वैराग्य० ॥
ॐ ह्रीं इतरनिगोद्भववैराग्य० जला० ॥७॥
द्विन्द्रिया बहवो जीवाः कीटकृमिमहीलताः। वैराग्य० ॥
ॐ ह्रीं द्वेन्द्रीयोद्भववैराग्य० जला० ॥८॥
त्रिन्द्रियो बहवो जीवा मधकोटकपिपीलिका । वैराग्य० ॥
ॐ ह्रीं तींद्रींयोद्भववैराग्य० जला० ॥९॥
मक्षिकाश्च पतङ्गादि द्विरेफाश्चतुरिन्द्रिया । वैराग्य० ॥
ॐ ह्रीं चतुरिंद्रियोद्भववैराग्य० जला० ॥१०॥
पञ्चाक्षा मनुजा लक्षचतुर्दशप्रमेषू च । वैराग्य० ॥
ॐ ह्रीं पंचेंद्रियोद्भववैराग्य० जला० ॥११॥
चतुर्लक्षामरे दुःखे देवयोनौ परान्मुखं । वैराग्य० ॥
ॐ ह्रीं देवगतिदुःखोद्भववैराग्य० जला० ॥१२॥
शीतोष्णवेदनाजातदुःखानि सन्ति नारके । वैराग्य० ॥
ॐ ह्रीं नरकगतिदुःखद्भववैराग्य० जला० ॥१३॥
तिर्यंञ्चजातिभेदेषु चतुर्लक्षेषु य दुःखं । वैराग्य० ॥
ॐ ह्रीं तिर्यंचगतिदुखोद्भववैराग्य० जला० ॥१४॥
चतुराशीतिलक्षेषु दुःखं जातं भवे भवे ।
तं दुःखहानयेऽस्माभिः पूजितं जलचन्दनैः ॥
ॐ ह्रीं वैराग्यभावनाप्राप्तमुनये ॥ महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

सिरि तित्थेसर भव्वदिणेसर रिसहेसर जिण प्रगट कियं । वर बाहुबली भरतेसर सुन्दर रिसहसेण मण शुद्धलियं ॥ वैरागेण सफल होई जम्म वैरागेण हवइ पुण–कम्म । वैरागेण तरइ सृति सेत वैराग्यं भव दुह छन्दण मित्त ॥ वैराग्य मोह माया हरन्त, वैराग्य अणुबय सुह धरन्त ॥ वैरागेण उपजई सिद्धि, वैरागेण लहई शिव रिद्धि ॥ वैरागेण णमई णर पाय, वैरागेण कुपाप पलाय । वैरागेण सकल होइ सिद्धि, वैरागेण लहइ शिव रिद्धि ॥ वैरागेण लहइ सुख खाण, शुद्ध वैराग्य दिजइ माण । वैराग्ये भव सफल करज्जइ, पुण रवि आवागमण न कीजइ ॥

घत्ता ।

वैराग्यमुणिदह दुःख निकन्दह
भवभयफन्दह भयहरणं ।
णिखिलागमनायक शिवपददायक
भव्यजनस्स सदा सरणं ॥

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै पूर्णार्घं० ॥

अथ शक्तितस्त्याग भावना ।

चतुर्विधजिनेद्रस्योद्भुतां पापमलापहां ।
स्वर्गमोक्षवशीभूतां स्थापयामि यथागमं ॥

ॐ ह्रीं दानभावनात्रावतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

भोगभूमिभवं सौख्यं या ददाति सुभावना ।
तदोपदेशनं साधुं यजे पुष्पवराक्षतैः ॥

ॐ ह्रीं आहारदानभावनोपदेशकायमुनये जलादिकं ॥१॥

श्री जिनेन्द्रमुखोत्पन्नं ज्ञानं यो मुनि भाषते ।
तस्य भावनया रक्तं यजे पुष्पवराक्षतैः ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानदानभावनारतमुनये जला० ॥२॥

रोगशांतिकरं शुद्धं भेषजं यो ददातिवै । तस्य० ॥

ॐ ह्रीं सर्वौषधिर्ऋद्धियुक्तमुनये जला० ॥३॥

स्थावरजंगमजीवेषु दयादानं ददाति यः ।
करूणामृतसंतृप्तं यजे पुष्पवराक्षतैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अभयदानभावनारतमुनये जला० ॥४॥

दानेन ज्ञानं च यशस्त्रिलोके,
दानेन सौख्यं भुवनोद्भवं च ।
दानेन नाभेय जिनोत्तमोऽभू,
त्तस्माद्यजे दानमनल्पपुण्यैः ॥

ॐ ह्रीं दानभावनायै महार्घं ।

अथ जयमाला ।

सिरि जिणवर कहियं पाटविर हियं चतुविह दाणमनंत फलं । गणधर विछरीयं बहुगुणभरियं चंदभासदो अति-विमलं ॥१॥ दाणेन जीव आरज होय, दाणेन न वेर मंडेन कोय । दाणेन सुरेंदह भोग सार, दाणेन लहइ संसार पार ॥२॥ दाणेन णरंदह करइ सेव, दाणेण होइ पसण देव । दाणेन रोग णवि अंग होय, दाणेण पसण भुवण लोय ।३। दाणेन भोग धरासु सुख, दाणेन लहइ परम सुख, दाणेन सु वंतरणमइ पाय, दाणेन सुवर्णय होय काय ॥४॥ दाणेन अट्ठ भोगाधि सार, दाणेन पंच विमाणकार । दाणेन होय गृहकणध धार, दाणेण रयण चउदसे सु सार ॥ ५ ॥

धत्ता ।

रिसेसर कहिवा तिहुयणमहिया,
दाण भावणा भय हरणी ।
सिरिभूषण भासि गुणपयासि,
भणण भणाण भवजलतरणी ॥

ॐ ह्रीं दानभावनायै महार्घं ।

अथ शक्तिस्तप ।

कर्मारिभेदने वज्रं किल्विषमेघमारुतं ।
इच्छितार्थप्रदं शुद्धं स्थापये तत् तपोवरं ॥

ॐ ह्रीं तपोभावनात्रवतर २ संवोषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

दिनैकांतरे शुद्धं वा आहारं भुनक्ति च ।
एकांतरे युतं साधुमष्टद्रव्यैः समर्च्चये ॥

ॐ ह्रीं एकांतरतपसायुक्तमुनये जला० ॥१॥

द्विदिनांतरयुक्तेन तपसा यो मुनीश्वरः ।
द्विदिनांतरसंयुक्तमष्टद्रव्यैः समर्च्चये ॥

ॐ ह्रीं द्विदिनांतरतपसायुक्तमुनयेजला० ॥२॥

अष्टाह्निनन्तरं यो चै भुनक्त्याहारमात्रकम् ।
अष्टाह्नांतरसंयुक्तमष्टद्रव्यैः समर्च्चये ॥

ॐ ह्रीं अष्टोपवासतपसायुक्तमुनये जला० ॥३॥

पक्षोपवाससंयुक्ते तपसां यो मुनीश्वरः ।
पक्षोपवाससंयुक्तमष्टद्रव्यैः समर्च्चये ॥

ॐ ह्रीं पक्षोपवासतपसायुक्तमुनये जला० ॥४॥

प्रतिमासं मुनींद्रो यः पारणं कुरुते वरं ।
मासोपवाससंयुक्तमष्टद्रव्यैः समर्च्चये ॥

ॐ ह्रीं मासोपवासतपसायुक्तमुनये जला० ॥५॥

षण्मासे पारणं यो वै करोति कर्महानये ।
षण्मासे तपसायुक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥
ॐ ह्रीं षण्मासतपसायुक्तमुनये जला० ॥६॥

वर्षोपवाससंयुक्तो बाहुबलियतीश्वरः ।
वर्षोपवाससंयुक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥
ॐ ह्रीं वर्षोपवासतपसायुक्तमुनये जलादिकं ॥७॥

दुःखहानिकरं पुंसां तपो वृद्धि महाबलः ।
स्वाहानि तपसा युक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥
ॐ ह्रीं दुःखहरणतपसायुक्तमुनये जलादिकं ॥८॥

सदा यो लभ्यते सारं श्रुतज्ञानाभिधस्तपः
तस्य भावनया युक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥
ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानतपोभावनायुक्तमुनये जलादिकं० ॥९॥

सावधानतपो यो वै व्रतानाचरते खलु ।
द्विषड्भेदतपो युक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥
ॐ ह्रीं द्वादशभेदतपोभावनायुक्तमुनये जलादिकं ॥१०॥

ग्रासैकादितपोनाम कुरुते यो जितेन्द्रियः ॥
एकग्रासतपो युक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥
ॐ ह्रीं एकग्रासतपोभावनायुक्तमुनये जलादिकं ॥११॥

मानसे चिंतनं यो हि करोति तपसोद्भवं ।
मनः चिंतनसंयुक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥
ॐ ह्रीं मनश्चिंतिततपसायुक्तमुनये जलादिकं ॥१२॥

त्रिशुद्धया व्रतसंयुक्तं सर्वतोभद्रनामनि ।
गुणगणनाथोक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्रतपसायुक्त० जलादिकं ॥१३॥

सातकुम्भाभिधानेय तपसि सर्वदोद्यमी ।
मनोवाक्कायसंशुध्यमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥

ॐ ह्रीं सातकुम्भतपसायुक्त० जलादिकं ॥१४॥

सिंहविक्रिडितनामतपसा परिमंडितं ।
कर्माणि खलु नश्यन्ति अष्टद्रव्यैः समर्चयेः ॥

ॐ ह्रीं सिंहविक्रमतपसायुक्त० जलादिकं ॥१५॥

वज्रमध्याभिधानेहि तपसि संस्थितो मुनिः ।
कर्मारिभेदने वज्रमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥

ॐ ह्रीं वज्रमध्यतपसायुक्त० जलादिकं ॥१६॥

तपो मेरुजमध्याख्यं यः करोति मुनीश्वरः ।
तस्यभावनयो युक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥

ॐ ह्रीं मेरुजमध्यतपसायुक्त० जलादिकं ॥१७॥

उल्लिनोलीनतपसि संस्थितो यो मुनिसत्तमः ।
कारिकाष्ठाग्निसादृश्यमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥

ॐ ह्रीं उल्लिनोलीनतपसायुक्त० जलादिकं ॥१८॥

मृदंगमध्यतपसा संयुक्तं धर्मदेशकं ।
कर्मसन्तानहंतारिमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥

ॐ ह्रीं मृदंगमध्यतपसायुक्त० जलादिकं ॥१९॥

धर्मचक्रव्रतं सारं करोति धर्मसिद्धये ।
अनालस्यं सुरैः पूज्यमष्टद्रव्यैः समर्च्चये ॥
ॐ ह्रीं धर्मचक्रतपसायुक्त० जला० ॥२०॥
रौद्रोत्तर वसंताख्यतपो यः कुरुते यमी ।
पापारिकुलहंतारमष्टद्रव्यैः समर्च्चये ॥
ॐ ह्रीं रोद्रोत्तरवसंततपसायुक्त० जलादिकम् ॥२१॥
यो मुनिः कुरुते नित्यमवमौदर्यतपो महत् ।
पञ्चेन्द्रियमधातीतमष्टद्रव्यैः समर्च्चये ॥
ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपसायुक्त० जलादिकं ॥२२॥
करोति व्रतशुद्धयर्थं रसत्यागं तपो महत् ।
धर्मध्यानरतं साधुमष्टद्रव्यैः समर्च्चये ।
ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपसायुक्त० जलादिकं ॥२३॥
वस्तूसंख्या तपो रम्यं करोति यतिनायकः ।
कषायभटताभेरमष्टद्रव्यैः समर्च्चये ॥
ॐ ह्रीं वस्तूसंख्यातपसायुक्त० जलादिकं ॥२४॥

कर्मक्षयं संकुरुते प्रशस्यं
ह्यनेकसौख्यालयदानदक्षं ।
जलादिद्रव्यैर्वसुभिः सदा तं
संपूजयामि मुनिं ज्ञानवार्द्धिं ॥
ॐ ह्रीं तपोभावनायै महार्घं ।

अथ जयमाला ।

तव धम्म विचारह गुण भण्डारह, सक सुखकारह कम्महरं । रिसि हेसर कहियं कम्म विदहियं, तिहुयण महियं धम्म परं ॥१॥ शुद्धतवेण सुजाण भण्डारह, शुद्धतवेण सुजाण विचारह । शुद्धतवेण कषाय विणासह, शुद्धतवेण सकल सद्-भावह ॥२॥ शुद्धतवेण अमरपद पावइ, शुद्धतवेण सकल चय भारह । शुद्धतवेण तिलोयह सिद्धि, शुद्धतवेण जिनंदह रिद्धि ॥३॥ शुद्धतवेण सुदेव सहाय, शुद्धतवेण णमइ अरि पाय । शुद्धतवेण कुयोनि विछिज्जइ, अहनिशि शुद्ध तवो इम किज्जइ ॥४॥ कम्मकलंक जलंजलि दिज्जइ, शुद्धतवेण परम पद लिज्जइ । शुद्धतवेण भयमद खण्डण, शुद्धतवेण परम पद मण्डण ॥५॥

घत्ता ।

बारह तपसारह कम्म निवारणह,
सासह सुह संपयकरण ।
सिरिभूषण कहियो तिहुयण महियो,
बंभणाण भव भयहरणो ॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागतपसे पूर्णार्घं ।

अथ साधु समाधि भावना।

श्री सर्वज्ञमुखोत्पन्नं शिवशर्मविधायनीं ।
स्थापयामि सदा भक्त्या आह्वाननविधायनीः ॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधि अत्रावतर २ संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कुष्ठोदरव्यथाशूलैः पीडिता ये मुनीश्वराः ।
यः करोति समाधानं यजे तं मुनिनायकं ॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥१॥

दुष्टोपसर्गसम्प्राप्तं वधबन्धादिताडने ।
यो निवारयते साधोः यजे तं मुनिनायकं ॥

ॐ ह्रीं उपसर्गनिवारकभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥२॥

मनो दुःखं गते यो वै सुश्रुषाभेषजादिभिः ।
भावेन कुरुते नित्यं यजे तं मुनिनायकं ॥

ॐ ह्रीं दुःखविनाशभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥३॥

किंचिद्दोषसमायाते निर्मले ते सुशासने ।
तन्निवारय ते यो हि यजे तं मुनिनायकम् ॥

ॐ ह्रीं व्रतरक्षणसाधुसमाधिभावनाप्राप्त० जलादिकं ॥४॥

सर्वाणि दुःखानि क्षयं व्रजंति
सुखानि सर्वाणि भवन्ति नित्यं ।
यस्याः प्रसादाच्छिवसौख्यमुख्यं
यजे जलादिमुनिज्ञानवार्द्धिं ॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधये महार्घं ।

अथ जयमाला ।

भवजलतारण शिवसुखकारण साधुसमाधि सुपूरणवरो।
सविकम्म निवारण धम्म विधासण परमपरा पर सुखः करो ॥
साधुसमाधि मुणिदह किज्जइ, साधुसमाधि महाफल लिज्जइ।
साधुसमाधि सुधम्म सहाय, साधुसमाधि फले सुरगाय ॥
साधुसमाधि कुरोग निवारण, साधुसमाधि अचलपद कारण।
साधुसमाधि महा सुखकारी, साधुसमाधि भवोदधि तारी ॥
साधुसमाधि दया गुण मण्डइ, साधुसमाधि महामद छण्डइ।
साधुसमाधि विणय संपज्जइ, साधुसमाधि करइ दुह वज्जइ ॥ साधुसमाधि सुसुह बहुभासिय, साधुसमाधि निखिलगुण रासिय। साधुसमाधि सदा जिण कहिया, साधुसमाधि महामुनि महिया ॥

घत्ता ।

सिरिजिण कहिया तिहुयण महिया
साहुसमाहि महा फलदा ।
मुणिधम्म विजुत्ता कम्म विखुत्ता
दंभणाणभासिय वरदा ॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधयेपूर्णार्घं० ।

अथ वैयाव्रत भावना ।

धर्मध्यायप्रदां साध्वीं पापाश्रवनिरोधनीं ।
स्थापयामि जिनोदिष्टां वैयावृत्य सुभावनां ॥

ॐ ह्रीं वैयाव्रतभावनात्रावतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् ।

लाक्षादिकषड्ंदेन तैलेनातिसुमर्दनं ।
वैयावृत्तिं करोत्येव यस्तं चर्चे जलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं तैलमर्दनवैयावृत्तिभावनाप्राप्त० जलादिकं ॥१॥

उष्णेन वारिणा साधोः करोति तनुमार्जनं ।
सदा ज्ञानप्रकाशाय यस्तं चर्चे जलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं जलसेवावैयावृत्तिभावनाप्राप्त० जलादिकं ॥२॥

तनुमार्जनपादाब्जक्षालनं पीठिमर्द्दनं ।
वैयावृत्तिं करोत्येव यस्तं चर्चे जलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं हस्तोपचार वैयावृतिभावनाप्राप्त० जला० ॥३॥

शैयासनासने साधोः विनयान्वितमानसः ।
वैयावृत्तिं करोत्येव यस्तं चर्चे जलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं शयनासनवैयावृतिभावनाप्राप्त० जला० ॥४॥

यशोबुद्धिर्धनं लोके महत्वं स्यान्महातले ।
जलचन्दनपुष्पौघैर्ददाम्यर्घं महोत्तमं ॥

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिकारणभावनायै महार्घं ।

अथ जयमाला ।

आइ जिनेसर पदनवि कहिया, वैयाविच्चि तिलोय महिया । अमलगुण कलि गणगह भरिया, बाहुबलि मण चक्रम करिया ॥ १ ॥ वैयाविच्चि मुणिसर किज्जइ, वैया-विच्चि सहाय बलिज्जइ । वैयाविच्चि परम जस पावइ, वैयाविच्चि णिरोस सुवज्जइ ॥२॥ वैयाविच्चि दलिद्द णिवा-रइ, वैयाविच्चि भवोदधि तारइ । वैयाविच्चि अमरपद विज्जइ, वैयाविच्चि सदा फल लिज्जइ ॥३॥ वैयाविच्चि करइ जन सेवा, वैयाविच्चि पसण जु देवा वैयाविच्चि कुकम्म विणासइ, वैयाविच्चि सुभव पयासइ ॥४॥ वैयाविच्चि गणेंदसु कहिया, वैयाविच्चि मुणिंद सु महिया । वैयाविच्चि महा तव सिद्धि, वैयाविच्चि अचलपद रिद्धि ॥५॥

घत्ता ।

दिइ वैयाविच्चि गुण सम्पत्ति,
सिरिभूषण मुणिणा कहिया ।
जिनवर मुख जाता भव भय त्राता,
बम्भणाण मुणिणा कहिया ॥

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिकरणाय पूर्णार्घं० ।

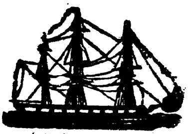

अथ अर्हद्भक्ति भावना ।

अर्हतां परमा भक्ति संसारांबुधितारिणां ।
स्थापयामि महाभक्त्या मिथ्यांधकारनाशिनां ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनात्रावतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् ।

दर्शनं जिनदेवस्य स्तवीति च करोति यः ।
स्तोत्रेण परया भक्त्या तं यजे मोक्षमार्गगं ॥

ॐ ह्रीं दर्शनस्तोत्रेणार्हद्भक्तये जलादिकं ॥१॥

आह्वाननं जिनेन्द्रस्य सु पूजासमये सदा ।
यः करोति सदाचारं यजे तं० ॥

ॐ ह्रीं आह्वाननार्हद्भक्तये जला० ॥२॥

स्थापनं श्रीजिनेन्द्रस्य पूजायां शुद्धभावतः ।
यः करोति सदाचारं यजे तं० ॥

ॐ ह्रीं स्थापनार्हद्भक्तये जला० ॥३॥

सन्निधिकरणसारं जिनेन्द्रस्य जिनागमत् । यः करोति०॥

ॐ ह्रीं सन्निधिकरणार्हद्भक्तये जला० ॥४॥

अष्टधा श्रीजिनेन्द्रस्य पूजनं परमोत्सवैः । यः करोति०॥

ॐ ह्रीं पूजयार्हद्भक्तये जला० ॥५॥

स्नपनं सर्वदोषघ्नं घृतदुग्धदधीक्षुभिः । यः करोति०॥

ॐ ह्रीं पंचामृतस्नानार्हद्भक्तये जला० ॥६॥

निरन्तरं सुकंठेन सर्वज्ञकीर्तनस्तवं । यः करोति०॥

ॐ ह्रीं महागोतेनार्हद्भक्तये जला० ॥७॥

निर्घोषवाद्यशब्देन जिनभक्तिं निरन्तरं । यः करोति० ॥
ॐ ह्रीं वाद्येनार्हद्भक्तये जला० ॥८॥
नर्तनं श्रीजिनेन्द्राग्रे हावभावसमन्वितं । यः करोति० ॥
ॐ ह्रीं नर्तनेनार्हद्भक्तये जला० ॥९॥
गङ्गाकल्लोलसादृश्यैश्चामरैर्भक्तिमात्मवित् । यः करोति० ॥
ॐ ह्रीं चामरेणार्हद्भक्तये जला० ॥१०॥
छत्रत्रयेण सद्भक्तिं जिनेन्द्रस्य सुभावतः । यः करोति० ॥
ॐ ह्रीं छत्रत्रयेणार्हद्भक्तये जला० ॥११॥
भक्तिं श्रीजिनराजस्य सिंहपीठेन शोभिना । यः करोति० ॥
ॐ ह्रीं सिंहासनेनार्हद्भक्तये जला० ॥१२॥
चन्द्रोपकेन सद्भक्तिं चीनदेशोद्भवैः नवैः । यः करोति० ॥
ॐ ह्रीं चन्द्रोपकेनार्हद्भक्तये जला० ॥१३॥

संसारपीठोधिं तरंति भव्या
यस्याः प्रसादाच्छिवसौख्यमेति ।
तां नीरगन्धैः कुसुमैः शुभाक्षतै
श्चरुत्सुदीपैरहमर्चये फलैः ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तये महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

सिरि जिणवरभक्ति सुह सम्पत्ति संसारांबुद्धितरणी । जउपाव विणासणि सुगति णिवासिणि बहु सुहरासिणि भयहरणी ॥१॥ जिणवर भक्ति करइ सविभोग, जिणवर भक्ति हरइ सवि रोग, जिणवर भक्ति करइ सविकाज, जिणवर भक्ति जहइ शिवराज ॥२॥ जिणवर भक्ति हरइ कुल दुःख, जिणवर भक्ति हरइ महा सुख । जिणवर भक्ति विणासइ कम्म, जिणवर भक्ति करइ जस धम्म ॥३॥ जिणवर भक्ति कुविघ्न विणासण, जिणवर भक्ति पाप पयासण । जिणवर भक्ति सु कीर्ति करइ, जिणवर भक्ति कुदुख हरइ ॥४॥ जिणवर भक्ति सुमोख सहाय, जिणवर भक्ति णमइ सुर राय । जिणवर भक्ति जु परम णाण, जिणवर भक्ति तिलोय माण ॥५॥

घत्ता ।

इति सिरि जिणभक्ति कम्म,
विच्छत्ति शिवसंपत्ति सुगईकरं ।
सिरि भूषणभासि सुगुन,
पयासि बंभणाण भवतापहरं ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तये पूर्णार्घं० ।

अथ आचार्य भक्ति भावना ।

श्रीमदाचार्यसद्भक्ति पुण्यदां सुखदां तथा ।
स्थापयामि जिनेन्द्रोक्ता मनोवाक्कायशुद्धितः ॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति अत्रावतर २ संवोषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

प्रशक्तऋद्धिसंयुक्तो मोक्षमार्गोपदेशकः ।
संपूज्यते मया साधुः कर्म्मराशिविवर्हिणा ॥

ॐ ह्रीं प्रशक्तऋद्धि आचार्यभक्तये जलादिकं ॥१॥

श्रेणियुग्मयुतो धीरो गम्भीरगुणसागरः ॥सम्पूज्यते०॥

ॐ ह्रीं युग्मश्रेणियुताचार्यभक्तये जला० ॥२॥

प्रत्यक्षज्ञानसंयुक्तो मुनिनाथो गुणार्णवः ॥सम्पूज्यते०॥

ॐ ह्रीं प्रत्यक्षज्ञानाचार्यभक्तये जला० ॥३॥

सधर्म्मामृतसंतुप्तो ह्यनगारो जितेन्द्रियः ॥सम्पूज्यते०॥

ॐ ह्रीं अनगाराचार्यभक्तये जला० ॥४॥

धर्माधर्मप्रकाशाय प्रजानां हितकारकः ॥ सम्पूज्यते०॥

ॐ ह्रीं राजऋष्याचार्यभक्तये जला० ॥५॥

परमब्रह्मणो रूपं स्वचिरो धारयन्ति ये ॥सम्पूज्यते० ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मऋष्याचार्यभक्तये जला० ॥६॥

देवर्षिःसुगुणांभोधिः पावनो मलहारकः ॥सम्पूज्यते०॥

ॐ ह्रीं देवऋष्याचार्यभक्तये जला० ॥७॥

परमर्षिः परो ध्यानी केवलज्ञानदायकः ॥ सम्पूज्यते० ॥

ॐ ह्रीं परमऋष्याचार्यभक्तये जला० ॥८॥

पुलाको हितसद्बुद्धिः सर्वशास्त्रविशारदः । सम्पूज्यते० ॥

ॐ ह्रीं पुलकाचार्यभक्तये० जला० ॥९॥

बकुशो बोधने रक्तो भव्यजीवहितंकरः । सम्पूज्यते० ॥

ॐ ह्रीं बकुशाचार्यभक्तये जला० ॥१०॥

कुशीलि संयमग्राही शुद्धचारित्रपालकः । सम्पूज्यते० ॥

ॐ ह्रीं कुशीलाचार्यभक्तये जला० ॥११॥

स्नातको मुनिशार्दूलः सर्वग्रंथविवर्जित । सम्पूज्यते० ॥

ॐ ह्रीं स्नातकाचार्यभक्तये जलादिकं ॥१२॥

आचार्याणां पराभक्तिप्रसूते सुखमुल्वणं ।

तां यजे जलगन्धेन शिवशर्म्मविधायनी ॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तये जलादिकं ।

अथ जयमाला ।

जो मुनि तारणतरण समच्छहु, भवसायर वरनाव समं ? परभव जण सुहयं पुण समच्छहु, आयरियभत्ति परमं ॥१॥ जो मुणिवर महवय पालन्त, जो मुणिवर कम्मइ काटन्त । जो मुणिवर चारित धरन्त, जो मुणिवर तप बारह करन्त ॥२॥ जो मुणिवर गुत्ति तय रक्खो, जो मुणिवर शिव सायर दक्षो । जो मुणिवर दह धम्म पयासे, जो मुणिवर निखिलागम भासे ॥३॥ जो मुणिवर जीवदया पाले, जो मुणिवर मिथ्यामद टाले । जो मुणिवर परीसहा बावीस, जो मुणिवर तप बारह इस ।४। जो मुणिवर कम्मट्ठइ खण्डे, जो मुणिवर शुभ ध्यानह मण्डे । जो मुणिवर रयणत्तय जुत्ता, जो मुणिवर तिय सल्ल विमुत्ता ॥५॥

घत्ता ।

जे बहुगुणपूरा कम्मु विचूरा
शिवपद सूरा भवभय हरणम् ।
सिरि भूषण कहिया तिहुयण महिया,
बंभणाण मह सुहकरणम् ॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तये पूर्णार्घं० ॥

अथ बहुश्रुत भक्ति भावना ।

धर्मोपदेशदातारं त्रातारं भववारिधौ ।
बहुश्रुतं महाभक्त्या स्थापयामि यथागमं ।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुता अत्रावतर २ संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

लोकालोकप्रकाशक्ति जन्मांतरविशूचिका ।
सर्वदोषविनिमुक्ता भक्तिर्या सा बहुश्रुता ।।

ॐ ह्रीं द्विधासांगोपांगयुक्तबहुश्रुतभक्तये जलादिकं ।

बहुश्रुतगुणाधारं धर्मतत्वप्रदीपकम् ।
जलचन्दनपुष्पैश्च पूजयामि बहुश्रुतम् ।।

ॐ ह्रीं पूजयाश्रुतभक्तये जला० ।

वपुषा मनषा वाचा बंदनागुणभाजनं । जलचन्दन० ।।

ॐ ह्रीं वंदनाश्रुतभक्तये जला० ।

तोयचन्दनाक्षतैः प्रसूनहव्यदीपकैः,
धूपधूम्रनालिकेरसंयुतैः सदार्घकैः ।
कर्ममर्मछेदनं सुपापदाह भेदनम्,
बहुश्रुतं यजामहे भवार्तिकन्दकन्दनम् ।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुताभक्तये महार्घं ।।

अथ जयमाला ।

बहुश्रुतभावण कम्म विदावण मुक्तिलच्छी सुहमं परमं । पाव विमोक्खण भवजल सोक्खण धम्म विपोषण शिवचरणं ॥१॥ इह बहुश्रुत भावण भवह पार, इह बहुश्रुत भावण कम्म णास । इह बहुश्रुत भावण धम्म रास, इह बहुश्रुत भावण समय सार ।२। इह बहुश्रुत भावण विणय होय, इह बहुश्रुत भावण णमइ लोय । इह बहुश्रुत भावण सुफल जाण, इह बहुश्रुत भावण पञ्च णाण ।३। इह बहुश्रुत भावण कम्म डाह, इह बहुश्रुत भावण लाय माण । इह बहुश्रुत भावण अचल गण, इह बहुश्रुत भावण परम धम्म ।।४ । इह बहुश्रुत भावण गलइ कम्म इह बहुश्रुत भावण सफल जम्म । इह बहुश्रुत भावण मोक्ख मग्ग, इह बहुश्रुत भावण सुह सुमग्ग ॥५॥

घत्ता ।

इह बहुसुद भावण महसुह दावण,
शिवसुख पावण गुण लहियं ।
सिरिभूषण महियं जिणवर कहिणं,
बम्भणाण मुनि नामनयं ॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तये पूर्णार्घं ।

अथ प्रवचन भावना ।

ज्ञानं श्री जिनेन्द्रोक्तं स्थापयामि श्रुताप्तये ।
मतिश्रुतावधिश्चेति मनःपर्ययकेवलम् ॥
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिअत्रावतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कर्माण्यष्टौ तथा सप्ततत्व षट्काय भावना ।
विचारः सर्ववेदानां प्रोक्तो यत्र तदागमं ॥
ॐ ह्रीं पंचांगोपांगयुक्तप्रवचनभक्तये जलादिकं ॥१॥

जिनेन्द्रवक्रसंसक्तं मतिज्ञानं प्रदायकं ।
पूजयामि सदा भक्तया द्रव्यैः शुद्धैरघापहं ॥
ॐ ह्रीं मतिज्ञानप्रवचनभक्तये जलादिकं ॥२॥

द्वादशांग जिनोद्रोक्तंश्रुतं ज्ञानं मदापहं । पूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानप्रवचनभक्तये जला० ॥३॥

रुपिद्रव्यप्रकाशायावधिज्ञानं च षड्विधं । पूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं अवधिज्ञानप्रवचनभक्तये जला० ॥४॥

मनःपर्ययसद्बोधं ऋजुविपुलसंज्ञिकं । पूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं मनःपर्ययप्रवचनभक्तये जला० ॥५॥

केवलज्ञानसंशुद्धं लोकालोकप्रकाशकं । पूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रवचनभक्तये जला० ॥६॥

चक्रित्वं भोगिनाथत्वं शक्रत्वं तीर्थनाथता ।
यस्या प्रसादतो नूनं सदा तां पूजयेऽर्घकैः ॥
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तये महार्घं ।

अथ जयमाला ।

णाण उदयकर पाप तिमिर हर सुह साताभर बोधमयं । मदि सुदि उहिं मण पज्जयमदि केवल णाण महो उदयं ॥१॥ पवयण भत्ति भवोदधि तारण, पवयण भत्ति कुकम्म निवारण । पवयण भत्ति कषाय विहंडणी, पवयण भत्ति कुकम्म विखंडणी ॥२॥ पवयण भत्ति सुद णाण पयासे, पवयण भत्ति शिव फल भासे । पवयण भत्ति कुमग्ग विणासइ, पवयण भत्ति सुमग्ग णिवासइ ॥३॥ पवयण भत्ति परमइ संचइ, पवयण भत्ति महामद वंचइ । पवयण भत्ति सुगुण भण्डारह, पवयण भत्ति सफल संसारह ॥४॥ पवयण भत्ति कुरुप सुरुपी, पवयण भत्ति अखय सुह कूपी । पवयण भत्ति कुमति छन्डइ, पवयण भत्ति सुगति पद मन्डइ ॥५॥

घत्ता ।

पवयण भत्ति सदा सुहकारी,
पवयण भत्ति पालो वय धारी ।
सिरिभूषण जिण णाह पयारी,
पवयण वंदे ब्रह्म विचारी ॥

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तये पूर्णार्घं ।

आवश्यकापरिहाणी भावना ।

आवश्यकाभिधां रम्या भावनां स्थापयामि ताम् ।
यथापूर्वं मुनींद्राणां चाभवन्मोक्षमार्गगाः ॥

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणीभावना अत्र अवतर २ संवौषट् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् ।

समता वन्दना यत्र प्रतिक्रमणमेव च ।
प्रत्याख्यानं तथा स्त्रोत्रं कायोत्सर्ग च षड्विधं ॥

ॐ ह्रीं षड्विध सांगोपांगावश्यकपरिहाणी विशुद्धये अर्घं० ।

समभावसमादिष्टं स्थितः पूर्वोत्तरे मुखं ।
त्रिकालयोगसंचारी मह्यते मोक्षदायकः ॥

ॐ ह्रीं समताभावावश्यकापरिहाणीविशुद्धये जलादिकं ॥१॥

कृतकर्मविनाशाय प्रतिक्रपण शुद्धिदं ।
यः करोति सदा योगी मह्यते मोक्षदायकः ॥

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यका० जला० ॥२॥

जिनेन्द्रस्य गुणां भोधेः वन्दनां कुरुते मुनिः ।
जलाद्यैरष्टधा द्रव्यैः मह्यते मोक्षदायकः ॥

ॐ ह्रीं वन्दनावश्यका० जला० ॥३॥

अनेकगद्यपद्येन स्तोत्रेणैव जिनोत्तमं ।
स्तूयते यो मुनिः साधुः मह्यते मोक्षदायकः ॥

ॐ ह्रीं स्तोत्रैणावश्यका० जला० ॥४॥

गुणज्ञो गुणवान् साधुः प्रत्याख्यानपरायणः ॥

तोयचन्दनपुष्पोघैः मह्यते मोक्षदायकः ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यका० जलादिकं ॥५॥

कायोत्सर्गं करोत्येव निर्भयः सर्वतो यथा । तोय चन्दन०॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यका० जलादिकं ॥६॥

तोयचन्दनपुष्पौघैः प्रसूनैश्चाक्षतैः शुभैः ।

हव्यदीपैश्चधूपैश्च तां यजे वरश्रीफलैः ॥

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणीदर्शनविशुद्धये महार्घं ।

अथ जयमाला ।

आवश्यक परीहाणि विशुद्धि, जाय साय णिम्मल वर बुद्धि । अणुकम्म पावइ सुर रिद्धि, मोक्खमग्ग संपज्जइ सिद्धि ॥१॥ आवश्यक दो कम्म विणासइ, आवश्यक दो सुगइ णिवासइ । आवश्यक दो णाण उपज्जइ, आवश्यक दो मोक्ख संपज्जइ ॥२॥ आवश्यक दो पावइ खण्ड, आवश्यक दो जाण विमण्ड । आवश्यक दो दंशण शुद्धि, आवश्यक दो निम्मल बुद्धि ॥३॥ आवश्यक दो दुगइ विचूक्कइ, आवश्यक दो सुगइ संपज्जइ । आवश्यक दो रोय विलज्जइ, आवश्यक दो मुगति सुरजइ ॥४॥ आवश्यक दो षटभेद

कहिज्जइ, समवावंदण स्तोत्र समज्जइ । थुदि पडिक्कमण वर स्वाध्याय, आवश्यक पाले मुनिराय ।।५।।

घत्ता ।

आवश्यक कीजिइ पाव विछिज्जइ,
धम्म धरिज्जइ सुद्धमणि ।
सिरिभूषण भास्यो सुगुणपयास्यो,
बंभणाण मुणि सार भणे ॥

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिविशुद्धये पूर्णार्घं ।

× × ×

अथ मार्ग-प्रभावना भावना ।

मोक्षमार्गप्रदां सारां जैनमार्गप्रभावनां ।
स्थापयामि सदा सम्यक् भावपूरेण नित्यशः ॥

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना अत्र अवतर२ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

रथोत्सवं जिनस्नानं नृत्यं गीतं च चर्चनं ।
पूजा यत्र जिनेन्द्रस्य कर्तव्यं तत्र सर्वदा ॥

ॐ ह्रीं दशविधसांगोपांगयुक्तमार्गप्रभावनाय जला० ।

श्रुतावधिप्रकाशेन ज्ञानेनैव मुनीश्वरः ।
मार्गप्रभावनां सारां करोत्येव यजेतकं ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गप्रभावनायै जला० ।।१।।

पञ्चमासोपवासेन तपो ये प्रचरंति हि ।
यजे सर्व भयातीतां सदा मार्गप्रभावनां ॥
ॐ ह्रीं तपसामार्गप्रभावनायै जलादिकं ॥२॥

गद्यपद्यकवित्त्वेन शास्त्रसंदर्शनेन च ।
मार्ग प्रभावनां सारां करोत्येव यजेतकम् ॥
ॐ ह्रीं कवित्वेमार्गप्रभावनायै जला० ॥३॥

सूठेकंन वितर्केण व्याख्यानं वितनोति यः ।
जिनमार्गप्रकाशाय यजे तं धीरमानसं ॥
ॐ ह्रीं व्याख्यानेमार्गप्रभावनायै जला० ॥४॥

समन्तभद्रनामानमकलंकं जितेन्द्रिय ।
जिनमार्गप्रकाशाय द्रव्याष्टकैर्महाम्यहं ।
ॐ ह्रीं वादेनमार्गप्रभानायै जला० ॥५॥

जिनसेनं जितारातिं रविषेणं महाम्यहं ॥
नेमिचन्द्रं गुणैः पूर्णं ग्रन्थकर्तारमुत्तमं ॥
ॐ ह्रीं ग्रन्थोद्धारमार्गप्रभावनायै जला० ॥६॥

कैलाशपर्वते रम्ये बिंबानि भरतेश्चिना ।
करापितानि सद्भक्तया यजे तम् भरताभिधं ॥
ॐ ह्रीं जिनप्रतिमामार्गप्रभावनायै जला० ॥७॥

चतुर्विधमहासंघगीतनृत्यमहोत्सवैः ।
मन्त्रपूर्वं प्रतिष्ठां यः करोत्येव हि तम् यजे ॥
ॐ ह्रीं प्रतिमाप्रतिष्ठाकृतमार्गप्रभावनायै जला० ॥८॥

सम्मेद्दा चलसेत्रुंजोर्जयन्तादिनगादिषु ।
संघयात्रा यथा भक्तया यो करोत्येव तम् यजे ।

ॐ ह्रीं संघयात्रामार्गप्रभावनायै जला० ॥९॥

षोडशकारणान्यष्टाह्विदशलक्षणपूजनं ।
सद्द्रव्यैर्नृत्यगीतैश्च यः करोत्येव तम् यजे ॥

ॐ ह्रीं अनेकपूजाविधानमार्गप्रभावनायै जला० ॥१०॥

जलेन गन्धेन शुभाक्षतेन,
हव्येन दीपेन सुधूपकेन ।
फलेन सारेण जिनस्य जातां,
चर्चामि तां मार्गप्रभावनां हि ॥

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायै महार्घं ।

* * *

अथ जयमाला ।

वरकीर्तिपसारण भवजलतारण, वारण कम्मकलंक चयं ।
इह धम्म पहावण परमत वारण, भव भय हारण बम्भमयं
॥१॥ जय मग्ग पहावण धम्म थम्भ, जय मग्ग पहावण
सुगुण रम्भ । जय मग्ग पहावण दह पयार, जय मग्ग पहावण
भवह पार ॥२॥ जय मग्ग पहावण कीत्ति रासि; जय मग्ग
पहावण लछि दासि । जय मग्ग पहावण कुमत खण्ड, जय
मग्ग पहावण स्वमत मण्ड ॥३॥ जय मग्ग पहावण तित्थ

संघ, जय मग्ग पहावण सिद्धि जंघ । जय मग्ग पहावण चैत्य देव, जय मग्ग पहावण मुणिव सेव ॥४॥ जय मग्ग पहावण रामसेन, जय मग्ग पहावण रविषेण । जय मग्ग पहावण चन्दकीत्ति, जय मग्ग पहावण इह सम्पत्ति ॥५॥

घत्ता ।

इह मग्ग पहावण पाव निवारण,
सिरिभूषण णिय वयण धरो ।
सिरि जिणमत पोषण कम्म विशोषण
बम्भणाण शिव सुक्ख करो ॥

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायै पूर्णार्घं ।

अथ प्रवचन वात्सल्य भावना ।

सर्वज्ञवदनोद्भुतं सारसौख्यकरं नृणां ।
स्थापये धर्मसिद्धियर्थं वत्सलत्वं प्रवाचकं ॥

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यांगत्रावतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

शीलसंपत्तियुक्तानां चारित्रप्रतिपालिनां ।
यत्र संक्रियते मानं तद्वात्सल्यं बुधैः स्मृतं ॥

ॐ ह्रीं विविधसांगोपांगयुक्तप्रवचनवात्सल्यांगाय जला० ॥

भरतादिकसद्भूमौ ये तिष्ठन्ति मुनीश्वराः ।
श्रुत्वा स्नेहं करोत्येव यजे तं धर्मवत्सलं ॥
ॐ ह्रीं साधुस्नेहप्रवचनवत्सलत्वायै जलादिकं ॥१॥
भरतादिकसद्भूमौ या विहरहन्ति चार्जिकाः ।
श्रुत्वास्नेहं करोत्येव यजे तं धर्मवत्सलं ।
ॐ ह्रीं आर्जिकास्नेहप्रवचनवत्सलत्वायै जला० ॥२॥
भरतादिकसद्भूमो ये सन्ति सुश्रावकाः ।
श्रुत्वा स्नेहं करोत्येव यजे तम् धर्मवत्सलं ।
ॐ ह्रीं श्रावकस्नेहप्रवचनवत्सलत्वायै जला० ॥३॥
भरतादिकसद्भूमौ या सन्ति सुश्राविकाः ।
श्रुतवा स्नेहं करोत्येव यजे तं धर्मवत्सलं ॥
ॐ ह्रीं श्राविकास्नेहप्रवचनवत्सलत्वायै जला० ॥४॥
नीरगन्धसुगन्धपुष्पसुभाक्षतौघचरुवरैः ।
दीपधूपफलाश्रितैर्व्रतनायकं शिवदायकम् ॥
रामसेनमुनींद्रचन्द्रकीर्तिवर्णिभिरचितं ।
ज्ञानसागरप्रार्थितं भवभंजकं अघनाशकं ॥
ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यत्वायै महार्घं । पूर्णार्घं ।

× × × ×

अथ समुच्चय जयमाला ।

इह भवजल तारण कम्म निवारण सोलहकारण कम्महरं ।
जम्म जरामय चउगइ दुस्सय सव्वदु कम्म खयकरणं ॥१॥
सौत्थयकरणपणु दंसण विशुद्धि, जसभावे पावे अमर रिद्धि ।

मण धरउ विणच संघाधिकार, मुणि अजय भाव वसाधिकार ॥२॥ पुण शील रयण पालो विशाल, णव भेद भाव वर हो दयाल । मण धरहू जीव णाणोपयोग, जह भावे करे कम्मारि रोग ॥३॥ णिय हृदय धरउ संवेग भाव, जाणौ लगि हो अचल पमाण । दिज्जइ अक्खय सम्पत्त दाण, लीजे तिलोय मजे सुभाण ॥४॥ तव तवो जीव बारह पयार, सव साधु समाहि भवाब्धिपार । मण धरहु वैयावित्ति सु अङ्ग, अरिहंत भक्ति कम्मारि भंग ॥५॥ आयार भक्ति भव दुःख छेद, बहु सुयण भक्ति अणाण भेद । आवश्यकेन कम्मट्ठ णास, पवयण भत्ति मुत्ति णिवास ॥६॥ जिण मग्ग पहावण धम्म धीर, पवयण पालो भव्व सुवीर । जे सोलह-कारण पालयंत, ते माणव अविचल पद लहन्त ॥७॥

घत्ता ।

भवदुःहछंडण मोक्खविमंडण, कम्मविखंडण वयधुरीयं
चन्द्रकित्ति मुनीवरपद परम, धर बम्भणाण अंगीकरीयं ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो पूर्णार्घं ।

त्रैलोक्ये वरदां शुद्धां जराभयविनाशिनी ।
पूजां ते प्रददाम्युच्चैः शांतिधारा त्रयात्मिकां ॥

इति शांतिधारा ।

त्रैलोक्योदर सम्भवासु विसदां लक्ष्मी नयत्यातिकीं ।
राज्यकोशयुतं यशः पृथुतरं सौख्यं प्रतापोल्वणं ॥
छत्रचामरभूषितं च निजता ज्ञानं च सौख्यांस्पदनेतद्
षोडशकारणव्रतविधौ पूजा प्रसादाद्भवेत् ॥

इत्याशीर्वादः ।

श्रीमद् ब्रह्मांडभांडोप्रकटितसुयशः काष्टसंघो गुणाद्रि-
स्तस्मिन् श्रीरामसेनो यतिजनविदितः पूर्वमेवाबभूवः ।
तद्वंशेऽनेकशो हि प्रचुरगुणयुताः सूरयो विश्वविद्याः ।
संजाता विश्वसेनाभिधजननमिता भावतस्तान् भजेऽहं ॥

विद्यया भूषितं सारं विद्याभूषणमुत्कटं ।
तत्पटाचलभास्वंतं श्रीभूषणयतीश्वरं ॥ २ ॥
चन्द्रकीर्तिमहामान्यं तर्क्किणां हि शिरोमणिं ।
तत्पट्टे राजकीर्तिं च वन्दे चर्चेति भक्तितः ॥३॥

सर्वज्ञदेववदनोद्भवमक्षयं च ।
नाम्ना व्रतं षोडशकारणं हि ॥
तस्याष्टकर्मरिपुखण्डनवज्रतुल्यं ।
श्रीज्ञानसागरमुनींद्र मनं चकार ॥४॥

॥ अथ जाप्य १०८ दीयते ॥

जाप्य मन्त्र-ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धादि षोडशकारणेभ्यो नमः

इति श्री भूषणकृतषोडशकारण व्रतोद्यापनं ।

श्री रत्नत्रय व्रत कथा ।

श्रीमनसन्मतिं नत्वा गौतम च गणाधिपं ।
प्रच्छकः श्रेणिको राजा विनयान्नतमस्तकः ॥ १ ॥
केनेदं विहितं नाथ रत्नत्रयमिदं व्रतं ।
कीदृक्फलं च तेनाप्तं तद्व्रतं कथय प्रभो ॥ २ ॥
अथाह गौतमस्वामी दिव्यगंभीरया गिरा ।
भव्यं पृष्टं त्वया राजन् श्रुणु त्वं कथयामि ते ॥ ३॥
जंबूवृक्षांकिते जंबूद्वीपे द्वीपेषु मध्यगे ।
लक्षयोजनविस्तीर्णे क्षेत्रं भारतसंज्ञकम् ॥ ४ ॥
तस्यास्ति पूर्वदिग्भागे द्वितीयं क्षेत्रमुत्तमम् ।
नाम्ना पूर्व विदेहं च धर्मिजनैः समाकुलम् ॥ ५ ॥
पुष्कलावतिप्रमुखानेकदेशसमन्वितं ।
पवित्र क्षेत्रमत्यन्तम् पुरपत्तनशोभितम् ॥ ६ ॥
राजा वंश्रवणस्तत्र सम्यक्त्वालकृतः सुधीः ।
तेनेदं च कृतं पूर्वं व्रतं रत्नत्रयाभिधं ॥ ७ ॥
तत्फलेनैव सम्बद्धं तीर्थकृतकुलमुत्तमम् ।
ततः समाधिना मृत्वाहमिंद्रोऽभूतो भूपतिः ॥ ८ ॥
तस्माच्युत्वायुषांते सः बंगदेशे मनोहरे ।
मिथुलाख्यापूरिरम्या तस्यां कुम्भाभिधो नृपः ॥ ९ ॥
राज्ञी प्रभावती दत्ता तद्गर्भे सोऽवतीर्णवान् ।
रत्नत्रयप्रभावेन मल्लिनाथो जिनेश्वरः ॥ १० ॥
सः जातः कर्मनियोगः पंचकल्याणक नायकः ।
इति मत्वा बुधैः कार्यं रत्नत्रयमिदं व्रतं ॥ ११ ॥

तस्य पूजा विधिर्वक्ष्येऽर्हन्नामाष्टसहस्रकम् ।
पठित्वा देहशुद्धयर्थं सकलीकरणं पठेत् ॥ १२ ॥
पूजयेत् प्रथमं देवं सिद्धादिपंचनायकान् ।
वेदिमण्डपयो शोभां कृत्वा पूजा तयोर्मुदा ॥१३॥
गुर्वाज्ञां च समादाय स्वस्तिकेनास्य भक्तितः ।
रत्नत्रयस्थ यद्बिंबं चतुर्विंशतिसंयुतम् ॥ १४ ॥
तदग्रे विधिना स्थाप्यं सम्यक् यंत्रत्रयं शुभं ।
सस्नाप्य विधिना तत्र वृत्तानामर्चयेत्पुनः ॥ १५ ॥
स्वस्तिकम् सुन्दरं कृत्वा त्रिनवतिसुकोष्टकैः ।
तद्व्रतोद्यापनं कुर्यात् भक्तया शक्तया शिवं पदं ।१६।
नित्वाज्ञां प्रथमं गुरोरपि ततः पूजां समारभ्यते ।
तत्रादौ च सहस्रनामसकलीकरणं त्रिशुद्धया पठेत् ॥
पश्चात् श्रीजिनदेवसिद्धकलिकुण्डादिश्रुतार्चागुरोः ।
कृत्वानुक्रमतोऽर्चनं च विधिना दृग्बोधवृतं यजेत् १७
अस्योद्यापन सद्विधौ च मण्डपादि स्वस्तिकस्यार्चनं ।
कर्तव्यं स्नपनं पठेत्सुविधिना पंचामृतैर्भक्तितः ॥
कार्यों च ध्वजसंघ पुजकरणं तांबूलदानादिकम् ।
कुर्यात्रांकुरोपणादिविविधै र्वाद्यैश्च सन्तोरणैः ॥१८॥
आहाराभयभैषजं च मुनये सच्छास्त्रदानं तथा ।
पात्रेभ्यो विनयाच्चतुर्विधभिदं दानं प्रदेयं बुधैः ॥
स्तुत्याशीर्वरगीतमंगलरवैः कार्यं व्रतोद्यापनं ।
इत्युद्यापनसद्विधिश्च गणिनोक्तश्रेणिकाग्रे पुरा ॥१९॥

अथ रत्नत्रय व्रत उद्यापन ।

अथातः सम्प्रविक्ष्यामि तेषां सद्गुणपूजनं ।
कर्णिका मध्यभागे च पूजयेत् द्रव्यसत्तमैः ।।

ॐ ह्रीं सम्यकरत्नत्रयधर्मपूजनाय स्वस्तिकोपरिपुष्पांजलि क्षिपेत् ।

आह्वाननस्थापनसन्निधानैः संस्थापयाम्यत्र सबीजवर्णैः ।
सद्दर्शनस्यापि सुयंत्रराजं रौप्यं तथा हैममयं च ताम्रं ।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनअत्रावतरावतर संवौषट् । स्थापनं सन्निधिकरणं ।।

गंगादितीर्थभवजीवनधारया च ।
संवर्द्धिताखिलसुमंगलपुण्यवल्लिः ।।
संपूजयामि भवतापहरं स्वनर्घ्यं ।
सद्दर्शनं परमधर्मतरोश्च मूलं ।।

ॐ ह्रीं अष्टांगविधसम्यकदर्शनाय जलं० ।

श्रीचन्दनैः कनकवर्णसुकुन्कुमाद्यैः ।
कृष्णागुरुद्रवयुतैर्घनसारमिश्रैः ।।सम्पूजयामि० ।।

ॐ ह्रीं अष्टांगविधसम्यक्दर्शनाय चन्दनम् ।

शुभ्रैः सुगन्धकलमाक्षतचारुपुंजैः ।
हीरोज्वलैः सुखकरैरिवचन्द्रचूर्णैः ।। सम्पूजयामि० ।।

ॐ ह्रीं अष्टांग० अक्षतम् ।

हेमाभचंपकवरांबुजकेतकीभिः ।
सत्पारिजातकचयैर्वकुलादिपुष्पैः संपूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं अष्टांग० पुष्पं ।
षट्भिःरसैश्चरुभिर्घृतपूरयुक्तैः ।
शुद्धैः सुधामधुरमोदकपायसान्नैः ॥ संपूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं अष्टांग० नैवेद्यम् ।
रत्नादिसोमघृतदीपतरैरिवार्कैः ।
ज्ञानैकहेतुरत्नं प्रहतांधकारैः ॥ संपूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं अष्टांग० दीपं ।
कृष्णागुरुप्रमुखधूपभरैः सुगन्धैः ।
कर्मेंधनाग्निभिरहो विबुधोपनीतैः ॥ संपूजयामि०॥
ॐ ह्रीं अष्टांग० धूपं ।
स्वर्गापवर्गफलदैवरपक्ववासैः ।
नारिंगलिंबुकदलीफनसाम्रकैर्वा ॥ सम्पूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं अष्टांग० फलम्

पूजाविशेषकृतमर्घमतीव भक्त्या
प्रोत्तारयामि भवसागरसेतुकल्पं ।
सम्यक्त्वरत्नमपि भव्यसहायरुपं
शंकादिदोषरहितं शुभधर्मबीजं ॥
ॐ ह्रीं अष्टांग० अर्घ्यं ।

अथ प्रत्येक पूजा ।

क्षयादुपशमान्मिश्रात् सम्यक्त्वं त्रिविधं मतम् ।
निसर्गाधिगमाच्चैव तत्वं श्रद्धानमुत्तमं ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तिकोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

कर्मोपशमतः सम्यक् दर्शनं कर्मछेदकम् ।
नाम्नोपशममित्याहुर्यजे नीरादिभिर्वरैः ॥

ॐ ह्रीं उपशमसम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥१॥

क्रोधमानादिसप्तानां क्षयोपशमतो भवेत् ।
वेदकं दर्शनं रम्यं यजे नीरादिभिर्वरैः ॥

ॐ ह्रीं वेदकसम्यक् रत्नत्रयाय जला० ॥२॥

सप्तकर्मक्षयाज्जातमुत्तमं क्षायकं परम् ।
मुक्तिहेतुशुभंनित्यं यजे नीरादिभिर्वरैः ॥

ॐ ह्रीं क्षायकसम्यक्त्वरत्नत्रयाय जला० ॥३॥

शुद्धं यन्निश्चये ज्ञेयं निःकर्मात्मगुण स्थिरं ।
निर्गतं च यथा नीरं यजे तत् दृष्टिरत्नकं ॥

ॐ ह्रीं सिद्धगुणनिश्चयसम्यक्त्वरत्नत्रयाय जला० ॥४॥

जैनागमे सूक्ष्मविचारशङ्का,
नोदेति यत्रैय पवित्ररूपे ॥
तोयादिभिः शंकितदोषहीन,
तत् दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं निःशंकितसम्यक्त्वरत्नत्रयाय जला० ॥५॥

कृत्वा तपोदानसुसंयमानि,
सौख्याभिकांक्षा न करोति यत्र।
निकांक्षिताख्यं सुगुणं जलाद्यै-
स्तत् दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं निःकांक्षितांगायसम्यक्त्वरत्नत्रयाय जला० ॥६॥

संक्लिष्टदेहादिकसाधुवृन्दं
दृष्टवा तदास्य प्रवदन्ति चांगे।
तस्मिन् जुगुप्सा न करोति भव्यः
तत् दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सितांगाय सम्यक्त्वरत्नत्रयाय जला० ॥७॥

मौढ्यत्रयादूर तरङ्गदंगं
चामूढताख्यं प्रवदन्ति तज्ञाः ॥
शुद्धात्मकं मुक्तिकरं जलाद्यै-
स्तत् दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं अमूढतासम्यक्त्वरत्नत्रयाय जला० ॥८॥

आच्छादनं यत् गुरुधर्म तीर्थे
दोषे कदाचित् क्रियते कुभावात्।
आहुश्च सोपादिकगूहनाख्यं
तत् दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं उपगूहनाय सम्यक्त्वरत्नत्रयाय जला० ॥९॥

पुण्यादिवर्गे चलिते सुधर्मात्
स्थिरं तनोति विधिना प्रबोधात्।

तोयादिभिः सुस्थितिकारनाम

तत् दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं स्थितिकरणाय सम्य० जलादिकं ॥१०॥

आप्तोक्तधर्मव्रतपालकेषू

वात्सल्यभावात् विदधाति सेवां।

अङ्गं तदाख्यं सुखदं जलाद्य-

स्तत् दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं वात्सल्यंगाय सम्य० जलादिकं ॥११॥

जैनोक्तमार्गस्य तनोति भव्य

प्रोत्साहतां दानवित्तादिशक्तया ।

धर्मार्थिमंगं तदहं जलाद्यै-

स्तत् दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं प्रभावनांगाय सम्य० जलादिकं ॥१२॥

पूजाविशेषैर्वसुद्रव्यमानै-

र्यंत्रैः सुमन्त्रैः खलु दृष्टिसिद्ध्यैः ।

चोत्तारयाम्यर्घमिदं जलाद्यै-

र्वादित्रनादैः व्यवहाररूपैः ॥

ॐ ह्रींअष्टांगविधसम्यक्दर्शनाय महार्घं ।

अथ दर्शन जयमाला ।

जय जय सदर्शन कुमत विखण्डन मिथ्यामोह निवारण । बुध कमल दिवाकर परम गुणाकर मुक्तिवधू

सुखं करण ॥१॥ जय वर निःशंकित गुण विशाल, परहित निखिल शंकादि जाल । जय पर निःकांक्षित भोग दूर, शिवगति सुखकारण कुमुदसूर ॥२॥ जय निर्विचिकित्सा गुण गरिष्ट, निर्नाशित विचिकित्सादि कष्ट । जय निहित सकल मूढत्व भाव, जय भवनिधि भव्य समूह नाव ॥३॥ जय उपगूहन वर निहित दोष, परिकृत मुनिजन बहु हृदय तोष । जय वृष पतनादि निवार धीर, दूरीकृत भव भय दोष धीर ॥४॥ जय वत्सलत्व बहुगुण निधान, परिकल्पित सुरनर अखिल मान । जय जिनशासन विख्यातकार, विधि गुण संसार समुद्रतार ॥५॥ जय जिनवर गणधर गुण करंड, संस्कृत मिथ्यासुख पाप दंड । जय सुरनरपति पद जन मूल, मिथ्यातम मोहित हृदयशूल ॥ इति दृगगुण संस्तुति ममला महामति रिहयः पठति परमभक्त्या । रत्नत्रयं समं यातिरखिलभुवनपतिरात्मपाणिगतकृतमुक्तिः ॥

सम्यक् पदांकितसुदर्शनमादिधर्मः ।
स्वर्गापवर्गफलदं गुणरत्नपात्रं ॥
सायुधनं शुभगमित्रकलत्रपुत्रं ।
देयाद्विभो भुवि सुदर्शन रत्नमर्च्यं ॥

इत्याशिर्वादः ।

अथ ज्ञान पूजा ।

आह्वाननस्थापनसंन्निधापनैः ।
संस्थापयाम्यत्र स बीजवर्णैः ॥
सद्ज्ञानरत्नस्य सु यन्त्रमन्त्रं ।
रौप्येपदे हेममये च ताम्रे ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानअत्रावतरावतर संवौषट् । स्थापनम् सन्निधिकरणम् ।

गंगादितीर्थभवजीवनधारया च ।
सत् स्थूलया सदयधर्मसुवृत्तवृद्धयैः ॥
स्वात्मस्थशुद्धमपरं व्यवहाररूपं ।
सद्बोधरत्नममलं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय जलं ।

श्रीचन्दनैः कनकवर्णसुकुंकुमाद्यैः ।
कृष्णागरुद्रवयुतैर्घनसारमिश्रैः ॥ स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय चन्दनं० ।

स्थूलैः सुगन्धकमलाक्षतचारुपुंजैः ।
हीरोज्वलैः शुभतरैरिव पुण्यपुंजैः ॥ स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय अक्षतं० ।

हेमाभचम्पकवरांबुजकेतकीभिः ।
सत्पारिजातकचयैर्बकुलादिपुष्पैः ॥ स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय पुष्पम्० ।

शाल्योदनैः सुखकरैर्घृ तपूरयुक्तैः ।
शुद्धैः सुधामधुरमोदकपायसान्नैः । स्वात्मस्थ० ।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं० ।

रत्नादिसोमघृतदीपचयैरघघ्नैः ।
ज्ञानैकहेतुभिरलं प्रहतांधकारैः । स्वात्मस्थ० ।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय दीपं० ।

कृष्णागुरुप्रमुखधूपभरैः सुगन्धैः ।
कर्मेंधनाग्निभिरहोविबुधोपनीतैः । स्वात्मस्थ० ।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय धूपं० ।

स्वर्गापवर्गसुखदैर्वरपक्वपासै–
र्नारिंगलिंबुकदलीफनसाम्रकैर्वा । स्वात्मस्थ० ।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय फलं० ।

वार्गंधशालिजसुपुष्पचयैर्मनोज्ञै–
नैवेद्यदीपवरधूपफलादिभिर्वा ॥
एतैः कृतार्थमिह बोधमये सुयन्त्रे ।
प्रोत्तारयामि सह वाद्यसुगीतघोषैः ।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय अर्घं ।

अथ प्रत्येक पूजा ।

अवग्रहादिभिर्जातं षट्त्रिंशत्रिशतात्मकम् ।
मतिज्ञानं महद्ज्ञानं यजे तोयादिभिर्मुदा ॥

ॐ ह्रीं सम्यकमतिज्ञानाय जलं० ॥१॥

सर्वार्थवित् क्रियते शास्त्रं द्वयनेकद्वादशात्मकम् ।
मतिपूर्वं श्रुतं ज्ञानं यजे सर्वज्ञवत् श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं सत्सम्यक्श्रुतज्ञानाय जला० ॥२॥

आचारो वर्ण्यते यत्र चारित्रं मोक्षसाधकम् ।
गम्भीरार्थं तदंगं तत् यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्आचारांगाय जला० ॥३॥

सूत्रकृतांगनामा यः सहस्रद्वित्रिंशद् पदं
द्वितीयांगं जिनेन्द्रोक्तं, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगाय जला० ॥४॥

स्थानानि तत्वजीवानां कथ्यंते यत्र तज्ञकैः ।
भव्यार्थानि तदंगं च यजे तोयादिभिः श्रुतं ।

ॐ ह्रीं स्थानांगाय जला० ॥५॥

द्रव्यादीनां च सादृश्यं, कथ्यते समवांयसः
परस्परैतदंगं च, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं समवायांगाय जला० ॥६॥

प्रश्नषष्टिसहस्राणि व्याख्याप्रज्ञप्तिकेयतः ।
प्रोच्यन्ते तस्तदंगं च यजे तोयादिभिः श्रुतम् ।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्त्यांगाय जला० ॥७॥

ज्ञातृधर्मकथांगं तत् यत्र धर्मकथा भवेत् ।
गम्भीरार्था तदंगं च, यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥

ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथांगाय जला० ॥८॥

श्रावकाचारसद्बोधोपासकाध्ययनं यतः ।
नाम्ना तदंगकं रम्यं यजे तोयादिभि श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगाय जला० ॥९॥

दशप्रांतकृतो यत्र वर्ण्यंते प्रतितीर्थकम् ।
तन्नामाहि तदंगं च यजे तोयादिभि श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं अन्तकृद्दशांगाय जला० ॥१०॥

प्रति तीर्थं दशोत्पत्ति प्रोच्यते विजयादिषु ।
तदौपपादिकं चांगं यजे तोयादिभि श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं उपधादिकनामांगाय जला० ॥११॥

प्रश्नानुसारतः यत्र वाच्यायां ते कथा शुभाः ।
प्रश्नव्याकरणं नाम, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगाय जला० ॥१२॥

नाना कर्मोदयं यत्र वर्ण्यते तीर्थचक्रिणां ।
विपाकसूत्रनामाङ्गं, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगाय जला० ॥१३॥

दृष्टिवादांगसम्भूतं श्रीप्रथमानुयोगकं ।
पुराणरचना यत्र यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं प्रथमानुयोगाय जलादिकं ॥१४॥

दृष्टिवादं गतं सूत्रं सूत्रसिद्धांतसंज्ञिकं ॥
नानाप्रमेयवाराशिं, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं सूत्रसिद्धांताय जलादिकं ॥१५॥

चन्द्रप्रज्ञप्तिकं नाम श्रुतज्ञानं जिनोदितं ।
वर्णनं तत्र चन्द्रस्य, यजे तोयादिभि श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं चन्द्रप्रज्ञप्त्यै जलादिकं ॥१६॥

सूर्यप्रज्ञप्तिस्थज्ञानं सूर्यादिग्रहणादिकं ।
कथ्यते यत्र सर्वज्ञैः यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं सूर्यप्रज्ञप्त्यै जला० ॥१७॥

जम्बूद्वीपकुलाद्रीणां वर्णनं कथिता यतः ।
तत्प्रज्ञप्ति श्रुतं पुण्यां, यजे तोयादिभि श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यै जला० ॥१८॥

द्वीपसागरचैत्यानां वर्णनं यत्र कथ्यते ।
तत्प्रज्ञप्ति भव्यार्थे यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं द्वीपसागरप्रज्ञप्त्यै जला० ॥१९॥

व्याख्याप्रज्ञप्तिकाख्यं यत् जीवाजीवादिवर्णनं ।
क्रियते यत्र तद्बोधं, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिश्रुताय जला० ॥२०॥

जलादिस्तभनं यत्र चोक्तं मन्त्रादिभैषजैः ।
जलादिचूलिकाख्यं तत् यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं जलगतचूलिकायै जला० ॥२१॥

स्थलादिचूलिकाख्यं तत् मेरुकुलाद्रिभूभृतां ।
व्याख्यानं क्रियते यत्र, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं स्थलगतचूलिकायै जला० ॥२२॥

मायादिचूलिकाख्यं तत् मायारुपेन्द्रजालकां ।
कथ्यते यत्र सर्वज्ञैः यजे तोयादिभिः श्रुतम् ।।

ॐ ह्रीं मायागतचूलिकायै जला० ॥२३॥

आकाशचूलिकां वन्दे खे गत्यादिकवर्णनं ।
यत्र भवेत्सुबोधं तत् यजे तोयादिभिः श्रुतम् ।

ॐ ह्रीं आकाशगतचूलिकायै जला० ॥२४॥

रूपादिचूलिकामात्रं चित्रकर्मादिवर्णनम् ।
गजादीनां च तत्ज्ञानं यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं रूपगतचूलिकायै जला० ॥२५॥

उत्पादपूर्वमाद्यं स्यात् द्रव्योत्पादादिवर्णनम् ।
यत्रैतत्पूर्वमहं वन्दे, यजे तोयादिभिः श्रुतं ।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वश्रुतज्ञानाय जला० ॥२६॥

अग्रायणीयपूर्वं तत् यत्र मोक्षप्रकाशनं ।
मुख्यत्वं सर्वशास्त्रेषू, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं अग्रायणीयपूर्वश्रुताय जला० ॥२७॥

यत्र वीर्यानुवादाख्यमात्मनः शक्तिवर्णनं ।
एतत्पूर्वमहं वन्दे, यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्वश्रुताय जला० ॥२८॥

अस्ति नास्ति प्रवादम् तत् यत्र स्याद्वादलक्षणं ॥
एतत्पूर्वमहं वन्दे, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय जला० ॥२९॥

ज्ञानप्रवादपूर्वं च वन्दे ज्ञानादिदेशकं ।
ज्ञानप्रमाणसिद्धयर्थं, यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वाय जला० ॥३०॥

सत्यप्रवादसंज्ञं यत् सत्यादिभेदवाचकं ।
एतत्पूर्वं नमस्यामि, यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वाय जला० ॥३१॥

आत्मप्ररूपणं यत्र वन्दे तां भारती परं ।
आत्मप्रवादपूर्वाख्यां, यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वाय जला० ॥३२॥

कर्मप्रवादपूर्णं स्यात् यत्र कर्मादिवर्णनम् ।
शब्दार्थकं च नानार्थं यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वाय जला० ॥३३॥

प्रत्याख्यानं च तत्पूर्णं यत्र सावद्यवर्जनं ।
वदेऽहं तद्भवं ज्ञानं, यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वाय जला ॥३४॥

यत्र मन्त्ररसः प्रायो विद्यौषध्यादिवर्णनम् ।
विद्यानुवादपूर्वं तत्, यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वाय जला० ॥३५॥

कल्याणवादपूर्णं तत् यत्र कल्याणवर्णनम् ।
तीर्थंकरादिचक्रिणीं, यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वाय जला० ॥३६॥

प्राणवादमिदं पूर्वं चिकित्सादिप्ररुपणं ।
वन्दे धर्मफलं यत्र, यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं प्राणानुवादपूर्वाय जला० ॥३७॥

नृत्यवाद्यक्रियागीतं प्रोक्तं च यत्र पावनम् ।
क्रियाविशालपूर्वं तत् यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वाय जला० ॥३८॥

त्रैलोक्यरचना यत्र प्रोक्ता श्रीजिननायकैः ।
त्रैलोक्यबिन्दुं सारं तत्, यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्यबिन्दुसारपूर्वाय जला० ॥३९॥

अङ्गबाह्यं श्रुतं वन्दे यत्करोत्यघनिर्जरां ।
चतुर्दशविधं तच्च यजे तोयादिभिः श्रुतम् ॥
ॐ ह्रीं अङ्गबाह्यचतुदर्शविधश्रुताय जला० ॥४०॥

वर्णनं व्यञ्जनानां च, श्रुतज्ञानं सुलक्षणं ।
स्फुरदर्थं जलाद्यैश्च, तदंगं पूजयाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं व्यञ्जनोर्जिताय जला० ॥४१॥

अर्थैर्यत्र समग्रं च हीनाधिकार्थवर्जितं ॥
विशदार्थं जलाद्यैश्च तदंगं पूजयाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं अर्थसमग्राय जला० ॥४२॥

शब्दार्थैः सूपूर्णांगं, शब्दार्थो भयसंज्ञकं ।
निर्दोषार्थं जलाद्यैश्च, तदंगं, पूजयाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं शब्दार्थोभयपूर्णाय जला ॥४३॥

अकाले पठनं प्रोक्तं सुकालेऽध्ययने मतम् ।
तत्कालाध्ययनं ज्ञेयं तदंगं पूजयाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं कालोऽध्ययनोप्रभावाय जलादिकं ॥४४॥

उपाधानसमृद्धांगं नियमादि भवं यतः ।
विनयं देवतादीनां, तदंगं पूजयाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं उपधानसमृद्धांगाय जलादिकं ॥४५॥

विनयोन्मुद्रितांगं स्यादधिकविनयादिभिः ।
जलाद्ययष्टविधैद्रव्यैः, तदंगं पूजयाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं विनयोन्मुद्रितांगाय जलादिकं ॥४६॥

सम्यग्ज्ञानं च गुर्वाद्यनपह्नं च समेधितं ।
यत्पवित्र जलाद्यैश्च, तदंगं पूजयाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं गुर्वाद्यनपह्नसमे धितांगाय जलादिकं ॥४७॥

बहुमानसमृद्धाख्यां मानपूजादिपूर्वकम् ।
प्रोक्तं जिनैः जलाद्यैश्च, तदंगं पूजयाम्यहम् ॥
ॐ ह्रीं बहुमानसमृद्धांगाय जलादिकम् ॥४८॥

पूजाविशेषैर्जनितम् महापंचात्मरूपे वरबोधसूर्ये ।
प्रोत्तारयाम्यत्र महोत्सवेहि वाद्यप्रघोषैर्वरमंगलाय ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय महार्घं ।

अथ जयमाला ।

स्वर्मोक्षैकनिबन्धनं भवहरं चाज्ञानविध्वंसकं ।
मिथ्यामोहतमोपहम् निरुपमं तीर्थेश्वरादुद्भवम् ॥

लोकालोक पदार्थदीपममलं योगीश्वरैरावृतं ।
ज्ञानं ज्ञानधनाय नौमि वसुधा चारान्वितं संस्तुवे ॥

× × ×

ये पठन्ति विमलाक्षरसारं, ते प्रयांति सकलागमपारं ।
पजयन्ति परमार्थसमग्रं, ते त्यजन्ति संसृतिघनदुर्गं ॥
ये पठन्ति शब्दार्थमनेकम्, ते तरन्ति विद्यार्णवमेकम् ।
ये पठन्ति काले श्रुतपाठम्, लंघयति ते मिथ्याघाटं ॥
ये कुर्वंत्युपधानसमृद्धिं, ते भजन्ति सर्वातिमहर्द्धिं ।
अर्चयन्ति ये विनयाचारं, ते गच्छन्ति शिवालयसारं ॥
ये स्तुवन्ति विद्यागुरुपूज्यं, ते भजन्ति तीर्थेश्वरराज्यं ।
ये यजन्ति शास्त्रे बहुमानं, ते पिबन्ति सिद्धान्तसुपानं ॥
ज्ञानं कृत्स्नेन्द्रिय मृगपाशं, ज्ञानं महामोहविष नाशं ।
निस्संदेहं शिवसुखमूलं, अनन्तं पापारि विदुरं ॥
अष्टभेदमाचारविशुद्धं, ये पठन्ति जैनागमशुद्धं ।
येऽर्चयंतिभक्तव्याखिलभुक्तिं ते व्रजांतिभुक्त्वाखिलमुक्तिं ॥

घत्ता ।

असमगुणनिधानं चित्तमातङ्गसिंहं ।
विषयभुजङ्गमन्त्रं कर्मशत्रुघ्नमेव ॥
नरसुरपतिमान्यं विश्वसिद्धान्तसारं ।
वसुविधियजनाद्यैश्चार्चयेऽर्घेण मुक्तयै ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घं ।

॥ इति जयमाला ॥

य: सर्वथैकांतनयांधकारं,
ध्वंसत्यवश्यं नयरश्मिजालैः ।
विश्वं प्रकाशं विदधातु नित्यं,
पायादनेकांतरविः स युष्मान् ।।
इत्याशीर्वादः ।

ज्ञानं पंचविधं सुधारसमयं, सौख्याकरं दीपवत् ।
प्रत्यक्षादिपरोक्षभेदममलं स्वान्यप्रकाशात्मकम् ।।
धर्माद्येन सुभूषणेन रचितः सद्बोधकल्पद्रुमः ।
कुर्यात् यत्ररमादिभोगसकलं ध्यानं बलं सूरिणां ।।
इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं ।

अथ चारित्र पूजा ।

सद्वृत्तं सर्वसावद्यं योगव्यावृत्तिरात्मनः ।
गौणं स्याद्वृत्तिरानन्दः ज्ञेयं चारित्रभूषणं ।।१।।
अहिंसादीनि पंचैव समितिं पंचकं तथा ।
गुप्तित्रयं च यत्रस्याद् तच्चारित्ररत्नकं ।।२।।
इति यंत्रस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

आह्वाननस्थापनसन्निधानैः,
संस्थापयाम्यत्र सा बीजवर्णैः ।

चारित्ररत्नत्रययन्त्रमन्त्रं,
रौप्यं तथा हेममयं च ताम्रं ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र अत्रावतरावतर संवौषट् । स्थापनम् । सन्निधिकरणम् ।

गंगादितीर्थभवजीवनधारया च,
सत्सारया सुखदपुण्यसुवल्लिवृद्धयै ।
स्वात्मस्थशुद्धमपरं व्यवहाररूपं,
चारित्ररत्नममलं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं ।

श्रीचन्दनैर्विशदकुम्कुमहेमवर्णैः,
कृष्णागुरुद्रवयुतैर्घनसारमिष्टैः । स्वात्मस्थ०॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० चन्दनं ।

स्थूलैः सुगन्धकलमाक्षतचारुपुञ्जैः,
हीरोज्वलैः सुखकरेरिव चन्द्रचूर्णैः ! स्वात्मस्थ०॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० अक्षतं० ।

हेमाभचम्पकवरांबुजकेतकीभिः,
सत्पारिजातकचयैर्बकुलादिपुष्पैः । स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० पुष्पं० ।

शाल्योदनैः शुभतरैर्घृतपूरयुक्तैः
शुद्धैः सुधामधुरमोदकपायसान्नैः । स्वात्मस्थ०॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० नैवेद्यं० ।

रत्नादिसोमघृतदीपचयैरनर्घैः,
ज्ञानैकहेतुभिरलं प्रहतांधकारैः । स्वात्मस्थ० ॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० दीपं० ।

कृष्णागुरु प्रमुखधूपभरैः सुगन्धैः,
कर्माष्टकाग्निभिरहो विबुधोपनीतैः, । स्वात्मस्थ० ॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० धूपं० ।

स्वर्गापवर्गफलदैर्वरपक्ववारी–
नारिंगलिम्बुकदलीफनसाम्रकैर्वा । स्वात्मस्थ० ॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० फलं० ।

वार्गंधशालिजसुपुष्पचयैर्मनोज्ञै–
नैवेद्यदीपवरधूपफलादिभिर्वा ।
एतैः कृतार्थमिहसंयममन्त्ररूपे–
चोत्तारयामिवरवाद्य सुगीतघोषैः ॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविध०सम्यक्चारित्राय अर्घं ।

अथ प्रत्येक पूजा ।

मनसापि न कर्तव्या हिंसा दुर्गतिकारणम् ।
तद्व्रतं च जलाद्यैश्च यजे चारित्ररत्नकम् ॥
ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतहिंसाविरतिसम्यक्चारित्राय जला०
वचने नापि कर्तव्यां हिंसाकर्मनिवारणं ॥ तद्व्रतं च०॥
ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतहिंसाविरतिमहाव्रताय जला० ॥२॥

कायेन सर्वसावद्यं त्याज्यं निर्ग्रंथनायकैः । तद्व्रतम्० ॥
ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृताहिंसाविरतिमहाव्रताय जलादिकं ।३।
मनसापि न कर्तव्यं मऽनोसत्यं कर्मनिष्ठुरम् । तद्व्रतं० ।
ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतसत्य० जला० ॥४॥
वचनेन हितं सत्यं वाच्यं जीवसुखाकरं । तद्व्रतं ॥
ॐ ह्रीं प्रवचनविशुद्धयाकृता सत्य० जला० ॥५॥
कायेनापि न कर्तव्यमसत्ये प्रेरणादिकं तद्व्रतं ॥
ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतासत्य० जला० ॥६॥
स्तेयं हेयं दुराचारं मनसापि मुनिश्वरैः । तद्व्रतं० ॥
ॐ ह्रीं मनोविशुद्धया कृतासत्य० जला० ॥७॥
वचनेऽपि च तत् त्याज्यं स्तेयं हिंसाकर यतः ।तद्व्रतं०॥
ॐ ह्रीं वचनविशुद्धया कृतस्तेय० जला० ॥८॥
कायेनापि न कर्तव्यं स्तेयं स्वपरनाशकृत् । तद्व्रतं० ।
ॐ ह्रीं कायविशुद्धया कृतस्तेय० जला०॥९॥
मनसापि न चिंतव्यं कुशीलं दुःखदायकम् । तद्व्रतं० ।
ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतब्रह्मचर्यमहाव्रताय जला० ॥१०॥
ब्रह्मचर्यधरोवाग्मिस्त्रींवार्ता सकलां त्यजेत् । तद्व्रतं० ॥
ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृत ब्रह्मचर्य० जला० ॥११॥
कायेन रक्षितं शील प्राप्तं तेन शिवालयं ॥तद्व्रतं०॥
ॐ ह्रीं कायविशुद्धया कृतब्रह्मचर्य० जला० ॥१२॥
परिग्रहः परीहेयः मनसापि मुमुक्षुभिः ॥तद्व्रतं०॥
ॐ ह्रीं मनोविशुद्धया कृतपरिग्रहविरति० जला० ॥१३॥

परिग्रह सदा त्याज्यः वचसा पापकारणं ॥तद्व्रत०॥
ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतपरिग्रहवि० जला० ॥१४॥
साधुर्याति शिवं यस्मात् कायत्यपरिग्रहः ॥तद्व्रत०॥
ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतपरिग्रहवि०जलादिकं ॥१५॥

मनसान्वेषणं कृत्वा गच्छति साधवो यतः ।
ईर्यासमितिसंज्ञं तत् यजे चारित्ररत्नकं ॥
ॐ ह्रीं मनसाकृतैर्यासमिति० जला० ॥१६॥

वाग्भिर्दर्शितो मार्गो निरवद्यस्तपोभृतैः ।
ईर्यासमितिसंज्ञं तत् यजे चारित्ररत्नकं ॥
ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतैर्यासमिति० जला० ॥१७॥

कायेन क्रियते यत्र गमनं दृष्टिगोचरं ।
ईर्यासमितिसंज्ञं तत् यजे चारित्ररत्नकं ॥
ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतैर्यासमिति० जला० ॥१८॥

अविष्टुराक्षरं यत्र मनसा कोमलं वचः ।
भाषासमितिसंज्ञं तत् यजे चारित्ररत्नकं ॥
ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतभाषासमितिमहा० जला० ॥१९॥

वाचा मधुरता यत्र वाग्दोषैः रहितं वचः ।
भाषासमितिसंज्ञं तत् यजे चारित्ररत्नकं ॥
ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतभाषासमिति० जला० ॥२०॥

कायदोषविनिर्मुक्तं यतः सत्यार्थवाचकं ।
तत्समिति जलाद्यैश्च, यजे चारित्ररत्नकं ॥
ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतभाषासमिति० जला० ॥२१॥

भुक्तिर्दोषैर्विनिर्मुक्तां नानाशास्त्रार्थसाधिनीं ।
एषणासमितिर्यत्र, यजे चारित्ररत्नकं ॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतैषणासमितिमहाव्रताय जला० ।२२।

नानाशुद्धिकरा यत्र वचसाहारशुद्धिता ।
एषणासमितिर्ज्ञेया, यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतैषण० जला० ॥२३॥

कायेनशुद्धभावेन त्रिदोषाहार सम्भवा ।
सैषणासमितिर्ज्ञेया, यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतैषण० जला० ॥२४॥

वस्त्वादानं दयार्द्रेण क्षेपणं मनसा तथा ।
तन्नामा समितिर्यत्र, यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतादाननिक्षेपणसमिति० जला० ॥२५॥

आदाननिक्षेपणं यत्र दयार्द्रवचसा तथा ।
तन्नामा समितिर्यत्र यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतादाननिक्षेपण० जलादिकं ॥२६॥

वस्त्वादानं दयार्द्रेण कायेन क्षेपणं तथा ।
तन्नामा समितिर्यत्र यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतादाननिक्षेपण० जलादिकं ॥२७॥

मनसा क्षांतिः दयायुक्ता प्रतिष्ठापसंज्ञिका ।
तन्नामा समितिर्यत्र, यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतप्रतिष्ठापनासमिति० जला० ॥२८॥

शुद्धया वचसा च युक्ता प्रतिष्ठापनसंज्ञिका ।
समितिर्यत्र तोयाद्यैः यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतप्रतिष्ठापना० जलादिकं ॥२९॥

शुद्धया युक्ता च कायेन प्रतिष्ठापनसंज्ञिका ।
समितिर्यत्र तोयाद्यैः यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतप्रतिष्ठापना० जलादिकं ॥३०॥

मनसा ध्ययनोद्भुता मनोगुप्तिरघापहा ।
तत्प्राप्त्यैर्यत्र तोयाद्यैः यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं मनसाविशुद्धयाकृतमनोगुप्तिमहा० जलादिकं ॥३१॥

यत्र स्वाध्यायतो जाता वचोगुप्तिस्तपोभृतां ।
वाग्विशुद्धया जलाद्यैश्च यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं वाग्विशुद्धयाकृत वाक्गुप्तिमहा० जला० ॥३२॥

कायोत्सर्गविशुद्धया च कायगुप्तिः सुनिश्चला ।
जाता यत्र जलाद्यैश्च यजे चारित्ररत्नकम् ॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतकायगुप्तिमहा० जला० ॥३३॥

चारित्ररत्नमनघं परमं पवित्रं ।
प्रोच्चारयामि वरमर्घमहं जलाद्यैः ॥
पूर्णं सुवर्णकृतभाजनसंस्थितं च ।
स्वर्गापवर्गफलदं जयघोषणश्च ॥

ॐ ह्रीं परमचारित्ररत्नाय महार्घं ।

अथ जाप्यः १०८ मालतीकुसुमैः ।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः ।

अथ जयमाला ।

सांत्येवात्र महाव्रतानि सततं गुप्तित्रयं मुक्तिदं ।
पंचेव समितिव्रतानि सुहितं कुर्वंति भव्यात्मनां ॥
तस्मात्पुण्यचरित्ररत्ननिकरं सेव्यं मुदा शंकरं ॥
मुक्तेर्मार्गमिदं भवाब्धिशरणं भव्यैरहं संस्तुवे ॥१॥

* * *

अहिंसाव्रतं विश्वसत्वानुकंपं, यजेऽनन्तशर्माकरं निःप्रकम्पं । असत्याद्विदूरं ज्ञानविज्ञानमूलं, सुसत्यं स्तुवे सर्वकर्मा[1]नुकूलं ॥२॥ अदत्तातिगं कृत्स्नलोभादिदूरं, महांतं महासद्व्रतं धर्मपूरं । परं ब्रह्मचर्यं जगद्धर्म हेतु, वरं चर्चयेऽनन्तकर्माब्धिसेतुं ॥३॥ व्रतं धर्मशर्माकरं त्यक्तसंगं, खलैर्लोभतृष्णादिसर्वैरभंगं मनोवाक्यकायत्रयं गुप्तिगुप्तं यजाम्यत्र हिंसादिपापैरमीष्टं ॥४॥ सुवाचां सुभाषैषणां यत्र भूतां किलादाननिक्षेपणां धर्मसुतां । प्रतिष्ठापनां चार्चयेऽहं पवित्रां, समित्याख्यकावृत्तधात्रिं विचित्रां ॥५॥ परं पावन विश्वभव्यैकबन्धुं, महादृष्टि चिद्वृत्तरत्नादि सिन्धुं । जगत्पूज्यमानदशर्मादिहेतुं, व्यथानिष्टरोगादि दुःखादिसेतुं

१-वृत्ता ।

॥६॥ सुरेन्द्रादिभूतिप्रदं पापदूरं, जिनेन्द्रादिसेव्यं वृषांभोतिपूरं। यजे वृत्तसार प्रमादादित्यक्तं, परम्पालयामत्वघातेवि सक्तं ॥७॥

× × ×

विविधफलसमूहै दिव्यपक्वान्नवर्गैः ।
ज्वलितवहुसुदीपैश्चार्चये वाद्य संघैः ॥
रचितममलमर्घं हेमपात्रेति रम्यम् ।
त्रिदशविधचरित्रस्यैव चोत्तारयामि ॥

ॐ ह्री त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय महार्घं ।

समस्तार्चनमांगल्यं द्रव्यपूर्णशुभावहं ।
सुदृग्ज्ञानचरित्राणां मर्घमुत्तारयाम्यहम् ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्ररत्नत्रयधर्मेभ्यो पूर्णार्घं ।

धर्मः कल्पतरुसदाफलतरुः सोऽयं महामङ्गलम् ।
सोऽयं देवजिनेन्द्रपादजनितः संसारदुःखावहः ॥
तस्मात्पुत्रकलत्रशांतिकमला कीर्तिप्रदो वः सतां ।
भूयात् सन्तति वल्लरी जलधरः वंशान्वयेऽसौनिजे ॥

इत्याशिर्वादः ।

दृग्बोधादिकशुद्धवृत्तजनितम् रत्नत्रयं सद्व्रतम् ।
तत्पूजारचितामुनीन्द्रगणिना पुण्यात्मनासूरिणा ॥
सद्भट्टारकधर्मचन्द्रपदभृद्द धर्मादिभूषात्मना ।
भव्योपासकशीवलेश विहितं प्रश्नान् जिनार्थात् वरं ।

गच्छे श्री शारदायाः सदतिवलगणे पावने मूलसंघे ।
भव्यो दाक्षिण्यभूषो जनिकुमुदविधोः धर्मचन्दो मुनीन्द्रः ॥
तत्पट्टाभोजसूर्यो जयति भुविसुखं धर्मभूषो गणेद्रः ।
तत्कृत्या शम्भव यज्ञयन्तु शिवकरं श्रीव्रतोद्यापनं च ॥

पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

इति श्री रत्नत्रयव्रतोद्यापनम् ।

अथ अनंत व्रतोद्यापनम् ।

श्रीनाभिसूनुचरणाब्जयुगं
प्रणम्य देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रपूजितं ।
वक्त्रादनन्तजिनपात् प्रविनिर्गतं
यदुद्यापनं बृहदनन्ततपोविधानं ।

सम्यक्त्वशुद्धिपरितं हृदयं नरो यो,
भक्तया स्वनन्ततपसा परिधार्य नित्यं ।
शृण्वन्तु तस्य तपसो विधिमाहितस्य,
यस्यान्नराः सुखकरं फलमाप्नुवन्ति ॥

मासे भाद्रपदे शुक्ले, पक्षे च दशमी तिथौ ।
एकभुक्तिविधानेन भुक्त्वा गत्वा जिनालयम् ॥
जलगन्धादिभिद्र व्यैः पूजयित्वा जिनाधिपान् ।
त्रिशुद्धिभक्तिभावेन स्तुत्वा नत्वा पुनः पुनः ॥४॥

गुरुणां चरणौ नत्वा गृहीत्वा प्रोषधं व्रतं।
गृहीत्वा द्रव्यसामग्रीं जलगन्धादिशुद्धिकां ॥ ५ ॥
श्रीवृषभाद्यनन्तान्तान् चतुर्दशजिनेश्वरान्।
स्थापयित्वा महोत्साहैः प्रीतैश्च मङ्गलाष्टकैः ॥६॥
चतुर्दशाकाः सम्यक् ते पूजनीया पृथक् पृथक्।
आर्तिका जयमालाभिर्गंधपूगादि पूर्वकम् ॥७॥
एकभुक्तिर्दिनेचैकादश्यां त्रिकालपूजया।
धर्मध्यानेन तत्रैव तिष्ठेत् श्रीजिनसद्मतिः ॥८॥
गृहारंभपरित्यक्तः स्वल्पोपाधिसमाहितः।
द्वादश्यां जिनपूजांते चैकभुक्तिः प्रजायते ॥९॥
त्रयोदश्यामेकवारं भोजनं निरवद्यकम्।
त्रिकालपूजनं तद्वद् गृहव्यापारवर्जितं ॥१०॥
शुद्धत्रयोदशीयोग गन्धकूटीस्थवेदिकां।
चतुप्रस्थप्रमाणे हि पंचचूर्णेन कारयेत् ॥११॥
मण्डलं वर्तुलाकारं चतुस्रं वर्गतशोभनं।
द्रव्यग्रह सु चन्द्रकं सुदकं ध्वजमण्डितं ॥१२॥

श्रीगन्धकुट्यां च विधाय मण्डले
तस्याग्रवेद्यां च विधाय स्वस्तिकं।
भक्तया विशुद्धया महतीं सुयज्यां,
अनन्तवृत्तस्य तु वैभवेन वा ॥१३॥
स कोष्ठकान् संप्रविधाय सादरं,
विविधचन्द्रोपकचारुमण्डपैः।

कुर्वंतु सुभव्यजनाः सुयज्ञकं
तथा जिनेशा वरदा भवन्ति वै ॥१४॥
श्रीखण्डागरुकर्पूरकाश्मीरैः कुम्कुमादिभिः ।
चित्रितो मृन्मयताम्रधौतकुम्भो विलेपितः ॥१५॥
स्थापनीयोऽर्जुनधौतवस्त्रेणाच्छादितःपरः ।
तस्योपरि च संस्थाली स्थापनीया मनोहरा ॥१६॥
तस्यां श्रीजिनबिंबं हि चतुर्दश जिनेशिनां ।
चतुर्विंशतिदेवानां बिंबं वा स्थापयेद्बुधैः ॥१७॥
अथवानन्ततीर्थस्य बिम्बं च स्थापयेन्मुदा ।
स्थापनीयं तदग्र चानंतयंत्रेण मन्त्रितं ॥१८॥
यन्त्राभावे सुगन्धेन लेखनीयः शलाकया ।
यो यन्त्रोऽनंतनाथेन दर्शितो दिव्यभाषया ॥१९॥
यन्त्रोपरि विधातव्यं शुद्धमनन्तमण्डलं ।
प्रतिष्ठादिविधानेन प्रतिष्ठया मुमुक्षुभिः ॥२०॥
यन्त्राद्योऽपि सर्वेषु पदार्थो विदुषांवरैः ।
जपनीयं ततो मन्त्रं वनस्पति सुपुष्पकैः ॥२१॥
पञ्चामृतेन संस्नाप्य क्षालनीयो जलैर्वरैः
पूर्ववदर्चनं कृत्वा रात्रौ जागरणं चरेत् ॥२२॥
चतुर्दश्यां विधातव्यं चतुराहारवर्जनं ।
महासंस्थापनं कृत्वा पूजनं च त्रिकालजं ॥२३॥
पौर्णीमायां प्रभाते च पूजयित्वा जिनेश्वरान् ।
प्रोषधं पारयित्वा च क्षेमं कृत्वा परस्परं ॥२४॥

साधर्मिजनैः सार्द्धं स्वगृहे भोजनं व्रजेत् ।
मनवोऽस्य भवो येन जायते सफलो नृणाम् ॥२५॥

एवं विधानेन मयोदितं शुभं
कृत्वा तपोऽनन्तवृताभिधानं ।
उद्यापनं श्री जिनयज्ञकल्पं
कुर्वीतु यस्मात् सफलं तपो भवत् ॥

एतत् पठित्वा वेदिकोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

श्रीमन्तं देवदेवौघैः, पूजितं यस्य पङ्कजं ।
वृषभं वृषदातारं, स्तूवेहं जगदुत्तमं ॥१॥

मदननाग विदारण केशरी,
धनभवोदधितारण नौसमः ।
नरवरेंद्र सुरेन्द्रसुपूजित-
स्सभवनुश्च जगत्स्थजितोवतात् ॥२॥

स्तुवे शंभवं यस्य पादारविंदं ।
सुरैः पूजितं पूज्यपादारविंदं, ।
स्फुरन्फुल्लराजीव पादारविंदं,
चरच्चारनैरुप्य पादारविंदं ॥३॥

विविधदुःखदवानलकन्दकं,
विबुधहृत्कमलांतरनंदशकं ।
खचरनागनरामरवन्द्यकं,
समभिनन्दनदेवमहं स्तुवे ॥४॥

देवेन्द्रवृन्दमुकुटोत्करघृष्टपादो ।
दिव्यध्वनिप्रकटितामृतमेघनादः ॥
तत्वानुशाशनपराजित दुष्टवादः ।
संस्तूयते जिनपतिः सुमतिः सुभव्यः ॥५॥
कमलांचितसुकमलेष्टि परैः
कमलेपि जनाश्रितहृत्कमलम् ।
कमलां कमलोज्जितसद्वपुषे
कमलप्रभदेव नमो भवते ॥६॥
नीलरत्न भास्सपद्मभांचितोग्रविग्रहोः ।
ध्यानवन्हिसन्निधानकर्मकक्षनिग्रहः ॥
अस्तबाह्यमध्यवर्तितुर्यविंशतिग्रहो ।
नूयते सुपार्श्व कोऽस्तकुत्सवाक्कदाग्रहः ॥७॥
शीतरश्मिरश्मिजालगौरकांतिदेहभाक् ।
सप्ततत्वदेशनैकसप्तभंगभंवाक् ॥
शीतदीधितीद्धलक्ष्मणार्च्यचन्द्रमःप्रभः ।
स्तूयते मनोवचः सुकाययोगशुद्धितः ॥८॥
कुन्दपुषपशुभ्रदेवैवत्तया प्रसिद्धिता ।
आगमप्रमाणयुक्तियुक्तधर्म्यतथ्यवाक् ॥
पुष्पदन्तइत्यभूत्समस्तदेव देवराट् ।
यः समेस्तु बुद्धये समृद्धये जिनेश्वरः ॥९॥
शीतरश्मिचन्दनौघगांगवारिशीतता ।
धर्मदेशनांबुगर्भशीतवाक्यरश्मिभिः ॥

यस्य शीतलस्य तं नमाम्हं तिरस्तुता ।
वेदनीयकर्मधर्मनाशनाय वै जिनं ॥१०॥
श्रेयांसं देवदेवं सुरपतिमहितं पूज्यपादं जिनेन्द्रं ।
भक्तिप्रह्वेन्द्रनम्रोन्मुकुटमकरिकोद्घृष्टपादारविंदं ॥
कैवल्यज्ञानभानु त्रिदिवजवनितागीतकीर्तिसूमूर्ति ।
शांतंगम्भीरनादं निरुपममनिशं भावतोऽहं नमामि ॥
श्रीवासुपूज्यजिनपंजिततां दधानम् ।
सद्दर्शनावगमचारुचरित्रधानम् ॥
कारुण्यबुद्धिकलितांतरमाददान ।
मुपास्महे महिषलक्षणमादधानम् ॥१२॥
विमलोमलवर्जितगात्तधरः ।
प्रवरः प्रवराहसु लब्धभरः ॥
सुवचोमृततर्प्पितभव्यनरः ।
स जिनो भवताद्भुविवोऽतिहरः ॥१३॥
अनन्तसंसारपरं पराणम् ।
विध्वंसकं सौख्यकरं नराणां ॥
अनन्तनाथं करुणानिधानम् ।
वन्देऽहमष्टापदसन्निभाम् ॥१४॥

इति चतुर्दशतीर्थंकरस्तुतिपठित्वा स्वस्तिकोपरि पुष्पाक्षतन्ना क्षिपेत् ।

अथ वृषभादि चतुर्दशतीर्थंकराष्टकम् ।

श्रीमन्नाकींद्रसेव्यान्, वृषदान् वृषनायकान् ।
संस्थापयामि सद्भक्त्या वृषमाद्याश्चतुर्दशः ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्दशतीर्थंकर अत्रावतरावतर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् स्वाहा ।

गंगादितीर्थोद्भववारिपूरैः ।
शीतैः सुगन्धैः प्रयजे जिनेन्द्रान् ॥
द्विः सप्तसंख्यादिजिनान् सुभक्त्या ।
नाकींद्रनाथार्चितपादपद्मान् ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्दशतीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीचन्दनैर्नंदितभृंगवृंदैः शीतैसुगन्धैर्मलयाद्रिजातैः ।
द्विः सप्तसंख्यादिजिनान् सुभक्त्या० । चन्दनम्० ।

सन्मौक्तिकैर्वा कलमाक्षतौधैः ।
शुभ्रैः सुदीर्घैः कमलादिवा हि ॥ द्विसप्त० ॥अक्षतान्० ।

मल्लीजपाकुन्दकदम्बजाती ।
सच्चंपकैः पद्म सुपारिजातैः । द्विसप्त० । पुष्पम्० ॥

सन्मोदकैः खज्जकशर्करौधैः ।
सद्भाजनस्थैश्चरुभिमनोज्ञैः । द्विसप्त० नैवेद्यम्० ॥

सद्रत्नकर्पूरघृतादिभवैः सुदीपैः ।
दीपैस्तमोनाशकरैर्वरिष्टैः ॥ द्विसप्त० दिपम् ॥

धूपैः सुगन्धैरगुरुद्भवैर्वा सन्धूपितासैर्बहुलुब्धभृंगैः ।
द्विः सप्तसंख्यादिजिनान् सुभक्त्या० ॥धूपम्० ॥

सन्नालिकेराम्रसुदाडिमोघैः फलै सुनारिंगकपित्थपुंगैः ।
द्विः सप्तसंख्यादिजिनान् सुभक्त्या० ॥ फलं० ॥

सद्वारिचन्दनशुभाक्षतकुन्दपुष्पै-
नैवैद्यकैर्वरसुदीपसुधूपपुंगैः ॥
नारायणो यजसि देवनरेन्द्रपूज्यान् ।
द्विः सप्तसंख्य जिनपान् वरपात्रसंस्थैः ॥ अर्घं ॥

अथ प्रत्येक पूजा ।

सद्दर्शनावगमचारुचरित्रयुक्तं ।
विश्वामरार्चितपदाम्बुजसन्निरुक्तं ॥
नाभेयनन्दनमहं वसुकर्ममुक्तं ।
शुद्धोदकादिभिरिमैर्जिनमर्चयामि ॥१॥

ॐ ह्रीं सद्धर्मप्रवर्तकाय वृषभतीर्थंकराय जलादि अर्घं० ॥१॥

मिथ्यान्धकारविनिवारणपद्ममित्रं ।
भव्याङ्गिपद्मवरबोधनपद्ममित्रं ॥
कर्मोद्भटैरजितसज्जितशत्रुपुत्रं ।
वारादिभिर्जिनमहं प्रयजे सुभक्त्या ॥२॥

ॐ ह्रीं कर्माष्टकरहिताय श्री अजितजिनदेवाय अर्घं० ॥२॥

शैवं सौख्यं सम्भावत्यस्य लोके ।
भक्त्या स्तुत्या वन्दमेवार्चया च ॥

तत्संप्राप्तम् सम्भवाख्यं जिनेन्द्रम् ।
जेतारेयं पूजयाम्यम्बुमुख्यैः ॥३॥

ॐ ह्रीं शिवंकराय श्री सम्भवतीर्थंकराय अर्घं ॥३॥

यश्च दर्शनादिभिः सुनन्दयत्यनुद्धतान् ।
पन्नगाधिपामरेन्द्रनाकिनः समुत्सुकान् ॥
मोहनीयकर्मधर्मघातनैकदक्षकम् ।
तं सदाभिनन्दनं यजेऽष्टधोदकादिभिः ॥४॥

ॐ ह्रीं लोकाभिनन्दकाय श्री अभिनन्दनजिनाय अर्घं ॥४॥

क्रोधलोभमानमोहभारसारमल्लको-
माथनैकमल्लतुल्यदोषहारकं सदा ॥
क्षारनीरदिव्यहीरनीरचन्दनादिभिः।
संजये जिनेश्वरं सु पञ्चमं शुभक्तितः ॥५॥

ॐ ह्रीं क्रोधाद्युन्मथकाय श्री सुमतितीर्थंकराय अर्घं० ॥५॥

नीलकञ्जपत्रनेत्ररक्तकञ्जचक्रमम् ।
रक्तपङ्कजातगात्रसत्सुसीममातृकम् ॥
रक्तपङ्कजोज्वलत्त्वकर्मकक्षहंतृकं ।
वारिचन्दनादिभिर्यजे सुषष्टमं जिनं ॥६॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घं० ॥६॥

कंदर्पसिन्धुरविदारणपंचवक्त्रः ।
सन्नीलरत्नसमभांचितपुण्यगात्रः ॥
सद्द्रव्यपंकजविकस्वरबालमित्रः ।
सम्पूज्यते वनसुगन्धमुखैः सुपार्श्वः ॥७॥

ॐ ह्रीं कन्दर्पोन्मयकाय श्रीपार्श्व तीर्थंकराय अर्घं० ॥७॥

सम्पूर्णचन्द्रोज्वलदिव्यगात्रं ।
सम्पूर्णचन्द्रांकसुबोधपात्रं ॥
चन्द्रप्रभं चन्द्रमिवद्वितीयं ।
द्रव्यैर्वनादिप्रमुखैर्यजेऽहं ॥८॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घं० ॥८॥

भूरि भव्यचित्तहारि सौख्यकारिवाग्विरं ।
पुष्पदन्तनामधेयमंकमं दिगम्बरं ॥
भूक्तिमुक्तिसारसौख्यसम्पदाकरं परं ।
पूजयामि भक्तितोष्टधोदकादिभिर्जिनं ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंततीर्थंकराय अर्घं ॥९॥

त्रैकाल्यवस्तु निचयं स चरचरं च ।
जानाति पश्यति सदा युगपज्जिनो यः ॥
दिव्याविचित्रशुभशक्तिधरं प्रभुं तम् ।
चर्चे जलादिकचयैर्जिनशीतलेशं ॥१० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घं० ॥१०॥

श्रेयान् जिनः परमसंततसौख्यकारी ॥
रूपप्रभृत्यककराष्टमदापहारी ।
सम्पूज्यते जिनवरोऽष्टजलादिसारैः ।
द्रव्यैर्मनोवचनकायविशुद्धिभाजः ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसतीर्थंकराय अर्घं० ॥११॥

श्री वासुपूज्यं वसुनाथपूज्यं ।
तत्वार्थसार्थं प्रतिबोधदक्षं ॥

सद्बोधनिर्भर्त्सितवादिपक्षं ।
चर्चाम्यहं वारिसुचन्दनाद्यैः ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घं० ॥१२॥

विमलं मलवर्जितगात्रधरं ।
कमलापतिसेवित पत्कमलं ॥
वरशूकरलांछनमर्तिहरं ।
प्रयजे कमलप्रमुखौ सुजिनम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घं० ॥१३॥

भव्यांभोरुहबोधनैकतरणिं सेधांकविभ्राजितं ।
कन्दर्पोद्भटकुम्भिकुम्भदलने सत्यं च वक्रोपमं ॥
अज्ञानभुविभेदनैकपरशुं दुर्वादिगर्वापहं ।
चर्चेऽनन्तमनन्तसद्गुणऽमणिव्रातास्पदंवामुखैः ॥

ॐ ह्रीं अंनतन्तनाथतीर्थंकराय अर्घं० ॥१४॥

देवेन्द्रवृन्दमुनिवन्दितपादपद्मान् ।
आदीश्वरप्रमुखधर्मसुतीर्थनाथान् ॥
द्रव्यैश्चतुर्दशजलादिवसुपर्मैस्तान् ।
अर्घेण संयजतिवर्णिनरायणाख्यः ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्दशतीर्थंकरेभ्यो महार्घं ॥१५॥

अथ जयमाला।

घत्ता।

नतकल्पमहेन्द्रा नमितमुनींद्राश्चंद्रार्चित पदकमलवरा।
नुतबुद्धिगणींद्रा दीप्तिदिनेंद्रास्तेजयंतु जिनवरनिकरा ॥

जय वृषभ वृषभ मुनि सेव्यपाद, जय नमित सुरासुर दिव्य नाद। जय अमलकमलदल नयनसार, जय अजित जिनेश्वर तरणतार ॥२॥ जय संभव शंकर सुख निधान, जय अजरामर पद धर विमान। जय अभिनन्दन नन्दित मुनींद्र. जय सुरनर खेचर मही वितन्द्र ॥३॥ जय सुमति जिनेश्वर सुमतिकार, जय सुमनोमल गुणगण सुधार। जय रक्त कमलसम गात्र देव जय कमलापति यति विहित सेव ॥४॥ जय शोभन पार्श्व सुपार्श्व राज, स्वस्तिक लांछन सुजिनपराज,। जय चन्द्रप्रभ वर चन्द्र गात्र, जय चन्द्रेडित जिन परम पात्र ॥५॥ जय पुष्पदन्त सित पुष्पदन्त, जय मकर सुलांछन परम शांत। जय शीतल, शीतल वचन भङ्ग, जय द्रुत कनकाभ शरीर चङ्ग, ॥६॥ जय श्रेयो जिनवर परम धाम, जय विजित सुदुर्जय विकटकाम। जय वासुपूज्य वर महिष लच्च, जय विजित सुदुर्जय मोह पच्च ॥७। जय बिमल विमल गुण निर्विकार, जय प्रवर वराह सुलक्ष्म धार जय अनन्त परम गुणगणगरिष्ट, जय त्रिभुवनपति नुत पद वरिष्ट ॥८॥

घत्ता ।

सकलगुण गरिष्टान्निर्जितानङ्गदुष्टान्–
नमितसुरमहिष्टान् क्षिप्तकर्मारिकाष्टान् ।
वसुसुगुणवरिष्टानर्घयामीह शिष्टान् ।
मनसि परमनिष्टो वर्णि नारायणाख्यः ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्दशजिनेभ्यः जयमाला महार्घं ।

आनन्दाब्धिविवर्धनैकविधवः संसारविध्वंसकाः ।
अज्ञानांधविभेदनेन सदृशास्त्रैलोक्यलोकार्चिताः ॥
कन्दर्पोत्कटकुम्भिदारुणहरिप्रायाः सुशांतिप्रदाः ।
श्रीमन्तो वृषभादयो जिनवराः कुर्वंतु मे मङ्गलम् ॥

इत्याशीर्वादः ।

स्तुति ।

छप्पा ।

वृषभाजित जिनदेव शम्भव अभिनन्दन जाणो ।
सुमति पदम पद्मपास विधुपह सुविधि वखाणो ॥
शीतल ने श्रेयन्स द्वादश वासुपुजेसर ।
विमल कमल दलनेन अनन्तगुणअनन्त जिनेश्वर ॥
एह चतुर्दश जिनवरा, धर्मतीर्थपद उद्धरण ।
नारायण ब्रह्मचारी कहें, सकल संघ मंगलकरण ॥

इति चतुर्दश तीर्थंकर प्रत्येक पूजा समाप्तम् ।

अथ चतुर्दश प्रकीर्णक गुणपूजा ।

सामायिकादिसु चतुर्दशभेदभांजि ।
प्रकीर्णकानि जिनदेवमुखोद्भवानि ।
वैराग्यभावजनकानि सुनिर्मलानि ।
संस्थापयामि विधिपूर्वकमाह्वयेऽहं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशप्रकीर्णात्रवतरावतर संवौषट् स्वाहा । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

सर्वभूतसमाकारं सामायिकयुतम् मुनिं ।
जलाद्यष्टविधैर्द्रव्यैः पूजयामि तमुत्तमं ॥

ॐ ह्रीं सामायिकक्रियायुक्तमुनये जलादिकं ॥१॥

१-व्रत कथाओंमें कोई कोई जगह १४ प्रकीर्णककी जगह सिद्धोंके १४ गुणोंकी पूजा की है, सो उसी माफिक नीचे सिद्धोंके १४ गुणोंकी पूजा दी जाती है ।

सिद्धके चतुर्दश गुण पूजा ।

त्रिकालसम्भवाः सिद्धाः चतुर्दशगुणोज्वलाः ।
अत्रैवानन्तसंस्थाने सम्यक्तिष्ठंतु सादरात् ॥

इति पठित्वा आह्वानन स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

सिद्धस्य चतुर्दशगुणाः ।

ये सिद्धाः कर्मनिकृत्य तपोभिर्द्वादशात्मकैः ।
यजेऽहं जलगन्धाद्यैः सिद्धांतान् तत्पदाप्तये ॥

ॐ ह्रीं तपसिद्धेभ्य नमः जलादिकं ॥१॥

चतुर्विंशतिदेवानां स्तवनं प्रतिपादकम् ।
पूजयाम्यष्टधा द्रव्यैर्जलादिभिरहं मुनिं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनस्तुतिप्रतिपादकायमुनये जला० ॥२॥

ये विनयादिभिः सिद्धाः पंचसज्ज्ञानसत्तमाः ।
यजेऽहं जलगन्धाद्यैः सिद्धान्तान्तत्पदाप्तये ॥

ॐ ह्रीं विनयसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥२॥

कर्मनिर्मूलनं कृत्वा संयमे सिद्धतां गताः । यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं संयमसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥३॥

चारित्रादिगुणैः सम्यक् कर्मनिर्मूल्यसिद्धिगाः । यजेऽहं०॥

ॐ ह्रीं चारित्रसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥४॥

श्रुतज्ञानेन संसिद्धाः कर्मनिर्मूल्य सिद्धिपाः । यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं श्रुताभ्याससिद्धेभ्यो नमः जला० ॥५॥

निश्चयात्मकभावेन सिद्धाः कर्मविघातकाः । यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं निश्चयात्मकभावसिद्धेभ्यो नमः० जलादिकं ॥६॥

नष्टशरीरिणः सिद्धाः ज्ञानदेहविजृंभिताः । यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥७॥

अनन्तबलसंबाधाः क्षयाति कर्मजालिनः । यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं बलगुणसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥८॥

अनन्तदर्शनोपेताः पश्यन्ति ये चराचरम् यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं दर्शनगुणसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥९॥

अन्तरायक्षयात सिद्धा वीर्यानन्तविवर्धिताः । यजेऽहम्०॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यसम्पन्नसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥१०॥

प्रातर्मध्यान्ह सन्ध्यासु देवानां पूजने रतम् ।
पूजयाम्यष्टधाद्रव्यैर्मुनींद्रम् विधिपूर्वकम् ॥
ॐ ह्रीं त्रिकालदेववंदनायुक्तमुनये जलादिकं ॥३॥

शुद्धसूक्ष्मगुणोपेताः क्षयाच्च नामकर्मणः । यजेऽहम्० ॥
ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणोपेतसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥११॥
अवगाहनेन संसिद्धाः मिलिता ये परस्परं । यजेऽहम्० ॥
ॐ ह्रींअवगाहनगुणोपेतसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥१२॥
अगुरुलघुसद्भावात् निराश्रयास्तपः श्रिताः । यजेऽहम्० ॥
ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणगरिष्ठसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥१३॥
वेदनीयक्षयादव्याबाधसंगुणगोचराः । यजेऽहम्० ॥
ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणसमृद्धिसिद्धेभ्यो नमः जला० ॥१४॥
नवसुलक्षसरातपयोजनैः परमितं वरलोकसुमूर्धजं ।
यममवाप्यसुसिद्धगुणस्थितं वरमहार्घमहं वितरामितं ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणपूरितसिद्धेभ्यो पूर्णार्घं ।

वृषभादिवर्धमानन्ताः षोडशचाष्टसंयुताः ।
देवादिचक्रवादीनां तस्मै पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

पुष्पांजलिः ।

दुर्वारावारुणेन्द्राजितपवनजवा वाजिनश्चेन्द्रनोद्या ।
लीलास्वत्योत्य युक्त्यःकृतकरचमरोद्भासिताराज्यलक्ष्मीः

आश्रवानां निरोद्धारं प्रतिक्रमकोरकम्।
पूजयाम्यष्टधाद्रव्यैर्मुनींद्रम् विधिपूर्वकम् ॥
ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणक्रियायुक्तमुनये जला० ॥४॥
गुर्वादिय[1]तिवृद्धेषु विनयक्रियया युतं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं गुर्वादिकधर्मवृद्धविनयक्रियायुक्तमुनये· जला० ॥५॥
दीक्षाग्रहणशिक्षादि कृतिकर्मपरं वरं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं दीक्षाग्रहणशिक्षादियुक्तमुनये जला० ॥६॥
यत्याचारोपदेष्टारं दशवैकालिकं परं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं दशवैकालिकोपदेशकायमुनये जला० ॥७॥
उपसर्गाः सहे द्धीरमुत्तराध्ययने रतं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं उत्तराध्ययनरतमुनये जला० ॥८॥
कल्पादिव्यवहारेण युतं दोषविघातकं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं कल्पव्यवहारयुक्तमुनये जला० ॥९॥
कल्पाकल्परतम् काले योग्यवस्तुग्रहे परं । पूजया ॥
ॐ ह्रीं कल्पाकल्पयुक्तमुनये जला० ॥१०॥
षट्कालाचरणोद्युक्तं भाणपोषकदेशकं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं महाकल्पोपदेशकायमुनये जला० ॥११॥

उच्चैश्चातापपत्रं नवनिधिसहितं मेदनी सागरान्ताः ।
प्राप्यंते त्वत्प्रसादात् त्रिभुवनमहिता शाश्वति धर्मवृद्धिः ॥
इत्याशीर्वादः ।

१–धर्म ।

पुण्डरीकपरं देवं सुचिकित्सोत्पत्थ्युपदेशकं । पूजया० ॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीकोपदेशकायमुनये जला० ॥१२॥

महादि पुण्डरीकाख्य देष्टारं करुणाकरं । पूजया० ॥

ॐ ह्रीं महापुण्डरीकोपदेशकायमुनये जला० ॥१३॥

अशीतिकोपदेष्टारम् व्यवहारनये परे । पूजया० ॥

ॐ ह्रीं अशोतिकोपदेशकायमुनये जला० ॥१४॥

प्रकीर्णकान्यङ्गबहिर्भवानि
सामायिकादीनि चतुर्दशानि ।
सम्पूजयाम्यर्घवरेण भक्तया
जलादिभिर्वर्णिनरायणाख्यः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशप्रकीर्णकेभ्यो महार्घं ।

अथ जयमाला ।

नतपरम सुरेन्द्रा, नमित नरेन्द्रा, कीर्ति कांतिवर दीप्तिधराः । बररुक्ष दिनेन्द्रा, बुद्धि गणेन्द्रास्तेजयन्तु मुनिवरनिकराः ॥१॥ श्री सामायिक गुणसहित नमो, वर बत्रिस दूषण रहित नमो । स्तुत चौविस जिनवर पाय नमो, जिन क्रोधादिक कुकषाय नमो ॥२॥ जिनवन्दनशुभकृतकाय नमो, पद नमित सुरासुरराय नमो । प्रतिक्रमणप्रकाशितबोध नमो, कृत पंच दुराश्रवरोध नमो ॥३॥ कृत गुरु मुनीवर जन विनय नमो, वर तत्व प्रकाशित सुनय नमो । निरुपम शुभ संयम

सहित नमो, नरवर सुख रञ्जनमहित नमो ॥४॥ उपदिष्ट यती जन चरण नमो, नव नय कलितागम धरण नमो। उपसर्ग सहन महाधीर नमो, दोइविंशति परिषह वीर नमो ॥५॥ व्यवहार क्रिया गुण कथित नमो, अष्ट मदरहित मुनि नयित नमो । हेयाहेय विचार सुधरण नमो, कमलापति सेवित चरण नमो ॥६॥ गुणिजन गणपोषण सहित नमो, सुरनर विद्याधर महित नमो। वरद्वादश त्रिध तप चरण नमो, सुरनर खेचर पद धरण नमो ॥७॥ षड्सत्व दयाकर वीर नमो, सम तत्व प्रकाशन धीर नमो। पञ्चाचार चरण गुण धरण नमो, विकथा प्रमाद दूरीकरण नमो ॥८॥

घत्ता ।

परम मुनीश्वर दुरित तिमिरहर,
ज्ञानदिवाकर कुमति हरो ।
गुणगण कमलाकर नमित सुरासुर,
नारायण ब्रह्म सौख्य करो ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशप्रकीर्णकेभ्यो पूर्णार्घं ।

शान्ति सुवृद्धि सुनरेन्द्रऋद्धि ।
स्फूर्ति सुकीर्ति वरबुद्धिलब्धि ॥
सत्कार्यसिद्धि धृतिमादिशन्तु ।
प्रकीर्णकज्ञानधरा नरा वः ॥

इत्याशीर्वादः ।

छप्पय ।

सामायिक जिनस्तववन्दन जिन फूनि हि जाणो ।
प्रतिक्रमण मुनि विनय सुनय कृति कर्म वखाणो ॥
दशवैकालि नाम उत्तराध्ययन मन आणो ।
कल्पव्यवहार सु नवम कल्पाकल्प वखाणो ॥
महापुण्डरीक सु महा--पुण्डरीक अशीति लह्या ।
नारायण एवं वदंतं चौदप्रकीर्णक जिन कह्या ।

इति चतुर्दश प्रकीर्णक पूजा समाप्तम् ।

अथ चतुर्दश कुलकर पूजा ।

मतिज्ञानप्रगल्भांगान् सुमनून् परमायुषः ।
संस्थापयामि सद्बुद्ध्यै सत्प्रतिश्रुतिपूर्वकान् ॥

ॐ ह्रीं मतिज्ञानप्रगल्भचतुर्दशकुलकर अत्रावतरावतर अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । स्वाहा ।

वाचं प्रत्यशृणोत्यस्माच्चन्द्रार्कज्योतिषां प्रभां ।
प्रतिश्रुतिः समाख्यातः पूज्यतेऽसौ गुणाग्रणीः ॥

ॐ ह्रीं प्रतिश्रुतिकुलकराय अर्घं ॥१॥

नक्षत्रांकितशुभ्रदर्शनाज्ज्योतिषां प्रभां ।
भीतिं न प्राप सन्मत्या सन्मतिः मोऽच्यते मया ।२।

ॐ ह्रीं सन्मतिकुलकराय अर्घं० ॥२॥

क्षेमं चकारयो लोके प्रजानां भोगभुजुषां ।
क्षेमंकरत्वमाप्तोऽसौ पूज्यते पुण्यभाजनः ॥३॥

ॐ ह्रीं क्षेमङ्करकुलकराय अर्घं० ॥३॥

क्षेमन्धरो सदा लोके प्रजानां क्षेमधारणात् ।
जलाद्यष्टविधैद्रव्यैः पूज्यतेऽसौ प्रगल्भवाक् ॥४॥

ॐ ह्रीं क्षेमन्करकुलकराय अर्घं० ॥४॥

भोगभूमिजुषां नृणां सीमकृत्वा नरोत्तमः ।
सीमङ्कर इति ख्यातिं गतोऽसौ पूज्यते गुणी ॥५॥

ॐ ह्रीं सीमन्करकुलकराय अर्घं० ॥५॥

तरुभिः क्षेत्रमर्यादां यो करोद्भोगभुजुषां ।
सीमन्धर इति ख्यातिं प्राप्तो सः चर्च्यते गुणी ॥६॥

ॐ ह्रीं सीमन्धरकुलकराय अर्घं० ॥६॥

वाहोपदेशाल्लोकेऽस्मिन् ख्यातो विमलवाहनः ।
कमलाद्यष्टधाद्रव्यैः पूज्यते कमलापतिः ।७॥

ॐ ह्रीं वाहनोपदेशकाय विमलवाहनकुलकराय अर्घं० ।७।

पुत्रास्यलोकसन्दानाच्चक्षुष्मान् भवद्भुवि ।
भोगभूमिभवां योऽसौ पूज्यते गुणवान् प्रभुः ॥८॥

ॐ ह्रीं चक्षुष्मान् कुलकराय अर्घं० ॥८॥

भोगभूमिभवार्याणां संस्तुवात्परमादरात् ।
यशस्वदाख्यतां प्राप्तः पूज्यतेऽसौ मनोहरः ॥९॥

ॐ ह्रीं यशस्वान् कुलकराय अर्घं ॥९॥

चन्द्रेणाक्रीडयद्बालान भोगभूमिभुवां मुदा ।
अभिचन्द्राख्यतां प्राप्तः पूज्यते चन्द्रमप्रभः ॥१०॥
ॐ ह्रीं अभिचन्द्रकुलकराय अर्घं ॥१०॥

हायनान्यजीवन्यस्मिन् राज्यं कुर्वंति भूतले ।
चन्द्राभकोऽच्यते नित्यं भोगभूमिभुवांप्रजा ॥११॥
ॐ ह्रीं चन्द्राभकुलकराय अर्घं ॥११॥

राज्यं कुर्वंति सापत्या जीवंतिस्म चिरंप्रजाः ।
यस्मिन्मरुं वसद्द्रव्यैः पूज्यते कमलादिभिः ॥१२॥
ॐ ह्रीं मरुदेवकुलकराय अर्घं ॥१२॥

भोगभूमिभुवामपत्यानां गर्भमलापहा ।
प्रसेनदितिति आख्या प्राप्तो सः चर्च्यते मया ॥१३॥
ॐ ह्रीं प्रसेनजित कुलकराय अर्घं ॥१३॥

नाभिरित्या प्रसख्यातिर्नाभिनालनिवर्तनात् ।
प्रजानां यो महाबुद्धिः पूज्यतेऽसौ मया मुदा ॥१४॥
ॐ ह्रीं नाभिराय कुलकराय अर्घं ॥१४॥

सद्वारिचन्द्रनशुभाक्षतपुण्यपुष्पै–
नैवेद्यरत्नवरदीपसुधूपपुञ्जैः ।
अर्घं ददाति विजयादिसुकीर्तिशिष्यो ।
नारायणः कुलकरेभ्य इह प्रमोदात् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशकुलकरेभ्यः पूर्णार्घं ।

अथ जयमाला ।

घत्ता ।

कमलाननरुचिरा गुणगणनिचिता नीलोत्पलदलनयनवरा। शुभमतिवर विभवा रतिपति सभवा स्तेजयन्तु कुलकर-पुरुषाः ॥१॥ प्रतिश्रुति कुलकर गुणगण निधान, शुभ भोगभवांकृत परम मान । शुभ तारकिताभ्र समार्य भीत, विनिवारण सन्मति सरल चित्त ॥२॥ वरभोग धराज मनुष्य लोक, कृत भावुक गत मल विगत शोक । कृत भोग धराज सु भव्यकार, वर निर्मल भावुक नाम धार ।३। सकलार्यो महानग सीमकार, जगती जसु सीम कृत नीहार वर वृक्ष लताकृत सीम धार, धृत सीमन्धर वर नाम भार ॥४। वर वाहन दर्शित विभव सार, विमलादि सु वाहन नाम धार । वर पुत्रानन लोकन सुदेश, विधि दानसु चक्षुष्मदभिधेश ॥५॥ सुयशस्त्रदिति प्रथिताभिधान, पर-मार्यानुति स्तुति धृत वितान । रमयन् सु प्रजावर चंद्र-केण, स्वभिचंद्र इति श्रुति मायतेन ॥६॥ वर चंद्राभक इति नाम धार, सकलामल विधु सम कांतिभार । सुर राज समान मरु सु देव, चिरजीवन सन्ततिकृत सु सेव ॥७॥ सु प्रसेन विजिद्वर नाम धार, कृत बालक गर्भ पलापहार ।

वर नाभिराज नत नर समाज, कृत नाभि निवर्तन सुख
समाज ॥८॥ घत्ता।

कुलकर वर देवा सुरकृत सेवा,
भांतु वरिष्टसुगुणनिकरा।
सु चतुर्दश संख्या मत बहु कांक्षा,
भोगधराज सु सौख्यकरा ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशकुलकरेभ्यो जयमाला महार्घं।

शांति समृद्धि वरसौख्यवृद्धि,
बुद्धि सुलब्धि परमार्थसिद्धि।
स्फूर्ति सुकीर्ति वरपूजकानां,
करोति नित्यं कुलभृत्समूहः ॥

इत्याशीर्वादः।

छप्पा।

मति श्रुति सन्मति नाम क्षेमङ्कर क्षेमन्धर जाणो।
सीमङ्कर सुख धाम सीमन्धर बहु वखाणो ॥
विमलवाह वर चक्ष्व यशस्वदभिचन्द्र मनोहर।
चन्द्राभक मरुदेव प्रसेनजित नाभि नरवर ॥
एह चतुर्दश कुलकरा भोगभूमिज कुल उद्धरण।
नारायण एवं वदत आर्यलोक बहु सुखकरण ॥

इतिश्री चतुर्दशकुलकर पूजा सम्पूर्ण।

अथ चतुर्दश अतिशय प्रत्येक पूजा ।

द्विसप्तसंख्यान्वरदेवनिर्मितान्,
सद्भव्यपूज्यातिशयान्मनोहरान् ।
आह्वाननस्थापनसन्निधापनै-
र्भक्त्या यजेऽहं विधिपूर्वकम् प्रभो ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशातिशयात्रावतरावतर संवौषट् स्वाहा । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

सर्वार्द्धमागधीयरा यै भाषा यस्य प्रवर्तते ।
पूज्यते परया भक्त्या पूजया परमादरात् ॥

ॐ ह्रीं सर्वार्द्धमागधीभाषावंतभगवते अर्घं ॥१॥

मैत्रीह सर्वजनना विषया यस्य विद्यते ।
पूज्यते परया भक्त्या पूजया परमादरात् ॥

ॐ ह्रीं मैत्रीयुक्ताय भगवते अर्घं ॥२॥

सर्वर्तु फलपुष्पाद्या भवेयुर्यस्य पादपाः । पूज्यते० ॥

ॐ ह्रीं सर्वऋतुफलपुष्पाग्रपादपाय जिनाय अर्घ ॥३॥

आदर्शतलसंकाशं रत्नमू यस्य प्रजायते । पूज्यते० ॥

ॐ ह्रीं आदर्शतलसन्निभरत्नोभियुक्ताय भगवते अर्घं ॥४॥

शीतो मंदः सुगंधिश्च वायुरन्वेति यं जिनम् । पूज्यते०॥

ॐ ह्रीं सुगंधिवायुयुक्ताय जिनाय अर्घं ॥५॥

यस्मिन्विहरतीलायां जनानन्दोऽभवत्सदा । पूज्यते०॥

ॐ ह्रीं सर्वजनानन्दकराय जिनाय अर्घं ॥६॥

योजनांतरभूभागं देवाः कुर्वंति निर्मलं । पूज्यते०॥
ॐ ह्रीं निर्मलभूभागयुक्ताय जिनाय अर्घं ॥७॥
मेघाः कुर्वंति यस्योच्चैर्वृष्टिं गंधोदकाख्यकां ॥ पूज्यते०॥
ॐ ह्रीं दिव्यगंधोदकवृष्टियुक्ताय जिनाय अर्घं ॥८॥
सप्ताग्रे पृष्टतः सप्तपद्मानि यत्पदे पदे । पूज्यते०॥
ॐ ह्रीं पद्मोपरि पादन्यासाय जिनाय अर्घं ॥९॥
यस्य व्रीह्यादि युक्ताभूरभवद्यत्रभावृतः । पूज्यते०॥
ॐ ह्रीं व्रीह्यादि यस्यसंपत्तियुक्ताय जिनाय अर्घं ॥१०॥
यस्मन्विहरतीहाभूद्गगनम् मलवर्जितम् । पूज्यते०॥
ॐ ह्रीं निर्मलगगनातिशययुक्ताय जिनाय अर्घं ॥११॥
आह्वयंतिस्म चान्येऽन्यान् देवादेवान् सुभक्तितः पूज्यते०॥
ॐ ह्रीं अन्यदेवाह्वाननयुक्ताय जिनाय अर्घं ॥१२॥
धर्मचक्रम् भवेद्यस्य सहस्रारं सुसूर्यभं । पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं धर्मचक्रयुक्ताय जिनाय अर्घं ॥१३॥
भृङ्गाराद्यष्टधा यस्य मङ्गलं चाभवत्सदा । पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं अष्टमांगलद्रव्ययुक्तायजिनाय अर्घं ॥१४॥

जलादिगंधाक्षतपुष्पकाद्यै,,
नैवेद्यकैर्दीपशतैः सधूपैः ।
फलैर्महार्घं प्रददाति शिष्यो,
नारायणः श्री विजयादिकीर्त्तेः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशअतिशयप्राप्तेभ्यो जिनाय महार्घं ।

अथ जयमाला ।

सकलविबुधवन्द्या देवदेवाभिनन्द्याः ।
कृतदुरितनिकन्दा भव्यपद्माभिनंदाः ॥
अतिशयगुणवृन्दा नष्टकर्मारिकन्दा-
स्त्रिभुवनजनशंदास्ते जिनेन्द्रा जयन्तु ॥१॥

शुद्धसर्वार्थसन्मागधी वागवादा ।
विश्वकर्मापहा निर्मला निर्मदादा ॥
सर्वविद्याधिपा धर्मबुद्धीश्वरा ।
सत्वबाधातिगा मित्रता मन्दिरा ॥२॥

सर्वपुष्पांचितांगस्थितैः षट्पदैः ।
संस्तुता वा मुदुत्कर्षगैः स्वास्पदैः ।
निर्मलादर्शतुल्याध्वभूमीश्वराः ।
सर्व भव्यार्च्यपादाब्ज देवेश्वराः ॥३॥

वायुरन्वेति यान् सद्विहारेश्वरां-
स्तानहं संस्तुवे सिद्धिगामीश्वरान् ॥
सर्वभव्यार्चितान् भव्यमुक्तारिणो ।
दर्शनज्ञानचारित्रसद्धारिणः ॥४॥

देवदेवाशुभं कुर्वतु भूतले ।
शांतधूली तृणं शांतकीटोत्पलं ॥
देवदेवाज्ञया कुर्वते निर्मला ।
मंदगन्धोदकां वृष्टिमामोदकां ॥५॥

देवदेवाधिपाः पद्मसंचारिणः ।
शुद्धभावं गताः सर्वशंकारिणः ॥
भूश्च येषामभून्नम्रशाल्यन्विता ।
देवदेवीप्रभृत्यंगिभिः संस्तुता ॥६॥
निर्मलं खं सरोवासरं जलामयं ।
यद्विहारे भवत्सर्वदिग्मण्डलम् ॥
देवदेवीगणा व्यन्तराः किन्नरा ।
यद्विहारेऽग्रगामि नः सत्पुत्सुकाः ॥७॥
दर्पणाद्यष्टधामङ्गलैर्भक्तितः ।
पूजिता देवदेवीगणैः शक्तितः ॥८॥

घत्ता ।

श्रीजिनदेवाः सुरकृतसेवा अतिविशेषगुणगणनिकराः ॥
विजयादिसुकीर्तेरनुपममूर्तेः शिष्यनरायणसौख्यकराः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशातिशयेभ्यो महार्घं० ।

सकलदेवमनुष्यगणार्चिताः सकलकर्ममदोद्धति वर्जिताः ।
सकलसत्वदयानिधि संस्तुता सकलसंघसुखाय भवंतु ते ॥

इत्याशीर्वादः ।

छप्पय ।

मागधी भाषा मित्री ऋतुफलमही मनोहर ।
अनुगत अलि आनन्द सुरनर कृत भूमि सुन्दर ॥

गन्धोदक वर पद्म शालि सुक्षेत्र अनोपम ।
निर्मल गगन सुदेव सेव वर चक्र अनोपम ॥
मङ्गलाष्ट दर्पण प्रमुख एवं अपूर्व वखाणीए ॥
नारायण एवं वदति अतिशय चउद वरवाणीए ॥

इति चतुर्दशातिशय पूजा सम्पूर्ण ।

× × ×

अथ चतुर्दश पूर्वाणाम् प्रत्येक पूजा।

देवदेवचक्रपद्मगिर्गतानि संविदे ।
संस्तुतानि चन्द्रकेन्द्रनागमानुषेन्द्रकैः ॥
भूक्तिमुक्तिसारसौख्यदायि पूर्वकाणि च ।
स्थापयामि मोदतः सुभक्तितश्चतुर्दशः ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवचतुर्दशपूर्वाणि अत्रावतरावतर संवोषट् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् ।

आद्यमुत्पादपूर्वं वैचैककोटी प्रमाणकम् ।
यजेऽहमष्टधाद्रव्यैर्जलचन्दनमुख्यकैः ॥

ॐ ह्रीं एककोटोपदप्रमाणाय उत्पादपूर्वांगाय जला० ॥१॥

अग्रायणीयपूर्वं वै लक्षषणमति प्रभं । यजेऽहम्० ॥

ॐ ह्रीं षणवतिलक्षपदप्रमाणाय अग्रायणी पूर्वाय जला० ।२।

वीर्यानु सुप्रवादं च प्रोक्तं सप्ततिलक्षकं । यजेऽहम्० ॥

ॐ ह्रीं सप्ततिलक्षणपदप्रमाणवीर्यानुवादपूर्वाय जला० ।३।

अस्तिनास्तिप्रवादं वै षष्टिलक्षप्रमाणकम् । यजेऽहम्० ॥
ॐ ह्रीं षष्टीलक्षपदप्रमाण अस्तिनास्ति पूर्वाय जला० ॥४॥

ज्ञानप्रवादसत्पूर्वं व्येककोटीप्रमाणकम् । यजेऽहम्० ॥
ॐ ह्रीं एकोनकोटीपदप्रमिताय ज्ञानप्रवादपूर्वाय जला० ॥५॥

षड्भिः संयुक्तकोट्योकम् सत्यप्रवादपूर्वकम् । यजेऽहम्०॥
ॐ ह्रीं षड्धिककोटोपदप्रमाणा सत्यप्रवादपूर्वाय जला० ॥६॥

आत्मप्रवादपूर्वं वै कोटीषट्विंशतिः स्मृतम् । यजेऽहम्० ॥
ॐ ह्रीं षड्विंशतिकोटीपदप्रमाणआत्मप्रवादपूर्वाय जला०॥७॥

कर्मप्रवादपूर्वं चाशीतिलक्षाधिकोटिकम् । यजोऽहम्० ॥
ॐ ह्रीं अशीतिलक्षाधिककोटीपदप्रमाणधर्मप्रवादपू० जला० ।८।

प्रत्याख्यानम् हि पूर्वं च चतुरशीतिलक्षकं । यजेऽहम्०॥
ॐ ह्रीं चतुरशोतिलक्षपदप्रमाण प्रत्याख्यानपूर्वाय जला० ॥९॥

पृथुविद्यानुप्रवादं षष्टीलक्षद्विकोटिकं । यजोऽहम्० ॥
ॐ ह्रीं षष्टीलक्षद्विकधिकद्विकोटीपदप्रमाणविर्यानुवादपू० ज० ।१०।

कल्याणनामधेयं च षड्विंशति हि कोटिकं । यजोऽहम्०॥
ॐ ह्रीं षड्विंशतिकोटीपदप्रमाणकल्याणवादप्रवादपू० जला० ।११।

प्राणानुवादसत्पूर्वं कोटयस्ति हि त्रयोदशं । यजेऽहम्०॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशकोटीपदप्रमाणप्राणानुवादपूर्वाय जला० ॥१२॥

क्रियाविशालपूर्वं च नवकोटीप्रमाणकं । यजेऽहम्० ॥
ॐ ह्रीं नवकोटीपदप्रमाणक्रियाविशालपूर्वाय जला० ॥१३॥

लोकबिंदुशुभं पूर्वं सार्द्धद्वादशकोटिकम् ।यजेऽहम्० ॥

ॐ ह्रीं सार्द्ध द्वादशकोटीपदप्रमाणलोकबिंदुपूर्वाय जला० ॥१४॥

अतिसुरभिजलोघैश्चन्दनैरक्षतोघै-

र्बकुलचरुसुदीपैर्धूपकैर्नालिकेरैः ॥

मुनिविजयसुकीर्तेः पादसेवाभिशक्तो ।

यजति सकलपूर्वाणीह नारायणाख्यः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वेभ्यः पूर्णार्घं ।

*   *   *

अथ जयमाला ।

श्री जिनवरवाणी गुणगणखाणी, अमीय समान सोहामणिय । मिथ्यामत रहिता बहुगुणसहिता, गंभीर मधुररलीपरमणिय ॥१॥ सुउठविकण्ठवि रहित अभङ्ग, सुअङ्ग विवेदवि सहित सु चङ्ग । सुमतिपूर्वक आगम सुविशाल, ते पूजो चउद पूरव गुणमाल ॥२॥ सु एक अनेक अरथगुण खाण, सु एक मना थई सुण हो सुजाण । सुशीतल चंद्रकला सुविशाल, ते पूजो चउद पूरव गुणमाल ॥३॥ सुद्रव्य प्रकाशन निर्मल तेज, सु भवियण जन मन उपजे हेज । कुज्ञान तिमिर नाशन सुविशाल, तेपूजो चउद पूरव गुणमाल ॥४॥ सु पहेलो उपपाद पूर्व सु जाण, सु दुजो अग्रायणीय वखाण सु त्रीजो वीर्यानुवाद विशाल, ते पूजो

चउद पूरव गुणमाल ॥५॥ सु चोथो अस्ति नास्ति सुचङ्ग, सु पांचमो ज्ञान प्रवाद अभङ्ग । सु छट्ठो सत्य प्रवाद विशाल, ते पूजो चउद पूरव गुणमाल ॥६॥ सु सातमो आत्म प्रवाद सुसन्त, सु आठमो कर्मप्रवाद अनन्त । सु नवमो प्रत्याख्यान विशाल, ते पूजो चउद पूरव गुणमाल ॥७॥ सु दशमो पृथु विद्यानुप्रवाद, सु अग्यारमो कल्याण नाम सुवाद । सुबारमो प्राणानुवाद विशाल, ते पूजो चउद पूरव गुणमाल ॥८॥ सु तेरमो क्रिया बिशाल आख्येय, सु चौदमो लोकबिंदु वरध्येय । सु जिनवर गणधर कथित विशाल, ते पूजो चउद पूरव गुणमाल ॥९॥

घत्ता ।

मिथ्यात्व तिमिर हरबोध दिवाकर, पढ़े गणे जे भाव धरी ।
नारायण भासे तत्व प्रकाशे, मनवांछित फल लछी घणी ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वेभ्यो जयमाला महार्घं० ॥

श्रीमज्जिनेन्द्रमुखपङ्कजनिर्गतानि ।
धर्मार्थकामफलदानि सुपूर्वकानि ॥
सत्पूजकं प्रमुखसंघजनस्य नित्यं ।
देवेन्द्र मानुष नुतानि भवंतु लोके ॥

इत्याशिर्वादः ।

छप्पय ।

उत्पाद अग्रायणी नाम त्रिजोवीर्यानुवादह ।
अस्तिनास्ति सुखधाम ज्ञान सु सत्य प्रवादह ॥
आतमकर्म प्रवाद नवम सु प्रत्याख्यान यह ।
पृथु विद्यानुप्रवाद कल्याण सु पाणावायह ॥
क्रिया विशाल सु लोकबिंदु चउद पूरवह जाणीए ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे जिन सिद्धांत वखाणीए ॥

इति चतुर्दश पूर्वाणां पूजा समाप्ता ।

अथ चतुर्दश गुणस्थान पूजा ।

गुणस्थानामि पूर्वाणि भाषितानि जिनेश्वरैः ।
संस्थापयामि सद्बुद्धया विधिनाहं चतुर्दशम् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानानि अत्र अवतरावतर संवौषट् अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

मिथ्यात्वेनं तता प्राप्ता ये जीवा भव्यतां गता । ?
पूजयामीह सद्भक्त्या जलादिभिरमैः शुभैः ॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वगुणस्थानस्थितानंतभव्य जीवराशये जला० ।१।

षडावलिसमायुष्का ये च सासादना स्मृताः । पूजया०॥

ॐ ह्रीं सासादनगुणस्थानवर्तिसम्यग्दृष्टिजोवराशये जला० ॥२॥

ये जीवाः श्रीजिनैः प्रोक्तास्तृतीयस्थानवर्तिनः । पूजया०॥

ॐ ह्रीं मिश्रगुणस्थानस्थितभव्यजीवराशिभ्यो जला० ॥३॥

तत्वार्थश्रद्धया युक्ता ये सम्यग्दृष्टयो मताः । पूजया०॥
ॐ ह्रीं अविरतगुणस्थानस्थितसम्यग्दृष्टि भव्यराशिभ्यो जला.।४।
देशव्रतसमायुक्ता ये जीवाः शुद्धमानसाः । पूजया०॥
ॐ ह्रीं देशव्रतगुणस्थानस्थितभव्यराशिभ्यो जला० ॥५॥
प्रमत्तमुनयो ये वै दृगविच्चारित्रधारकाः । पूजया०॥
ॐ ह्रीं प्रमत्तगुणस्थानस्थितमुनिभ्यो जला० ॥६॥
प्रमादरहिता ये चाप्रमत्तामुनिपुङ्गवाः । पूजया०॥
ॐ ह्रीं अप्रमत्तागुणस्थानस्थितमुनिभ्यो जला० ॥७॥
अपूर्वकरणा ये वै सच्छ्रेणिद्वयसुस्थिताः । पूजया०॥
ॐ ह्रीं अपूर्वकरणगुणस्थानश्रेणिद्वयमुनिभ्यो जला० ॥८॥
करणानाम निवृत्तेस्त्वनिवृत्ताश्च ये स्मृताः । पूजया०॥
ॐ ह्रीं अनिवृत्तिकरणगुणस्थानस्थितमुनिभ्यो जला० ॥९॥
सत्सूक्ष्मसांपरायस्थो ये लिंगत्रयवर्जिता । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं सूक्ष्मसांपरायस्थितमुनिभ्यो जला० ॥१०॥
उपशांतकषायस्था ये नराः कश्मलोभिताः । पूजया०॥
ॐ ह्रीं उपशांतकषायस्थितमुनिराशिभ्यो जला० ॥११॥
क्षीणाः कषाया येषां वै द्वादशस्थानवर्तिनः । पूजया०॥
ॐ ह्रीं क्षीणकषायगुणस्थानस्थितमुनिराशये जला० ॥१२॥
घातिकर्मक्षयाद्ये च केवलज्ञानधारकाः । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं सयोगकेवलीगुणस्थानस्थितमुनिभ्यो जला० ॥१३॥
अ इ उ ऋ लृ स्वायुष्काश्चतुर्दशगुणाधिपाः । पूजया०॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानवर्तिमुनिभ्यो जला० ॥१४॥

जलादिचन्दनसदक्षतपुष्पचारु ।
नैवेद्यदीपवर धूपफलैर्महार्घं ॥
नारायणो विजयकीर्तिगुणप्रसादात् ।
यच्छत्यनर्घममलं मुनिपुङ्गवेभ्यः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानस्थितभव्यजीवेभ्यो महार्घं० ।

अथ जयमाला ।

सिरि गुणगण ठाणा अमिय समाणा,
भवियण मुनिवर बोधकरा ।
अइ सुमइ णिहाणा मुणिप्रणभाणा,
कुमइविणासण दुरियहरा ॥१॥

पठम मिथ्यातह ठाण यहिं भव्व राशि अणंत जिणेसर देव कह्या ।
चउदसि बावण गणहर मुणिवर भव्व लहा ते बन्दामिय निम्मल निस्सय सिद्धि पहा ॥ २ ॥
सासादण वर दिठि भणा एक सम कोड़ि चार । जिणेसर देव कह्या ॥
चउदसि बावण गणहर मुनिवर भव्य लहा ते वन्दामिय निम्मल निस्सय सिद्ध पहा ॥ ३ ॥
तिदिय ठाणे णाण भव्ववरा दो पंचासय कोढ़ि जिणेसर देव कह्या । चउदसि बावण० ॥ ४ ॥

अविरदम्मि सय सत्तकोड़ि समकितवंत महंत जिणेसर
देव कह्या। चउदसि बावण० ॥ ५ ॥
देस विरद वर सावयए तेरइ कोडिपमाण जिणेसर
देव कह्या। चउदसे बावण० ॥ ६ ॥
रस खदु अठङ्कर यणङ्कड बाण समाण पमत्त जिणेसर
देव कह्या। चउदसे बावण ॥ ७ ॥
रयणख चन्दण वइरसहि णवदोसत्तम ठाण जिणेसर
देव कह्या। चउदसे बावण० ॥ ८ ॥
अठय ठाणे मुणिव सहा, पूजंता भयहाणि जिणेसर
देव कह्या। चउदसे बावण० ॥ ९ ॥
अणियट्टिवर गणयहि मुणिवर गुणगण ठाण जिणेसर
देव कह्या। चउदसे बावण० ॥ १० ॥
सुहुमे ठाणे मय रहिता जाण अणुत्रय धाम जिणेसर
देव कह्या। चउदसे बावण० ॥ ११ ॥
एकादह वर ठाणम्मियें उपसम पत्त कषाय जिणेसर
देव कह्या। चउदसे बावण० ॥ १२ ॥
क्षीण कसाय सु द्वादसवें पंच महव्वय धार जिणेसर
देव कह्या। चउदसे बावण० ॥ १३ ॥
सयोगेवर केवलीए परम पयत्थ पकास जिणेसर
देव कह्या ॥ चउदसे बावण० ॥ १४ ॥
पंच लहु खर ठिदि धरए कम्म रहित जिणदेव जिणेसर
देव कह्या ॥ चउदसे बावण० ॥ १५ ॥

घत्ता।

इह चउदह गणे मुणिकयजाणे,
तत्तपमाणे दुरिह हरे।
सिरि विजय सुकीर्ति अविचल तुत्ति,
सिस्स नरायण सुमइकरे॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानस्थित भव्यराशिभ्यो जला०।

लक्षाण्यष्टतथाष्टभिन्नेवतिरुक्तासा सहस्राहताः।
पंचाब्धेकशतानि चोत्तरय मन्येते जिनाः कीर्तिताः॥
सांप्रोताष्टमुखाश्च षङ्क नवकामध्ये सदैक त्रिताः।
सर्वे ते मुनयो दिशंतु भवतां भूरिश्रियं वंदिताः॥

इत्याशीर्वादः।

छप्पय।

मिछा सासादय दिठि मिस्स अविरय गुण ठाणह।
देसविरय परमत्त सत्तम उपमत्त बषाणह॥
अपूव्वकरण अनिवत्त सुहम सांपराय सु जाणह।
उवसंतह खीण कसाय जोग अजोग पमाणह॥
चउदह ठाणा णामसु जिणवर मणहर मुणिभण्या।
नारायण ब्रह्मचारी कहिं भव्य जीव श्रवणे सुण्या॥

इति चतुर्दश गुणस्थान पूजा समाप्त।

अथ चतुर्दश मार्गणा पूजा।

गत्यादिभेदतः सन्ति चतुर्दश सुमार्गणाः।
आह्वानयामि सद्भक्त्या जैनसिद्धान्तमार्गतः।

ॐ ह्रीं चतुर्दशमार्गणात्रावतरावतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् स्वाहा।

स्वर्गादिगतिहेतुनां देष्टारो ये गतस्मयाः।
यजेऽहमष्टधा द्रव्यैमार्गणाश्रितमानसान्॥

ॐ ह्रीं स्वर्गादिगतिहेतुपदेशकेभ्यो जला० ॥१॥

एकेन्द्रियादिजीवानां ये वै रक्षणतत्पराः यजे०॥

ॐ ह्रीं एकेंद्रियादिजीवरक्षकेभ्यो जलां० ॥२॥

पृथिवीकायिकादीनां रक्षणे लुब्धमानसाः यजे०॥

ॐ ह्रीं षट्कायरक्षकमुनिभ्यो जला० ॥३॥

मनोवाक्काययोगानां हेयाहेयप्रकाशकान्। यजे०॥

ॐ ह्रीं योगमार्गणाज्ञापकेभ्यो जला० ॥४॥

वेदत्रयविमुक्तानां पूर्णसंयमशालिनः। यजे०॥

ॐ ह्रीं वेदत्रयरहितमुनिभ्यो जला० ॥५॥

कर्महेतुकषायाणां ये नरा भेदने वराः। यजे०॥

ॐ ह्रीं कषायविध्वंसकेभ्यो जला० ॥६॥

ज्ञानोपयोगयुक्ता ये मुनींद्रा मानवर्जिताः। यजे०॥

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगयुक्तजिनेभ्यो जला० ॥७॥

संयमोद्धरणे दक्षाः संयमानां प्रकाशकाः । यजे० ।।

ॐ ह्रीं सामायिकसंयमोद्धारकमुनिभ्यो जला० ।।८।।

चक्षुणां दर्शनानां ये ज्ञायका मुनयो वराः । यजे० ।।

ॐ ह्रीं चक्षुरादिदर्शनज्ञापकेभ्यो मुनिभ्यो जला० ।।९।।

शुक्ललेश्यारता ये च लेश्याषट्कोपदेशकाः । यजे०।।

ॐ ह्रीं षट्लेश्यापदेशकेभ्यो जिनेभ्यो जला० ।।१०।।

भव्याभव्यप्रभेदज्ञाः ज्ञानध्यानधनाश्च ये । यजे०।।

ॐ ह्रीं भव्याभव्यमार्गणाप्रकाशकेभ्यो जला० ।।११।।

सम्यक्त्वादिगुणोपेता ये सम्यक्त्वप्रकाशकाः । यजे०।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वोपदेशकेभ्यो जला० ।।१२।।

संज्ञासंज्ञिप्रभेदानां मार्गणा ये रताः सदा । यजे०।।

ॐ ह्रीं संज्ञासंज्ञिमार्गणाभेदकथकेभ्यो जला० ।।१३।।

आहारमार्गणोद्युक्ता ये तद्भेदप्रकाशकाः । यजे०।।

ॐ ह्रीं आहारकमार्गणोपदेशकेभ्यो जला० ।।१४।।

गत्यादिवेदपृथिवीमित मार्गणाश्रिताः ।
संसारसागरसमुत्तरणैकनिष्ठिताः ।।
अर्घेण रत्नवरभाजनसुस्थितेन तान् ।
नारायणो यजति भक्तिभरेण सन्मुनीन् ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशमार्गेभ्यो महार्घं ।

अथ जयमाला ।

पणविवि जिणदेवा, सुरकयसेवा,
पुणुपणविवि मुणिणाण घणा ।
चउदश वर मग्गणा, जिण गणहर भणा,
ता कहामि सुणु भव्वजणा ॥
सुरगइ णरगइ तिरिय णरय गइ णायहरा ।
इन्द नरिंद फणिंद सुचन्द्र तिलोय वरा ॥
ते वंदामिय सामिय णिम्मल भावधरा ।
पुणू पणमामिय सत्तिय भत्तिय भावमुदा ॥ २ ॥
फासण रासण, घाण णयण, वरकणमया ।
सत्ताविंसदि माणविजय इन्दिय विसया । ते वंदामि०॥
पुढवी आइसु थावर तस्स दया विमला ।
इरियाजुगंतर दिठिम सुछिय पय कमला । ते वंदामि०॥
मणवय काय तिव्विमित जोग सुभेय करा ।
अणुभय भासयभासिय तत्तय मतहरा । ते वंदामि०॥
पुरुस चेयथीवेय नपुंसयवेय वहा ।
झाणपणासिय कम्मपभासियमुत्ति पहा । ते वंदामि०॥
कुछिय कोह कुपाण कुमाया लोह जया ।
णिज्जिय हासरदीरदिसाकुदु सत्त भया । ते वंदामि०॥
कुमइ सुमइ मणपज्जय णाणुवदेसकरा ।
केवलणाण पकासिय भासिय अट्ठधरा । ते वंदामि०॥

सामाइयादिय संजम खयकय कम्मगणा ।
दीव धुणी पयिबोहिय सोहिय भव्य जणा । ते वंदामि०॥
वर कुस्माद्यिय दंसण भेय पकास करा ।
केवल दंसण पेक्खिय लोय अलोय वरा । ते वंदामि०॥
सुक्क सुपउपक वोत......................
लेस्सा छक्खयभेय पभासण भव्व हिदा । ते वंदामि०॥
भव्व सु मग्गण मग्गिय भव्व सु जीवजणा ।
भव्व भवोदहि तारण णाव समाण मणा ॥ ते वंदामि०॥
मिछत्तादि सम्मत्त पयार पयास बुहा ।
जिय मय जिय उठ सग्ग पमाद खुहाय मुहा । ते वंदामि.।
सणमग्गण दस्सिय सणिय जोव पहा ।
दुट्ठ कम्मट्ठ गयट्ठ विहट्ठण सिंह जहा । ते वंदामि०॥
आहारय मग्गण दस्सिय आहारह जीव पहा ।
विग्गहगइ अणाहरोय संसण बोहवहा । ते वंदामि० ॥

घत्ता ।

सिरि जिण मुणि वन्दा,
णयणाणन्दा भव्वकुमुयवर बोहकरा ।
सिरि विजय मुणिंदा पापणिकन्दा,
सिस्स नरायण दुरिय हरा ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशमार्गणोपदेशकेभ्यो पूर्णार्घं ।

तीर्थङ्करा गणधरा मुनीपुङ्गवा नः ।
श्रीमज्जिनेन्द्र वरयज्ञ विधिप्रणिष्टाः ॥

कारुण्यबुद्धिकलिताशयभव्यसार्थी ।
नरायणेन महिताः प्रदिशन्तु भव्यम् ॥

इत्याशीर्वादः ।

छप्पय ।

चउगइ इन्दिय पंच काय फुनि छक्क भणिजे ।
पगदस जोग पमाण वेय फुनि तीन्ह गणीजे ॥
चउकसाय फुनि णाण संयम फुनि दंसण चउक्कह ।
लेस्सा छक्क वखाण भव्व फुनि सम्मक वन्तह ॥
सणि आहारय णायसे चउदस मग्गण जाणीए ।
नारायण वाणी वदन्त जिन सिद्धांत वखाणीए ॥

इति चतुर्दशमार्गणा पूजा समाप्तम् ।

अथ चतुर्दश जीवसमास पूजा ।

द्विसप्तसंख्यवरजीवसमासरक्षा-
नेकेन्द्रियप्रमुखजीवविवेकदक्षान् ॥
नागेन्द्रचन्द्रमनुजेन्द्रसुरेन्द्रलक्षान् ।
संस्थापयामि विधिना वृषतीर्थनाथान् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशजीवसमासरक्षकमुनियोऽत्रावतरावतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पर्याप्तपार्थिवानां ये जीवानां रक्षणोद्यताः ।
सम्पूजयामि तान् भक्त्या सद्द्रव्यैः कमलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तपृथ्वीकायिकजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं ॥१॥

अपर्याप्तकजीवानां पार्थिवानामहिंसकाः ।
संपूजयामि तान् भक्त्या सद्द्रव्यैः कमलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तपृथ्वीकायिकजीवरक्षकेभ्यो जला० ॥२॥

अप्कायिकाख्यपर्याप्तसत्त्वरक्षणतत्पराः । संपूज० ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकअपकायिकजीवरक्षकेभ्यो जला० ॥३॥

अपर्याप्ताख्य जीवानां जलानां ये प्ररक्षकाः । संपूज०॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकायकायिकजीवरक्षकेभ्यो जला० ॥४॥

तैजस्कायिकजीवानां पर्याप्तानां दयापराः । संपूज०॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकतैजस्कायिकजीवरक्षकेभ्यो जला० ॥५॥

तैजसानामपर्याप्तसत्वानां ये दयान्विताः । संपूज०॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकतैजस्कायिकजीवरक्षकेभ्यो जला० ॥६॥

पर्याप्तकाख्यवायुनां रक्षणे ये हि तत्पराः । संपूज०॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकवायुकायिकजीवरक्षकेभ्यो जला० ॥७॥

अपर्याप्तकवायूनां रक्षा संसक्तमानसाः । संपूज०॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकवायुकायिकजीवरक्षकेभ्यो जला० ॥८॥

वनस्पतिसमुद्भुत पर्याप्तांगिप्रपालकान् । संपूज०॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकवनस्पतिजीवरक्षकेभ्यो जला० ॥९॥

वनस्पतिसमुत्पन्नापर्याप्तांग्यप्रपात्कान् । संपूज०॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकवनस्पतिजीवरक्षकेभ्यो जला० ॥१०॥

द्विन्द्रियादि त्रयाणां ये पर्याप्तानां प्रपालकाः । संपूज०॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तद्विन्द्रीयादिविकलत्रयरक्षकेभ्यो जला० ॥११॥

अपर्याप्तकभेदानां रक्षका विकलात्मनां । संपूज० ॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्विन्द्रयादिविकलत्रयजीवरक्षकेभ्यो जलां० ।१२।

ये प्ररक्षंति पंचाक्षान् पर्याप्तभेदभाजिनः । संपूज०॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकपंचेन्द्रीयजीवरक्षकमुनिभ्यो जलां० ॥१३॥

अपर्याप्तक पंचाक्षप्राणरक्षणवर्तिनः । संपूज० ॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकपंचेन्द्रीयजीवरक्षकमुनिभ्यो जलां० ॥१४॥

द्विसप्तसंख्यवरजीवसमासरक्षा-
नेकेन्द्रीयप्रमुखसत्त्वविवेकदक्षान् ।
सम्पूजयामि कमलप्रमुखैर्मुनींद्रान्-
द्रव्यैरहं विजयकीर्तिमुनींद्रशिष्यः ।

ॐ ह्रीं चतुर्दशजीवसमासरक्षकेभ्यो महार्घं ।

× × ×

अथ जयमाला ।

णासियमय ठाणे, चउविहणाणे,
झाणट्ठिय णियमय कमले ।
णीउ चउद समासे. विविह पकासे,
णिम्मल भासे मुणि विमले ॥
पुढवी पज्जय भेय विवेय कर सुकरं ।
तह अपज्जय भेय विवेय करं पवरं ॥
तं वन्दे सिरणामिय सामिय पापहरं ।
पुणु पणमामिय मणहर मुणिवर साहु भरं ॥१॥

अपसु पज्जय जीव विणायमणोविमलं
तह अपज्जय सत्ताय सत्त मणो कमलं । तम् वन्दे०॥२॥
तेउ सुभेउ पभायि पज्जय भेय वरं ।
तह अपज्जय तेउ सुभेउ उपमाणकरम् । तम् वन्दे०॥३॥
पज्जय वायु सुभाउ अभेय पभेय धरं ।
तह अपज्जय वाउ सुकाउ विदेशहरं । तं वन्दे० ॥४॥
वणफ्फदि पज्जय जीव समासय भीदिहरं ।
तह अपज्जय वणफ्फदिसत्तय संतिकरं । तं वन्दे०॥५॥
पज्जय छिंदिय तिंदिय चउरिंदिं भेय वयं ।
तह अपज्जय छिति चउरिंदिंय सत्त दयं । तं वन्दे०॥६॥
पज्जय पंचवि इंदिय जीउवि भेदहरं ।
तह अपज्जय सणि असणिय संतिकरं ॥ तं वन्दे०॥७॥

घत्ता ।

सिरि गणहर मुणिवर, साहु समयधर
जीउ समास पयास करा ।
सिरि विजय सुरीसा गुणगणईसा
सिस्स नारायण दुरिय हरा ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशजीवसमासरक्षकमुनिभ्यो महार्घं० ।

श्री मद्गणाधिपतयो यतयो मुनीशाः ।
सत्साधवो विबुधवृन्दविवन्द्यधीशाः ॥

सच्छास्त्रपाठपठनोद्यतपाठकेशाः ।
क्षेमं दिशन्तु यजते भजते गिरीशा ॥

इत्याशीर्वादः ।

छप्पा ।

पुढवी अप्पह तेज वायु फुनि तरुकय भेयह ।
एक बिइंदिय भेय गोय फुनितिंदिय वे यह ॥
चउरिंदिय फुनि जात खात विकलत्तय णामह ।
सणि असणि गणभात पञ्च इंदिय सुधामह ॥
सत्तह पज्जय भेयसु सत्त अपज्जय जाणीये ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे, चउदह जीव वखाणीये ॥

इति चतुर्दश जोवसमास पूजा समाप्तम् ।

अथ चतुर्दश नदी पूजा ।

जम्बूपलक्षिते द्वीपे नद्यश्चतुर्दशस्मृताः ।
आह्वानयामि ताः सर्वा गंगाद्या मंगलप्रदाः ॥

ॐ ह्रीं गंगादिचतुर्दशनद्योऽत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

गंगा हिमवदुद्भूतां जिनबिंबसमन्वितां ।
सलिलाद्यष्टधाद्रव्यैः पूजयामिप्रभक्तितः ॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वित गंगानद्यै जलादिकं ॥१॥

सिंधुहिमवदुद्भूतां जिनबिम्बसमन्वितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितसिन्धुनद्यै जला० ॥२॥

रोहित हिमवद्‌जातां जिनबिंबसमन्वितां । सलिला०॥
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितरोहितायै जला० ॥३॥
महाहिमदुद्‌भूतां रोहितास्यां जिनान्वितां । सलिला०॥
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितरोहितास्यायै जला० ॥४॥
महाहिमदुद्‌भूतां हरितां जिनसंयुक्तां । सलिला०॥
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितहरिते जला० ॥५॥
निषधाचलसंभूतां हरिकांता जिनाकितां । सलिला०॥
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितहरिकांतायै जला० ॥६॥
निषधाचलसंभूतां सीतां श्रीजिनसंश्रितां । सलिला० ॥
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितसीतानद्यै जला० ॥७॥
नीलभभृत्समुत्पन्नां सीतोदां प्रतिमान्विता । सलिला०॥
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितसीतोदानद्यै जला० ॥८॥
नीलभूभृत्समुत्पन्नां नारीं प्रतिममांकितां । सलिला०॥
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितनारीनद्यै जला० ॥९॥
रुक्म्यद्रिप्रोत्थितां रम्यां नरकांतां जिनान्विता । सलि०॥
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितनरकान्तानद्यै जला० ॥१०॥
रुक्मिपर्वतसंभूतां सुवर्णकुलसंज्ञिका । सलिला० ॥
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितसुवर्णकुलानद्यै जला० ॥११॥
शिखरिप्रोत्थितां रम्यां रौप्यकुलां जिनांकितां ।सलिला.।
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितरौप्यकुलानद्यै जला० ॥१२॥
शिखरिप्रोत्थितां रक्तां श्रीजिनप्रतिमांकितां । सलिला०॥
ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितरक्तानद्यै जला० ॥१३॥

शिखरिप्रोत्थितां रम्यां रक्तोदां श्रीजिनांकितां। सलि०॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितरक्तोदानद्यै जलादिकं ॥१४॥

गंगादिवाहिनि सुमध्य जिनेन्द्रबिम्बा-
नर्चाम्यहं प्रवरभक्तिभरेण युक्ताः॥

अर्घेण सज्जलसुचन्दनपुष्पचारु-
नैवेद्यदीपवरधूपफलैः कृतेन॥

ॐ ह्रीं गंगादिचतुर्दशनद्यै महार्घं।

अथ जयमाला।

णिम्मलवर सरिया गुणगण भरिया,
चउदह णिम्मल जल भरिया।
कुलाचल धरिया द्रह उद्धरिया,
जिण अणुसरिया मल हरिया, ॥१॥

भरह सरासण उवमय जाणो,
गंगा सिन्धु नदीय वखाणो।
तिहांपण श्रीजिनवर सुविशाल,
ते पूजो भविपण गुणमाल ॥२॥

जह णह भोय भूमि गुण भरिया,
रोहिद रोहिदासा दोह सरिया।
तिहांपण श्रीजिनवर सु विशाल,
ते पूजो भवियण गुणमाल ॥३॥

मध्यम भोय धरा अणुसरिआ,
हरिय हरिकांता मणी हरिया। तिहां०॥४॥

दाहिण उत्तर कुरु परसरिया,
सीता सीतोदा सुइ मरिया । तिहां० ॥५॥
हिमवद अज्जधरा परिसरीया,
णारी णरकांता दुइ हरिया । तिहां० ॥६॥
हिरणवदह वर खेत्त पसारा,
सुवणह रुप्पकुला जुय धारा । तिहां०॥७॥
एरावद पुणु खेत्त विशाल,
रत्ता रत्तोदा गुण माल । तिहां० ॥८॥
क्षेमकीर्तिसुरि पट्टमुणिन्दा,
नरेन्द्रकीर्ति गुरु कुवलयचन्दा ।
तसपट पंकज सुर सोहाय,
विजयकीर्ति भट्टारक राय ॥९॥
तसपद पंकज भृंग कहाया,
नारायण यतिवर गुण गाया ।
जे नर पूजें जिण समुदाया,
ते नर अजर अमर पद पाया ॥१०॥

घत्ता ।

सिरिसरिय जिणन्दा कुवलयचन्दा,
इन्द नरिंद सुगुण कहिया ।
सूरि विजय मुणिंदा पापणिकन्दा,
सिस्स नरायण यति महिया ॥
ॐ ह्रीं गंगादिचतुर्दशनदीस्थितजिनेभ्यो महार्घं ।

सरित्सुस्थिता श्रीजिनानां सुबिंबा ।
द्विसप्तादिसंख्यानमन्नाकिमुख्याः ॥
सदा पूजिताः संस्तुताः पूजकानां ।
मनोऽभीष्टसत्कार्यदास्ते भवन्तु ॥

इत्याशीर्वादः ।

छप्पय ।

गंगासिंधु आद्य रोहिता रोहिता सा जाणह ।
हरिद हरिकांता णाम सीता सीतोदा माणह ॥
नारी नरकांता सरिद सुवर्ण रुपकुला वखाणह ।
रक्ता रक्तोदा सरिद खेत एरावत धामह ॥
नदीयचउदस जिणवरा, शुद्धसरुपे जाणीये ।
नारायण वर्णी कहे, जिनसिद्धांत वखाणीये ।

इति चतुर्दश नदी पूजा समाप्त ।

अथ चतुर्दश भुवन भव्य जीव पूजा ।

द्विगुणमुनिसमाना लोकभेदा समुत्थाः ।
जिनवर गणिदिष्टा ये स्थितास्तत्र जीवाः ॥
निरुपमवरभक्त्या भाविनो मुक्तिनाथान् ।
सकलगुणगरिष्टान् स्थापयेऽहं प्रमोदात् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशभुवस्थभव्यजीवा अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

निगोदेषु स्थिता जीवाः भविष्यन्मुक्तिनायकाः ।
अर्चाम्यहं सुद्रव्येण जलाद्यष्टविधेन तान् ॥

ॐ ह्रीं निगोद्रस्थभव्यजीवराशिभ्यो जला० ॥१॥

महातमःप्रमोद्भुता ये जीवभव्यतां गताः ॥अर्चाम्यहं०॥

ॐ ह्रीं महातमःप्रमोद्भूतभव्यजीवराशिभ्यो जला० ॥२॥

तमः प्रभासमुत्पन्ना भव्यराश्यभिधेयकाः । अर्चाम्यहं०॥

ॐ ह्रीं तमःप्रमोद्भूतभव्यराशिभ्यो जला० ॥३॥

धूम प्रभाश्रिताः सत्वा मोक्षसूत्रोपधारिणः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं धूपः प्रमोद्भूतभव्यराशिभ्यो जला० ॥४॥

पङ्कप्रभासमुत्पन्ना भव्या मानविवर्जिताः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं पंकप्रभाश्रितभव्यराशिभ्यो जला० ॥५॥

वालुकास्थितयो येवै जीवानां राशयो मताः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं वालुकास्थितभव्यजीवराशिभ्यो जलादिकं ॥६॥

ये जीवा भव्यभावाग्राः शर्क्कराप्रभवाः स्मृताः ।अर्चा०॥

ॐ ह्रीं शर्कराप्रभाश्रितभव्यजीवराशिभ्यो जलादिकं ॥७॥

रत्नप्रभाश्रिता जीवाः भव्या ये जिनमार्गगाः ॥अर्चा०॥

ॐ ह्रीं रत्नप्रभाश्रितभव्यजीवराशिभ्यो जला० ॥८॥

तियग्लोगगता जीवा ये भव्याभव्यभावुकाः ॥अर्चा०॥

ॐ ह्रीं तिर्यग्लोगस्थितभव्यजीवराशिभ्यो जला० ॥९॥

ज्योतिपंटलधामानो ये भव्याः जीवराशयः ।अर्चा०॥

ॐ ह्रीं ज्योतिपटलाश्रितभव्यजीवराशिभ्यो जला० ॥१०॥

ये कल्पवासिनो देवाः सौधर्माद्यच्युतांतकाः । अर्घं०॥
ॐ ह्रीं कल्पवासिभव्यदेवराशिभ्यो जला० ॥११॥
अधो मध्योर्ध्वग्रैवेयकोद्भवा भव्यराशयः । अर्घं०॥
ॐ ह्रीं ग्रैवेयकाश्रितभव्याहमिंद्रेभ्यो जला० ॥१२॥
नवानुदिशधामानो ये देवा निर्मलाशयाः । अर्घं०॥
ॐ ह्रीं नवानुदिशाविमानस्थाहमिंद्रेभ्यो जला० ॥१३॥
येऽहर्मींद्रा हि भव्याश्च पञ्चानुत्तरवासिनः ॥ अर्घं०॥
ॐ ह्रीं विजयादिपञ्चविमानस्थाहमिंद्रेभ्यो जला० ॥१४॥

त्रिलोकाश्रिताभव्यजीवा सुभावा ।
भविष्यात्सुमुक्तिस्त्रियोनायकास्तान् ॥
जलाद्यष्टधार्घेण नारायणाख्यो ।
यजामि प्रभक्त्या त्रिशुद्धया नमामि ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशभुवनस्थितभव्यजीवराशिभ्यो महार्घं० ।

* * *

अथ जयमाला ।

इय भव्व सु सत्ता, गुणगणमत्ता, सत्ता मुत्ति जुवइ सुसया। दंसण वरणाणा, चरिय णिहाणा, डहिय कुकम्म सुधम्म वया ॥१॥ जे छत्तीस कारण वग्गत गया, णिगोय कु भूमिय लद्ध पया। ते चउदह भुवण सु भव्व लरा, वन्दामिय भाविय मुत्तिवरा ॥२॥ जे सत्तम माधवी पुढवी धरा, वर तेतीस सायर आउ लरा। ते चउदह भुवण सु भव्य लरा, वन्दामिय भाविय मुत्तिवरा ॥३॥ जे मधवी णायसु जीव

घणा । दोइ वंसदि सावर आउ भणा ।। ते चउ०।।४।। जे धूम यहो वर भूमि सधा । दस सत्त सु सायर आउ जुया । ते चउ० ।।५।। जे पंक यहां पुढवी सुजणा । दस सायर आउ जिणेस भणा । ते चउ०।।६।। जे मेघा भूमिय वास करा । वर सत्तसु सायर आउ धरा । ते चउ० ।।७।। जे वंसा पुढवी कयप सरा । वर तिन्हसु सायर आउ धरा । ते चउ० ।।८।। रयणप्पह पुढवीसु वास करा । वर एकसु सप्पर आउ धरा । ते चउ० ।।९।। जे मज्झह लोयसु उयधरा । वर तिरिय गइसुद्ध वासकरा । ते चउ० ।।१०।। जे पंचइ भेदहिं जोइ गणा । जिण देवगणिंदहिं भव्य भणा । ते चउ० ।।११।। जे सुहमादिय वर कप्पसुरा । वर भव्व सुरासिय संख धुरा । ते चउ० ।।१२।। जे अधो मध्य सु उर्द्ध कहा ग्रैवेयकदेव जिणन्द लहा । ते चउ० ।।१३।। जे अणुदिस णाम विमाण सुण्या । जिण णाह गणिंदहिं भव्व गुण्या । ते चउ० ।।१४।। जे पंचाणुत्तार वास भणा । अहमिंद अपूरव णाम घणा ते चउ० ।।१५।।

घत्ता ।

इय चउदह लोया गुणगुण उया
भवीण मुत्ति णयरी वसहा ।
सुरि विजय मुणींदा तिहुमण चन्दा
सिस्स नरायण विबुध कहा ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशलोकभव्यजीवराशिभ्यो महार्घं ।

श्रीमच्चतुर्दशसुलोकभवाः सुभव्याः ।
जीवा अनन्तवरराशिमिता गुणाढ्याः ।।
सत्पूजक प्रमुखसंघजनाय नित्यं ।
देया सुरुत्तमसुभक्ति विमुक्तिसौख्यं ।।

इत्याशिर्वादः ।

छप्पय ।

धमावंसामेघा अंजण अरिट्ठा फुनि दोयह ।
मघवी माघवी णाम अट्ठमि फुनि जाण णिगोयह ।।
तिरियलोय जो इस सगा फुनि सोलगिवेय ।

....

एह चउदह लोकमें भव्य अणंता जाणीये ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे जिनसिद्धांत बखाणीये ।।

अथ चतुर्दशभुवनस्थित भव्यजीव पूजा समाप्तम् ।

चतुर्दश रत्नाधिपति चक्रवर्ति पूजा ।

सेनापतिस्थपतिहर्म्यपतिद्विपाश्व,
स्त्रीचक्रचर्ममणिकारिणीकापुरोधः ।
छत्रासिदण्डबररत्नपतीन्मनोज्ञान,
संस्थापयामि विधिना गुणरत्नलब्धैः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशरत्नाधिपतिचक्रवर्तीनोऽत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । स्वाहा ।

सेनापतिमहारत्ननमिताखिलभूभृतः ।
अर्चाम्यहं सुद्रव्येण तान्भक्त्या चक्रवर्तिनः ॥

ॐ ह्रीं सेनाधिपतिरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥१॥

स्थपत्याख्याः सुरत्नेन ये सं वित पंकजाः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं स्थपतिरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥२॥

हर्म्यपत्यभिधानेन रत्नेन श्रितपंकजाः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं हर्म्यपतिरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥३॥

द्विप्राख्यरत्नसंश्रिताः वरिष्ठान्निर्मितासना । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं द्वीपरत्नेकृतासनेभ्यश्चक्रवर्तिभ्यो जला० ॥४॥

विजयार्द्धोपपन्नस्याश्वस्यारोहिणतत्पराः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपपन्नाश्वाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥५॥

दशांगभोगभोक्तारो ये सु स्त्रीपतयो नराः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं स्त्रीरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥६॥

बुद्धिरत्नप्रभाभासिपादानतपुरोध सः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं पुरोहितरत्नसंसेवितचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥७॥

चक्ररत्नप्रभावेन दण्डो नाराति मण्डलाः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं चक्ररत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥८॥

चर्मरत्न प्रतापेन रक्षितस्वप्रसैनिकाः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं चर्मरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥९॥

स्फुरद्रत्नप्रभाजालाधिपतिमणिभासितः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं मणिरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥१०॥

कार्किण्याख्या सुरत्नेन लिखितस्वाभिधानका । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं काकिणीरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥११॥

चन्द्रबिंबसमाकार छत्ररत्नाधिभासिनः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं छत्ररत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥१२॥

समुल्लसद्व्भ्रबिम्ब प्रभाभा पन्महासयः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं असिरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥१३॥

प्रचण्डदण्डरत्नेन प्रोच्चारितगुहारशः । अर्चा०॥

ॐ ह्रीं दंडरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जला० ॥१४॥

श्रीमच्चतुर्दश सुरत्नमहाप्रभावं ।
चक्राधिपेभ्य इह सम्पत्प्रदामनर्घ्यं ॥
नारायणो विजयकीर्तिमुनींद्रशिष्यो ।
वाश्चन्दनादिकृतमर्घमहम् प्रभक्त्या ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो महार्घं ।

अथ जयमाला ।

इह पुण्य पवित्ता गुणगणचित्ता, छित्तापिछा मइणिपुणा ।
चउदह रयणत्ता, विज्जयपत्ता चक्कवट्टि पयपत्तगुणा ।
पुंणेण रयणपइपद लहंति, पुंणेण सु णरयइ गुण करंति ।
पुंणेण सणाणइ रयण सार, पुंणेण ठहइ गुणगण भंडार ।१।
पुंणेण सुणरसुर णमइ सिस्स, पुंणेण सुगयवर भमइ दीस ।
पुंणेण हसारवीहय करंति, पुंणेण सु जुवइ रयण वरंति ॥२॥
पुंणेण सुचक्कह करइ सेव, पुंणेण सुचम्मह रयण हेव ।
पुंणेण सुरहसम मणि विशाल, पुंणेणसु काकिणी गुणहमाल ३
पुंणेण पुरोधह करइ सेव, पुंणेण सुछत्तह धरइ देव । पुंणेण असिय वर रयण पत्ति, पुंणेण सुदण्ड रयण पसत्ति ॥४॥
पुंणेण सुजलणिहि थल हवन्ति, पुंणेण अगणिभयसुर अवन्ति । पुंणेण कुरोग दलिद्द णास, पुंणेण धरणपइ पय विलास ॥५। पुंणेण सुकुल णर लहइ जम्म, पुंणेण सु जिणवर लहइ धम्म । पुंणेण सु मुणिवर खवइ कम्म, पुंणेण सुभोयह भूमि सुसम्म ॥६॥ पुंणेण सु अगणिय लच्छि सार, पुंणेण सुकुलपइ चतुर णार । पुंणेण हवन्ति सुपुत्त पुत्त, पुंणेण पराभव इणहि भूत्त ॥७॥ पुणेण कुडायणी ण रहे पास, पुणेण कु साइणी हवइ दास । पुंणेण कुदेव पिसाय जाय, पुंणेण लहइ णरपइ पसाय ॥८॥ पुंणेण सुणर लहइ सुहग सग्ग, पुंणेण सुलहइ णर सु अपवग्ग । पुंणेण सुति-

हुयण जस अभंग, पुंणेण सुणर लहइ सुकग संग ॥९॥
पुंणेण णियर गइ विलय जाइ, पुंणेण तिरिय गइ दूर धाय।
पुंणेण कुसत्तुह हवइ मित्त, पुंणेण सगुरुजण धरइ चित ।१०।

घत्ता ।

चउदह वर रयणा अणुछयमयणा,
पुणय सु सिंदणर विभवा ।
सिरिविजयसूरिसा मुणिजणइसा,
सिस्स नरायण कयसु तवा ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो महार्घं ।

सेनापतिप्रमुखरत्नमहाप्रभावा–
श्चक्राधिपा विमलबुद्धिमहत्स्वभावाः ॥
संपूजकप्रमुखभव्यजनान्सु पूज्याः ॥
कीर्तिसुबुद्धिविभव सततम् दिशन्तु ॥

इत्याशीर्वादः ।

छप्पा ।

सेनापति वर रयणय पति गृहपति वरख्यातह ।
गयवर हय वर रयण युवति सुचक्र विभातह ॥
चर्म नाम मणि रयण काकिणी फुनि रयण पुरोधह ।
छत्र खड्ग फुनि रयण दण्ड फुनि रयण प्रबोधह ॥
एह चउदह रयण धर, चक्रवर्ति पातक हरो ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे, सकल संघ मंगलकरो ॥

इति चतुर्दश रत्नाधिपति पूजा समाप्तम् ।

अथ चतुर्दश स्वराणां पूजा ।

अकारादि स्वराणां ये वक्तारो विश्वदीपका: ।
आह्वाननादि सद्भक्त्या विधिना प्रयजे जिनान् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशस्वरप्रकाशकजिना अत्रावतरावतर संवोषट् स्वाहा । अत्र तिष्ठ २ ठ: ठः । अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् ।

युगादौ वृषदातारमकारस्वरमादिमम् ।
यजामहेऽष्टधा द्रव्यैर्वृषभम् वृषलांछनम् ॥

ॐ ह्रीं अकारस्वरवादिने वृषभाय जला० ॥१॥

आकारस्वरवक्तारम् प्रकाशितमहागमं । यजा०॥

ॐ ह्रीं आकारस्वरवादिने वृषभाय जला० ॥२॥

इकारम् यो विजानाति तमिना रहितम् परम् । यजा०॥

ॐ ह्रीं इकारस्वरवादिने वृषभाय जला० ॥३॥

ईकारस्य प्रवक्तारं भावीराजितसत्सतम् । यजा०॥

ॐ ह्रीं ईकारस्वरवक्रे वृषभाय जला० ॥४॥

उकारस्य प्रभेदज्ञं सर्वज्ञम् विमलप्रभम् । यजा०॥

ॐ ह्रीं उकारस्वरभेदकंथकाय जला० ॥५॥

ऊकारस्यापि वेत्तारंमनुद्धतमयम् जिनम् । यजा०॥

ॐ ह्रीं ऊकारस्वरभेदज्ञायकेभ्यो जला० ॥६॥

ऋकारस्योपदेष्टारमर्तिहंतारमादिमम् । यजा०॥

ॐ ह्रीं ऋकारस्वरोपदेशकाय जला० ॥७॥

ॠकारस्योपदेष्टारमानन्दितजगज्जनं । यजा०॥

ॐ ह्रीं ॠकारस्वरोपदेशकाय वृषभाय जला० ॥८॥

प्रक्तिलृस्वरस्यो वै सवर्णमृस्वरस्यतं । यजा०॥

ॐ ह्रीं लृकारस्वरस्यप्रवक्तार वृषभाय जला० ॥९॥

लृकारोच्चारदक्षो यो देवार्चितांघ्रिपंकजः । यजा०॥

ॐ ह्रीं लृकारस्वरोच्चारकाय वृषभाय जला० ॥१०॥

एकारस्वरनामज्ञमेकारस्वरदेशिनम् । यजा०॥

ॐ ह्रीं एकारस्वरदेशने वृषभाय जला० ॥११॥

ऐकारस्वरजानानमेकारस्योपदेशकम् । यजा०॥

ॐ ह्रीं ऐकारस्वरप्रकाशकाय वृषभाय जला० ॥१२॥

ओकारस्योपदेष्टारमोकारस्थानवादिनम् । यजा०॥

ॐ ह्रीं ओकारस्वरोपदेशकाय जला० ॥१३॥

औकारोच्चारणे शक्तं विश्वविद्याप्रकाशकम् । यजा०॥

ॐ ह्रीं औकारस्वरकथकाय जिनाय जला ॥१४॥

अकारप्रभृत्यन्यशुद्धस्वराणां
वराणां प्रवक्तारमाद्यं जिनेन्द्रम् ।
वरैरौप्यपात्रेस्थितैः सज्जलाद्यै-
र्यजे ब्रह्मनारायणो भक्तियुक्तम् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशस्वरप्रवक्तारम् जिनाय महार्घं० ।

अथ जयमाला ।

आदि जिनेसर परम दिनेसर, भविय कमल परकास करु ।
तिहुयर परमेसर ज्ञान दिवाकर, सेवक जन मन दुरिय हरु

॥१॥ जय जय नाथ नारंजन योगी, जय जय शांति सकल गुण भोगी । जय जय त्रिभुवन जन हितकारी, जय जय जय मुक्ति रमा अधिकारी ॥२॥ जय जय काम गियन्द विहन्डन, जय जय मुक्ति नयरि वर मन्डन । जय जय मान महा मद भंजन, जय जय क्रोध महाभट गंजन ॥३॥ जय जय दिव्यधुनी मुख राजे, जय जय सकल घनाघन लाजे जय जय त्रिभुवनना दुःख भाजे, जय जय देव दुन्दुभी बाजे ॥४॥ जय जय त्रिभुवन जन मन राचे जय जय सूत्र एकावन वाचे । जय जय तत्व पदारथ भाखे, जय जय तप संजम भेद भाखे ॥५॥ जय जय भवियण कर्म विहंता, जय जय धर्मरथांग नियंता । जय जय तोरण ध्वज लहकंता, जय जय सुरनर साद करंता ॥६॥ जय जय दंसण णाण चरित्ता, जय जय निर्मल नित्य पवित्ता। जय जय अधरीकृत मन राजा, जय जय इन्द्र विकट भय लाजा ॥७॥ जय जय आसोपल्लवकृत छाया, जय जय धृत चामर देवराया । जय जय सुन्दर फल सहकारा, जय जय कोयल करे टहुकारा ॥८॥ जय जय चंपकना पन सोहे, जय जय त्रिभुवनना मन मोहे । जय जय सप्तच्छदकृत शोभा, जय जय निर्जित दुर्द्धर लोभा ॥९॥ जय जय निर्जित दुर्जय माया, जय जय हरिहर पाय लगाया । जय जय सिद्ध निरंजन ध्याया, जय जय अजर अमर पद पाया ॥१०॥ जय जय अरहन्त भगवन्त देवा, जय जय

सुरनर करतुजु सेवा । जय जय अमर अमर पद दाता, जय जय संसार सागर याता ॥११॥ जय जय एक अनेक कहाया, जय जय गणधर देव पढाया । जय जय दर्शनसे दुःख नाशे, जय जय सेव करे तुम पासे ॥१२॥ जय जय जे नर हृदय धरन्ता, जय जय मन गुप्ति ते हरन्ता । जय जय त्रयणे स्तवन करन्ता, जय जय वचन गुप्ति परिहन्ता ॥१३॥ जय जय अष्टांगे जे नमन्ता, जय जय काय गुप्ति निगमन्ता । जय जय धर्म धुरन्धर देवा, जय जय जनम जनम करु सेवा ॥१४॥ जय जय क्षेमकीरती पद धारी, जय जय नरेन्द्रकीर्ति मनोहारी । जय जय तसपट्ट विजय मुनींद्रा, जय जय सरसति गुच्छ सु चन्दा ॥१५॥ जय जय तस पद पंकज भृंगा, जय जय नित्य सेव सुरंगा । जय जय सेवक जन साधारी, जय जय कहे नारायण ब्रह्मचारी ॥१६॥

घत्ता ।

सिरि जिणवर देवह सुरकृत सेवह,
जनम जनम तुव चरण नमूं ।
करुं पूजा सारीय अष्ट प्रकारिय,
अर्घ उतारिय दुःख गमूं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशस्वरप्रकाशकवृषभाय जिनाय महार्घं ।

दयादानदाता जगज्जन्तु पाता ।
महामोहजेता च नेता जिनाना ॥
सुमुद्घात भेता चहु कर्महन्ता ।
जिनो नाभि पुत्रो भवं शं करोतु ॥

इत्याशोर्वादः ।

छप्पय ।

वृषभ जिनेश्वर देव देव करे बहु सेवह ।
गावे गीत रसाल भग्यरि वर करे सेवह ॥
नाभिराय कुलचन्द मात मरु देवी नन्दह ।
इन्द्र नमे तस पास नमे राय धरणिंदह ॥
सेवा मनवांछित फले, जुग आदि जग वासीया ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे जाणे चौद स्वर प्रकाशिया ॥

इति चतुर्दश स्वर पूजा समाप्तम् ।

अथ चतुर्दश तिथी पूजा ।

मुख्या चतुर्दशाद्यायास्तिथयो मुनिनिर्मिताः ।
आह्वानन स्थापनादि विधिना तास्समर्च्चये ॥

ॐ ह्रीं धर्मकार्यप्रसिद्धचतुर्दशतिथियोऽत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

मुख्या प्रतिपदं बुध्वा मुख्यदेव जिनेश्वरं ।
दोषनिर्मुक्तसत्पूज्यमर्चयामि जलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं प्रतिपदिस्वरूपनिरूपकअष्टादशदोषरहितायजिनाय जला०

द्वितीयां तिथिमाश्रित्यदयामूलं जिनोदितं ।
सागारमुनिभेदाख्यं द्विधाधर्मं समर्चये ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयतिथिमाश्रित्यसागारानगारधर्माय जला० ॥२॥

तृतीयां तिथिमाध्यायदर्शनादिप्रभेदतः ।
रत्नत्रयजिनैः प्रोक्तं प्रार्चयेऽहं जलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं तृतीयातिथिमाश्रित्यदर्शनादिरत्नत्रयाय जला० ॥३॥

चतुर्थीतिथिमाश्रित्य वेदाश्चत्वार ईशिना ।
ये प्रोक्तास्तानहं यज्मि कमलाद्यष्टधार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थितिथिमाश्रित्य प्रथमानुयोगादिवेदेभ्यो जला० ॥४॥

पंचमीतिथिमुद्दिश्य ये पंचपरमेष्ठिनः ।
जलादिभिरिमैद्रव्यैरर्चयामि प्रभक्तितः ॥

ॐ ह्रीं पंचमीतिथिमुद्दिश्य पंचपरमेष्ठिभ्यो जला० ॥५॥

षष्ठीमाश्रित्य द्रव्याणि सर्वज्ञैः कथितानि वैः ।
षडिमतानि जेतानि जलाद्यष्टविधार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं षष्ठतिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोदितषट्द्रव्येभ्यो जला० ॥६॥

सप्तमीतिथिमुद्दिश्य संयमाः सप्तसंख्यया ।
प्रोक्ता जिनमुनींद्राणां यायज्मि तानहं मुदा ॥

ॐ ह्रीं सप्तमीतिथिमुद्दिश्य सामायिकादिसप्तसंयमेभ्यो जला०

अष्टमीचाष्टकर्माग्निमाश्रिताष्ठगुणात्मताः ।
सिद्धानां तानहं यज्मि जलाद्यष्टविधार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं अष्टमीतिथिमाश्रित्य सिद्धाष्टगुणेभ्यो जला० ॥८॥

उद्दिश्य नवमी सद्भिर्नया नवमता जिनैः ।
गम्भीराथाऽविरुद्धार्था दूरगास्तानहम् यजे ॥
ॐ ह्रीं नवमीतिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोक्त नवनयेभ्यो जला० ॥९॥
दशमीतिथिमाश्रित्य यो धर्मो दशधास्मृतः ।
दयामूलो हि सर्वज्ञैरर्चयाम्यमष्टधा ॥
ॐ ह्रीं दशमीतिथिमाश्रित्य दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो जला० ।१०।
अङ्गान्येकादशोक्तान्येकादशींतिथिसंज्ञया ।
तान्यहम् प्रयजे नित्यं जलाद्यष्टविधार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं एकादशमीतिथिमाश्रित्य एकादशांगेभ्यो जला० ॥१०॥
आश्रित्य द्वादशीं प्राज्ञैरुक्तानिपरमार्थतः ।
तपांसि द्वादशोध्यानि यजे तानीह भक्तितः ॥
ॐ ह्रीं द्वादशीतिथिमुद्दिश्य द्वादशविधतपेभ्यो जलादिकं ॥१२॥
त्रयोदशीं समाश्रित्य त्रयोदशविधं स्मृतं ।
चारित्रं श्री जैनेन्द्रैस्तैः यायज्मि शुद्धयान्वितः ॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशीतिथिमाश्रित्य त्रयोदशप्रकारचारित्रेभ्यो जला०
चतुर्दशीतिथि प्रोक्तानन्तचतुर्दशं जिनम् ।
पूजया परया भक्त्या पूजयामि प्रबुद्धये ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशीतिथिमाश्रित्य अनन्ततीर्थंकराय जला० ॥१४॥
धर्मप्रधानास्तिथयश्चतुर्दशः प्रोक्ताः,
जिनेन्द्रैः परमार्थज्ञातृभिः ।
अर्घेण वारादिकृतेन सत्कृताः,
सद्बुद्धये संजयतां भवन्तु ताः ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशतिथिभ्यो महार्घं ।

अथ जयमाला।

चतुद्दहवरतिथि हो, परम अतिथि हो,
धम्मह कारण सुमण धरी।
भवियण जण रंजण कम्म विभंजण,
काम विगंजण जिणंउ धरी ॥

छहढालाकी चालमें।

प्रथम तिथि समकित साधो, ए संसार अपार अगाधो। मनमें अरहन्त देव आराधो, भमतां भमतां मानव भव लाधो ॥ बीजें धर्म द्विधा जिन भाख्यो, अनागार सागरह दाख्यो। मनमें अरहन्त देव आराधो, भमतां भमतां मानव भव लाधो ॥ त्रीजे दंसण णाण चरित्र, पूजो अष्ट प्रकार पवित्र ॥मन०॥ चोथे वेद चतुष्टय जाणी, पूजो निम्मल भवियण प्राणी ।मन०॥ पूजो पांचम पंचपरमेष्ट, टाले जनम जनमनां कष्ट ।मन०॥ छट्ठे छद्रव्य कह्या जिनदेवा, पूजा नित्य करो बहुसेवा ।मन०। सेवो संजम सातमे सात, सु सामायिक करो परभात ।मन०॥ शुभ कर्म दहन पूजा कीजे, आठमे आठ कर्म हणीजे ।मन०॥ नवमें नव नय अर्थ गम्भीरा, मनमें जे धरसे तेह धीरा ।मन०॥ दशमी दश लाक्षणीक पूजो, उत्तम क्षमयादि गुण बूझो ।मन.। अगीयारसे अङ्ग अग्यार, पूजो पाप तणो परिहार ।मन०॥ बारे व्रत बारसें पालो, सुधी श्रावकाचार सम्भालो

।मन०।। पूजों तेरसि चारित्र तेर, देव अभिषेक करें तस मेर ।मन०।। जे नर चउदशे पूजो अनन्त तेहनि आश पूरे भगवन्त ।।मन०।।

घत्ता ।

तिथि चउदह जाणो धर्म वखाणो,
सहु मन आणो भाव धरी ।
श्री विजय सुकीर्ति शिष्य सुमूर्ति
नारायण जयमाल करी ।।

ॐ ह्रीं धर्मकार्यप्रसिद्धचतुर्दशतिथिभ्यो महार्घ ।

तिथयो तिथिभिः सुकृताय कृताः ।
शुभ कर्म सुखधा जगत्प्रथिताः ।।
शुभमर्चकधर्मिजनाय सदा ।
सु द्विशं त्विह शं जगति प्रथितं ।।

इत्याशीर्वादः ।

छप्पय ।

प्रतिपद् बीज सु त्रीज समकित धर्म सुदंसण ।
चौथा पंचमी वर छठि वेद परमेष्ठि द्रवांचण ।।
सातिम आठिम नुम संजक्रम यहन नया नत्र ।
दशम अग्यारस द्वादशी धर्म अङ्ग तप संभव ।।
तेरसे चारित्र पूजिये चउदशे अनन्त जिनेसरु ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे, चउदश तिथि मंगल करु ।।

इति चतुर्दश तिथि पूजा समाप्त ।

अथ चतुर्दश मलत्यक्ताहार मुनि पूजा।

पूयादिकद्विगुणसप्तमलापहारा ।
ये त्यजन्ति तान्कुमलान् वरशुद्धिभाजः ।
सद्वादशव्रतबिधानविधौ समर्थाः ।
संस्थापयेऽहमधुना विधिना मुनींद्रान् ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशमलोज्झिताहारग्राहकमुनियोऽत्रावतरावतर संवौषट्
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पूयदोषपरित्यक्तमाहार विश्वणन्ति ये ।
पूजयामीह सद्भक्त्या कमलाद्यष्टधार्चनैः

ॐ ह्रीं पूयमलातिरिक्ताहारग्राहकमुनिभ्यो जला० ।।१।।

अस्राख्यमलसंत्यागाद्येनमन्श्रंति शुद्धितः ।पूजया०।

ॐ ह्रीं अस्रमलरहितआहारग्राहकमुनिभ्यो जला० ।।२।।

पलाख्यमलसंत्यागाद्येमन्श्रंति शुद्धिभाक् ।पूजया०।

ॐ ह्रीं पलमलरहितपिंडविशुद्धये जला० ।।३।।

अस्थिरिक्तं च भोज्यं ये भुजंति परमार्थतः ।पूजया०।

ॐ ह्रीं अस्थिरिक्तमलरहितपिंडविशुद्धये जला० ।।४।।

चर्म्माख्यमलसंत्यागाच्छुद्धमन्नमदन्ति ये ।पूजया०।

ॐ ह्रीं चर्ममलरहितपिंडविशुद्धये जला० ।।५।।

भोजनं नख संत्यक्तं ये वल्भन्ति निरम्बरा ।पूजया०।

ॐ ह्रीं नखमलरहितपिंडविशुद्धये जला० ।।६।।

कचप्रश्लेषनिर्मुक्तं ये भुजंत्यन्नमुत्तमाः ।पूजया०॥

ॐ ह्रीं कचमलरहितपिंडविशुद्धये जला० ॥७॥

विकलत्रिकजीवेभ्यःत्यक्तमन्नमदन्ति ये ।पूजया०॥

ॐ ह्रीं मृतविकलत्रिकमलरहितपिंडविशुद्धये जला० ॥८॥

सूरणादिमलत्यागाद्विशुद्धान्नमदन्ति ये । पूजया०॥

ॐ ह्रीं सूरणादिकंदमूलत्यक्तपिंडविशुद्धये जला० ॥९॥

येऽश्नन्ति यवगोधूमबीजसंत्यक्तमन्नकम् ।पूजया०॥

ॐ ह्री यवगोधूमादिबीजमलरहितपिंडविशुद्धये जला० ।१०॥

येऽन्नं भुजंति निर्विघ्नामूलाख्यमलवर्जितम् ।पूजया०॥

ॐ ह्रीं मूलमलरहितपिंडविशुद्धये जला० ॥११॥

बदर्यादिफलत्यागाच्छुद्धमन्नम् भुजंति ये ।पूजया०॥

ॐ ह्रीं बदर्यादिफलमलरहितपिंडविशुद्धये जला० ॥१२॥

तुषादिमलसन्त्यक्तं भुजंति येऽन्नमुत्तमं ।पूजया०॥

ॐ ह्रीं तुषकणमलरहितपिंडविशुद्धये जला० ॥१३॥

कुन्डाद्यन्तमलैस्त्यक्तमाहारम् च भुजंति ये ।पूजया०॥

ॐ ह्रीं कुन्डमलरहितपिंडविशुद्धये जला० ॥१४॥

पूयादिदुर्मलविमुक्तमनुत्तमान्नम् ।
भुंजन्ति ये विपुलमानमदोझितांगाः ॥
वार्गंधतन्दुलसुपुष्पचरुप्रदीपैः ।
धूपैः फलैः कृतमहार्घमहं ददामि ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशमलरहितपिंडविशुद्धये महार्घं ।

अथ जयमाला ।

मदनमदविहंता दुष्टकर्माष्टभेत्ता ।
अगमनिगमवेत्ता सप्ततत्त्वैकचेता ।
मदननृपतिजेता भव्यसार्थप्रणेता ।
जयतिजगतपूज्यः सन्मुनीनां प्रसंघः ॥

विराग विमोह विरोग विभोग,
विशोक विरोष विदोष वियोग ।
दिनेश सयेश मुनीश निकाय,
जय प्रणीताखिल लोक कृताय ॥
दिनेश निशेश सुरेश नरेश,
खगेश दिनेश विवंदित सेस ।
दिनेश समेश मुनीश निकाय,
जय प्रणताखिल लोक कृताय ॥
विमान वितान विदम्भ विलोभ ।
विमाय विजाय विजृंभ विसोभ । दिनेश० ।३॥
विकन्तु विजन्तु विराजित वीस ।
विहास विलास विवर्जित दोस । दिनेश० ।४॥
विसंक विमुक्त विकर्म कलंक ।
निरामय निर्भय निर्गत पंक । दिनेश० ।५॥
विबाध विकासित विश्व निरास ।
विदूरित संसृति संशय पास । दिनेश० ।६॥

अचिंत्य चरित्र पवित्र सुनेत्र ।
विलोकित जीवनिकाय सुमित्र ॥ दिनेश० ७॥
घनाघन दुन्दुभि घोर निनाद ।
निराशित दुर्मतवादि कुवाद ॥ दिनेश० ८॥
दिगम्बर वेष विकुंचित केश ।
विहार पवित्रित देश विदेश ॥ दिनेश० ९॥
निराभरणांकित निर्मल पात्र ।
निरायुध निर्भय सोभित गात्र ॥ दिनेश० १०॥
कुकर्ममहीरुह भेद कुठार ।
सुमंधनगो धरणामृतधार ॥ दिनेश० ११॥
विशल्य विशूल्य निरीह विदण्ड ।
विखण्डित दुर्मद बुद्धि करंड ॥ दिनेश० १२॥
कषाय निकायरज प्रसमीर ।
दुरास्रव निर्जय दुर्जय धीर ॥ दिनेश० १३॥
सुरासुर भासुर किन्नर देव ।
खगाधिप मानुष निर्मित सेव ॥ दिनेश० १४॥
विनिर्गत दुर्मल भुक्त विमुक्त ।
परिग्रह दुर्ग्रह दोष विमुक्त ॥ दिनेश० १५॥

घत्ता ।

अखिलगुणनिधाना निर्जितक्रोधमाना ।
विरहितकुनिदाना: समतत्वैकताना: ॥

सुमुनिविजयकीर्तेः शिष्य नारायणाख्यो।
दुरितनिवहहान्यै तान्मुनीनर्घयामि ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशमलत्यक्ताहारग्राहकमुनिभ्यो महार्घं।

यो नित्यप्रणिधानसंश्रितमना संसारनिर्विणह।
यो रत्नत्रयधारणां चित्तमतिः कायारिविध्वंशकः ॥
यो विज्ञानरसायनामृतघयस्फीतांगसंगातिगः।
श्रीमुसंघजन (?) मुनीश्वरमहासंघो वतां सर्वदा ॥

इत्याशीर्वादः।

छप्पय।

पूय अस्त्रपलनाम अस्थि अजिनमल जाणह।
नख केश मल दोय एक विकलत्रय मानह ॥
सूरण आद्य कुकन्द बीज फुनिमूल अनेकह।
फल बदरीफल आदि कण फुनि कुन्ड विवेकह ॥
एह चतुर्दश मल रहित, शुद्ध आहार मुनिवर कह्यो।
नारायण ब्रह्मचारी कहे, जिन सिद्धांते संग्रह्यो ॥

इति चतुर्दशमलारहिताहारग्राहकमुनि पूजा।

अत्र षण्नवत्यकैकशत परिमितान् जाप्यान् देयात्।

जाप्य (१४×१४)=१९६ देयात्।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं हंस अनन्त केवलिने नमः।

अथ समुच्चय जयमाला ।

सिरि अणन्त जिणेसरु दुरिय,
तिमिरहरु तत्व पदारथ भासणु ।
भवि कमल दिणेसर वसु विहमय,
इरु सयल सुणाण पयासणु ॥
सुहग कपूर मय कुन्द वासिय जलं ।
कणयमणि घडिय भृगार धारोज्वलं ॥
इन्दु आरत्तियं करइ विकसिय मणं ।
अमरदेवी गणा णच्चइ सुभासणं ॥१॥
विमल कपूर सुगन्धि चन्दण भरं ।
घसिय केसर वरं जनम पातक हरं ॥इन्दु० २॥
कमल तन्दुलगणं कमलवासियघणं ।
णयण मोहणकरं हसिय सज्जण जणं ॥इन्दु० ३॥
कमल मचकुन्द जाइ जुह चम्पकं ।
मालती मोगरा तिलक कन्दबकं ॥इन्दु० ४॥
खज्जया मोदया घेबरा फेणया ।
सेव सुंहालया लेहु वर मंडया[1] ॥इन्दु० ५॥
मोतीया पायसा पूरी लापसी गणा ।
सूप[2] अपुवय वटप[3] पुडा घणा ॥इन्दु० ६॥
सुहग व्यञ्ज[4]नघणा तलिय मुहा चणा ।
शालि भक्तोत्करा सयण नण रञ्जना ॥इन्दु० ७॥

१–रोटी, २–दाल, ३–लाखरा भाखरी, ४–शाकभाजी तरकारी ।

रयण दीपोज्वला कपूर अति उज्जवला ।
दुरिय तिमिर हरा मदि सुदि अवहि फला ॥इन्दु० ८॥
सिंहल असित गरु हरिय चन्दण भरा ।
धूप धूमांचिया गयण माणुस घरा ॥इन्दु० ९॥
नालिकेरैः फलैः पूंगीसुकदम्बकैः ।
आम्र जम्बीरनारिंगदाडीमकैः ॥ इन्दु०१०॥
कर्वटीचिर्भटैः कोमलैः कर्भदैः ।
फोफलैः फालसैमुक्तिवरशर्मदैः ॥इन्दु०११॥
जम्बुरायणफलैः कोमलकुषमांडकैः ।
पिस्तावदामफलैरखोडपरकांडकैः ॥इन्दु० १२॥
कुसुमवर संति सुगंधी सुरभव्वयं ।
णायकुमार धरणिंद सुर सव्वयं ॥इन्दु० १३॥
जय जय सुदेव उचरंति जिण मंदिरं ।
पूरयंतिह पंचायणं मणुहरं ॥इन्दु० १४॥
अमलवर कमलदल नयन सुरकामणी ।
चमर ढोलंति अति सुहग गयगामिणी ॥इन्दु० १५॥
कणय भृंगार वर ताल कंसालयं ।
कमल मुह कलस धय दंड सोहालयं । इन्दु० १६॥
सुहसुपरतिक वरछत्तत्तय संयुतं ।
रयण सम कंतयं दप्पणं सुरणुतम् ॥इन्दु० १७॥
एकसम अट्ठवरं चामरं उज्वलम् ।
अमरझुणी गीत रंजन सुमुणालम् ॥इन्दु० १८॥

जण सुहीरावली चीर मचकुन्दया ।
क्षीर जलणिहि सम कमल वरकंदयं ।।इन्दु० १९।।
वंदतय संणिहं छत्तय सुन्दरम् ।
प्रातिहार्याष्टकं सयल मंगलकरम् ।।इन्दु० २०।।
पंच वर वरण धज भेय लहकंतयम् ।
रयण वर तोरणं धूपघटमालयम् ।।इन्दु० २१।।
कणयमणि किंकिणी सुख झणकारयं ।
तोरया घंटया रचिय विज्ञानयं ।।इन्दु० २२।।
दीपवरमालया सुहग मंदारया ।
भमर झंकारया कणयमणि जालया ।।इन्दु० २३।।
व्यन्तरी खेचरी किन्नरीय भूचरी ।
सुहग पुरन्दरी स्वर्ग देवामरी ।।इन्दु० २४।।
तत्ताथइ तत्ताथइ तत्ताथइय थोगिणी ।
णच्चए अच्छरा हंस गय गामिणी ।। इन्दु० २५।।
वज्जये घुघरा घमक घमकारए ।
पयकमलणे उरं ठमक चमकारए ।।इन्दु० २६।।
छमकछम पाय झंझरीय झमकारए ।
कडिय तह मेखला वर खलकारए ।।इन्दु० २७।
वीणा वज्जंति छलछपल कंसालए ।
भेरी गज्जंति अडयाल बहुतालए ।।इन्दु० २८।।
धपमय धपमय दों दों दों वज्जए ।
जण सु वण जम्म सु वण अम्बर मज्जए ।।इन्दु० २९।।

ढोल बहुदुन्दुभीय णाद बहु सव्वए ।
जण सु घण गज्जणं मोरमद णच्चए ॥इन्दु० ३०॥
हाव भाव कला णयण सु विसालए ।
भमइ वर भमरी देयंति कर तालए ॥इन्दु० ३१॥
राग सारंग तह देव गन्धारए ।
पंचमो भैरव राग मल्हारए ॥इन्दु० ३२॥
कुणइ कल्लाण विलास आसाउरी ।
हरीइ बहु पाव पुरुज्जत अन्ते उरी ॥ इन्दु० ३३॥
कुणइ आरत्तियं इन्दु जिणमन्दिरे ।
सयल वर संघ आणन्द मंगल करे ॥इन्दु० ३४॥

घत्ता ।

सिरि अणन्त जिणेसर दुरिय तिमिर हर
भवियण जण कल्लाणकर ।
सुरि विजयमुणिंदो तिहुयण चन्दो
नारायण ब्रह्म यजति वर ॥

ॐ ह्रीं अनन्तव्रतोद्यापन जयमाला पूर्णार्घं ।

घण्टा तोरण दाम दर्पण महाश्री चामराणां चयाः ।
सद्भृंगारकतारतालकलशस्फूर्यध्वजानां गणाः ॥
येषां ते विलसंति नित्य महसां श्वेतातपत्रत्रयाः ।
श्रीमन्तो वृषभादयो जिनवराः कुर्वंतु मे मंगलम् ॥

इत्याशीर्वादः ।

कीर्ति स्फूर्ति सुबुद्धि विमलमतिचयं श्लाध्यदीप्तिं च शुद्धिं ।
चारोग्यवृद्धिमृद्धि गजतुरगरथाद्युत्करं सन्तनोति ॥
लक्ष्मीं रामा प्रकामं तनयपरिकरं सारभुक्ति च मुक्ति ।
सम्यग्बुद्धया कृताया प्रभवतु यजतो श्रेयसेऽनन्तपूजा ॥

इति पूजाफलं ।

४ ८७ १
श्रीमत्सूर्यपुरेऽर्णवांगहयचंद्रे ष्टनभस्य सिते ।
पक्षे रामतिथौ बुधयुते पूर्वकृतार्चाविधैः ॥
श्री नारायणस्येहकृति विजयतां लाकेकृताऽसौ चिरं ।
सत्पुत्रोत्तमधीमनोहरमहा संघाधिपस्यादरात् ॥

इति श्री भट्टारक श्री विजयकीर्ति शिष्य ब्रह्म श्री नारायण
विरचित्त अनन्तव्रतोद्यापन समाप्तम् ।

महावासुपूज्यालये मूलसंघे,
स्फुरद्दिव्यसारस्वताख्यादिगच्छे ।
गणसद्बलात्कारनाम्नि प्रकृष्टे,
समुत्फुल्लसत्कुन्दकुन्दाख्यवशे ॥१॥
मुनिपद्मनन्दी सुरेंद्रादिकीर्तिः-
स्फुरद्दिव्यमूर्तिः मुनिक्षेमकीर्तिः ।
गुरो पट्टधारीनरेंद्रादिकीर्तिः,
सदा सौख्यकारी महाभव्यमूर्तिः ॥२।
तत्पट्टपंकजविकासनभानुमूर्तिः,
सद्बोधपंडितजनैर्डितशुद्धकीर्तिः,

संवत १७८४ ।

सत्कांतिनिर्जितसमुज्वलचन्द्रमूर्तिः,
भट्टारको विजयकीर्तिरसौ प्रजीयात् ॥३॥
तदीयांङ्घ्रियुग्मांबुजाधारभाजा,
कृतं भक्तितो वर्णिनारायणेन ।
अनन्तव्रतोद्योतनं पूजकानां,
सदानंदचन्द्रोदयं तत्करोतु ॥४॥
सूर्यपूर्या (सूरत) मनंताख्य व्रतस्योद्यापनं मया ।
नारायणेन भव्यानां कृतं सद्बोध हेतवे ॥५॥

॥ इति श्री अनंतव्रतस्योद्यापनं समाप्तम् ॥

श्री अष्टाह्निका व्रतोद्यापनम्।

प्रणम्य श्रीजिनाधीशं सर्वज्ञं सर्वपूजितम् ।
वीतरागं जगन्नेत्रं धर्मचक्रप्रवर्तकम् ॥१॥
जिनास्यजां सदावन्दे शारदां मम शारदाम् ।
चतुरशीतिलक्षाणां जन्तूनामुपकारिणीम् ॥२॥
गुरुणां चरणौ नत्वा प्रणम्याष्टविधार्चनम् ।
नदीश्वराभिधे द्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालये ॥३॥
आदौ गन्धकुटीपूजां पश्चात् सर्वं समाचरेत् ।
यंत्रस्य सिद्धचक्रस्य चतुर्मुखजिनस्य वा ॥४॥
एकैकस्य च दिग्भागे त्रयोदश हि पर्वताः ।
तत्र प्रत्येकचैत्यस्य पूजां कुर्वे शुभाप्तये ॥५॥

पूजनीयो जिनाधीशो नन्दीश्वरस्यस्वस्तिके ।
द्वापश्चाशत्सुपद्मेषु विमलेषु शिवाप्तये ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे जिनपूजनप्रतिज्ञानाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नन्दीश्वराष्टमविशालमनोज्ञरूपे
द्वीपे जिनेश्वरगृहाश्च भवन्ति युग्मम् ।
पंचाशदिन्द्रमहितान् प्रयजामि सिद्ध्यै
देवेन्द्रनागपतिचर्चितचारुबिम्बान् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालय अत्र अवतर २ संवौषट् स्वाहा। (आह्वाननं) ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा। (स्थापनं)

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालय अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा । (सन्निधापनं)

अथाष्टक।

कर्पूरपूरपरिपूरितभूरिनीर
धाराभिराभिरभितः श्रमहारिणीभिः ।
नन्दीश्वराष्टदिवसानि जिनाधिपाना-
मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्य जलं निर्वपामीति स्वाहा जलं ॥१॥

हृद्घ्राणतर्पणपरैः परितर्पसर्पै-
र्गन्धैः सुचन्दनरसैर्घनकुंकुमाद्यैः ।

नन्दीश्वराष्टदिवसानि जिनाधिपानां

मानन्दतः प्रतिकृति परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० ।चन्दनं ॥२॥

उन्निद्रचन्द्रविलसत्किरणावदातैः

सत्कुन्दकोरकनिभैः कलमाक्षतोघैः ।

नन्दीश्वराष्टदिवसानि जिनाधिपाना-

मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे० अक्षतान् ॥३॥

मन्दारचारुहरिचन्दनपारिजात,

सन्तानभूरुहभवैः कुसुमैर्विचित्रैः ।

नन्दीश्वराष्टदिवसानि जिनाधिपाना-

मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे० पुष्पं० ॥४॥

सिद्धैर्विशुद्धनवकांचनभाजनस्थैः

पीयूषमिष्टललितैश्चरुभिर्विचित्रैः ॥नन्दी०॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे० चरु ॥५॥

ध्वस्तान्धकारनिकरैः कनकावदातै-

र्दीपैः प्रदीपितसमस्तदिगन्तरालै ।नन्दी०॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे० दीपं ॥६॥

धूपैरमन्दतरसौरभजालगुञ्जद्-

भृङ्गाकुलैरगुरुचन्दनचन्द्रमिश्रैः ॥नन्दी०॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे० धूपं ॥७॥

कम्राम्रदाडिममनोहरमातुलिङ्ग—
जातीफलप्रभृतिसौरभसत्फलाद्यं ।।नन्दी०।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे० फलं ।।८।।

द्वीपेनन्दीश्वरेऽस्मिन् विविधमणिगणाक्रान्तकान्ताङ्गकान्ति-
प्राग्भारप्रास्तचन्द्रद्युतिकरनिकरध्वस्तमिथ्यान्धकारम् ।। चैत्यं
चैत्यालयांश्चोज्वलकुसुमफलाद्यैरनिन्द्यप्रभावैः । भक्त्यायेऽभ्य-
र्चयन्ति स्फूटमसमसुखां ते लभन्ते विमुक्तिम् ।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये जिनबिम्बेभ्यः अर्घं निर्वपामोति स्वाहा अर्घं ।

अथ प्रत्येक पूजा ।

अष्टम्यां क्रियते साधो नन्दीश्वरोहि शोपकः ।
दशलक्षोपवासस्य फलं चाये जिनाधिपं ।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये नन्दीश्वरोपवासाय दशलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं १

नवम्यामेकभुक्तं हि महाविभूतिनामभाक् ।
दशसहस्रोपवासस्य फलं चाये जिनाधिपं ।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये महाविभूतिनामोपवासाय दशसहस्रोपवासफलप्रदाय अष्टाह्निक व्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं ।।१।।

दशम्यां कंजिकाहारस्त्रिलोकसारसंज्ञकः ।
षष्टिलक्षोपवासस्य फलं चाये जिनाधिपं ।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये त्रिलोकसारनाम शोष-कायषष्टिलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय ज० अर्घं ३

एकादश्यां तिथौ प्रोक्तं मत्रमौदर्यचतुर्मुखम् ।
पंचलक्षोपवासस्य फलं चाये जिनाधिपं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये चतुर्मुखनामशोषकाय पंचलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय ज० अर्घं ॥४॥

द्वादश्यामनगारस्य पंचलक्षणनामकः ।
चतुरशीतिलक्षस्य फलं चाये जिनाधिपं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये पंचलक्षणनामशोषकाय पंचाशल्लक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय जलाद्यर्घं ।५।

त्रयोदश्यामाम्लरसः स्वर्गसोपानसंज्ञकः ।
चत्वारिंशच्चलक्षस्य फलं चाये जिनाधिपम् ।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये स्वर्गसोपाननामशोषकाय चत्वारिंशल्लक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय जलाद्यर्घं ।६

श्रीमत्सुसप्तमदिने वरसर्वसंज्ञः
शाकत्रयेण सहितो वरशुद्ध एषः ।
लक्षोपवासफलदो भवति प्रसिद्धः
चाये जिनम् सकलबोधनिधानपात्रम् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये सर्वसम्पन्ननामोपवासाय लक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय अर्घं ॥८॥

एकादिने ? हीन्द्रध्वजाभिधान
उपोषको यः क्रियते मनुष्यैः ।

तिस्रोहिकोट्योत्तर पंचलक्षम्
चाये जिनम् तस्य फलप्रदाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये इन्द्रध्वजनामोपवासाय त्रिकोटिपंचलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय अर्घं ।९।

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैर्नैवेद्यै दीपधूपकैः
फलैरर्घान्वितैश्चाये श्रीजिनम् सुधये नृणां ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय पूर्णार्घं ॥१०॥

प्राच्यां दिशि श्रीगिरिरंजनंस्यात्
तत्रस्थितं श्रीजिन चैत्यवृन्दं ।
चाये जलाद्यैः सुरराजवंद्यं
सदा पवित्रं सुखदम् सुगात्रम् ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशिग्स्थितांजनगिरौ जिनबिम्बाय अष्टाह्निक व्रतोद्योतनाय अर्घं ॥१॥

श्रीमत्प्राचीसुदिग्भागे गिरिद्धि मुखोमतः ।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं चायेऽहं श्रीसुखाप्तये ॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितदधिमुखगिरि श्रीजिनाय अष्टाह्निक व्रतोद्योतनाय अर्घं ।२॥

श्रीपूर्वदिग् सुखवराश ? सुशोभमानो
नाम्नायुतो दधिमुखो गिरिराजतुल्यः ।
तत्रस्थितं सुरनुतं जिननाथबिम्बं
चाये सदा सकलकर्मविमुक्तरूपम् ॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० जलादिकं ॥३॥

श्रीपूर्वस्यां दिशायां च तृतीयो यो दधिमुखः ।
तत्रस्थं जिनचैत्यं च चाये पापप्रशांतये ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित तृतीयदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० जलादिकं ॥४॥

तत्र प्राचीदिशायां च चतुर्थो यो दधिमुखः ।
तत्राश्रितं जिनचैत्यं पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित चतुर्थदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० जलादिकं अर्घं ॥५॥

श्रीमदिन्द्रस्य संबंधिदिशायां यो रतिकरः ।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित प्रथमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं० ॥६॥

त्रिदशेन्द्रस्य संबंधि दिशायां यो रतिकरः ।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं पूजयेऽहम् सुखप्रदम् ॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित द्वितीयरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥७॥

श्री देवेन्द्रस्य संबंधो दिग्भागे यो रतिकरः ।
तत्रस्थं जिनबिम्बम् च पूजयेऽहम् सुखाप्तये ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित तृतीयरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं० ॥८॥

इन्द्राधिष्ठित दिग्भागे वर्तते यो रतिकरः ।
तत्रस्थं पूज्यपादम् च पूजयेऽहम् सुखाप्तये ॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित चतुर्थरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥९॥

देवदेवस्य दिग्भागे सुखदेऽस्ति रतिकरः ।
तत्रस्थमकलङ्कं च पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥१०।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित पंचमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० ॥१०॥

प्राचीन बहिर्दिग्भागे संस्थितो यो रतिकरः ।
तत्रस्थंजिनचंद्रम् च पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥११॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितौ षष्ठरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥११॥

इन्द्राणीपतिदिग्भागे संस्थितो यो रतिकरः ।
तत्रस्थं जिनबिम्बम् च पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥१२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितसप्तमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं ॥१२॥

त्रिदशेन्द्रस्य दिग्भागे विद्यते यो रतिकरः ।
तत्रस्थं जिनसूर्यं च पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥१३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थिताष्ठमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं ॥१३॥

तद्बीजं परमं सर्वं यज्ज्ञानेन सुवासिने ।
अनेनमूलमंत्राय तस्मै पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥१॥

इत्याशिर्वादः ।

कल्याणं विजयो भद्रं चिन्तितार्थ मनोरथाः ।
श्रीनन्दीश्वरप्रसादेन सर्वेऽऽर्था हि भवन्तु ते ।२॥

पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

अथ जयमाला ।

घत्ता ।

सुरणर पणमियपयगुण हर भवभय ।
शांतिपयासण शांतिजिणा ॥
तुव चरणणमिवर उवसम इवर ।
अक्खमि अग्घु समुवयण ॥१॥

छन्द ।

वाणवितरवरा कप्पवासीसुरा ।
मिलियजोइसियगणा अमरासुरगणा ।
शाए मनिरंग रमयन्ति णंदीसरे ।
अट्ठविय पूय णिम्माविय वसु वासरे ॥१॥

गाथा ।

वसुवासरम्मिपूया णिम्माविय पढमसग्गइन्देण ।
कणयमय थाल सज्जिय पज्जलिय रयण आरतिओ ।२।

प्रज्जलिय रयण आरतियो भासुरो ।
इन्दु णच्चइ सुरा संजुवो सुन्दरो ॥
देव अच्छरगणा जय जय सद्दयं ।
कुणइ आरतियो भासुरो सुहयरो ॥३॥

आरतिओ कुणंता, अट्ठमदीवेहिं वासओ भायं ।
अच्छरय णच्चमाणाः देवाणां जयजय सद्दम् ॥४॥
जय जणाह गुण गहिरमई सायरा ।
बीयसो यांति जय लोपतुं भायरा ॥
कुणइ आरतिओ विग्ध अवहारिणो ।
सग्ग अपवग्ग मग्गमि जो देसणो ॥५॥

गाथा ।

अट्ठमदीव पहाणो, चउदिसि चत्तारिवावि सुखणाए ।
जोयण लक्ख पमाणा, व्यमेयां पयां पीयाविरे ॥६॥
वावि कुंडंभि दह तिणिच्चेइहरा ।
दिसिहिं दिसि एव जाणेहिं मत्त सुन्दरा ॥
एय एयम्मि वसु अहिए सउ पडिणय ।
उद्धसय पञ्च धुणुहाइ तणु वपुमयं ॥७॥

गाथा ।

अट्टसहस्समाला, णाणा रयण मणीय लम्बमाणाए ।
पत्तेया पत्तेया, अणाइ णिहिणामय सिद्धा ॥८॥
जोयण सत्तरि पञ्च अहियं परं ।
उच्चमाणंवि आयाम सद्धु णिब्भरं ॥
त्रिच्उरा होति पंणास मनोहारिणो ।
चारिदारं वरं मणोहारिणो ॥९॥

गाथा ।

सिंहादार वरम्मिय, धवल मणोहर सोहणाए ।
आविसरा प्रयण्डा, चत्तारि माण थंभाए ॥१०॥

अट्ठवर पाडिह एसया सोहिया ।
वसुविहा दव्व मंगल सुरे संसया ॥
तालकंसाल भरमेरि बीणांकुला ।
तवलि झल्लरीय वज्जंति बहु मद्दला ॥११॥

गाथा ।

वज्जंति वायवहुला । इंदो णच्चंतु अप्सराजुत्तो ।
अषाढ़कातिकाय । फाल्गुण मासम्मि सर्व अट्ठम्मि-
दिणे ॥ १२ ॥

तावकुव्वंति जावंति पुण्णिमदिणो ।
दिव्यवर सोलसाभरण मंडियतणो ॥
दिव्यमणि जडिय आरति ओकर तले ।
उत्तरेविणं एयं हिणन्दीसरे ॥१३॥
धुगिणधों धुगिणधों वज्जांतिए मद्दलं ।
त्रिगिणेत्रो त्रिणिणेत्रो सद्दए भुंगलं ॥
दिव्यमणि जडिय आरतिओ करतले ।
उत्तरेवीयं एवं हिंणन्दीसरे ॥१४॥
झिमिगझं झिमिगझं सद्दकंसालया ।
णच्चमाणं वि दीसन्ति वहुपाड्या ॥
दिव्यमणि जडिय आरति ओ करतले ।
उत्तरेवीयं एवं हिणन्दीसरे ॥ १५ ॥

घत्ता ।

एवं दिव्वसद्दा मणिप्पकिरता इन्देण संजोइया ।
उत्तोरेवि जिण्णस्स अट्ठयदिणे णन्दीसरे सङ्करे ॥
पूया भक्तिकरे विझति विवुहा पत्ताणिए गण्णए ।
जे कुव्वेति सुशुद्ध भावणकरा सिद्धेपदेणभव्वए ॥१६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिस्थित जिन चैत्यालयेभ्यो महार्घं० पूर्णार्घं ।

इति श्री पूर्वादिक चैत्यालय पूजा ।

अथ दक्षिण दिक्पूजा प्रारभ्यते ।

तीर्थोदकैर्मणिसुवर्णघटोपनीतैः ।
पीठे पवित्रवपुषि प्रविकल्पितार्थैः ॥
लक्ष्मीसुतागमनवीर्य विदर्भगर्भैः
संस्थापयामि भुवनाधिपति जिनेन्द्रम् ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिण दिग् स्थितत्रयोदशज्जिनालय अत्र अवतर अवतर सवौषट् (आह्वाननं) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं) अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । (सन्निधिकरणम्) अथाष्टकं ।

क्षीरोदतोयैः स्नपयन्ति देवाः ।
यांस्तान् जिनेशान् मणिहेमबिम्बान् ॥
यजामि गङ्गादि भवैर्जलोघैः ।
नन्दीश्वरेऽप्यष्ट दिनानि भक्त्या ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिण दिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

विलेपनैर्दिव्यसुगन्धद्रव्यैः

येषां प्रकुर्वन्त्यमराश्च तेषाम् ।

कुर्वेऽहमङ्गे वरचन्दनाद्यैः

नन्दीश्वरेऽप्यष्टदिनानि भक्त्या ॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० चंदनं ॥२॥

मुक्तामयै रक्षतपुण्यपुञ्जैः

या प्रार्चिता देव गणर्जिनार्चा ।

तां शालि जातै विंमलै र्यजेऽहं ।

नदीश्वरेऽप्यष्टदिनानि भक्त्या ॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० अक्षतान् ॥३॥

यान्यार्चिन्तान्येवजिनेंद्रबिम्बान्येवामरेंद्रैः सुर वृक्षपुष्पैः ।

तान्यर्चयेऽहम् वर चम्पकाद्यैः नन्दीश्वरेऽप्यष्ट० ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० पुष्पं ॥४॥

पीयूष जातैश्चरुभिः सुरेशैः

या पूजिता सत्प्रतिमा जिनेशां ।

तां पूजयेऽहम् चरुमोदकाद्यैः

नन्दीश्वरेऽप्यष्ट० ॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० चरुं ॥५॥

महं प्रकुर्वन्ति सुररत्नदीपैः

येषां जिनानां विदधामि तेषाम् ।

घृतादिकर्पूरभवैः प्रदीपैः
नन्दीश्वरेऽप्यष्ट० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० दीपं० ॥६॥

स्वर्गोद्भवैश्चारुघटस्थधूपैर्यान्देवदेवैर्महितान् सुमूर्तीन् ।
तान्संयजे दिव्यसुगन्धधूपैः नन्दीश्वरे ॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० धूपं० ॥७॥

फलैः सुकल्पद्रुमजैः सुरेशैः
या चर्चिता सत्कृतिभिर्महेशान् ।
तान् नारिकेलादि चयैर्यजेऽहं
नन्दीश्वरेऽप्यष्ट० ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० फलं० ॥८॥

विमलजलसुगन्धैरक्षतैश्चारुपुष्पैः
वरचरुबहुदीपैः सारधूपैः फलैश्च ।
जय जय वरवाद्यैर्हेमपात्रस्थ मंत्रैः
जिनवरशुभबिंबायार्घमुत्तारयामि ॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० अर्घं० ॥९॥

अथ प्रत्येक पूजा ।

दक्षिणस्यां दिशि योऽसाऽञ्जनोनाम पर्वतः ।
तत्रस्थं जिनबिम्बम् च चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितांजनगिरौ श्री जिनाय अष्टान्हिकव्रतोद्यापनाय जलादि अर्घं ॥१॥

श्रीमद्दक्षिणदिग्भागे नाम्ना दधिमुखोमतः ।
तत्रस्थं श्रीजिनं पद्मे चायेऽहम् तद्गुणाप्तये ॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित प्रथमदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥२॥

दक्षिणस्यां दिशायां च द्वितीयो योदधिमुखः ।
तत्रस्थं श्रीजिनं पद्मं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित द्वितीयदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥३॥

यमाश्रित दिशायां च तृतीयो यो दधिमुखः ।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित तृतीयदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥४॥

दक्षिणस्यां दिशायां च चतुर्थो यो दधिमुखः ।
तत्रस्थं वीतरागं च चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥५।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित चतुर्थदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥५॥

दक्षिणस्यां दिशायां च रतिकरौ वै पर्वतः ।
तत्रस्थं श्री जिनं पद्मे चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितप्रथमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं० ॥६॥

श्रीमद्दक्षिणदिग्भागे रतिकरो द्वितीयकः ।
तत्रस्थं जिनचन्द्रं च चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित द्वितीयरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं ॥७॥

दक्षिणायां दिशायां च रतिकरस्तृतीयकः ।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित तृतीयरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं ॥८॥

तत्र दक्षिणदिग्भागे तुर्यो नाम्ना रतिकरः ।
तत्रस्थं श्रीजिनं भक्त्या चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित चतुर्थरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं ॥९॥

देवाश्रितसुदिग्भागे नाम्ना रतिकरो मतः ।
तत्रस्थं श्रीजिनं भक्त्या चार्येऽहं तद्गुणाप्तये । १०॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित पंचमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं० ॥१०॥

श्रीमद्दक्षिण दिग्भागे षष्टो नाम्ना रतिकरः ।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥११॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित षष्ठरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं० ॥११॥

दक्षिणायां दिशायां च सप्तमो यो रतिकरः ।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥१२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितसप्तमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं० ॥१२॥

तत्र दक्षिण दिग्भागे अष्टमो हि रतिकरः ।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥१३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितअष्टमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं० ॥१३॥

जिनेन्द्रः शंकरः श्रोदः परमेष्ठी सनातनः ।
अलक्षः सुगतोविष्णुरुन्नतां वः श्रियं क्रियात् ॥१४॥

इत्याशीर्वादः ।

* * *

अथ जयमाला ।

नन्दीश्वर वरदिवहिए बावन चैत्यराय
जिनेश्वरपयकमलो बहु कुसुमांजलि देहिं ।
सुरिंदा जे लहिया अट्ठविह पूजकरेयि
सुभत्तिय शुभ जाणिया ॥१॥
पंचह मेरु हेममय असिय जिणंदह
धामजिणेसर पयकमलो ॥२॥
सत्तरसो विजयारधहिं कुलगिर
तीस जिणेसर पयकमलो ॥३॥
असिय वखारिं जिण भवणिं,
वीसमहा गयंदत जिणेसर पयकमलो ॥४॥
माणुस उत्तर चारि जिण,
दसकुरु जिणगेह जिणेसर पयकमलो ॥५॥

इक्ष्वाकारि चारि जिणगेह कुण्डलगिर,
चत्तारि जिणेसर पयकमलो ॥६॥
रुचकगिर च्यारि पिंडकथा,
चउसइ अट्ठावन जिणेसर० ॥७॥
व्यंतरमांहि असंख जिण,
जोइससंख विहीण जिणेसर० ॥८॥
सग्गि जिणदंह मणि भुवण,
लक्ख चउरासि होय जिणेसर० ॥९॥
लक्ख बहत्तरि सात कोडि,
भुवनालय जिण संख जिणेसर० ॥१०॥
अधिक सत्ताणु सहस्स पुण,
तेवीसा सविजाण जिणेसर० ॥११॥
कैलास सत्रुंजय गिर सिहरे,
सत्रुंजय गिरनारि जिणेसर० ॥१२॥
गोमट्टसामि आदीकरी,
किट्टिम सव चेइत्याल जिणेसर० ॥१३॥
अढाईय दीवहं भवियकथा,
जिण मन्दिरसु बिम्ब-जिणेसर० ॥१४॥
माणुस खेतहं माहिंजिण,
मुणिवर णिरवाण भूमि जिणेसर० ॥१५॥
नन्दीसर पुहुपांजलि,
जोइस भक्ति करेण जिणेसर० ॥१६॥

सो णर भुंजवि सग्ग सुह,

मुक्ति हि तिण हवेहिं जिणेसर० ॥१७॥

श्री सकल कीरति मुणिवर,

भणइ छोड़ो भवणापास जिणेसर० ॥१८॥

यावन्ति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।

तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥१९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितजिनमन्दिरेभ्योः महार्घं ।१९

इति दक्षिणदिक् पूजा ।

अथ पश्चिमदिक्स्थित चैत्यालय पूजा ।

द्वापंचाशज्जिनागाराः प्रतिमापरमप्रभाः ।

आह्वानयामि नंदीशं द्विपंचाष्टकवासरान् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्भागे त्रयोदश जिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

सत्सौरभादिवरगन्धविशुद्ध हस्तैः

कर्पूरधूलिपरिमिश्रिततीर्थतोयैः

नंदीश्वराख्यवरपर्वणि संयजेऽस्मिन्

चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम् ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थित जिनालयेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

सत्कुंकुमागरुसुवर्त्तिकचंदनानां
गन्धैर्वरैः सुखकरैः कृतिनां सुगन्धैः
नन्दीश्वराख्यवर पर्वणि संयजेऽस्मिन्
चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम् ॥२॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० चन्दनं ॥२॥

चन्द्रांशुजालविशदैरमलैर्मनोज्ञैः
सद्गन्धशालिविशदाक्षतपूतपुंजैः । नन्दीश्वराख्य०॥३॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० अक्षतान् ॥३॥

पंकेजकुन्दवकुलोत्पलमालतीनां
पुष्पैर्द्विरेफनिनदैः परिपूरिताशैः । नन्दीश्वराख्य० ॥४॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० पुष्पं ॥४॥

सद्धैमभाजनकरैरस्मृतोपमानैः
हव्येन चान्नदधिभक्ष्यसुशर्कराज्यैः । नन्दी० ॥५॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० चरुं ॥५॥

ध्वस्तप्रमोहतिमिरै रसवृद्धराणां
सत्सोमदीपनिकरैर्मणिभाजनस्थैः । नन्दी० ॥६॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० दीपं ॥६॥

रुजोंगकप्रवरचन्दनचन्द्रगन्ध
द्रव्योद्भवैरनुपमैः सुरसेव्यधूपैः । नन्दी० ॥७॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० धूपं ॥७॥

मोचासुचोचवरपूगरसालकाद्यैः
नारिंगदाडिमविराजितमंजूद्रव्यैः नन्दीश्वराष्ट० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे० फलं ॥८॥

इत्थं नन्दीश्वराख्ये वरशिवसुखजे पर्वणींद्रादि लोके ।
संस्तुत्याष्टो दिनानि प्रवरगुणयुतं भव्यलोका यजन्तः ॥
ये विद्यानन्दिसूरिप्रणतपदयुगं श्रीजिनानां सदर्चा ।
श्री भक्त्वा नागसौख्यं निरूपममनघं यांतु मोक्षाय सौख्यं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० अर्घं० ॥९॥

अथ प्रत्येक पूजा ।

श्रीमत्पश्चिम दिक्देशे बाह्यांजनो गिरिर्मतः ।
तत्रस्थं च गतद्वेषं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थितांजनगिरौ श्री जिनाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय जलादिकं अर्घं ॥१॥

पश्चिमायां दिशायां च नाम्ना दधिमुखोगिरिः ।
तत्रस्थं च गतद्वेषं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित प्रथमदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥२॥

वरुणश्रितदिग्भागे द्वितीयो यो दधिमुखः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित द्वितीयदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥३॥

पश्चिमायां दिशायां च तृतीयो यो दधिमुखः ।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थित तृतीयदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घ्यं ॥४॥

तत्र पश्चिमदिग्भागे चतुर्थो यो दधिमुखः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थित चतुर्थदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घ्यं ॥५॥

दशाननारिदिग्देशे नाम्ना रतिकरो मतः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थितप्रथमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घ्यं० ॥६॥

रामारिशत्रुदिग्भागे द्वितीयो यो रतिकरः ।
तत्र स्थितं जगन्नाथं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थित द्वितीयरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घ्यं ॥७॥

पश्चिमायां दिशायां च तृतीयो यो रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थित तृतीयरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घ्यं ॥८॥

वारुण्यायां दिशायां च चतुर्थो यो रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित चतुर्थरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं ॥९॥

पश्चिमायां दिशायां च पंचमो यो रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चायेऽहम् तद्गुणाप्तये ॥१०॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थित पंचमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं० ॥१०॥

वरुणाश्रित दिग्भागे षष्टो नाम्ना रतिकरः ।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं पूजयेऽहं तद्गुणाप्तये ॥११॥

ॐ ह्रीं नन्दींश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थित षष्ठमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं० ॥११॥

सीतारिशत्रुदिग्भागे सप्तमो हि रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥१२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थितसप्तमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं० ॥१२॥

श्रीमत्पश्चिमदिग्भागे अष्टमो हि रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥१३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्स्थितअष्टमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं० ॥१३॥

सकलकुसुमवल्लीपुष्कलावर्तमेघो ।
दुरिततिमिरभानुःकल्पवृक्षोपमानः ॥
भवजलनिधिपोतः सर्वसम्पत्तिहेतुः ।
स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वनाथः ॥१॥

इत्याशीर्वादः ।

* * *

अथ जयमाला ।

कंपिला णयरि मंडस्से, विमलस्से विमलणाणस्से ।
आरतिवर समये णच्चंति, अमरमणीओ ॥ १ ॥
अमर रमणीउ णचंति जिणमन्दिरं ।
विविह वर तूर तालेहिं वग्गिनूपुरं ॥
जडिय बहु रयण चामीकरं पत्तियं ।
जिणन्द आरत्तियं जोइयं सुन्दरं ।

मोतियंदाम ।

रुणझुणंकारेणउरधचलणुत्तियं ।
कमलदल णयण जिण बिम्ब पेखन्तिया ॥
जिणन्द आरत्तियं जोइयं सुन्दरम् ॥३॥
इन्दु धरणेंदु जखेंदु वो सहतिया ।
मिलियसुर असुरघण रास खेलन्तिया ॥
केचि सिर चमर जिणबिम्ब ढोलंतिया ॥ जि० ॥४॥

केसभरि कुसुम भर सिर ढोलंतिया ।
वयण छूणिइन्दु छमकंति विहसंहतिया ॥
कमलदलणयणजिण बिंब पेखन्तिया ॥ जि० ।५॥

गाथा ।

णंदीसरम्मि दीवे बावण जिणालयासु पडिमाणं ।
अट्ठाइं वरपव्वे इंदु आरतिओ कुणइ ॥ ६ ॥
इन्दु आरतियो कुणइ जिणमन्दिरं ।
रयणमणिकिरणकमलेहिं वर सुन्दरं ॥६॥
गीउ गाइयन्ति णच्चन्ति वरणारया ।
तूर वज्जन्ति णाणाविंह पाडया ॥७॥

गाथा ।

एक्कम मिहजिणहरे चौ चौ सोलह वावीओ ।
जोयण लक्खपमाणं अट्ठमणंदीसरे दीवे ॥८॥
अट्ठमं दीव णंदीसरं भासुरं ।
चैत्य चैत्यालयं वन्दि अमरासुरं ॥
देव देवी जहां धम्म सन्तोसिया ।
पश्चमं गीय गायन्ति रस पोसिया ॥९॥

गाथा ।

दिव्वे हिं खीरनीर-हिं गन्धे हिं कुसुम मालाई ।
सव्वसुरलोय सहिये पूजा आरम्भये इन्दु ॥१०॥

इन्दु साहम्मि सम्भाइ वेजोसयं ।
आयवो सज्जिएरावयं वर गयं ॥
सव्व दव्वेहिं भव्वेहिं पूजा करा ।
मिलिय पढमवफया तासु तइँ देसिहा ॥११॥

गाथा ।

कंसाल तालतिविली झल्लरी भरि भेरि वीणाउ ।
वज्जन्ति भावसहिया भावेहिं णम्मिया सव्वे ॥१२॥

सव्वदव्वेहिं भव्वेहिं करताडया ।
सद्दये संसि झिगिणिणीणाडया ॥
झिगिणिझां झिगिणिझां वज्जये झल्लरी ।
णच्चई इन्दु इन्दायणी सुन्दरी ॥ १३ ॥

णयणकज्जल सुसीलामयं दीणयं ।
हेम हीराल कुण्डलकयं कण्णगं ॥
झझणं झंकरं वज्जएणूपुरं ।
जिणंद आरतियं जोइयं सुन्दरं ॥ १४ ॥

दिट्ठिणा सव्व अंगुलिय दावतिया ।
खिणिहिं खिणि खिणिहिं जिणविंब जोवंतिया ।
णारि णच्चन्ति गायन्ति कोमलसरं । जि० ॥१५॥

रुणु झुणुकारेण उरधकरं कंकणं ।
णारि जपन्ति जिणणाहवे बहुगुणं ॥

जुवइ णच्चन्ति समरन्तियो जिणवरं ।
जिणन्द आरतिओ० ॥ १६ ॥
कण्ठ कद्दलेहिं मणिहार झलंकतिया ।
जिणह थुणि थुणिहि सवणाइ संतुट्ठया ॥
विविह कोतुहलं कुणहि णारीणरं । जि०। १७॥

घत्ता ।

आरतिह पढेहिं कम्मह धोवहिं सग्ग अपवग्ग लहइं ॥
जं जं मणि झावे तं सुखपावे सग्ग मोक्ख हेला तरहिं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थितचैत्यालयेभ्यो महार्घं० ॥१८॥

इति पश्चिमदिक्स्थितचैत्यालय पूजा ॥

अथ उत्तरदिक्चैत्यालय पूजा ।

आषाढकार्तिकसुफाल्गुनशुक्लपक्षे ।
चातुर्निकायसुरवृन्दसुभक्तिपूर्वम् ॥
नंदीश्वराख्यवरपर्वणि संयजेऽस्मिन् ।
नाह्वाननादिभिर्यजे शुभवस्तुयुक्तैः ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थितजिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं) अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । स्वाहा (सन्निधिकरणम्) ।

सत्सिन्धुपाथोभिरमन्दवासैः ।
सत्स्वर्णभृङ्गारभृतैर्जलौघैः ॥
चाये शताधाधिककामवासा-
नाषाढसत्कार्तिकफाल्गुणेषु ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थितत्रयोदशचैत्यालयेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

शक्रार्चितान् भव्यसरोजपूष्णः ।
कोदण्डसत्पञ्चशतार्धमूर्तिन् ॥
लेपामि सद्गन्धविलेपनैस्तान् ।
आषाढसत्कार्तिकफाल्गुणेषु ॥२।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० चंदनं ॥२॥

नन्दीश्वरद्वीपविशालवापी-
स्थाद्रीन् सुबिम्बान् वरकांचनाभान् ॥
चर्चोऽक्षतैः कल्पितभावपासान् ।
आषाढसत्कार्तिकफाल्गुणेषु ॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० अक्षतान् ॥३॥

कन्दर्पसर्वविहताक्षरूपान् ।
भव्याऽटवीवन्हिप्रसिद्धलोकान् ।
यजाम्यहं पुष्पव्रजैः जिनेशान् । आषाढ० ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० पुष्पं ॥४॥

अत्यक्षसौख्यास्पदलब्धकामान् ।
भव्यामरौघानतकान् गरिष्टान् ॥
संपूजऽहं वरभक्ष्यकैस्तान् । आषाढ० ॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० चरुं ॥५॥

सत्केवलालोकितकृतत्स्नलोकान् ।
घातिक्षयानन्तचतुष्टयाप्तान् ॥
यायज्मि तान् कर्पूररत्नदीपैः । आषाढ० ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० दीपं० ॥६॥

कर्माष्टकाष्ठालघुपावकाभान् ।
कैवल्यसौख्यान् परमर्द्धियुक्तान् ॥
अर्चामि कृष्णागरुधूपधूम्रैः आषाढ० ॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० धूपं० ॥७॥

यजे फलैर्मुक्तगणाप्रमादान् ।
प्रबुद्धबोधान् भुवनत्रयाप्तान् ॥
देवेन्द्रसत्कीर्तितवांछिताप्तान् आषाढ० ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० फलं० ॥८॥

वार्श्चंदनाक्षतसुपुष्पचरुप्रदीपैः ।
धूपैः फलैश्च रचितैः शुभहेमपात्रैः ॥
अर्घं ददामि दमितारिपते ? जिनाय ।
देवेन्द्रकीर्तिमहिताय मनोज्ञकाय ॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० अर्घं ॥९॥

उत्तरस्यां दिशायां च नाम्ना ह्यंजनपर्वतः ।
तत्रस्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थितां अंजनगिरौ जिनाय अष्टाह्निक व्रतोद्योतनाय अर्घं ॥१॥

श्रीमदुत्तरदिग्देशे नाम्ना दधिमुखो गिरिः ।
तत्रस्थितं जिनाधिशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थितप्रथमदधिमुखगिरौ श्री जिनाय अष्टाह्निक व्रतोद्योतनाय अर्घं ॥२॥

उदीच्यां हि दिशायां च नाम्ना दधिमुखः पृथुः ।
तत्रस्थितं जगत्पूज्यं चायेऽहम् तद्गुणाप्तये ॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित द्वितीयदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥३॥

उद्दगदिशिस्थितस्तत्र गिरिर्दधिमुखाधिपः ।
तत्रस्थितं जिनाधीशं पूजयेऽहम् गुणाप्तये ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित तृतीयदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥४॥

उत्तरायां दिशायां च तुर्यो दधिमुखो गिरिः ।
तत्रस्थितं जगत्पूज्यं चायेऽहम् तद्गुणाप्तये ॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित चतुर्थदधिमुखगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ॥५॥

श्रीमदुत्तरदिग्भागे आद्यो रतिकराभिधः ।
तत्रस्थितं लोकनाथं पूजयेऽहम् गुणाप्तये ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित प्रथमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं० ।।६।।

कुबेराश्रितदिग्भागे गिरि रतिकराधिपः ।

तत्रस्थितं जिनेन्द्रं हि चर्चेऽहं तद्गुणाप्तये ।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित द्वितीयरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ।।७।।

उत्तरस्यां सुकाष्ठायां नाम्ना रतिकरोगिरिः ।

तत्रस्थितं जगत्पूज्यं पूजयेऽहं सुखाप्तये ।८।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित तृतीयरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं० ।।८।।

धनदाश्रितदिग्भागे तुर्यो रतिकरः खलु ।

तत्रस्थितं जिनाधीशं चार्येऽहम् तद्गुणाप्तये ।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित चतुर्थरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ।।९।।

नैगमाश्रितदिग्भागे पंचमो यो रतिकरः

तत्रस्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित पंचमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० ।।१०।।

वित्ताधिपस्य काष्ठायां षष्ठो रतिकरो गिरिः ।

तत्र स्थितं जगत्पूज्यं पूजयेऽहं सुखाप्तये ।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थितो षष्ठमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं ।।११।।

राजराजस्य ककुभि सप्तमो यो रतिकरः ।
तत्रस्थितं जिनाधीशं पूजयेऽहम् सुखाप्तये ॥१२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थितसप्तमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं ॥१२॥

वैश्रवणस्यदिग्भागे अष्टमो हि रतिकरः ।
तत्रस्थितं जिनाधीशं पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥१३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तारदिग्स्थितअष्टमरतिकरगिरौ श्री जिनाय अर्घं ॥१३॥

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैः नैवेद्यैर्दीपधूपकैः ।
फलैरर्घ्यं जिनं चार्ये दधिदूर्वाकुशै स्तथा ॥१४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तारक्स्थित त्रयोदशजिनचैत्यालयेभ्यो महार्घं० पूर्णार्घं ।

अथ जाप्यदीयते-जाप्य मन्त्र ।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्योः नमः ।

यावज्जैनेन्द्रवाणी विलसतिभुवने सर्वसत्वानुकम्पा ।
यावज्जैनेन्द्रधर्मं दशगुणसहितं साधवो योजयन्तः ॥
यावच्चन्द्रार्कतारा गगनपरिचरा रामकीर्तिश्च यावत् ।
तावत्त्वं पौत्रपुत्रस्वजनपरिवृतो धर्मवृष्ट्याभिवन्द्यः ॥१॥

॥ आशीर्वादः ॥

अथ जयमाला ।

श्रीमन्नेमिजिनं जयत्रयगुरुं नत्वा सुरैः संविदं ।
वक्षेऽहम् स्तवनं द्वीपाष्टकभवं कोटिशतम् सुन्दरं ॥
षष्ठित्र्यैक सुयोजनस्य सुपयः शीतं शुभं लक्षकम् ।
चत्वारांजन भूधराः प्रगुणका नीलेन्द्ररत्नत्विषः ॥१॥

छन्द ।

उन्नतचतुराशीतिसहस्राः, भाति पटहाकारविमिश्राः । सहस्र चतुराशीतिविष्कंभाः, शशिशून्यत्रयकन्दसुदम्भाः ॥२॥ हित्वा लक्षयोजनगिरिराज्यं, प्रत्या संवरवापि सुभाज्यं । प्रागंजनगिरि प्राच्यसुनन्दा, नन्दावति दक्षिणदिशिद्वन्दा ।३। पश्चिमनन्दोत्तरशुभनामा, नन्दखेणिका भाति सुरामा । दक्षिणाञ्जन पर्वत प्राच्या, प्राग्वदराज्या वापि सुराच्यां ।४। दक्षिणतो विरजागतशोका, राजतिवापि विगतशोका । पश्चिमदिश्यञ्जनपरभूध्रं, त्यक्त्वा योजनशतसहस्रं ।५। पूर्वविधिवद्विरजा वापि, वैजयन्ति जयन्ति सु वापी । राजत्यपराजितगुणधामा, उत्तर काशांजन गिरि रामा ।६।

रमणी नयना सुप्रभ विमला, सर्वतोभद्रा सरवर सकला । सहस्रदेवयोजन अगाधा, लक्षयोजन विश्रितवनसिद्धा ।७। दीर्घिकामध्ये देशगिरि साराः, सन्ति षोडश दध्याकाराः ।

पटहसमं योजन उन्मानं, व्यासाददया ? तावन्मानं ।८।
व्यासो द्विकोणयो रत्याकाराः,द्वात्रिंशत्सुराज्याकाराः । सन्ति
सहस्रोत्सेधविदेहाः,मूलयोजनतुर्यांशसुगेहाः ।९। वापीनां
परितोवनसारं, भात्यशोकं सप्तच्छदतारं । चम्पककेतकिहं-
समरालं, अष्टवर्गप्रमाणविशालं ।१०।

वनमध्ये चैत्यादिकवृक्ष, दिक्षु भातिसुजिनवरदक्षं ।
पल्यंकासनस्थितसुर पूज्यं, शुभ रत्न प्रभनतसुरराजं ।११।
अंजनदधिमुखरतिकरसकले, भ्राजंते जिनगृहविपुले ।
योजनशतकाया महिमाभाः, पंचाशद्द्वासा मणि शोभाः ।१२
पञ्चसप्ततितुङ्गविशालाः, प्रद्योतितदिङ्मुखपरशालाः । षोडश
योजनद्वारोत्सेध, विस्तृतवरवसुयोजनसिद्धं ।१३। तोरण
पार्श्व रयो भांति, अष्टयोजनकामा सुकांति । चतुर्विंशति-
प्रोक्तापरमा मानस्तंभे अग्रे कामा ।१४। भांति गोपुरतोरण-
विशाला, स्तूपधूपघट ध्वजसमराला । तेमध्ये जिनप्रतिमा-
तुंगा, चाप पंचशतमूर्ति विभंगा ।१५।

अष्टागृहशतसंख्या गेहं, प्रतिभाति गतकलिमलदेहं ।
सिंहासनप्रकीर्णकवरछत्रं, प्रातिहार्यभृंगादिकपात्रं ।१६।
धवले बाहुलमासितपक्षे, आषाढ़े शुक्लाष्टमि दिवसे । तत्रा-
गच्छन्ति सुरनाथाः, साप्सरा वाहनारूढ़कपंथाः ।१७। जिन-
पूजां रचयंति सुधीराः, अष्टविद्यार्चनकृतविधिसाराः । प्राड्

मूर्तेर्जलस्नपनं कृत्वा, किल्विषदूरमनेनेति मत्वा ।१८।
यामद्वय प्रत्यासमनेन, विधिनाखण्डल प्रतिमातेन ? स्तुवंति
प्रतिमा विबुधेशाः, गानतानगंधर्वसुरेशाः ।१९।

अथ प्राकृते ।

व्यन्तरा जोतिसा सग्गसोहाकुला ।
किन्नरा गाय कामिनिसंगाकुला ॥
धों धों धपम वज्जये मद्दला ।
णच्चए इन्दु इंद्राणी संगाकुला ॥ २० ॥
तिं तिं तिं तिणी सद्द सोहाकुला ।
झिगि झिगी झल्लरि ढोल रसाकुला ॥
तें तें ताल कंसाल वीणाकुला ।
णच्चए इन्दु इन्द्राणी संगाकुला ॥ २१ ॥
थों थों जम्पए नारयो तम्बुरो ।
रुणुझुणु झंकरो किंकिणी सुन्दरो ॥
जोइ सानन्द सुराव रसाकुला ।
णच्चए इन्दु इन्द्राणी सङ्गाकुला ॥ २२ ॥
पस्सइ कामिणी वर मणीमोहणी,
हस्सइ हासविलास गजगामिणी ।

सो हि आहार मन्दार मुक्ताकला,

णच्चए इन्दु इन्दाणी सङ्गाकुला ॥ २३ ॥

कुणइ अट्ठ दिवसेंहि पूय विहवरं,

जन्ति णियवासयं णिम्मलं भाधरं ।

पुण्ण उपावइ देव देवी गणा,

णच्चए इन्दु इन्दाणी सङ्गाकुला ॥ २४ ॥

घत्ता ।

सुदीप्यभासुरं हि द्वीपनन्दीश्वरम्,

जिनेन्द्रचन्द्रंघरं कलाधरं परम् ।

सुभक्ति तोहि पूजये परापरं जिनालयम्,

सुधर्मभूषसायरम् सुरेन्द्रकीर्तिचर्चितम् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेपूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणेद्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यः जयमाला महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति नन्दीश्वरपूजा उद्यापन सम्पूर्णम् ।

अथ नवग्रहव्रतोद्यापनम् ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

प्रारब्धाः फणियक्षभूतपतिभिर्देहार्त्तिवित्तक्षति-
स्थानभ्रंशरसाद्यसाम्यविपदां नाशाय संकल्पिताः ।
योषिन्निष्टेषु च तापसादिषु समांयान्त्याशयित्वार्चिते-
ष्वातन्वन्तु गुरुप्रसादवरदा स्तेऽर्कादवो वः शिवम् ॥

अनुष्टुप् ।

माणिक्यं च रविं मध्ये, ह्याग्नेये मौक्तिकं विधुम् ।
भौमम् च विद्रुमम् याम्ये, ह्यैशाने ज्ञम् मरकतम् ॥
पुष्परागं गुरुं सोमे, वज्रं प्राच्यां भृगुं तथा ।
नैर्ऋते राहु गोमेदं, शनिं नीलम् तु वारुणे ॥
वायव्ये केतु वैदूर्य, तत्तत्स्थानं निवेशयेत् ।
आदित्योरक्तवर्णश्च, सोमश्च श्वेतवर्णकः ॥
मञ्जिष्टवर्ण आङ्गारो, बुधः स्यात्पीतवर्णकः ।
गुरुर्हरितवर्णच, शुक्रः स्यात्पाण्डुवर्णवान् ॥
शनिः स्यात्कृष्णवर्णश्च, राहुर्गोमेदवर्णकः ।
वैडूर्यवर्णः केतुःस्या, दित्येवं ग्रहवर्णनम् ॥

इन्द्रवज्रा ।

सूर्येन्दुभौमेन्दुसुतामरेज्य,[1][2]

दैत्येज्यमन्दोरगकेतुनाम्नः[3][4][5]

सर्वग्रहान् ज्योतिरमर्त्यमुख्या,

नभ्यर्चये शान्तिसुखप्रदातन् ॥

(एतत्पठित्वां पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

अनुष्टुप् ।

अर्के पद्मप्रभश्चैव, सोमे चन्द्रप्रभस्तथा ।

मङ्गले वासुपूज्यश्च, बुधेमल्लिजिनेश्वरः ॥

गुरौ तु वर्धमानश्च, शुक्रे पुष्पजिनेश्वरः ।

राहौ नेमिजिनेन्द्रः स्याच्छनौ च मुनिसुव्रतः ॥

केतौ तु पार्श्वनाथश्चे, त्येते नवग्रहाधिपाः ।

कल्याणं सततं कुर्यु, र्भव्यां भव्यौकसांहतेः ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

रक्तस्तुल्यरुगम्बरादि युगिनः[1] श्वेतः शशी लोहितो-

भौमो हेमनिभौ बुधामरगुरु गौरः सितश्चा[2]सिताः, ।

कोण[3]स्थातनु[4]केतवो जिनमहे हूत्वेहपूर्वादितः,

शय्यूर्ध्वेऽधिकुशं निवेष्यमुदमाप्यंते सर्व[5]र्णाचीनैः ॥

१--बुधः, २-बृहस्पतिः, ३-शुक्र, ४-शनिः, ५-राहुः ।

१-सूर्यः, २-शुक्रः, ३-शनिः, ४-राहुः ।

५-सूर्यका लाल, चन्द्रमाका श्वेत, मङ्गलका लाल बुध और गुरुका पीला, गौर और शेष ३ ग्रहोंका कृष्ण वर्ण है। सूर्यकी

मध्यपूर्वादिदिक्षु सवर्णाक्षतपुञ्जान् स्थापयित्वा तदुपरि सूर्यादिनां क्रमेण कुंकुमादियुक्तदर्भासनानि विन्यसेत् ।

(मध्यमें तथा पूर्वादि दिशाओं क्रमपूर्वक सवर्ण अक्षतपुञ्जोंसे सूर्यादि ग्रहोंकी स्थापना करके कुंकुमादिसे युक्त दर्भासनकी योजना करे ।)

इति दर्भन्यासः ।

अथ पूजा प्रारभ्यते ।

उपजातिः ।

श्रीनाभिसूनोः पदपद्म युग्म-
नखाः सुखानि प्रथयन्तु ते वः
समन्नमन्नाकिशिरोऽङ्घ्रिपीठे-
संदत्तविस्रस्तमणीयितं यैः ॥

पूर्व, चन्द्रकी आग्नय, मङ्गलकी दक्षिण, बुधकी नैऋत्य, गुरुकी पश्चिम, शुक्रकी वायव्य, शनिकी उत्तर, राहुको इशान और केतुको उद्धर्व दिशा समझना चाहिये । उद्धर्व दिशाका स्वामी चन्द्रमा होता है । ग्रहोंको दिशाओंका यह वर्णन इसी पुस्तकमें आगे छपे "शान्तिचक्र विधान" की "दशदिक्पाल पूजा" के अनुसार लिखा गयाहै । "रक्तस्तुल्य" यह श्लोक "दशदिक्पाल पूजा" के प्रारम्भमें ज्योंका त्यों आया है । परन्तु इस नवग्रह पूजाके प्रारम्भमें "माणिक्यं च रवि मध्ये" आदि श्लोकों द्वारा ग्रहोंकी दिशाओंका क्रम अन्य प्रकार बतलाया है । इसलिये उसी प्रकार मण्डल बनाकर पूजा करना चाहिये ।

१-वर्णोभवेद्यस्यग्रहस्य योहि तं तेन वर्णेन निवेशयन्तु ।
प्रमोद मायान्ति यतः सदृशेर्वर्णार्चनैस्ते हि मतं बुधानाम् ॥

अनुष्टुप् ।

तावत्सरित्कृतस्नानो, धौतवस्त्रो रहः स्थितः ।
कृतेर्यापथसंशुद्धिः, क्रोधमानौ विवर्जयेत् ॥
आदौ तीर्थकृतां पूजां, सिद्धपूजां शिवाप्तये ।
कलिकुण्ड जिनेन्द्रस्य, कुर्यात्पूजां सुखप्रदाम् ॥
भारतीं श्रीगुरुं नत्वा, धृतसन्तोषमानसः ।
सर्वापत्तिविनाशार्थं, त्रिवर्गफल साधने ॥
नवसंख्यग्रहाणां च, जिनसागर नामभाक् ।
करोति पूजनं भक्त्यां, विनेयानां फलप्रदम् ॥

(इति पठित्वायन्त्रोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

वसन्ततिलका ।

आदित्य सोमबुधमङ्गलदेवपूज्यान्,
शुक्रं शनैश्चरमथोवरराहुकेतून्, ।
चौरारिमारिग्रहभूतविनाशदक्षान्,
संस्थापयामि सकलान् बुधलोकपूज्यान् ॥

ॐ ह्रीं सूर्यचन्द्रमङ्गलबुधगुरुशुक्रशनिराहुकेत्वादि नवग्रहदेवाः अत्रागच्छतागच्छत । अत्र तिष्ठत तिष्ठत । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा ।

(त्रिवारान् पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

द्रुतविलम्बितम् ।

सुरनंदीवर संभव सज्जलैः,
कनककुम्भगतै रति शीतलैः ।

सकल दुःख विनाशन दक्षकै,
दिविसदो नवसंख्य ग्रहान्यजे ॥
ॐ ह्रीं सूर्यादिनवग्रहदेवेभ्यो जलं समर्पयामि ॥१॥

अगुरु मिश्रित कुकुंम चंदनै,
रविज ताप विनाशन दक्षकैः ।
मलयपङ्क महोत्तम शीतलै,
दिविसदो नवसंख्य ग्रहान्यजे ॥
ॐ ह्रीं सूर्यादिनवग्रहदेवेभ्यो चन्दनम् समर्पयामि ॥२॥

सकलबूस विवर्जित तन्दुलै,
धवलमौक्तिक वर्ण समानकैः ॥
सुरभिवास सुवासित दक्षकै,
दिविसदो नवसंख्य ग्रहान्यजे ॥
ॐ ह्रीं सूर्यादिनवग्रहदेवेभ्योऽक्षतान् समर्पयामि ॥३॥

सरसिजात मनोहर पुष्पकै,
बकुल केतकि चम्पकमोगरैः ॥
भ्रमर गुंजित चारुसुवासकै,
दिविसदो नवसंख्य ग्रहान्यजे ॥
ॐ ह्रीं सूर्यादिनवग्रहदेवेभ्यो पुष्पम् समर्पयामि ॥४॥

घृत सुपक्व सुमोदकखज्जकै,
वटक मण्डकभक्त सुनिर्मलैः ।
सुभग हव्य पयोदधिसंयुतै,
दिविसदो नवसंख्य ग्रहान्यजे ॥

ॐ ह्रीं सूर्यादिनवग्रहदेवेभ्योऽचरुं समर्पयामि ॥५॥

कनक कांति विकाशित दीपकैः,
　　हृदयतामस विस्तरवारकैः ।
मणिमयै रिव विश्वप्रकाशकै,
　　र्दिविसदो नवसंख्य ग्रहान्यजे ॥

ॐ ह्रीं सूर्यादिनवग्रहदेवेभ्यो दीपम् समर्पयामि ॥६॥

अगुरुचन्दन मिश्रित धूपकैः,
　　सकलकर्म विनाशन दक्षकैः ।
सुरभितोषित षट्पद संचयै,
　　र्दिविसदो नवसंख्य ग्रहान्यजे ॥

ॐ ह्रीं सूर्यादिनवग्रहदेवेभ्यो धूपम् समर्पयामि ॥७॥

पनस दाडिम पक्व कपित्थकै,
　　र्मधुर मोचकआम्र सुसत्फलैः ।
कनक वर्ण सुधारस पूरकै,
　　र्दिविसदो नवसंख्य ग्रहान्यजे ॥

ॐ ह्रीं सूर्यादिनवग्रहदेवेभ्यो फलम् समर्पयामि ॥८॥

तोटक छन्दः ।

जलगन्धसदक्षतपुष्पभरै,
　　श्चरुदीपसुधूपमनोज्ञ फलै ।
वसुद्रव्यविनिर्मितकं प्रयजे,
　　कविप्रेमसुकल्पितमर्घ्य महम् ॥

ॐ ह्रीं सूर्यादिनवग्रहदेवेभ्योऽर्घ्यं समर्पयामि ॥९॥

अथ प्रत्येक पूजा।

अनुष्टुप्।

सुसीमा धरणाधीश, पुत्रं पद्मप्रभं यजे।
पद्मचिह्न समायोग्यां[1] कुसुमाभ्यां सुसेवितम्॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
ॐ ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जलं गन्धमक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलमर्घ्यमित्यादि निर्वपामीति स्वाहा।

अथ स्तोत्रम्।

उपजाति।

[2] पद्मप्रभः पद्मपलाश लेश्यः,
पद्मालया लिङ्गित चारुमूर्तिः।
बभौ भवान् भव्य पयोरुहाणां,
पद्मकराणा मिव पद्मबन्धुः॥
बभार पद्मां च सरस्वतीं च,
भवान्पुरस्तात्प्रति मुक्तिलक्ष्म्याः।
सरस्वती मेव समग्र शोभां,
सर्वज्ञ लक्ष्मीं ज्वलितां विमुक्तः॥

१-पुष्प यक्ष और मनोवेगा यक्षी। २-यह स्तोत्र समन्तभद्राचार्य विरचित स्वयंभूस्तोत्रमें कहा है इस नवग्रह विधानमें आगे छपे हुए अन्य तीर्थंकरोंके स्तोत्र भी स्वयंभूस्तोत्रके ही हैं।

शरीर रश्मि प्रसरः प्रभोस्ते,
बालार्क रश्मिच्छवि रालिलेप ।
नरामराकीर्णसभां प्रभा-
वच्छलैस्य पद्माभमणेः स्वसानुम् ॥
नभस्तलं पल्लवयन्निव त्वम्,
सहस्र पद्माम्बुज गर्भचारैः ।
पादाम्बुजैः पातितमारदर्पो,
भूमौ प्रजानां विजहर्थ भूत्यै ॥
गुणाम्बुधेर्विप्रुष मप्यजस्र,
नाखण्डलः स्तोतु मलं तवर्षेः ।
प्रागेव मादृक्किमुताति भक्ति,
र्मां बालमाला पयतीदमित्थम् ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनेन्द्रायार्घ्यं निवर्पेत् ।

॥ इति स्तोत्रं ॥

अथ यक्ष पूजा ।

मृगारुहं कुन्तधरापसव्य,
करं सखेटाभयसव्यहस्तम् ।
श्यामाङ्गमब्जध्वज देवसेव,
पुष्पाख्ययक्षं परितर्पयामि ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं श्यामवर्णं पुष्पयक्ष ! अत्र गच्छागच्छ, तिष्ठ तिष्ठ मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ पुष्पयक्षाय स्वाहा ।१। पुष्पपरिजनाय स्वाहा ।२। पुष्पानुचराय स्वाहा ।३। पुष्पमहत्तराय स्वाहा ।४। अग्नये स्वाहा ।५। अनिलाय स्वाहा ।६। वरुणाय स्वाहा ।७। प्रजापतये स्वाहा ।८। ॐ स्वाहा ।९। भूः स्वाहा ।१०। भुवः स्वाहा ।११। स्वः स्वाहा ।१२। ॐ भूर्भुवः स्वाहा ।१३। स्वधा स्वाहा ।१४।

हे पुष्पयक्ष ! स्वगणपरिवारवृताय तुभ्ययमिदं मर्घ्यं-पाद्यं जलं गन्धमक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां२ स्वाहा ।

यस्यार्थं क्रियते ० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

अथ यक्षी पूजा।

इन्द्रवज्रा ।

निष्टप्तहेमच्छवि मुग्नखेट,
चञ्चत्कृपाणं च फलं वरञ्च ।
सन्धारयन्ती निजपाणिभिश्च,
वेगाच्यते सा वरवाजिवाहा ॥

ॐ ओं क्रों ह्रीं सुवर्णप्रभे ! चतुर्भुजे ! खेटकृपाणधारिणि ! बाजिवाहने ! श्री पद्मप्रभजिनशासनम् मनोवेगादेवी ! अत्रावतरावतर । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् ।

ॐ मनोवेगादेव्यै स्वाहा ।१। मनोवेगापरिजनाय स्वाहा ।२। मनोवेगानुचराय स्वाहा ।३। मनोवेगामहत्तराय

स्वाहा ।४। अग्नेये स्वाहा ।५। अनिलाय स्वाहा ।६। वरुणाय स्वाहा ।७। प्रजापतये स्वाहा ।८। ॐ स्वाहा ।९। भूः स्वाहा ।१०। भुवः स्वाहा ।११। स्वः स्वाहा ।१२। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ।१३। स्वधा स्वाहा ।१४।

हे मनोवेगादेवि ! स्वगणपरिवार परिवृतायै तुभ्यमिदं मर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धमक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां२ स्वाहा ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

अथ रविग्रह पूजा ।

उपजाति ।

ताप प्रकाशं प्रतिभासमानं,
मदीशयन्तं सततं विमानम् ।
उत्कृष्टपल्यस्थितिमञ्जहस्त,
महाम्यहं तं प्रयजामि सूर्यम् ॥

ॐ ओं क्रों ह्रीं रक्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिह्न सपरिवार हे आदित्यमह ग्रह ! अत्रावतरावतर । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् ।

ॐ आदित्याय स्वाहा । आदित्य परिजनाय स्वाहा । आदित्यानुचराय स्वाहा । आदित्य महत्तराय स्वाहा ।

अग्नेय स्वाहा अनिलाय स्वाहा वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।

हे आदित्यमहाग्रह ! स्वगणपरिवारपरिवृताय तुभ्य-मिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धमक्षतमित्यादि यजामहे प्रति-गृह्यतां२ स्वाहा।

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांलिः ।

(नैवेद्यमें वस्तु—चांवलके साथ पका हुआ दूध, पुष्प लाल, ध्वजा लाल, कुंकुम, अकौ[1]आका दातुन, जनोई, १ पैसा, दशाङ्गधूप, इन सबको मध्यभागमें रखकर अर्घ चढ़ाना चाहिये।)

जाप्य मन्त्रम्।

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः फट् रविमहाग्रहाय नमः, अस्य यजमानस्य सर्वशांतिं कुरुकुरु स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडितम्।

आदित्यः सविता सहस्रकिरणः सूर्यः सुभानू रविमार्तण्डः
कमलाप्तमित्रमुदयाधीशो जगत्त्रीक्षणः।
नाथाः सर्वजगत्प्रसूतिजगदाधारत्रयारूपकाः
श्री सूर्याः शुभलग्ननिष्ठकलदा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥

इत्याशीर्वादः।
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

१-आकेडा।

अथ चन्द्रप्रभ जिन पूजा ।

आर्यागीतिच्छन्दः ।

चन्द्रपुराम्बुधिचन्द्रं, चन्द्राङ्कं चन्द्रकान्तकीर्तिसंकाशम् ।
चन्द्रप्रभजिनमर्चत, चन्द्रेन्दुस्फारकीर्तिकान्ता कान्तम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमोः । चन्द्रप्रभजिन ! अत्रावतरावतर ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठः ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् ।
ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जलं गन्धमित्यादिकमर्घ्यंम् ।

अथ स्तोत्रम् ।

उपजातिः ।

चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचि गौरं,
चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तम् ।
वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं,
जिनं जितस्वान्त कषायबन्धम् ॥
यस्याङ्गलक्ष्मीपरिवेष भिन्नम्,
तमस्तमोरे रिव रश्मिभिन्नम् ॥
ननाश बाह्यं बहु मानसं च,
ध्यान प्रदीपातिशयेन भिन्नम् ॥
स्वपक्ष सौस्थित्यमदावलिप्ता,
वाक्सिंह नादैर्विमदा बभूबुः ।
प्रवादिनो यस्य मदार्द्र गण्डा,
गजायथा केशरिणो निनादैः ॥

यः सर्वलोके परमेष्ठितायाः,
पदं बभूवाद्भुतकर्मतेजाः ।
अनन्तधामाक्षर विश्वचक्षुः,
समस्तदुःखक्षयशासनश्च ॥
स चन्द्रमा भव्य कुमुद्वतीनां,
विपन्नदोषाभ्रकलङ्कलेपः ।
व्याकोशवाङ्न्यायमयूखजालः,
पूयात्पवित्रो भगवान्मनो मे ॥
(इति स्तोत्रं पठित्वा चन्द्रप्रभजिनेन्द्रायर्घ्यं निर्वपेत् ।)

अथ यक्ष पूजा ।

उपजातिः ।

मालाक्षसूत्रोरुकुठारधारणा-
त्प्रशस्त हस्तं शतमाल्य कोमलम् ।
सुसप्तभङ्गीकृत विश्वरूपिणं
सुचन्द्रनाथस्य यजे त्रिलोचनम् ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं श्यामवर्ण विजयक्ष ! अत्रागच्छागच्छ, अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं विजययक्षाय स्वाहा-इत्यादयः १४ वलयः ।
इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलि ।

अथ यक्षी पूजा ।

उपेन्द्रवज्रा ।

लुलायरूढां जिनचन्द्रनाथ-
प्रभाविनीं ज्वालिनि ! काशिताङ्गीम् ।
फलासि चक्रांकुशबाणपाश-
धनुस्त्रिशूलाष्टभुजां यजामि ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं श्वेतवर्णे ! अष्टभुजे ! फलासिचक्रांकुश बाणपाश चाप त्रिशूलहस्ते ! चन्द्रनाथस्यशासनदेवते ज्वाला-मालिनि ! अत्रावतरावतर । अत्र तिष्ठ२ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ज्वालामालिन्यै स्वाहा-इत्यादयो १४ वलयः
इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।
यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

× × ×

अथ चन्द्रग्रह पूजा ।

उपजातिः ।

सल्लक्षसम्वत्सरपल्यवृति-
वलक्षरोचिः प्रतिभासमानम् ।
स्फूरन्महारत्नकृतोद्धवेशं-
ग्रहाधिपं सोम मिहार्चयामि ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं श्वेतवर्ण ! सर्वलक्षण सम्पूर्ण ! स्वायुध वाहन वधूचिह्नपरिवार ! हे सोमदेव ! अत्र गच्छागच्छ । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ सोमाय स्वाहा। इत्यादयो १४ वलयः इदमर्घ्य मित्यादिकमर्घ्यम्। यस्यार्थं०। शांतिधारा। पुष्पांजलि।

(भक्ष्य— दूधकी खीर, बडा चांवलका, सफेद पुष्प, ध्वजा सफेद, धूप देवदार, खाखराका दातून, जनेउ, १ पैसा, चन्दन, अर्घमें चढावे।)

जाप्यमन्त्रम्!

ॐ आं क्रां ह्रीं ह्रः फट् चन्द्रमहाग्रहाय नमः।
अस्य....यजमानस्य सर्व शान्तिं कुरूकुरू स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडित।

श्वेताङ्गः कुमुदाप्तशीतकिरणः क्षीराम्बुधे र्जातको–
लक्ष्मीशो वरकृष्णलाञ्छनधरः स्वारूढ मात्रेयशाः।
शंभूमण्डलभूषणाधिपपतिः पूर्णाङ्गपुण्योदयश्चन्द्रे कादश–
वर्गलग्नफलदाः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥

इत्याशीर्वादः।
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ भौमग्रह पूजा।

अनुष्टुप।

जयसेना वसुपूज्य–सुत श्चम्पाधिपोऽरुणः।
वासुपूज्यो महापूज्यो लुलायध्वजराजितः॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमो वासुपूज्य जिनदेव! अत्रावतरावतर। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनाय जलं गन्धामित्यादिकमर्घ्यं निर्वपेत्।

अथ स्तोत्रम् ।

उपजातिः ।

त्वं वासुपूज्योऽभ्युदयक्रियासु,
त्वं वासुपूज्यस्त्रिदशेन्द्र पूज्यः ।
मयापि पूज्योऽल्पधिया मुनींद्र !
दीपार्चिषा किं तपनो न पूज्यः ॥
न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे न,
न निन्दया नाथ विवान्त वैरे ।
तथापि ते पुण्यगुणस्मृति र्नः,
पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः ॥
पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य,
सावद्यलेशो बहु पुण्यराशौ ।
दोषाय नालं कणिका विषस्य,
न दूषिका शीत शिवाम्बुराशौ ॥
यद्वस्तु बाह्य गुणदोषसूते,
निमित्त मभ्यन्तरमूल हेतोः ॥
अध्यात्मवृत्तस्य तदङ्गभूत,
मभ्यन्तरं केवलमप्यलं ते ॥
बाह्येतरोपाधिसमग्रतेयं,
कार्येसु ते द्रव्यगतः स्वभावः ।
नैवान्यथा मोक्षविधिश्च पुंसां,
तेनाभिवन्द्यस्त्वमृषिर्बुधानाम् ॥

(इति स्तोत्रं पठित्वावासुपूज्यजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपेत्)

अथ यक्ष पूजा ।

उपजातिः ।

सकुन्तपाशांकुशखेटखड्गं-
वरोत्तर हंसगति त्रिवक्त्रम् ।
यक्षं सितांगं परमेश्वरस्य
श्री वासुपूज्यस्य यजे कुमारम् ।।

ॐ आं क्रां ह्रीं श्वेतवर्ण ! कुमारयक्ष ! अत्रावतरावतर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ कुमार यक्षाय स्वाहा—इत्यादयो १४ वलयः । इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् । यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

अथ यक्षी पूजा ।

गान्धारिकायां मुसलाम्बुजाढ्य-
चतुष्करां सन्मकराधिरूढाम् ।
श्री वासुपूज्यस्य पदाग्रनम्रां-
हरित्प्रभां पुण्यघनां यजामि ।।

ॐ आं क्रां ह्रीं हरितप्रभे ! चतुर्भुजे ! मुसलाम्बुजधरे ! मकाराधिरूढे श्री वासुपूज्यस्य शासनदेवते ! विद्युन्मालिनी देवि ! अत्रागच्छागच्छ । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिनी देव्यै स्वाहा-इत्यादयोः १४ वलयः । इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

अथ भौमग्रह पूजा ।

मृगाधिपाकारसुरोह्यमानं
क्रोशार्धमात्रं श्रितमुद्धविन्मम् ।
कुमारयत्ताश्रितपूजनोक्तं
पल्यार्धवृतिं कुज[१] मर्चयामि ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं रक्तवर्ण ! सर्वलक्षणसंपूर्ण ! स्वायुधवाहन वधूचिह्न सपरिवार ! हे मङ्गल ! अत्रागच्छागच्छ । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् ।

ॐ कुल महाग्रहाय स्वाहा-इत्यादयो १४ वलयः इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

भक्ष्य-लापसो (गुड़की), लाल पुष्प, लाल कुंकुम मिश्रित लाल ध्वजा, शमीका दातुन, गुग्गुलका धूप, जनेउ १ पैसा इन सबको अर्पित कर अर्घ्य चढ़ावे ।

१-मङ्गलग्रहम्

जाप्य मन्त्रम् !

ॐ आं क्रां ह्रीं ह्रः फट् कुज महाग्रहाय नमः । अस्य......यजमानस्य सर्वशांति कुरु कुरु स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

रक्तोऽङ्गार सुवर्ण सन्निभकरो रक्तध्वजो मङ्गलो-
भूदेव्याश्च तनूजमेषगमनोऽवन्तीषू पुण्यग्रहः ।
भारद्वाजकुलान्वयः प्रतिदिनं सर्वज्ञ[१]मम् वन्दिता
भौमैकादश वर्गलग्नफलदाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥

इत्याशीर्वादः ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ बुधग्रह पूजा ।

कुम्भकुम्भिनीश वल्लभा प्रभावतीलसत्-
डिम्भ ! कुम्भशुम्भदेक मल्लिनाथ ! संयजे ।
फुल्ल काममल्ल मर्द ! शात कुम्भसद्युते !
त्वा मिहा सुरेन्द्रवृन्दवन्द्यपाद पङ्कजम् ॥

ॐ ह्रीं नमो मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जल मित्यादिमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

१- सर्वज्ञम्+अम् ।

अथ स्तोत्रम् ।

श्रीच्छन्दः×

यस्य महर्षेः सकल पदार्थ,
प्रत्ययबोधः समजनि साक्षात् ।
सामरमर्त्यं जगदपि सर्वं.
प्राञ्जलि भूत्वा प्रणिपततिस्म ॥
यस्य च मूर्तिः कनक मयीव,
स्वस्फुरदाभाकृत परिवेषा ।
वागपि तत्त्वं कथयतु कामा,
स्यात्पदपूर्वा रमयति साधुन् ॥
यस्य पुरस्ता द्विगलितमाना,
न प्रतितीर्थ्या भुवि विवदन्ते ॥
भूरपि रम्या प्रतिपदमासी
ज्जातविकोशाम्बुजमृदुहासा ।
यस्य समन्ताज्जिनशिशिरांशोः
शिष्यक साधुग्रह विभवोऽभूत् ।
तीर्थ मपि स्वं जनन समुद्र-
त्रासितसत्त्वोत्तरण पथोग्रम् ॥
यस्य च शुक्लं परम तपोऽग्नि-
र्ध्यान मनन्तं दुरित मधाक्षीत् ।

× वाण रसैःस्याद्भूतनगगैः श्री इति वृत्तकरे श्रीच्छन्दो लक्षणम. ।

तं जिनसिंहं कृतकरणीयं
मल्लिमशल्यं शरण मितोऽस्मि ॥

इति स्तोत्रं पठित्वा मल्लिनाथ जिनेन्द्रायर्घ्यं निर्वपेत् ।

अथ यक्ष पूजा ।

मालिनीच्छन्दः ।

कुलिशपरमवज्रै श्चाप बाण त्रिशूलै-
र्वरदफल सुशीलै रष्ट हस्तोरुदीप्तम् ।
सुरुचिर चतुरास्यं मेघचापोरुवर्णं
जगति कुसुमपाद्यैः प्राचयामः कुवेरम् ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं कुबेर यक्ष ! अत्रागच्छागच्छ । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ कुवेर यक्षाय स्वाहा । इत्यादयौ १४ वलयः इदमर्घ्य मित्यादिकमर्घ्यम् । यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलि ।

× × ×

अथ यक्षी पूजा ।

उपजातिः ।

देवीं सुदृष्टां पदगापराजितां
फलासि खेटोद्धुरहस्त संयुताम् ।
चतुर्भुजां मल्लिजिनस्य शासने
प्रभाव वैदग्ध्यवतीं यजामहे ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे ! फलासिखेटवरदहस्ते ! मल्लिनाथस्यशासनदेवते ! अनुजातिदेवि ! अत्रावतरावतर । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अनुजाति देव्यै स्वाहा-इत्यादयो १४ वलयः । इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

केन्द्र त्रिकोणे जन सौख्यकारि-
मृगेन्द्रसत्त्वोहित लोकपूज्यम् ।
बलिप्रदानेन सुपुष्टिकर्ता-
रं सोमपुत्रं परिपूजयामि ॥

ॐ आँ क्रां ह्रीं श्वेतवर्ण ! सर्वलक्षण सम्पूर्ण ! ःवायुध वाहन वधुचिह्न सपरिवार ! हे बुधमहाग्रह ! अत्रागच्छागच्छ । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ बुध महाग्रहाय स्वाहा-इत्यादयः १४ वलयः । इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

भक्ष्य—भात और बड़ा, अंगारीका दातुन, दालका धूप, ध्वजा, पीली, केशर पीला, पुष्प पीला, जनेउ, १ पैसा । इन सबको अर्पित कर अर्घ्य चढ़ावे ।

जाप्य मन्त्रम् ।

ॐ आं क्रां ह्रीं ह्रः बुध महाग्रहाय नमः यस्य... यजमानस्य सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

विद्वांसः कृतकृत्य कर्णिकदलापीताः सुपीतध्वजाः
सिंहस्था वरदा बुध प्रियमया मूर्त्या च सौम्यग्रहाः ।
आत्रेयान्वय शुद्धबुद्धि परमानन्द प्रसन्नात्मकाः
सौम्यकादश वर्गलग्न फलदाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥

इत्याशिर्वादः ।
पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

अथ गुरुग्रह पूजा ।

श्रीमत्कुण्डपुराधिनाथ विलसत्सिद्धार्थ भूवल्लभा-
प्रेमार्थप्रियकारिणी प्रियसुतः संप्राच्यर्ते सन्मतिः ।
पञ्चास्योन्नतकेतनः कनकरुग्मार्तण्डसिद्धादिभि-
र्माणिक्याभरणादिरञ्जितपदप्रोत्पुल्लपङ्करुहः ॥

ॐ ह्रीं नमो वर्धमानजिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

ॐ ह्रीं वर्धमान जिनेन्द्राय जलमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

अथ स्तोत्रम् ।

आर्यागीतः ।

कीर्त्याभुवि भासितया,
वीर त्वं गुणसमुच्छ्रया भासितया ।

भासोडुसभासितगा,

सोम इव व्योम्नि कुन्दशोभासितया ॥

तव जिनशासनविभवो,

जयति कलावपि गुणानुशासन विभवः ।

दोषकशासन विभवः,

स्तुवन्ति चैनं प्रभाकृशाशन विभवः ।

अनवद्यः स्याद्वादस्तवदृष्टेष्टाविरोधतः स्याद्वादः ॥

इतरो न स्याद्वादो द्वितयविरोधान्मुनीश्वरास्याद्वादः ॥

त्वमसि सुरासुरमहितो,

ग्रन्थिकसत्त्वाशय प्रणामामहितः ।

लोकत्रय परमहितो-

ऽनावरण ज्योति रुज्ज्वलद्धाम हितः ॥

सभ्यानामभि रुचितम्,

ददासि गुणभूषणं श्रिया चारूचित्तम् ।

मग्नं स्वस्यां रुचितम्,

जयसि च मृगलाञ्छनं स्वकान्त्या रुचितम् ॥

त्वं जिन गतमदमाय, स्तवभावानां मुमुक्षुकामदमायः ।

श्रेयान् श्रीमदमायस्त्वयाः, समादेशि सप्रयामदमायः ॥

गिरिभित्त्यवदानवतः, श्रीमतइवदन्तिनः स्रवद्दानवतः ।

तव शमवादानवतो, गतमूर्जित मपगतप्रमादानवतः ॥

बहुगुणसपदसकलं,

परमतमपि मधुर वचन विन्यासकलम् ।

जय भक्त्यवतं सकल,
तव देव मतं समन्तभद्रं सकलम् ॥

वसन्ततिलका ।

श्रीवर्धमान मकलङ्क मनिन्द्यवन्द्य-
पादारविन्दयुगलं प्रणिपत्य मूर्ध्ना ।
भव्यैकलोकनयनं परिपालयन्तं
स्याद्वादवर्तपरिणामि समन्तभद्रम् ॥

वसन्ततिलका ।

ये संस्तुता विविधभक्ति समेतभक्तै-
रिन्द्रादिभि र्विनतमौलिमणिप्रभाभिः ।
उद्योतितांघ्रियुगलाः सकलावबोधा-
स्ते नो दिसन्तु विमलां कमलां जिनेन्द्राः !

इति स्तोत्रार्घ्यम् ।

अथ यक्ष पूजा ।

उपजातिः ।

सुधर्म चक्राङ्कित चारुहस्तकं
मातङ्गयक्षं द्विभुजं वरोत्करम् ।
श्री वधमानस्य समातुलङ्गकं
समुग्द्वर्णं जिनवाहनं यजे ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं मातङ्गयक्ष ! अत्रावतरावतरेत्याह्वानम्, स्थापनम्, सन्निधिकरणम् ।

ॐ मातङ्गयक्षाय स्वाहा इत्यादयः १४ वलयः ।

इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

अथ यक्षी पूजा ।

सिद्धायनीं संमतिनाथभक्तां सुवर्णवर्णां वरदप्रसस्ताम् ।
प्रतीतसत्पुस्तकपाणिपूज्यां यजे समुद्रासनसुस्थिराङ्गीम् ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं सुवर्णवर्णे सिद्धायनीयक्षि ! अत्रागच्छगच्छेत्याह्वानम्, स्थापनं, सन्निधिकरणम् ।

ॐ सिद्धायन्यै स्वाहा । इत्यादयः १४ वलयः ।

इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

बृहस्पति ग्रह पूजा ।

यः स्वर्गलोके सुरराज मंत्री, पयःप्ररादिघृतैः सुतुष्टः ।
वियद्विहारीबलिभच्चकः सन्, बृहस्पतिं तं परिपूजयामि ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वलक्षणसम्पूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिह्न सपरिवार हे बृहस्पतिमहाग्रह ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनम्, सन्निधिकरणम्

ॐ बृहस्पतिग्रहाय स्वाहा । इत्यादयः १४ वलयः,

इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ।

भक्ष्य-भात, बड़ा, पीपलका दातुन, ध्वजा पीलो, केशर-गन्ध, पीला पुष्प, दशांग धूप, जनेउ, १ पैसा। इन सबको उत्तर दिशामें अर्पित करे।

जाप्य मन्त्रम्।

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः फट् बृहस्पतिमहाग्रहाय नमः, अस्य यजमानस्य सर्वशांतिं कुरुकुरु स्वाहा।

शार्दूलविक्रीडित।

कालज्ञः सुरमन्त्रिणां सुरगुरुश्चातुर्भुजो वाक्पतिः
सर्वत्रापि समस्तलोक जजनैः संपूज्यमानो गिराम्।
आचार्यः सुरवन्द्यभूसुरकुलो धीरोऽक्षमालाधरो-
गार्ग्यैकादशवर्ग लग्न फलदा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥

इत्याशीर्वादः।

× × ×

अथ शुक्रग्रह पूजा।

जयरामारमण्याश्च सुग्रीवस्य च सूनूकम्।
पुष्पदन्तं यजे यज्ञे पुष्पदन्तं वरप्रभम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमः पुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतरेत्याह्वानं स्थापनम। सन्निधीकरणं।

ॐ ह्रीं पुष्पदन्ताय जलगन्धमित्यादिकमर्घ्यम्।

यस्यार्थं० शान्तिधारा पुष्पांजलयः।

अथ स्तोत्रम् ।

उपजातिः ।

एकान्तदृष्टि प्रतिषेधितत्त्वं,
प्रमाण सिद्ध तदतत्स्वभावम् ॥
त्वया प्रणीतं सुविधे ! स्वधाम्ना,
नैतत्समालीपढ़पदं त्वदन्यैः ॥
तदेव च स्यान्न तदेव च स्या,
त्तथा प्रतीते स्तव तत्कथंचित् ।
नात्यन्त मन्यत्व मनन्यता च,
विधेर्निषधस्य च शून्यदोषात् ॥२॥
नित्यं तदेवेद मिति प्रतीते,
र्न नित्यमन्यत्प्रतिपत्ति सिद्धेः ।
न तद्विरुद्ध बहिरन्तरङ्ग,
निमित्तनैमित्तिकयोगतस्ते ॥३॥
अनेकमेकं च पदस्य वाच्यं,
वृक्षा इति प्रत्ययवत्प्रकृत्या ।
आकाङ्क्षिल्लणः स्यादिति वै निपातो,
गुणानपेक्षे नियमोऽपवादः ॥४॥
गुणप्रधानार्थमिदं हि वाक्यं
जिनस्य ते तद्विषतामपथ्यम् ।
ततोऽभिवन्द्यं जगदीश्वराणां,
ममापि साधो स्तव पादपद्मम् ॥५॥

स्तोत्राघ्यम् ।

अथ यक्ष पूजा ।

वंशस्थवृत्तम्

पलाशसूत्रोज्जलशक्तिसद्वरं,
चतुर्भुजं कूर्मगतं शुभं रूचा ।
अनन्तशक्यात्मकचिह्नरूपिणः,
सुपुष्पदन्तस्य यजेऽजितं तथा ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण चतुर्भुज स्वायुधवाहन वधूचिन्ह सपरिवार हे अजितयक्ष अत्रागच्छगच्छेत्याह्वानम् स्थापनम् सन्निधिकरणं ।

ॐ अजितयक्षाय स्वाहा—इत्यादयो १४ वलयः ।
'इदमर्घ्यं' मित्यादिकमर्घ्यम् ।
यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पाञ्जलिः ।

अथ यक्षी पूजा ।

उपजाति ।

श्रीपुष्पदन्तस्य महादिकालीं
सुकूर्मपृष्ठादिगतां यजामि ।
कृष्णां लसन्मुग्दरवज्रहस्तां
वरोल्लसत्सत्त्ववतीं पवित्रां ।।

ॐ आं क्रां ह्रीं कृष्णवर्णे चतुर्भुजे मुग्दावज्रफलवरदहस्ते कूर्मवाहने श्री पुष्पदन्तस्य शासनदेवते भ्रकुटीदेवी ! अत्रागच्छ-गच्छेत्यावाहनम् स्थापनम्, सन्निधिकरनम् ।

ॐ भ्रकुटीदेव्यै स्वाहा- इत्यादयः १४ वलयः,
'इदमर्घ्यं' मित्यादिकमर्घ्यम् ।
शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ।

अथ शुक्रग्रह पूजा ।

यः सव्यपाणौ शुचिदण्डधारी
सुवामहस्ते च कमण्डलुं श्रित् ।
सु धौतवस्त्रं कविराजमुख्यं,
तं शुक्रदेवं परिपूजयामि ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेतवर्ण सर्वलक्षणसम्पन्न-हे शुक्रमहाग्रह ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ शुक्रमहाग्रहाय स्वाहा । इत्यादयः १४ वलयः
इदमर्घ्यामित्यादिकमर्घ्यम् ।
यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

भक्ष्य-भात, बड़ा, उम्बरका दातुन, सफेद ध्वजा, दशांग धूप, चन्दन, सफेद फल, जनेउ, १ पैसा, इन सबको ऐशान दिशाके कोणमें अर्पित करे ।

जाप्य मन्त्रम् ।

ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रः फट् शुक्र महाग्रहाय नमः ।
अस्य यजमानस्य सर्व शान्तिं कुरू कुरू स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

श्वेताङ्गा रजताद्रिसन्निभकराः श्वेतध्वजाभार्गवाः ।
श्वेताश्वाधिपका श्चतुर्भुजधराः श्वेताङ्गपत्राङ्किताः ॥

श्रीमद्भार्गवगोत्रवंशजमहासंपूज्यपुण्यग्रहाः ।
शुक्रैकादशवर्गलग्नफलदाः कुर्वंतु ते मङ्गलम् ॥
इत्याशीर्वादः ।

अथ शनिग्रह पूजा ।

उपजातिः ।

सुमित्रगोत्राधिपसत्कलत्र,
पुत्रः पवित्रो दुरितच्छिदस्त्री ।
नीलप्रभः सुव्रततीर्थनाथः
संप्रार्च्यतेऽस्मिन् शुभकृत्प्रयोग ॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमो मुनिसुव्रतजिनेन्द्र ! अत्रावतरावतरेत्याह्वानम्, स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जल गन्धमित्यादिकमर्घ्यम् यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ।

अथ स्तोत्रम् ।

अपरचक्रयच्छन्दः ।

अधिगतमुनिसुव्रतस्थितिमुनिवृषभो मुनिसुव्रतोऽनघः ।
मुनिपरिषदि निर्बभौभवानुडुपरिषत्परिवीतसोमवत् ॥
परिणतशिखिकण्ठरागया कृतमदनिग्रहविग्रहाभया ।
भवजिततपसः प्रसूतया ग्रहपरिवेषरुचेव शोभितम् ॥
शशिरुचिशुक्ललोहितं सुरभितरं विरजोनिजं वपुः ।

तव शिवमति विस्मयं यते यदपि च,
वांगनसोऽयमोहितम् ॥
स्थिति जनन निरोधलक्षणं चरमचरं च जगत्प्रतिक्षणम् ।
इतिजिनसकलज्ञलाञ्छनं वचनमिदं वदतां वरस्य ते ॥
दुरितमलकलङ्कमष्टकं निरुपम योगबलेन निर्दहन् ।
अभवदभव सौख्यवान् भवान् ।
भवतु ममापिभवोपशांतये ॥ ५ ॥
स्तोत्रार्घ्यम् ।

अथ यक्ष पूजा ।

वसन्ततिलका ।

अष्टाननं वरदखेटकृपाणपाणि-
पुष्यत्फलं त्रिनयनं मुनिसुव्रतस्य ।
श्वेतं वृषस्थ मुरुकाय-महाजयोग्र
भूषं महामि जिनयज्ञमहोत्सवेऽस्मिन् ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं श्वेतवर्ण ! हे त्रिनयनयक्ष ! अत्रागच्छा-गच्छेत्याह्वानं, स्थापनं, सन्निधिकरणं ।

ॐ त्रिनयनयक्षाय स्वाहा-इत्यादयो १४ वलयः, इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यं ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

अथ यक्षी पूजा ।

उपेन्द्रवज्रा ।

यजामिभक्त्या मुनिसुव्रतस्य
सुनागरूढां बहुरूपिणीं त्वाम् ।
सुखेटखड्गोत्पल सद्वराङ्कां
चतुर्भुजां चारु सुवर्णवर्णाम् ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे खड्गखेटफलवरदहस्ते ! मुनिसुव्रतनाथस्य शासनदेवते ! श्री सुगन्धिनीदेवी ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनम्, सन्निधिकरणम् ।

ॐ सुगन्धिनी देव्यै स्वाहा—इत्यादयोः १४ वलयः । इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

अथ शनिग्रह पूजा ।

उपजातिः ।

छायासुतः सूर्यखचारिपुत्रो-
यः कृष्णवर्णो रजनीशशत्रुः ।
अष्टारिगः सज्जनसौख्यकारी
शनीश्वरं तं परिपूजयामि ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं नीलवर्ण सर्वलक्षण सम्पन्न हे शनिमहाग्रह ! अत्रागच्छच्छेत्यावाहनम् स्थापनं, सन्निधिकरणं ।

ॐ शनिमहाग्रहाय स्वाहा इत्यादयो १४ वलयः ।

इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

भक्ष्य—भात, बड़ा, उडदकी घुंगरी, खीजड़ाको दातुन, काली ध्वजा, धूप रालको, कस्तूरी मिश्रित गन्ध, जनेऊ, १ पैसा । इन सबको अग्नेय दिशाके कोणमें अर्पित करे ।

जाप्य मन्त्रम् !

ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् शनि महाग्रहाय नमः ।
अस्ययजमानस्य सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

श्रीमत्काश्यपगोत्र वंशजमहासंपूर्णहेमद्युति-
भक्ताभीष्टफलप्रदायिकमहासौराष्ट्रदेशाधिपः ।
श्रीसूर्यात्मज मानवाणसधनुश्छायासुतो नीलवान्
सौरेकादश वर्गलग्नफलदाः कुर्वन्तु ते मङ्गलं ।

इत्याशीर्वादः ।

अथ राहुग्रह पूजा ।

आर्या ।

शिवदेवी नयनांबुज, मधुप समुद्रादि विजयसमुत्पन्नम् ।
द्वारावतिनाथ त्वा, मरिष्टनेमिं यजामि शंखाङ्कम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नेमि जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतरेत्याह्वानं स्थापनम्, सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं नेमिजिनेन्द्राय जलंगन्धमित्यादिकमर्घ्यम् ।
यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पाजलिः ।

अथ स्तोत्रम् ।

उद्गत्तावृत्तम् ।

भगवानृषिः परमयोगदहन-
हुतकल्मषेधनम् ।
ज्ञान विपुल किरणैः सकलं,
प्रतिबुध्य बुद्ध कमलायतेक्षणः ॥१॥
हरिवंश केतु रनवद्य-
विनय दमतीर्थनायकः ।
शीलजलधि रभवो विभव-
स्त्वमरिष्टनेमिजिनकुञ्जरोऽजरः ॥२॥
त्रिदशेन्द्रमौलिमणिरत्न-
किरणविसरोपचुम्बितम् ।
पादयुगलममलं भवतो,
विकसत्कुशेशय दलारुणोदरम् ॥३॥
नखचन्द्ररश्मिकवचातिरुचिर-
शिखराङ्गुलि स्थलम् ।
स्वार्थनियतमनसः सुधियः,
प्रणमन्तिमन्त्रमुखरामहर्षयः ॥४॥
द्युतिमद्रथाङ्गरविबिम्ब,
किरणजटिलांशुमण्डलः ।

नीलजयजदलराशिवपुः,
सहबन्धुभिगरुड्केतुरीश्वरः ॥ ५ ॥
हलभृच्च ते स्वजन,
भक्तिमुदितहृदयौ जनेश्वरौ ।
धर्म विनय रसिकौ सुतरां,
चरणार विन्द युगलं प्रणमेतु ॥ ६ ॥
ककुदं भुवः खचरयोषि,
दुषित शिखरै रलंकृतः ।
मेघपटल परिवीत तट,
स्तवलक्षणानिलिखितानि वज्रिणा ॥७॥
वहतीति तीर्थमृषिभिश्च,
सततमभिगम्यतेऽद्य च ।
प्रीति विततहृदयैः परितो,
भृशं मूर्जयन्त इति विश्रुतोचलः ॥८॥
बहिरन्तरप्युभयथा च,
करणमविघाति नार्थकृत् ।
नाथ युगपदखिलं च,
सदा त्वमिदं तलामलकवद्विवेदिथ ॥९॥
अतएव ते बुधनुतस्य
चरित गुणमद्भुतोदयम् ।
न्याय विहित मवधार्य जिने,
त्वयि सुप्रसन्न मनसः स्थितावयम् ॥१०॥
स्तोत्रार्घ्यंम् ।

अथ यक्ष पूजा ।

वंशस्थवृत्तम् ।

गोमेदयक्षं त्रिमुखं प्रसूनगं
नृवाहनं नेमिजिनस्य षड् भुजम् ।
त्रिशूलपाशाङ्कुश चापमार्गणै
रुदीर्णहस्तं सकलैर्यजाम्यहम् ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुर्वाह्लयक्ष ! अत्रागच्छगच्छेत्यावाहनम् स्थापनम्, सन्निधिकरणम् ।

ॐ सर्वाह्लयक्षाय स्वाहा । इत्यादयः १४ वलयः इदमर्घ्य मित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

अथ यक्षी पूजा ।

उपेन्द्रवज्रा ।

अरिष्टनेमेर्जिनपुंगवस्य
प्रभाविनींशासनपुण्यदेवीम् ।
यजेऽम्बिकां सिंहगतिं सुनीलां
भुजद्वयाङ्कां विपवित्रपत्राम् ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं नीलवर्णे द्विभुजे सहकारफलधारिणि सिंहवाहने श्रीनेमिनाथस्यशासनदेवते ! कुष्माण्डिनीदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानं, स्थापनं, सन्निधिकरणं ।

ॐ कुष्माण्डिनी देव्यै स्वाहा—इत्यादयो १४ वलयः । इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

अथ राहुग्रह पूजा ।

उपजातिः ।

निजेन बिम्बेन दिने दिने च
षष्टे च मासे शशिनो विमानम् ॥
प्रच्छादयन्तं परितर्पयामि
राहुं स्वभावात्परितुष्यमाणम् ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्वलक्षणसम्पन्न हे राहुमहाग्रह ! अत्रागच्छगच्छेत्याह्वानम्, स्थापनम्, सन्निधिकरणम् ।

ॐ राहुमहाग्रहाय स्वाहा—इत्यादयो १४ वलयः, इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यं ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

भक्ष्य—उडदकी घूंघरी, बडा, लापसी, दर्भका दातुन, हरी ध्वज, लाखका धूप, जनेऊ, १ पैसा । इन सबको नैऋत्य दिशाके कोणमें अर्पित करे ।

जाप्य मन्त्रम् ।

ॐ आं क्रां ह्रीं ह्रः फट् राहुमहाग्रहाय नमः, अस्य यजमानस्य सर्वशांतिं कुरुकुरु स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

श्रीपंचाननपीठमध्यविलसत्पाठीनपीठस्थिता-
आतुर्लक्षप्रमाणयोजनमहाकायप्रसन्नात्मकाः ।
सिंहारूढ कराल वक्रकुटिलाः श्याम प्रभाभाजिनो-
राहूकादशवर्गलग्नफलदाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥

इत्याशीर्वादः ।

अथ केतुमहाग्रह पूजा ।

शालिनीच्छन्दः ।

काशीनाथं विश्वसेनस्यसूनुं,
भोगीन्द्राङ्कं पार्श्वनाथं च चाये ।
पद्मावत्याः स्वामिनं ब्रह्मनाथ,
नागेन्द्राद्यैर्ध्वस्तघोरोपसर्गम् ॥

ॐ ह्रीं नमोः पार्श्वजिनेन्द्र ! अत्रावतरावतरेत्याह्वानम्, स्थापनम्, सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं जलं गन्धमित्यादिक मर्घ्यम् ।
यस्यार्थं० शान्तिधारा पुष्पांजलिः ।

स्तोत्रम् ।

वंशस्थवृत्तम् ।

तमालनीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः,
प्रकीर्णभीमाशनिवायुवृष्टिभिः ।

बलाहकै वैरियशैरुपद्रुतो,
महामना यो न चाल योगतः ।।१।।

बृहत्फणामण्डल मण्डपेन,
यं स्फुरत्तडित्पिङ्गरुचोपसर्गिणाम् ।
जुगूह नागोधरणोधराधरं,
विराग संध्यतडिदम्बुदो यथा ।।२।।

स्वयोग निस्त्रिंश निशातधारया,
निशात्य यो दुर्जय मोहविद्विषम् ।
अवाप दार्हन्त्य मचिंत्यमद्भुत,
त्रिलोकपूजातिशयास्पदं पदम् ।।३।।

यमीश्वरं वीक्ष्य विधूतकल्मष,
तपोधनास्तेऽपि तथा बुभूषवः ।
वनौकसः स्वश्रमवन्ध्यबुद्धयः,
शमोपदेशं शरणं प्रपेदिरे ।।४।।

स सत्यविद्यां तपसां प्रणायकः,
समग्रधीरुग्रकुलाम्बरांशुभान् ।
मया सदा पार्श्व जिनः प्रणम्यते,
विलीन मिथ्यापथ दृष्टि विभ्रमः ।।५।।

इति स्तोत्रार्घ्यम् ।

अथ यक्ष पूजा ।

उपजातिः ।

संपूज्यपूक्षं धरणेन्द्रयक्षं,
सुकुर्मपृष्ठातुलवाहनस्थम् ।
तमालनीलाञ्जन पार्श्वनाथः,
क्रमानतं तं प्रयजामि शान्त्यै ॥५॥

ॐ आं क्रां ह्रीं धरणेन्द्रमहायक्ष ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम्, स्थापनम्, सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं धरणेद्राय स्वाहा–इत्यादयः १४ वलयः । इदमर्घ्यमित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलि ।

अथ यक्षी पूजा ।

पद्मावतीं पार्श्वजिनस्य भक्तां,
चतुर्भुजां विद्रुम कान्तवर्णाम् ।
पाशांकुशाक्षाम्बुजचारुहस्तां,
पद्मासनां कुटसपगाधाम् ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं विद्रुमवर्णे चतुर्भुजे पाशाङ्कुशमय फल हस्ते श्री पार्श्वनाथस्य शासनदेवते ! पद्मावतोदेवी ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम्, स्थापनम् सन्निधिकरणम् ।

ॐ पद्मावतीदेव्यै स्वाहा–इत्यादयो १४ वलयः ।

अथ केतुमहाग्रह पूजा ।

कृष्ण ध्वजा कृष्ण सुवर्ण धारी,
छायाग्रहो पुण्य वियग्विहारि ।
एकादशस्थः संभवन्प्रपूज्य,
केतुग्रहं तं परिपूजयामि ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं कृष्णवर्णं सर्वलक्षण सम्पूर्णं हे केतुमहाग्रह अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् । स्थापनम् । सन्निधिकरणं ।

ॐ केतुमहाग्रहाय स्वाहा–इत्यादयः १४ वलयः ।

इदमर्घ्यं मित्यादिकमर्घ्यम् ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पाञ्जलिः ।

भक्ष्य-बली मालुपर (कालीरोटी), उडदकी गुगरी, दानोका दातुन, काली ध्वजा; जनेउ, १ पैसो

ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रः फट् केतु महाग्रहाय नमः
अस्य यजमानस्य सर्व शान्तिं कुरू कुरू स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

श्रीनन्नेमिजगोत्र वंशज महा सम्पूर्ण मेघद्युति–
गृद्धारूढ महाबलोऽतिधनवान् श्री पुण्य मूर्तिर्वरः
अष्टाशीति सहस्रयोजन महाविस्तीर्णदेहः सखा
केत्यैकादशवगलग्नफलदाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥

इत्याशीर्वादः ।

इन्द्रवज्रा ।

एतेग्रहाः सर्व बल प्रभावा,
मार्तण्ड मुख्या जगति प्रसिद्धाः ।
भव्यं प्रमोदं वितरन्तु नव्यां,
देवाधि देवस्य पवित्र यज्ञे ॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं हः आदित्य सोमाङ्गारक बुध बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु नवग्रहेभ्यः पूर्णार्घ्यं समर्पयामि, यज्ञभागे च यजामहे प्रतिगृह्यतां२ स्वाहा ।

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

कार्पासवस्त्रादिसुधौतवस्त्रैः
काञ्चीदुकूलादिसुपट्टकूलेः ॥
देवाङ्गवासोज्ज्वलदीप्तियुक्त
राच्छादितांस्तान्प्रकरोमि देवान् ॥

इति पठित्वा वस्त्राच्छादनं कुर्यात् ।
(मण्डल पर वस्त्रका आच्छादन करे)

आदित्यो रोगहर्ता च सोमश्चिन्ताविनाशकृत् ।
मङ्गलो धरणीपुत्रः पूजितो मङ्गलप्रदः ॥
बुधो बुद्धिप्रदाता च सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।
गुरुर्बुद्धिप्रदाता च शुक्रः संजीवनप्रदः ॥

मदो मन्दमतेर्हर्ता राहु वैरिविनाशकः ।
केतुर्महागदच्छेदी सर्वकालफलप्रदः ॥
ॐ ह्रीं नवग्रहदेवा ! शान्ति प्रददतु ।
पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ समुच्चय जयमाला ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

वन्दे तान् भुवि मुख्यकान्
नवग्रहान् विश्वार्तिसंहारकान्,
तेजः पुञ्जकराननादि—
विभवानिन्द्रादिदेवैर्नु तान् ।
भूतप्रेतपिशाचराक्षस—
भयाद्देवैः सदासत्कृतान्,
भोगीशानलचोररोगशमकान्
लक्ष्मीकरानन्वहम् ॥

मात्रोपेक्षिकं-दोधकवृत्तम् ।

काश्यपवंश महाद्युतिमारं,
बन्धुकपुष्प सुवर्ण विसारम् ।
पद्मदलायत सुन्दर नेत्रं,
वासवमणि शुचिवर शुभगात्रम् ॥

कम्बुधवलदधिसप्रभभासं,
शीतलकोमलरश्मिविलासम्।
तं शशिनं कुमुदालि विकाशं,
शार्वरगाढतमः कृतनाशम् ॥
श्रीधरणीसुत लोहितदेहं,
गण्यगुणावलिशोभितगेहम् ।
शक्तिमहायुध शेषकुमारं,
तं मंगलग्रहमण्डलसारम् ॥
सर्वगुणोत्तम श्यामसुरूप,
देव नरासुरसंभृत भूपम् ।
तं शशिनं वरसौख्यविशालं,
दीर्घललाम विकाशितभालम् ॥
सुरपति वन्दितपादसरोजं,
हाटककान्ति महामतिराजम् ।
ऋषिगण संस्कृत बुद्धिविलोकं,
वन्दे तं सुरगुरुगतशोकम् ॥
काञ्चनकुन्द शशाङ्ककलाभं,
वेदपठनमतिसूत्रितलाभं ।
दैत्य कुलाधिपपूजितपादं,
पण्डितजन नय सत्कृत वादम् ॥

नीलमहोत्पलविश्रुततापं,
वासरमणिसुतमुद्धतकोपम् ।
गर्वितजनताविहित विनाशं,
तं मन्दं वन्दे सविकाशम् ॥
राहुमहाग्रहतपन विदारम्,
अर्द्धसुकाय महामतिसारम् ॥
सैंहिकेयमतिकल्पितमानम्,
कज्जलविग्रह कज्जलधानम् ।
कृष्णमहोन्नत धूम विकाशं,
तारापति कृतदेह विनाशं ॥
रौद्र विपूर्णित रौद्रविनोदं,
केतुमहाग्रह संधृतमोदं ॥

मालिनीच्छन्दः ।

इति शुभ जयमालां यो विधत्ते सुकण्ठे,
दिनमपि रजनीं वा सर्वकालं पठेद्यः ।
व्रजति स जनमुख्यः पुत्रवाञ्छां सुकीर्ति,
जिनजलधिसुपूज्यः पण्डिताचार्यवर्यः ॥

ॐ आं क्रां ह्रीं सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि राहु केतु महाग्रहेभ्यः सर्वशान्तिप्रदमर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा ।

मन्त्र— ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीं ग्रहा श्चन्द्र सूर्याङ्गारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिता इह जिनपति पुरत स्तिष्ठन्तु मम धनधान्य जयविजय सुख सौभाग्य धृति कीर्ति कान्ति शान्ति तुष्टि पुष्टि बुद्धि लक्ष्मी धर्मार्थ कामदाः स्युः स्वाहा ।

(इस मन्त्रका १०८ अथवा २७ वार जाप करना चाहिये ।)

अनुष्टुप ।

जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ।
ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि भव्यानां सुखहेतवे ॥
जन्मलग्ने च राशौ च यदा पीडन्ति खेचराः ।
तदा संपूजयेद्धीमान् खेचरैः सहितान् जिनान् ॥
पुष्पैर्गंधैर्धूपदीपैः फलनैवेद्यसंयुतैः ।
वर्णसदृशदानैश्च वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥
पद्मप्रभश्च मार्तण्ड श्चन्द्र श्चन्द्र प्रभश्च सः ।
भूसुतो वासुपूज्यश्च बुधोऽप्यष्टजिनेश्वरः ॥
विमलानन्तधर्माराः शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा ।
वर्धमानो, जिनेन्द्राणां पादपद्मं बुधो नमेत् ॥
ऋषभाजितसुपार्श्वा श्चाभिनन्दनशीतलौ ।
सुमतिः शंभवः स्वामी श्रेयसश्च बृहस्पतिः ॥

सुविधेः कथितः शुक्रः सु व्रतस्यशनैश्चरः ।
नेमिनाथस्य राहुः स्यात् केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥
जिनागारे गतः कृत्वा ग्रहणां शान्ति हेतवे ।
नमस्कारं, ततोभक्त्या जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥
भद्रबाहुरुवाचैवं, पंचम श्रुतकेवली ।
विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिविधिं शुभम् ॥
आदित्यादिग्रहाः सर्वे, सनक्षत्राः सुराश्च ये ।
कुर्वन्तु मङ्गल तस्य, पूजाकर्तुर्नरस्य ते ॥

'णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ।'

इस महामन्त्रका १०८ वार जाप करना चाहिये ।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीं सूर्य चन्द्र मङ्गल बुध गुरु शुक्र शनि राहु केत्वादयः सर्वे ग्रहाः शांन्ति पुष्टि तुष्टिश्च कुर्वन्तु२ स्वाहा ।

इत्याशीर्वादः ।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नवग्रह होम करणाच्छान्तिर्भवतु ।

॥ इति श्रीजिनसागरकृत नवग्रह पूजा समाप्तः ॥

शान्तिचक्रोद्यापन विधान ।

अथाधिवास्य चिद्रूप मित्यादिविधिनापरम् ।
ब्रह्माऽर्हदादीन् धर्मांश्च मध्येमण्डलमर्चय ॥

(प्रथम देवशास्त्रगुरुसिद्ध और कलिकुण्ड पूजा करे)

ॐ परमब्रह्म यज्ञप्रतिज्ञानायकणिकान्तः पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

प्रत्यर्थिव्रजनिर्जयानिशलसद्वीवीर्यादृक्शर्मणो-
लोकेषू त्रिषू मङ्गलोत्तमतयाख्यातान् पवित्रात्मनः ।
धर्मं च व्रजतोहृदावदधतोमुक्तिप्रियामात्मनो-
लोकेशामरपूजितानघभिदः प्रार्चामितानर्हतः ॥

ॐ ह्रीं अरिप्रमथनाद्रजोरहस्यनिरसनाच्चसमुद्भि-
न्नानन्तज्ञानादिचतुष्टयतया शुक्रादिकृता मनन्तसंभा-
विनीमर्हणा मर्हतां मंगलञ्चत्वेन लोकोत्तम शरणभूता-
नामर्हत्परमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमीति स्वाहा ।

स्रग्धरा ।

सामोदैः स्वच्छतोयै रूपहिततुहिनै श्चन्दनै स्वर्गलक्ष्मी-
लीलार्घ्यै रक्षतौघै र्मिलदलीकुसुमै रुद्गमै नित्यहृद्यैः ।

नैवेद्यैर्नव्य जाम्बू नदमद दमकै दीपकैः काम्यधूम-
स्तूपैर्धूपै मनोज्ञैगृ हसुरभि फलैः पूजये त्वार्हदीशम् ॥

ॐ ह्रीं घातिचतुष्टयरहितेभ्यो नवकेवललब्धिसम-
न्वितेभ्योऽर्हद्भ्यो जलादिकमर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांतिर्भवेत्सदा ।
शांतिकी पौष्टिकी चैव सर्वकार्येसु सिद्धिदा ॥

(यह पढ़कर शांतिधारा देवे और पुष्पांजलि क्षेपण करे)

शार्दूलविक्रीडितम् ।

प्रत्येकार्पित सप्तभंगयुपहितै धर्मैरनन्तैयु तान् ।
ध्रौव्योद्भ दतदत्ययैरनुगतान्सर्वज्ञताशोभितान् ।
सच्चैतन्य चमत्कृति प्रविल सन्मोदाब्धिमध्यस्थितान् ।
भक्त्या मंगल लोकत्रय शरणान्येतर्हि सिद्धान्यजे ।

ॐ ह्रीं सामग्री विशेष विश्लेषिता शेष कर्ममल
कलङ्कपङ्कतया सांसिद्धिका त्यन्तिक विशुद्धि विशेष
विभवा दभिव्यक्त परमोत्कृष्ट सम्यक्त्वादिगुणाष्टक
विशिष्ट मुदितोदित स्वपरप्रकाशात्मक चिच्चमत्चकार-
मात्रपरतन्त्र परमानन्दैकमयीं निर्वातानन्तपर्यायितयैकं
किञ्चिदनवरता स्वाद्यमान लोकोत्तर परम मधुर स्वरस
स्वभर निभर कौटरथ्यमधिष्ठितां परमात्मता मा सं-
सार मनासादितपूर्वामपुनरावृत्याधिष्ठितानां लोको-
त्तमशरणभूतानां सिद्धपरमेष्ठिना मष्टतयी मिष्टिं
करोमीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं कर्माष्टक विमुक्तेभ्यः सिद्धेभ्यो जलं गन्ध मक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फल मर्घ्यं च निर्वपामीति स्वाहा ।

सामोदैः स्वच्छतोयै रुपहिततुहिनैश्चन्दनैः स्वर्गलक्ष्मी ।
लीलार्घ्यैः रक्षतौघैर्मिलदलिकुसुमैः रुद्गमैर्नित्यहृद्यैः ॥
नैवेद्यैर्नव्यजाम्बूनदमददमकैः दीपकैः काम्यधूम-
स्तूपधूपैर्मनोज्ञैर्गृहसुरभिफलैः पूजये सिद्धनाथान् ॥

ॐ ह्रीं कर्माष्टक विमुक्तेभ्यः सिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

स्रग्धरा ।

व्यक्ताशेषश्रुतोपस्कृतिकषितमस्काण्डगम्भीरधीरस्वान्ताः
षट्त्रिंशदुच्चैः स्फुरदसमगुणाः पञ्चमुक्त्यै स्वयं ये ।
आचारनाचरन्तः परमकरुणया चारयन्तो मुमुक्षुन्
लोकाग्रण्यः, शरण्यान् गणधर वृषभान् मङ्गलं तान्महामि

ॐ ह्रीं व्यवहाररत्नत्रयावधान समुद्भिद्यमाननिश्चय रत्नत्रयैकलाभमनु भवन्त मानन्दसान्द्रं सुद्धस्वात्मान भर्भिमिविशमानानां विश्वस्वरूपोपलब्धि प्रेयसी दृढतर परिरम्भ सुखाभिलाषुक मुमुक्षुवर्गानुग्रहैक सर्गाय मानांतः करणानां मङ्गललोकोत्तमशरणभूतार्थानामाचार्य परमेष्ठिनामष्टतयी मिष्टिं करोमीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय विषयविरतेभ्यः पंचाचारनिरतेभ्य आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलमर्घ्यंच निर्वपामीति स्वाहा ।

स्रग्धरा ।

सामोदैः स्वच्छतोयै रूपहिततुहिनैश्चन्द्रनः स्वर्गलक्ष्मी-
लीलाध्यैरक्षतौधैर्मिलदलिकुसुमै रुद्गमैर्नित्य हृद्यैः ।
नैवेद्यैर्नव्यजाम्बूनदमद दमकै र्दीपकैः काम्यधूमस्तूपै
र्धूपैमनोज्ञैगृंहसुरभिफलैः पूजये धर्मसूरीन् ॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियविषयविरतेभ्यः सूरीभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

साङ्गोपाङ्गागमज्ञाः सुविहितमहिताः सूक्तियुक्तिप्रपंचै-
र्विद्यानिष्पन्दतृष्णातरलितमनसः प्रीणयन्तो विनेयान् ।
कीर्तिस्तम्भायमाना निपुणमतिधनाः शक्तिसत्कोषवन्तः
ख्याता लोकेऽत्र लोकोत्तमशरणतया
येऽर्च्चयेऽध्यापकांस्तान् ॥

ॐ ह्रीं निरन्तरघोरदुःखावर्तविवर्तन चतुर्गतिपरिवर्तनार्णवनितुर्यस्तीर्णमनोरथ महारथमनस्कारविनेयाचारप्रवचनानुसासन व्यसनानामपियोगसुधारसायनाभ्यास सन्निकृष्यमाणाजरामरत्वपयोमहिम्ना मङ्गललोकोत्तम शरण भूतानामुपाध्याय परमेष्ठिना मष्टतयीमिष्टिं करोमीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं व्रतसमितिगुप्ति युक्तेभ्यः कषायादिरिपुजेतृभ्यः पाठकेभ्यो जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं अर्घ्यं च निर्वपामीति स्वाहा ।

सामोदैः स्वच्छतोयैरूपहिततुहिनै श्चन्दनैः स्वर्गलक्ष्मी–
लीलाध्यैरक्षतौघैर्मिलदलिकुसुमै रुद्गमैर्नित्यहृद्यैः ।
नैवेद्यैर्नव्य जाम्बूनदमदमकैर्दीपकैः काम्यधूमस्तूपैर्धूपैर्म–
नोज्ञैर्गृहसुरभिफलैः पूजयेपाठकेन्द्रान् ।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिमूलगुणधारकेभ्यः पाठकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

सर्वज्ञोपज्ञविद्याहृदय परिचयप्रोच्छलन्निर्विकल्प–
प्रत्यग्ज्योतिः प्रतिष्ठान् परदुरधिगमद्यु द्रमोद्धारनिष्ठान् ।
अन्योन्यस्पर्द्धमानत्रिदिव शिवपदश्रीकटाक्षच्छटाढ्यान्
चिन्मूर्ति विभ्रतोऽग्रयान् –
शरण मिह यजे मङ्गलं सर्वसाधुन् ॥

ॐ ह्रीं वैश्रसिकपरमचिन्मयविश्वैश्वर्यपदापहार–
कठोरकर्मठ दुःकर्मशात्रव शक्ति शातनोत्सिक्त
विशिष्टशक्ति व्यञ्जक प्रकाम दुर्लक्ष व्यतिरेक
चेत्रज्ञाशान्तर प्रवेश दुर्ललित बुद्धयनुबन्ध प्रवर्धमान
सद्धयानसमिद्ध सहजानन्दामृत रसास्वादनावधीरित
परम भुक्ति सम्पत्प्रियासमागमोत्कण्ठानां मङ्गल लोको–

त्तमशरणभूतानां सर्व साधु परमेष्ठिनामष्टतयीमिष्टिं करोमीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं पंचमहाव्रत समिति प्रभृतिविभूषितेभ्यः पंचेन्द्रियदमनोद्यतशक्तिभ्यः साधु परमेष्ठिभ्यो जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फल मर्घ्यं च निर्वपामीति स्वाहा ।

सामोदैः स्वच्छतोयैरुपहिततुहिनैश्चन्द्रनैः स्वर्ग-
लक्ष्मीलीलाघ्यैरक्षतौघैर्मिलदलिकुसुमैरुद्गमैर्नित्यहृद्यैः ।
नैवेद्यैर्नव्यजाम्बूनदमददमकैर्दीपकैः काम्यधूमस्तूपैर्धूपै-
र्मनोज्ञैर्गृहसुरभिफलैः पूजये साधुसिंहान् ॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति मूलगुण धारकेभ्यः साधु परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ।

एवमर्हत्सिद्धादीनभ्यर्च्य चत्वारिमंगलानि लोकोत्तम भूतानि शरणानि चार्घ्यैः सम्भाव्य सिद्धोपरिधर्मस्येत्थं पूजां कुर्यात् ।

(इस प्रकार अर्हन्त आदि पंच परमेष्ठियोंकी पूजा करके नीचे लिखे चतारि मंगल, आदिको पूजा करे)

शार्दूलविक्रीडितम् ।

भित्वा कर्मगिरिन् प्रबुद्ध सकलज्ञेयादिकान्ताः शिवं
पुंसां शुद्धिविशेषतोऽच्छमनसा सेवाविधौ पश्यताम् ।

सौख्यं लान्ति वृषार्पणादघहृतेर्योवा मलं गालय-
न्त्यर्घ्येणोपचरामि मङ्गलमहं तानर्हतोऽभ्यर्हितान् ॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शालिनी।

नामध्वंसात्तैजसादायुरन्ता
दुष्कर्म्याङ्गा दुत्तमौदारिकाच्च।
ये भक्तॄणां मङ्गलं लोकमूर्ध्नि
प्रद्योतंतेतान्भजेऽर्घ्येणसिद्धान् ॥
ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ये मार्गस्याचारका देशका ये,
ये चासक्तं ध्यायकाः साधयन्ति।
सिद्धिं, साधून्मङ्गलभावुकानां,
तान्सर्वानप्युद्धभक्त्यार्चयामि ॥
ॐ ह्रीं साधुमंगलायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रवज्रा।

दृग्बोधवर्धिष्णुदयाप्तभूष्णोः
क्रोधादिशत्रुप्रचयैकजिष्णोः।
सन्मंगलस्योपहरामि केव-
लिज्ञप्त धर्मस्य समर्चनार्घ्यम् ॥
ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्त धर्ममंगलाय जलादिकमर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

शालिनी ।

ज्ञात्वा श्रुत्या नैगमेनानुचिन्त्य,
बुद्ध्वा नाम स्थापना द्रव्यभावैः ।
ये सेव्यन्ते सर्वदा मुक्तिकामै-
स्तेभ्योऽर्हद्भ्यो नौमि लोकोत्तमेभ्यः ॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्रवज्रा ।

नामादिभिर्योऽष्टभिरप्यदुष्टै--
रिष्टाय सन्ति प्रणिधीयमानाः ।
त्रिन्यस्यनो आगमभावतस्तां,
ल्लोकोत्तमान् साधु यजेऽत्र सिद्धान् ॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमाय जलादिकमर्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

स्रग्धरा ।

ध्वस्तक्रोधादिवेगा ऋषि च यति मुनयो ये नवोत्कर्षवन्तो ।
नानादेशान्नृलोके शिवपथमनिशं साधयंतः पुनन्ति ।
घस्रे घस्रे सनीडीभवदमृतरमासंगमा साधवस्ते,
भूता भव्या भवन्तो विधिवदयचिता पान्तु लोकोत्तमा नः

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमायर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

श्रद्धाय व्यवहार तत्त्व रुचिधी चर्यात्मरत्नत्रयम्,
प्रोद्भूतं परमार्थतत्रयमय स्वात्मस्वरूपं बुधाः ।
यं युक्त्यागमचक्षुषो विदधते, लोकोत्तमः केवलि-
प्रज्ञप्तोऽभ्युदयापवर्गफलदः सोऽर्घ्येण धर्मोनघः

सर्वं प्राणी दयामयेन मनसा शुद्धात्मसंवित्सुधा-
स्रोतस्यात्मनि संनिपत्य महसा शश्वात्तपंतः परम् ।
ये भव्यान्निज भक्ति भावितधियो रक्षन्त्यपायात्सदा-
तानावृत्य सपर्ययात्र शरणम् सर्वान्प्रपद्येऽर्हतः ॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय जलादिकमर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सान्द्रानन्द चिदात्मनिस्वमहसि स्फारं स्फुरन्तः स्फुरं-
पश्यन्तो युगपतित्त्रिकाल विषयानन्तातिपातान्वयाम् ।
षड्द्रव्यीं स्वपदाधिपत्य मचिराद्यच्छन्ति ये ध्यायतां-
तानर्घ्येण यजामहेभगवतः सिद्धान् शरण्यानिह ॥

ॐ ह्रीं सिद्धशरणाय जलादिकमर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्रग्धरा ।

आचारं पंचधा ये भवशंकितधियश्चारयन्तश्चरन्ति
व्याख्यान्तिद्वादशाङ्गी सुचरितनिरता ये च शुश्रूषकाणाम्
साम्याभ्यासोद्यदात्मानुभवघनमुदो येऽङ्गिनां घ्नन्ति वैरं
ते सर्वेऽप्यर्घ्यिता मे त्रिभुवनशरणं साधवः सन्तु सिद्ध्यै ॥

ॐ ह्रीं साधुशरणाय जलादिकमर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितं ।

सच्छ्रद्धोपगृहीतमूर्तिमदनानाहार्यवैराग्यकृत्
सम्यग्ज्ञानमसङ्गसङ्गवदधिष्ठानं यदात्माद्विधा ।
सिद्धः संवरनिर्जराभवशिवाह्लादावहः केवलि-
प्रज्ञप्तः शरणं सतामनुमतः सोऽर्घ्येण धर्मोऽच्यते ॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्माय जलादिकमर्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

अनुष्टुप् ।

इत्यर्चिताः परब्रह्म प्रमुखाः कर्णिकार्पिताः ।
सन्तु सप्तदशाप्येते भव्यानां शिवसर्मणे ॥

ॐ ह्रीं पञ्चपरमेष्ठिरभृतसाप्तदशप्रमुखेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

अश्रान्तप्रतिबन्धकव्यपगमैकांतस्फूटचित्कला--
रूपेणापिजगत्यचिन्त्यचरित स्तंतन्यते येन ना ।
यत्सर्वस्वरसाय योगिपतयोऽप्याशासतेऽत्यच्चणं
तच्छ्रेयो यदनुग्रहश्च, वृषमप्यर्चामि तं तद्गुणम् ॥

ॐ ह्रीं भेदाभजननियतिनिर्मितां प्रादेशिकी--मप्यभेदरूपतां योगविशेषसौष्ठवटङ्केन विश्वद्रीची--मुत्कीर्य विश्रांतस्य मङ्गललोकोत्तमशरणभूतस्य केवलि प्रज्ञप्तधर्मस्याष्टतयीमिष्टिं करोमीति स्वाहा ।

स्रग्धरा ।

सामोदैः स्वच्छतोयै रूपहिततुहिनैश्चन्दनैः स्वर्गलक्ष्मी-
लीलार्घ्यैरक्षतौघैर्मिलदलिकुसुमैरुद्गमैर्नित्यहृद्यैः ।
नैवेद्यैर्नव्य जाम्बूनदमद दमकैर्दीपकैः काम्यधूम--
स्तूपैर्धूपैर्मनोज्ञै गृहसुरभिफलैः पूजये जैनधर्मम् ॥

ॐ ह्रीं केवलि प्रज्ञप्त जैनधर्मेभ्यो जलादिकमर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

एवमर्हदादीनभ्यर्च्य शरच्चन्द्रमरीचिरोचिष्यस्ता--नंतश्चेतसि चिन्तयन्ननादि सिद्धमंत्राभिमंत्रित कर्पूरहरि चंदन द्रव्याभिलूलितसुरभि शुभ्र पुष्पा--

ञ्जलिभिरेकविंशतिवारानधिवास्य पूर्णार्घ्यदानेन बहु-मानयेत्।

इस तरह पञ्चपरमेष्ठि आदिको अर्घ्य देकर—

'ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व-साहूणं। चत्तारि मङ्गलं अरहंत मङ्गलं सिद्ध मङ्गलं, साहू मङ्गलं केवलि पण्णत्तो धम्मो मङ्गलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि शरणं, पव्वज्जामि, अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

इस अनादि सिद्ध मन्त्रसे २१ वार सुगन्धित केशर मिश्रित पुष्पोंसे जाप करे

शार्दूलविक्रीडितम्।

तेऽमी पञ्चजिनेन्द्रसिद्धगणभृत्सिद्धांतवित्साधवो—
माङ्गल्यं भुवनोत्तमाश्च शरणं तद्वज्जिनोक्तोवृषः।
अस्माभिः परिपूज्य भक्तिभरतः पूर्णार्घ्य मापादिताः
सङ्घस्य क्षितिपस्य देशपुरयो रप्यासतां शान्तये॥

ॐ ह्रीं पञ्चपरमेष्ठिप्रभृत्यनादिसिद्धमन्त्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

अथ जयादि देवतार्चनम् ।

अनुष्टुप् ।

जयाद्याः शब्दये युष्मा नायात सपरिच्छदाः ।
अत्रोपविशतैता वो यजे प्रत्येक मादरात् ॥

(आह्वाननादिपुरस्सरं प्रत्येक पूजांविधाय पद्मपत्रेषु पुष्पांक्षतान् क्षिपेत्)

आह्वाननादिपूर्वक प्रत्येक देवताओंको पूजा कर मण्डल पर बने हुए कमल पत्रों पर पुष्प तथा अक्षतोंको अञ्जलि क्षेपण करना चाहिये ।

जये जयाद्ये विजये विजेत्रि
जैत्रेऽजिते जैन्यपराजितेऽस्मिन् ।
जम्मे च मोहे सुमहेऽस्तदम्भे
स्तम्भेऽस्तिमास्तम्भिनि रक्षतास्थान् ॥

(सोमग्रहाम्य स्ताम्यः पद्मेषु पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्)

अथ प्रत्येक पूजा ।

इहार्हतो विश्वजनीनकृतेः
कृतौ कृतारातिजये जये त्वाम् ।
सद्गन्ध पुष्पाक्षत दीप धूप
फलादिसम्पादनया धिनोमि ॥

ॐ ह्रीं जयेदेवि ! अत्रागच्छगच्छेत्याह्वानम्, स्थापनं, सन्निधिकरणम् ।

(देवी देवताओंका आह्वान सप्त धान्यसे करना चाहिये)

ॐ ह्रीं जयदेव्यै–इदमर्घ्यम्–पाद्यं जलं गन्धं अक्षत पुष्पं नैवेद्यं दीपं–धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा ।

यस्यार्थं० क्रियते० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

जिनाधिराजे विजयैकबोजे
जगद्विजेतुः कुसुमायुधस्य ।
विजेतरि स्फारितभूरिभक्ति
त्वामत्र यज्ञे विजये यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं विजये देवि ! अत्रागच्छागच्छेत्यावाहनं स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं विजयेदेव्यै इदमर्घ्यं० ।

यस्यार्थं० क्रियते० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

जगज्जयोज्जागरिणां कषाय--
द्विषां न केनापि जितजिनेन्द्रम् ।
आवर्जयन्तीमजितोर्जितोर्ज्जा,
मूर्ज्जाप्तये त्वामजितेऽर्घयामि

ॐ ह्रीं अजितेदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्यावाहनं स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं अजित देव्यै--इदमर्घ्यं०

यस्यार्थं० क्रियते० शांतिधारा, पुष्पांजलिः

पराजितारे रपराजिताश्री रण्याश्रितस्यारिपराजयाय ।
जगत्प्रभो रत्रमहेमहामि पराजितेत्वा मपराजितेऽद्य ॥

ॐ ह्रीं अपराजिते देवि ! अत्रागच्छागच्छेत्यताह्वानं स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं अपराजितादेव्यै- इदमर्घ्यं० ।

यस्यार्थं० क्रियते० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

व्यामोहनिद्रां भुवनान्यजृम्भ-जम्भं विशन्त्युद्धरतो जिनस्य वितन्वतां यज्ञमजन्यहन्त्रीं त्वां देवि जम्भे परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं जम्भेदेवि ! अत्रावतरावतरेत्याह्वानम् स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं जम्भादेव्यै-इदमर्घ्यं० ।

यस्यार्थं०क्रियते० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ।

चिरं जगन्मोह विषेण सुप्तं
स्याद्वादमंत्रेण विबोधीयं तम् ।
श्री बुद्ध माराधयतां विमोहं
त्वा मोहयन्तीं महितां महामि ॥

ॐ ह्रीं मोहे देवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं मोहदेव्यै इदमर्घ्यं० ।

यस्यार्थं० क्रियते० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ।

जिनं महाभव्य विशुद्धभाव
प्रासाद सुस्तम्भ मुपास्तियस्त्यम् ।
प्रकुर्वतः स्तस्भयतां स्तभत्वं
स्तम्भे सृजन्तीं भवतीं यजामि ॥

ॐ ह्रीं स्तम्भे देवि ! अत्रागच्छागच्छेत्यावाहनं स्थापनं सन्निधिकरणं।

ॐ ह्रीं स्तभादेव्यै इदमर्घ्यम् ०।

यस्यार्थं० क्रियते०। शान्तिधारा। पुष्पांजलिः।

प्रवादिनां स्तम्भयतोऽत्रमान
प्रवादिनां स्तम्भेन दूरादपि मञ्जु मानम्।
जिनस्ययज्ञेऽच नमा सपन्ना
धिस्तम्भिनि स्तम्भिनि संस्तुवेत्वाम्।

ॐ ह्रीं स्तम्भिनि देवि ! अत्रागच्छागच्छेत्यावाहनम् स्थापनं सन्निधिकरणं।

ॐ ह्रीं स्तम्भिनि देव्यै इदमर्घ्यम्०।

यस्यार्थं० क्रियते०। शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

प्रहर्षिणी।

इत्येताः पृथुयशसोजयादिदेव्यो,
देवेशामभिरुचिता जिनेन्द्रयज्ञे।
सम्पूर्णाहुतिमिहलम्भिताः प्रपूज्य,
श्रेयांसि प्रददतु भव्य भक्तिकेभ्यः॥

ॐ ह्रीं जयाद्यष्टदेवीभ्य पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुष्टुप्।

प्राच्याद्याग्नेय कोणादि पत्रोष्विष्टाः क्रमादिमाः।
अष्टौ जयादि जम्भादि देव्योः शांतिं वितन्वताम्॥

इष्ट प्रार्थना।

अथ षोडशपत्रस्थापित विद्यादिदेवार्चनम् ।

(सोलह दलका कमल बनाकर उसमें विद्यादि देवियोंकी स्थापना करे)

उपजातिः ।

विद्याः प्रियाः षोडशकदृग्विशुद्धि
पुरोगमार्हन्त्यकृदर्थरागाः ।
यथायथं साधु निवेश्य विद्या-
देवीर्यजे दुर्जयदोश्चतुष्मः ॥

विद्याः संशब्दये युष्मा नायात स परिच्छयदा ।
अत्रोपविशतैता बो यजे प्रत्येकमादरात् ॥

आर्या ।

भगवति रोहिणी महति, प्रज्ञप्ते वज्रशृङ्खलेऽस्खलिते ।
वज्रांकुशे कुशलिके जाम्बूनदिकेऽस्तदुर्मतिके ॥
पुरुषधाम्नि पुरुषदत्ते, कालि कलाद्यकले महाकालि ।
गौरि वरदे गुणद्धे, गान्धारि ज्वालिनि ज्वलज्वाले ॥
मानवि देवि शिखण्डि-विखण्डिनि
वैरोरिशुक्रच्यतेऽच्युतिके ।
मानसि मनस्वि निरते यशसि
महामानसि दमुचि तव ॥

(आह्वाननादिपुरस्कारम्, प्रत्येकपूजा प्रतिज्ञानाय पत्रेषु पुष्पाक्षतान् क्षिपेत् ।)

विशोध्य यच्छ्रेष्ठगुणैः सरागो, दृष्टिं विरागश्च परा प्रचक्रे । सकुन्तशङ्खाब्जफलाम्बुजाद्याश्रिताच्र्यते रोहिणि रुक्मरक्ता ॥

ॐ ह्रीं रोहिणीदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं रोहिणी देव्यै—इदमर्घ्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

दृग्ज्ञानचारित्रतपः सुसूरि--पुरस्सरेष्वेव कृता--दरोयः । तद्भक्तिकान्तां स्वगतेऽतिनीलां प्रज्ञप्तिकेऽर्चा--मिसचक्र खड्गाम् ॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञप्तिदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्यावाहनम् स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं प्रज्ञप्तिदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥ २ ॥

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

व्रतानि शीलानि च जातु योऽन्तर्धृत्वां विनम्नो बहिरन्तरं वा । तद्भागिनीं वज्रविशृङ्खलास्वां पीतां च चाये पविशृङ्खलेऽस्मिन् ॥

ॐ ह्रीं वज्रशृङ्खले देवि ! अत्रागच्छागच्छेत्यावाहनम् स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं वज्रशृंखला देव्यै इदमर्घ्यं० ॥ ३ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिम् ।

ज्ञानोपयोगं विदधात्यभीक्ष्ण य स्तंभजन्तीं श्रित पुण्ययानाम् । वज्राङ्कुशे त्वां शृणिपाणिमुद्य-द्धोणारसां मंजु यजेऽञ्जनाभाम् ॥

ॐ ह्रीं वज्रांकुशेदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

ॐ ह्रीं वज्रांकुशदेव्यै इदमर्घ्यम् ॥ ४ ॥

यस्यार्थं० क्रियते० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

धर्मैरजोद्धर्म फले क्षणे च यो जन्मभीस्तस्यमखे शिखिस्था । जांबुनदामाधृत खङ्गकुतां जांबुनदे स्वीकुरु यज्ञ भागां ॥

ॐ ह्रीं जांबुनदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

ॐ ह्रीं जांबुनदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥ ५ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ।

शक्त्यर्थिनां बोधनसंयमाङ्गं यरत्यागमाधत्त-तमानमन्तीम् । कोकाश्रितां वज्रसरोजहस्तां यजे सितां पूरुषदत्तिकेत्वाम् ॥

ॐ ह्रीं पूरुषदत्तोदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

ॐ ह्रीं पूरुषदत्तदेव्यै-इदमर्घ्यम्० ॥ ६ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

तपांसिकष्टान्यनिगूढवीर्यो श्चरन् जगज्जैत्रमधश्च-

कार । यस्तं नतार्चांभज कालि ! भर्म-प्रभा मृगस्था मुसलासिहस्ता

ॐ ह्रीं कालिदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं कालीदेव्यै इदमर्घ्यं ॥ ७ ॥

यस्यार्थं० क्रियते० शांतिधारा पुष्पांजलिः ।

चक्रेऽधिकं साधुषु यः समाधि तं सेवमाना वृषभाधिरुढा । श्यामा धनुःखड्गफलास्त्रहस्ता बलिं महाकालि ! जुषस्वशान्त्यै ।

ॐ ह्रीं महाकाली देवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानं स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं महाकाली देव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ ८ ॥

यस्यार्थं० क्रियते० शातिधारा, पुष्पांजलिः ।

तपस्विनां संयमबोधवर्ज्यां प्रतिव्यधत्तात्मवदापदोयः । गोधागता हेमरुगब्जहस्ता गौरि ! प्रमोदस्व तदर्चनांशै ॥

ॐ ह्रीं गौरी देवि अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

ॐ ह्रीं गौरी देव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ ९ ॥

यस्यार्थं० क्रियते० शांतिधारा । पुष्पाञ्जलिः ।

तेने शिव श्रीसचिवाय योऽर्हद्भक्तिं स्थिरांक्षायिक दर्शनाय । चक्रासिमत्कूर्मणनील मूर्ते गृहाण गान्धारि ! तदंघ्रिगन्धम् ।

ॐ ह्रीं गान्धारीदेवि ! अत्रावतरावतरेत्याह्वानम् स्थापनं सन्नि०

ॐ ह्रीं गान्धारीदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥ १० ॥

यस्यार्थं० क्रियते० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ।

सत्सूरिभुक्ति पयिदेवतां यो, भेजे यजे ज्वालिनि ! तन्महेत्वाम् । शुभ्रां धनुः खेटकखड्गचक्रा–द्युग्नाष्टबाहुं महिषाधिरूढाम् ।

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनी देवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनी देव्यै इदमर्घ्यं० ॥११॥

यस्यार्थं० क्रियते० शान्तिधारा पुष्पांजलिः ।

शुद्धोपयोगैः सुफलश्रुतार्थं, यो भक्तिमभ्याज बहुश्रुतेषू । स्वं धिन्वितो मानवि ! कोकिकण्ठ नीला किटिस्था सझषत्रिशूला ॥

ॐ ह्रीं मानवीदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं मानवी देव्यै इदमर्घ्यं० ॥१२॥

यस्यार्थं० क्रियते० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

योऽस्पृष्टदृष्टेष्ट विरोधमर्हं दुपज्ञमभ्यागम भन्वरज्यत । त्वां सिंहगा मात्तसदर्पसर्पा यज्ञेऽस्य बैरोरि ! यजेऽभ्रनीलाम् ॥

ॐ ह्रीं बैरोरिदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं वैरारि देव्यै इदमर्घ्यं० ॥ १३ ॥

यस्यार्थं० क्रियते० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

हानिं नयेद्व्याधि वशोपसेव्यम् नावश्यकं यः समयाद्यपेक्ष्यम्। धौतासिहस्तांवयगेऽच्युते त्वां हेमप्रभां तं प्रणतां प्रणौमि ॥

ॐ ह्रीं अच्युतेदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्यावाह्नम् स्थापनं, सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं अच्युत देव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १४ ॥

यस्यार्थं० क्रियते शांतिधारा पुष्पांजलिः ।

मार्गं वृषे निश्चलयन् विनेयान् प्राभावयद्यः सुतप्रः श्रुताद्यैः ।

रक्ताहिगा तत्प्रणता प्रणाम-मुद्रान्विता मानसि ! मेऽसि मान्या ॥

ॐ ह्रीं मानसिदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्यावाह्नम् स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं मानसीदेव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १५ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

योधात् सधर्म्मं स्वति वत्सलत्व रक्तां महामानसि तत्प्रणामी ।

रक्तां महाहंस गतेक्ष सूत्रं वरांकुश स्रक्सहितां यजेत्वां ॥

ॐ ह्रीं महामानसिदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनम्, सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं महामानसिदेव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १६ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

सत्पूजा बलिदान लालितमनः स्फारस्फुरद्वत्सली-
भावावेशवशीकृताः कृतधिया मिष्टाश्च पूर्णाहुतिम् ॥
विद्यादेव्य इमां प्रतीच्छत जिनज्येष्ठ प्रतिष्ठाज्जसा-
निष्ठा मुख्यमनोरथान् फलवतः कर्तुं यतध्वं मम ॥

ॐ ह्रीं विद्यादि षोडशदेवताभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

शालिनी ।

एवं विद्यादेवता श्चन्दनाद्यै-
रोहिणाद्याः प्रीणिता मन्त्रयुक्तैः ।
विघ्नन्त्योऽर्हद्याग विघ्नावशेषान्
प्रीत्युत्कर्षं तज्जुषां पोषयन्तु ॥

इतीष्ट प्रार्थनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ चतुर्विंशति शासनदेवतार्चनम् ।

वसन्ततिलका ।

संभावयन्ति वृषभादि जिनानुपास्य,
तद्वामपार्श्व निहिता वरदीप्तयो याः ।
चक्रेश्वरीप्रभृतिशासनदेवतास्ता,
द्विर्द्वादशा दलमुखेषु यजे निवेश्य ॥

चतुर्विंशति शासनदेवतासमुदायपद्मपत्रेषु पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(चौवीस दलका कमल बनाकर उस पर चौवीस शासन-देवताओंकी स्थापना करे ।)

यक्ष्यः संशब्दये युष्मानायात सपरिच्छदाः ।
अत्रोप विशतैता वो यजे प्रत्येकमादरात् ॥

ॐ ह्रीं हे चतुर्विंशति जिनशासन देवताः । अत्रागच्छागच्छेत, तिष्ठ२ सन्निहितो भवत भवत ।

आह्वाननाद्यर्यं पुष्पांजलि क्षिपाणि ।

अथ प्रत्येक पूजा ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

भर्माभाद्यकरद्वयात्तकुलिशा चक्राङ्कहस्ताष्टका
सव्यासव्यशयोल्लसत्फलवरा यन्मूर्तिरास्तेऽम्बुजे ।
तार्क्ष्येवा सहचक्रयुग्म रुचकत्यागै श्रतुर्भिः करैः
पंचेष्वासशतोन्नतप्र[१]भुनतां चक्रेश्वरीं तां यजे ॥

ॐ ह्रीं अप्रतिचक्रेदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनम् । सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं अप्रतिचक्रदेव्यै–इदमर्घ्यं० जलम् गन्ध मक्षतं पुष्पं चरुं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यगमागं च यजामि० प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा ॥ १ ॥

स्वर्णद्युतिः शङ्खस्थाङ्कशस्त्रा, लोहासनस्थाभय–
दानहस्ता । देवं धनुःसार्धचतुःशतोच्च[२] वन्दारु रिष्टा
मम रोहिणीष्टे ॥

ॐ ह्रीं अजितेदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानम् स्थापनम् सन्निधिकरणम् ।

१-आदिनाथः, २-अजितनाथः ।

ॐ ह्रीं अजितदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥ २ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

पक्षिस्वाद्ध न्दु परशुफलासीढिवरैः सिता ।

चतुश्चाप शतोच्चा[१]ह द्भक्ताप्रज्ञप्ति विज्यते ॥

ॐ ह्रीं नम्रदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

ॐ ह्रीं नम्रदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥ ३ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

सनागपाशोरुफलाक्षसूत्रा, हंसाधिरुढा वरदानभक्ता ।

हेमप्रभार्धत्रिधनुःशतोच्च, ती[२]र्थेशनम्रापरिशृंखलाचर्या ॥

ॐ ह्रीं दुरतारिदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

ॐ ह्रीं दुरितारिदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥ ४ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

गजेन्द्रगावज्रफलाद्यचक्र वरांगहस्ता कनकोज्वलांगी ।

गृह्णातु दण्डत्रिशतोन्नता[३]ह न्नतार्चनां पौरुषदत्तिकार्या ॥

ॐ ह्रीं ससारिदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

ॐ ह्रीं संसारिदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥५॥

यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ।

सार्धद्विशतचापोच्च[४]भक्ता भर्मप्रभावेगा ।

मनोवेगा सफलक फल खड्गधरार्च्यते ॥

ॐ ह्रीं मोहिनीदेवो अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं मोहिनीदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥ ६ ॥

१-सम्भवनाथः, २-अभिनन्दननाथः, ३-सुमतिनाथः, ४-पद्मप्रभः

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

शिताङ्गीं वृषगां घण्टा फल शूल वराहताम् ।
भजे कालीं द्वि कोदण्ड शतोच्छाय जिना[1]श्रयाम् ॥

ॐ ह्रीं मानविदेवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानं, स्थापनं, सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं मानवीदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥ ७ ॥

यस्यार्थं० शान्तिधारा पुष्पांजलिः ।

चन्द्रोज्वलां चक्र शरासिपाश, चर्मत्रिशूलेषु
झषासि हस्ताम् श्री ज्वालिनीं साधंधनुः शतोच्च
जिना[2]नतां कोणगतां यजामि ॥

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनीदेवि ! गच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनीदेव्यै, इदमर्घ्यं० ॥ ८ ॥

यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पाञ्जलिः ।

कृष्णा कूर्मासना चाप, शतोन्नत जिना[3]नता ।
महाकाल ज्यते वज्र, फल मुद्गरदानयुक् ॥

ॐ ह्रीं भ्रुकुटिदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

ॐ ह्रीं भ्रुकुटिदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥ ९ ॥

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

आर्या ।

झषदानरुचकदानो, चितहस्तां कृष्णकोलगां हरिताम् ।
नवति धनस्तुंग जिन[4] प्रणता मिहमानवीं प्रयजे ॥

ॐ ह्रीं चामुण्डेदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनम् सन्निधि० ।

१–सुपार्श्वनाथः, २–चन्द्रप्रभः, ३–पुष्पदन्तः, ४–शीतलनाथः ।

ॐ ह्रीं चामुण्डादेव्यै-इदमर्घ्यं ॥ १०॥

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पाजलिः ।

समुग्दूराब्जकलशां, वरदां कनकप्रभाम् ।
गौरीं यजेऽशीतिधनुः, प्रां[1] सुदेवीं मृगोपगाम् ॥

ॐ ह्रीं गोमेधकेदेवी ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

ॐ ह्रीं गोमेधकेदेव्यै इदमर्घ्यं० ॥११॥

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

सपद्ममुसलाम्भोज, दाना मकरगा हरित् ।
गान्धारी सत्पतीष्वास, तुंग प्र[2]भुनताच्यते ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिनिदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्नि० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिनी देव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १२ ॥

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

षष्टिदण्डोच्च तीर्थेश[3], नता गोनशवाहना ।
ससर्प चापसर्प्येषु, वैरोही हरिताच्यते ॥

ॐ ह्रीं विद्यादेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं विद्यादेव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १३ ॥

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलि ।

हेमाभा हंसगा चाप, फल बाणवरोद्यता ।
पंचाशच्चाप तुंगार्हद्[4] क्तानन्तमतीज्यते ॥

ॐ ह्रीं विजृम्भिनिदेवी ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधि० ।

१-श्रेयोनाथः, २-वासुपूज्यः, ३-विमलनाथः, ४-अनन्तनाथः ।

ॐ ह्रीं विजृम्भिनीदेव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १४ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

आर्या ।

साम्बुजधनुदानांकुश, शरोत्वला व्याघ्रगा प्रवाल निभा।
नवपञ्चक चापोच्छित, जिन[1]नम्रा मानसीह मान्या मे ॥

ॐ ह्रीं परभृतेदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं परभृतादेव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १५ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

चक्रफलेषु वराङ्कित, करां महामानसीं सुवर्णाभाम् ।
शिखिगां चत्वारिंश, द्धनुरुन्नत जिन[2]नतां प्रयजे ॥

ॐ ह्रीं कन्दर्पेदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं कन्दर्पदेव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १६ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

सचक्रशङ्खासिवरां रुक्माभां कृष्णकोलगाम् ।
पंचत्रिंशद्धनुस्तुङ्ग, जिन[3]नम्रां यजे जयाम् ॥

ॐ ह्रीं गान्धारिदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं गांधारीदेव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १७ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

स्वर्णाभां हंसगां सर्प्यं, मृग वज्रवरोद्धराम् ।
चाये तारावतीं त्रिंश, चापोच्चप्रभु[4]भाक्तिकाम् ।

१-धर्म, २-शांतिनाथ, ३-कुन्थुनाथ, ४-अरनाथ ।

ॐ ह्रीं कालिदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं कालीदेव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १८ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

पंचविंशतिचापोच्च-देव[1]सेव्यापराजिता ।

शरमस्यार्च्यते खेट-फलासि वरयुग्हरित् ॥

ॐ ह्रीं अनजातदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं अनजातदेव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ १९ ॥

यस्यार्थं०, शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

पीतां विंशतिचापोच्च[2]-स्वामिकां बहुरूपिणीम् ।

यजे कृष्णाहिगां खेट-फलखड्गवरोत्तमाम् ॥

ॐ ह्रीं सुगन्धिनीदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं सुगन्धिनी देव्यै इदमर्घ्यं० ॥ २० ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

चामुण्डायष्टिखेटाक्ष-सूत्रखड्गोत्कटा हरित् ।

मकरस्थार्च्यते पंच-दशदण्डोन्नतेश[3]भाक् ॥

ॐ ह्रीं कुसुममालिनि देवि ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वानं स्थापनं सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं कुसुममालिनि देव्यै-इदमर्घ्यं० ॥ २१ ।

यस्यार्थं० शांतिधारा०, पुष्पांजलिः ।

१-मल्लिनाथ, २-मुनिसुव्रत, ३-नमिनाथ ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

सव्ये कद्र्युपगप्रियं करभकं प्रीत्यै करे बिभ्रतीं ।
दिव्याम्रस्तवकं शुभंकरकरे श्लिष्टान्यहस्तांगुलिम् ॥
सिंहेभर्तृचरे स्थितां हरितभा माम्रद्रुमच्छावगां-
वन्दारुं दशकार्मुकोच्छ्रयजिनं[1] देवी मिहाम्रां यजे ॥

ॐ ह्रीं कूष्माण्डिदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं कूष्माण्डिदेव्यै--इदमर्घ्यं० ॥ २२ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

येष्टा कुक्कुटसर्पगात्रफणकोत्तंसा द्विषामात्तषट्--
पाशादिः सदसत्कृते च घृतशङ्कास्यादिदोस्त्र्यष्टका ।
तां शांतामरुणां स्फूरच्छृणि तरोजन्माक्षमालावरां--
पद्मस्थां नवहस्तक प्रभुनतां याय़ज्मि पद्मावतीम्

ॐ ह्रीं पद्मावतीदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं पद्मावतीदेव्यै--इदमर्घ्यं० ॥ २३ ॥

यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ।

सिद्धायिकां सप्तकरोच्छ्रिताङ्ग, जिनाश्रयांपुस्तक दान हस्ताम् । श्रितां सुभद्रासन मंत्र यशो, हेमद्युतिं सिंहगतिं यजेऽहम् ॥

ॐ ह्रीं सिद्धायनिदेवि ! अत्रागच्छागच्छे० स्थापनं सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं सिद्धायनीदेव्यै--इदमर्घ्यं० ॥ २४ ॥

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ।

१-नेमिनाथम् ।

शार्दूलविक्रीडितं ।

इत्यावर्जितचेतसः समुचितैः सन्मान दानैः स्फुरत्-
स्यात्कारध्वजशासनद्विषदपक्षेपोच्छलच्छक्तयः ।
यक्ष्यः सङ्घनृपादिलोक त्रिपुदुच्छेदादिहार्हन्महे-
कुर्वाणाः सहकारितां सममिमां गृह्णीत पूर्णाहुतिम् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिशासनदेवताभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

अथ द्वात्रिंशच्छकाचनम् ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

तत्तादृक्सुतपःप्रभावविलसत्पुण्यानुभावोद्भव-
त्स्वाशैश्वर्यपराभिमानकरस तोतोऽवगाहोत्सवान् ।
हुत्वा यन्त्रपदे स्वमन्त्रविहीतासत्तीन्कराब्जोल्लस-
द्यज्ञाङ्गोङ्गणितद्युतीन् सुरपतीन् द्वात्रिंशतं संयजे ॥

शालिनी ।

त्रिभुवनपतियज्ञे व्यापृतानां व्यवायान्
खरमृदुकुदशां तु द्वेष मस्पृष्टततां च ।
प्रतिनियतनियोगे व्यक्तदुर्वारशक्तीन्
व्युपशमयितु मिन्द्रां नद्य सम्मानयामः ॥

इति पठित्वा द्वात्रिंशदिन्द्रसमुदायाय यन्त्रस्योपरि पुष्पाक्षतांजलि क्षिपेत् ।

इन्द्राः संशब्दये युष्मा- नातात सपरिच्छदा ।
अत्रोपविशतैतान्वा यजे प्रत्येकमादरात् ॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रसमूह ! अत्रागच्छागच्छ, तिष्ठ तिष्ठ सन्निहितो भव२ वषट् ।

अथ प्रतीक पूजा ।

कोणस्थ मग्न्यादि दिगुद्घसप्त--कोणाद्यनीकं दृढमुग्दरास्त्रम् । विश्वेश पादाम्बुज सच्च द्रव्यचूडामणि चारु यजे सुरेन्द्रम् ॥१॥

ॐ ह्रीं असुर कुमारेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

यस्यार्थं क्रियते० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

कूर्मश्रितं सप्तदिगाश्रितोरु--नागादिसैन्यं फणिपाश-पाणिम् । जिनांह्रिपुष्पाङ्क फणाङ्कमौलिं, नागेन्द्रनामेन्द्र मुदर्चयामि ॥२॥

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्रायार्घ्यं० यस्यार्थं० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

तार्क्ष्यादिकक्षाकुल सप्त दिवकं धौतासिदण्डं द्विरदाधि-रूढम् । यजे सुपर्णेन्द्र मपास्तमोहं जिनेन्द्र पादाप्तशिरः सुपर्णम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्रायार्घ्यं० यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ।

सप्त्यासनं सप्तगजादिसप्त-सप्तीष्टघट्टोत्कट सप्त कांष्टम् । द्वीपेन्द्र मर्हाम्यह मर्हं दंह्रि--नखेन्दुलक्ष्मीकृत--मौलिपीठम् ॥४॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्रायार्घ्यं । यस्यार्थं शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

जलेभपत्रो मकरादिचक्र--व्याकीर्णदिक्को वरदण्ड--

चण्डः इष्टो मदिष्टे रुद्धीश्वरोऽर्हत्--क्रमांशु रज्यन्म-
कराङ्कमूर्धा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्रायाघ्यं॰ यस्यार्थं॰ शांतिधारा पुष्पांजलि ।

सिंहाधिरूढं धृतधौतखड्गाद्यधिष्टं नृसुरैः
परीतम् । अर्हत्पदाघ्र्योकृत मौलिबज्रं सम्भावयामि
स्तनितामरेन्द्रम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्रायाघ्यं॰ यस्यार्थं क्रियते॰ शांतिधारा ।
पुष्पांजलिः ।

वराहवाहं करमादिदण्ड-चण्डं तडिद्दण्डकराल-
हस्तम् । छायाच्छलत्स्वस्तिकसत्कृतान्हंत--पादासनं
विद्युदिनं धिनोमि ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्राघ्यं निर्वपामीति स्वाहा । यस्यार्थं॰
शांतिधारा । पुष्पांजलिः ।

दिक्कुञ्जरस्थां परिघक्षतारिं मञ्जुप्रभाभासित
दिक्समूहम् । नतिक्षणार्हच्चरणाङ्कशङ्का कराङ्कसिंह
प्रयजे दिगिन्द्रम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्रायाघ्यं॰ यस्यार्थं॰ शांतिधारा ।
पुष्पांजलिः ।

स्तम्भाधिरोहं शिविकादिसैन्य-व्याप्ताशमुल्का-
युध मग्निमौलिम् । अग्निन्द्रमर्चामि जिनक्रमान्--
श्रीकुम्भलीलायित मौलिकुम्भम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्रायाघ्यं॰ यस्यार्थं॰ शांतिधारा
पुष्पांजलि ।

कुरङ्गयुग्मं नगहेतिमश्व–प्रष्ठामरानीकपरीतमूर्तिम् ।
चायेऽनिलेन्द्रं नतमस्तकाब्जच्छायै जिनाङ्घ्रिस्थल
मङ्कयन्तम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्रायार्घ्यं० यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ।

शार्दुलविक्रीडितम् ।

सैन्यैरस्वरथेभपत्तिकभवाग्नद्यादिभः कोणगैः
तार्क्ष्यैभाश्वरगण्डकोष्ट्रकरटि सम्प्राप्ययानार्वगैः ।
सप्ताप्राकृतसप्तक क्रमवतां चूडाश्म दर्व्वी खगेट्
दैत्याब्जस्वर वर्धमानकमृगेट्कुम्भाश्वमौलिध्वजाः ।१।

मालिनीच्छन्दः ।

असुरफणिसुपर्ण द्वीपवार्ध्यब्दविद्यु–
द्दिगनलपवनानां भावनानामधीशाः ।
दशविधपरिवर्गाः पङ्करत्नाढ्यधम्मा–
भरणभवनभाजामस्तु पूर्णाहुतिर्वः ॥

ॐ ह्रीं दशविधभवनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथाष्टविध व्यन्तरेन्द्रार्चनम् ।

इन्द्राः संशब्दये युष्मा नायात सपरिच्छदाः ।
अत्रोप विशतैतान्वो यजे प्रत्येक मादरात् ॥

ॐ ह्रीं अष्टविधव्यतरेन्द्रा ! अत्रावतर२, तिष्ठ२, सन्निहिताश्च भवत२ वषट् इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

उपजाति ।

अथेह सर्वज्ञपदारविन्द, द्विरेफ मभ्युद्यदरेफवेषम् ।
नागायुधं किन्नरशक्रमिष्टि, मष्टपदाधिष्ठित मर्पयामि ।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्रायाघ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ॥१॥

नेतुं स्वसंज्ञार्थमिवान्यथात्वं, शुश्रूषमाणं पुरुषोत्तमां घ्री ।
आलापये किंपुरुषेन्द्रमुद्य, ज्जयश्रियं सायकमुद्वहन्तम् ।

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्रायाघ्यं० ।

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ॥२॥

मुमुक्षुशार्दूलमदूरमुक्ति, श्रीप्रेयसीं प्रश्नयतः श्रयन्तम् ।
शार्दूलमारूढ मयाऽग्रपिष्ट, दुष्टं महामोह महोरगेन्द्रम् ॥

ॐ ह्रीं महोगेन्द्रयाघ्यं निर्वपामोति स्वाहा ।

यस्यार्थं० क्रियते० शान्तिधारा, पुष्पाञ्जलिः ॥३॥

गन्धर्ववृन्दारकगीयमान, शुभ्रोरुकीर्तिश्रितमर्हदीशम् ।
श्रीणामिगन्धर्वहरिं मराल, लीलागतिल्किष्टमगालपत्रम् ।

ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्रायाघ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥४॥

आरादवज्ञाननिधिव्रजार्हं, द्वक्रमारन्धशशङ्कसेव्रम् ।
यजामि यक्षेन्द्र मधिष्ठिताहि,
प्रष्ठं फणिश्लिष्टनिधिद्धदर्पम् ॥

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रायाघ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥५॥

इन्द्रवज्रा।

आत्मैकनिष्ठा क्षपिताक्षरक्षः, पक्षं परं पूरुषमाश्रिताय।
कुन्तोग्रहस्ताय हरिश्रिताय, रक्षोऽधिराजाय बलिंददामि।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्रायार्घ्यं०।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥६॥

उपजाति।

भूतेशिने भूतदयामयाय, भूतार्थनिष्ठाय मुहुर्नमन्तम्
भूतेन्द्रमाक्रान्ततुरङ्गराजं, बलिप्रदानेन सुखाकरोमि॥

ॐ ह्रीं भूतेन्द्रायार्घ्यं०।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥७॥

ध्येयं सतां मोह पिशाच शान्त्यै, शान्त्यै कनेतार मुपासितारम्। हेमाण्डकोड्डामरदण्डचण्डं, पिशाचशक्रं बलिना धिनोमि॥

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्रायार्घ्यं०

यस्यार्थं० शांतिधारा०, पुष्पांजलिः ॥८॥

आर्याच्छन्दः।

किन्नर किंपुरुषगरुड, गन्धर्वनिधिपनिशागभूत-पिशाचैः। प्रतिपन्नशासनानां, जिनशासन महिम, भावनव्यसनानाम्॥

स्रग्धराच्छन्दः।

द्वाभ्यां द्वाभ्यां प्रियाभ्यामपहृतमनसां द्विद्वि-
देवीसहस्र प्रेमार्द्रार्द्राक्षि भाजां पुरुनिकरततापाजनादि-

क्षितीनाम् । नित्योत्पादादि भौमव्रजविनयसृजां लोक-
रक्षैकदोष्णां पूणपित्योत्सवानां युत्रपतिभि रसा वस्तु
पूर्णाहुति र्वः ॥

ॐ ह्रीं अष्टविधव्यन्तरेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

अथ ज्योतिष्कदेवार्चनम् ।

इन्द्राः संशब्दये युष्मा, नायात सपरिच्छदाः ।
अत्रोपविशतैतान्वो, यजे प्रत्येकमादरात् ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवेन्द्राः अत्रावतर२, तिष्ठत२ सन्नि-
हिताश्च भवत२ ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

सार्हच्चैत्यगृहाङ्करम्यनगरोत्तानर्द्धिगोलाकृति-
प्रव्यासाङ्कमणीद्धुमण्डलकरव्रातामृतैः प्लावयन् ।
भूलोकं, हरिवाहनः परिवृतो भोडुग्रहोपग्रह-
व्रध्नैः कुन्तकरश्चरस्थिरविधूपेतोऽथ सोमोऽर्च्यते ॥

ॐ ह्रीं सोमेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यस्यार्थं० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ॥१॥

हित्वाधो दश योजनानि गगने ताराः सदैकाध्वगा-
मार्गैर्नित्यनवेश्वरन्निह करोत्यह्नां निशां यः स्थितिम् ।
तप्तस्वर्णभलोहिताख्यपुरभृद्बिम्बः ससूर्यश्चरै-

नृ[1]लोकैरपरैः स्थिरैश्च रविभिः सोऽत्राच्र्यतेऽर्चान् जिनम् ।

ॐ ह्रीं सूर्येन्द्रायार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

यस्यार्थं० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ॥२॥

विंशत्येकयुतानि योजनशतान्येकादशान्द्रीश्वरं[2]

मुक्त्वाक्ष्मामपितच्छतानि विदशान्यष्टौविमानानिखे ।

उच्चेऽतुच्छतया घनोदधिदशोपेतं ततान्याश्रितान्-

ज्योतिष्कानतनुगृह्णतोऽब्जरवयः पूर्णाहुतिश्चाप्यते ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवेभ्य पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

अथ द्वादशकल्पेन्द्रार्चनम् ।

इन्द्राः संशब्दये युष्मा नायात सपरिच्छदाः ।

अत्रोपविशतैतान्वो यजे प्रत्येकमादरात् ॥

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पेन्द्राः ! अत्रावतर२, तिष्ठत२ सन्निहि० भवत२ ।

मन्दाक्रांताछन्दः ।

एकत्रिंशद्युपटलमितेऽष्टादशे पाकनाम्नि-

श्रेणिबद्धे सततवसति पंचवर्णो विमानैः ।

तिस्रः श्रेणिर्वसुगुण चतुर्लक्षसंख्यैरवन्त

सौधर्म प्राक्सुरपति मिहार्चाम्यथैरविणस्थम् ॥

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

यस्यार्थं० क्रियते शांतिधारा पुष्पांजलिः ॥१॥

१-नृलोके भवैः नालांकिः-सार्धद्विद्वीपस्थितैरित्यर्थः, २-मेरुपर्वतम् ।

शालिनीछन्द ।

तद्वच्छ्रूणीबद्धमाप्योद्गेक-श्रेणीमष्टाविंशतिं पंचवर्णाः ।
लक्षं पाति स्वःपुरो यो जिनांघ्रि स्रक्चूलं तं यष्टु
मीशानमीशे ॥

ॐ ह्रीं ऐशानेन्द्रायार्घ्यं ।
यस्यार्थं० शान्तिधारा पुष्पांजलिः ॥२॥

वसन्ततिलकाच्छन्दः ।

सप्त स्वपाक पटलेषू समाह्यमन्त्ये
श्रेणीनिबद्धमधितिष्ठति षोडशं यः ।
त्रिश्रेणिगद्विदशकृष्ण विमानलक्षः
सोऽर्चा नमन् जिनमुपतु सनत्कुमारः ॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्रायार्घ्यं ।
यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ॥३।

उपजातिच्छन्दः ।

एकाष्टकृष्णोनविमानलक्ष-
श्रेणीशमर्हत्प्रभु माभजन्तम् ।
महामि माहेन्द्र मुद्ग्वसन्तं
दिव्यास्पदे शोडश एव तद्वत् ॥

ॐ ह्रीं महेन्द्रायार्घ्यं ।
यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ॥ ४ ॥

इन्द्रावज्रा ।

पाति स्थितोऽपाकपटले चतुर्थे
चतुर्दशं ब्रह्मपदं चतस्रः ।

यः कृष्ण नीलोन विमान लक्षाः
ब्रह्मेन्द्रमर्चामितमाप्तभक्तम् ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रायार्घ्यं ।
यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ॥५॥

शालिनी ।

द्वैतीयेके द्वादशं लान्तवाख्यं
श्रेणिबद्धं यः श्रितः प्राग्द्युचक्रे ।
लक्षार्धं प्राग्भानि भुङ्क्ते विमाना-
न्यर्हद्भक्तं तं भजे लान्तवेन्द्रम् ॥

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रायार्घ्यं ।
यस्यार्थं० शान्तिधारा पुष्पांजलिः ॥६॥

आर्या ।

शुक्रेन्द्रमेकपटलिक-चत्वारिंशत्सहस्रपीतसितद्याम् ।
दशम महाशुक्रोदक्—श्रणीबद्धास्पदं यजे जिनभक्तम् ॥

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्रायार्घ्यं ।
यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ॥७॥

उपजाति ।

पीतार्जुनैकेन्द्रकषट्सहस्र--विमानभुक्ति जिनपूजनोक्तम् ।
यजे शतारेन्द्रमिहाष्टमेन्द्रम्, स्थितं सहस्रार उदग्विमाने ।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्रायार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।
यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलि ॥८॥

शालिनी ।

सप्तश्चैतौकः शतं षट् पटल्यां,
षष्ठयां त्र्येकश्रेणिया ये पटल्याम् ।
षष्टे तिष्ठन्त्यास्पदे दक्षिणादक्--
श्रेण्योश्चाये तां श्चतुः कल्पशक्रान् ॥

इन्द्रवज्रा ।

तत्रानतेन्द्रं जिनवाग्रहस्य, संस्कारविद्रावितमोहतन्द्रम् ।
अप्यद्भुतैर्भोगिसुखैरलुप्त, श्रामण्यशर्मस्मृतिमर्चयामि ॥

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रायाघ्यं ।
यस्यार्थं० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ॥९॥

उपजातिः ।

स्वर्भोगवर्गप्रसितात्तवर्गोऽप्युदीच्यदेहाक्षसुखैः प्रसक्तः
अर्हत्प्रभान्व्यक्तविचित्रभावो, भजन्विमां प्राणतजिष्णु
रिज्याम् ॥

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रायाघ्यं० ।
यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलि ॥१०॥

स्थितोऽपि मौले वपुषि प्रदेशै,स्तनूमुदीची मनुसंदधानः ।
भजत्यनन्तर्हितवर्जितं य, स्तं भीगयाम्यर्हणयारणेन्द्रम् ।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रायाघ्यं० ।
यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिम् ॥११॥

कदाचिदप्यच्युतमच्युतेश, भक्त्येच्युतैदुश्चरितात्परीतम् ।
एकोनषष्टयप्रशतं विमाना, न्यधीशितारं प्रयजेऽच्युतद्रं

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रायार्घ्यं ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ॥१२॥

आर्यागीतिः ।

सौधर्मैशान सनत्कुमारमाहेन्द्र वासवब्रह्मेन्द्राः ।
लान्तव शुक्रशतारा नत शक्राः प्राणतारणाच्युतशक्राः ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

वालाग्रान्तरमेरुचूलिक पयोवागूभयोद्धर्वस्थदिक्-
श्रेणिबद्धविदिक्प्रकीर्णक परीवारेन्द्रक श्री जुषः ।
दिव्यज्ञानपरिच्छदाम्बरवपुः स्रग्भूतिभूषाङ्गनाः
कल्पेन्द्रा ! प्रददामि वोऽर्चितजिनाः ! यज्ञेऽत्रपूर्णाहुतिम् ॥

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रादि कल्पेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

स्रग्धरा ।

ये चत्वारिंश दिन्द्रै भवनदिविषदां व्यन्तराणां
द्वियुक्त-त्रिंशत्संख्यैर्धाम्नां त्रिगुणवसुमितैः सिंह-
सम्राट्शशिनिः । अप्यचर्यन्ते चतुर्भिः समवसृतिश्रितै
स्तन्मखारम्भमुख्या- दद्यां पूर्णाहुतिं वो भवनवनसुर
ज्योतिरूर्ध्वामरेन्द्राः ॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

वसन्ततिलका ।

इत्थं यथोचित विधि प्रतिपत्ति पूर्व-
यज्ञांशदानभृशदीपित पक्षपाताः ।
सर्वज्ञयज्ञपरिपूर्ति दृगीहितं मे-
मुख्यानुषङ्गिकफलैः प्रथयन्तु शक्राः ॥

इतीष्ट प्रार्थनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ दशदिक्पाल पूजा ।

स्रग्धरा ।

इन्द्राग्निश्राद्धदेवासुरपतिवरुणा वायुरैदेश नागेट्-
चन्द्रेशा दिक्षुवेद्या स्त्रिजगदधिपतेः प्राप्तरक्षाधिकाराः
तद्यज्ञेऽस्मिन्नवात्मप्रयतिविहरता मेत्यपल्यादियुक्ता-
विघ्नान्घ्नन्तोयथास्वं वितनुत समयोद्योतमौचित्यकृत्या

इति पठित्वा दशदिक्पालानामाह्वानाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ पृथक्पूजा ।

दिशीशाः शब्दये युष्मानायात सपरिच्छदाः ।
अत्रोपविशतेतान्वो यजे प्रत्येक मादरात् ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालः ! अत्रावतरत २ तिष्ठत२ सन्निहिताश्च भवत२ वषट् ।

इति त्रीन्वारान् पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

स्रग्धरा ।

रूप्याद्रिस्पर्धिघण्टायुग पटुकटु टंकार भग्नारि
शुम्भ--द्भूषासख्याति चित्रोज्वल कुथ विलसल्लक्ष्म
वर्ष्मद्विपस्थम् । दृप्यत्सामानकादि त्रिदशपरिवृतं
रुच्यशच्यादि देवी-लोलाक्षं वज्रभूषोद्भट सुभगरुचं
प्रागिहेन्द्रं यजेऽहम् ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्रायार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ॥१॥

रुक्मारुग् घुघुर स्त्रग्गल चटुल पृथुप्रोथभङ्गाभितुङ्ग--
च्छागस्थं रौद्र पिङ्गेक्षणयुग ममलब्रह्मसूत्रं शिखास्त्रम् ।
कुण्डीं वामप्रकोष्ठे दधत मितरपाण्यात्तपुष्पाक्षसूत्रं
स्वान्वीतं धिनोमि श्रुतिमुखरसभं प्राच्यपाश्वयन्त--
रेऽग्निम् ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्नयेऽर्घ्यं ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥२॥

कल्पान्ताब्दौधजेतृ त्रिगुणफणिगुणोद्ग्राहित ग्रैवघण्टा-
टंकारात्युग्र शृङ्गक्रमहतकुधर[1] व्रातरक्ताक्त संस्थम् ।
चण्डार्चिःकाण्डदण्डो डुमरकर मतिक्रूरदारादिलोकं-
काष्ठ्योद्रेकं नृशंशप्रथम मथ यमं दिश्यवाच्यां[2] यजामि ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं यमायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥३॥

आरूढं धूमधूम्रामत विकटसटास्ताग्रदग्भूक्षसूक्ष्मा-
लक्षाक्षारावशिष्टास्फुटरुदितकलापोद्रुमाभोगमृक्षम् ।
क्रूरक्रव्यात्परीतं तिमिरचयरूचं मुन्दरक्षुण्णरौद्र-
क्षुद्रौघं त्रातयाभ्या[3] परहरितमहं नैऋतं तर्पयामि ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋतायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥४॥

नित्याम्भःकेलिपाडूत्कटकपिलविसच्छेदसौन्दर्यदन्त--
प्रोत्फुल्लत्पद्मखेलत्करकरिमकरव्योमयानाधिरूढम् ।

१-पर्वतसमूह । २-दक्षिणदिशायाम् । ३-रक्षितनैऋत्यदिशं ।

प्रेङ्खन्मुक्ताप्रवालाभरणभर मुपस्थातृदारादताक्षं-
स्फूर्जद्भीमाहिपाशं वरुणमपरदिग्रक्षिणं प्रीणयामि ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुणायार्घ्यं० ।
यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ॥५॥

वल्गच्छृङ्गाग्रभिन्नाम्बुद पटलगलत्तोयपीतश्रमाम्भः-
प्लुत्यस्तम्भान्तरङ्गः खुरकषितकुलग्रावसारङ्गयुग्मम् ।
व्यालोलद्गात्रयन्त्रं त्रिजगदसुधृतिव्यग्रमुग्रद्रुमास्त्रं-
सर्वार्थानर्थसर्गप्रभु मनिलमुदक्प्राग्गतं प्रीणयामि ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं अनिलायार्घ्यं० ।
यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥६॥

हंसौधेनोह्यमानं पवनरिवृतत्केतुपंक्ति विमान-
स्वाहारूढः पुष्पकाख्यं क्रमसखरशना दामुक्ताकलापः ।
अग्राम्योद्दामवेषः सुललितधनदेव्यादिवक्त्राब्जभृङ्गः
शक्त्यामित्रारिममीं भजतु वलिमुग्भुक्तिधारः कुबेरः ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेरायार्घ्यं० ।
यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पाञ्जलिः ॥७॥

सास्नावाचाल किङ्किण्यनणुरणझणत्कारमञ्जीरशिञ्जा-
रम्योद्यच्छृङ्गहेला विहरदुरुशरच्चन्द्रशुभ्रपभस्थम् ।
भास्वद्भुषाभुजङ्गं भुजगसितजटाकेतुकार्धेन्दुचूलं
[1]दंभ्रं शूल कपालं सगनशिवमिहार्चामि पूर्वोत्तरेशम् ॥

१-धारकम् ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशानायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ॥८॥

वज्रौजस्तर्जिपृष्ठस्वसनसमतरः कूर्मराजाधिरूढं

क्षुद्रक्षीवेभकुम्भाक्रमणचणशृणिस्कारणव्यग्रपाणिं ।

संश्लिष्यद्दक्सहस्र द्वितय घृणिफणारत्नफक्लृप्रबाल-

व्रध्नौघापीठमर्हच्छ्रितमहिषमधोऽर्चामि पद्मासमेतम् ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेन्द्रायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥९॥

वैरिस्तम्बेरमास्त्रोल्लसदरुणसटाटोप शुभ्राङ्गभीकृत्-

वालेन्दुरुपर्द्धिदंष्ट्रोत्क्रमखरनखरारक्तदृक्सिंहसंस्थम् ।

कुन्तास्त्रं रोहिणीष्टं कुवलयसुमनःस्त्रक्श्रितांसं भयुक्तं-

ज्योत्स्नायीयूषवर्षं जिनयजनपरं सोममुर्ध्वं महामि ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

इत्यर्हन्मनसा ममायिकतयाह्वानादियोग्यक्रमै-

र्दिक्पालाः कृततुष्टया परिजनोत्कृष्टश्रियो भूरिभाः ।

दृष्टुं कामदमर्हदध्वरमरं दिक्चक्रमाक्रामतो-

भव्यान् संदधतः शुभैः सहभजन्त्वेतर्हिपूर्णाहुतिम् ॥

ॐ ह्रीं दिक्पालेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति दिक्पालार्चनम् ।

अथ चतुर्विंशतियक्षार्चनम् ।

नाभेयाद्यपसव्य पार्श्वविहितन्यासा स्तदाराधका·
अव्युत्पन्नदृशः सदैहिकफलप्राप्तीच्छयार्चन्ति यान् ।
आमन्त्र्य क्रमशो निवेश्य विधिवत्पत्रान्तरालेषू तान् ॥
कृत्वाराद्धुना धिनोमि वलिभिर्यन्तांश्चतुर्विंशतिम् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतियक्षाः ! अत्रावतरत२ तिष्ठत२ सन्निहिताश्च भवत भवेतेत्याह्वाननार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक पूजा ।

यक्षाः संशब्दये युष्मा नायातसपरिच्छदाः ।
अत्रोपविशतेतान्वो यजे प्रत्येकमादरात् ॥

इत्याह्वाननादि पुरस्करं, प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञानाय पत्रा तरालेषु पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।

वसन्ततिलका ।

सव्येतरोर्ध्वकर दीप्त परस्वधाक्ष-
सूत्रं तथाधरकराङ्कफलेष्टदानं ।
प्राग्गोमुखं वृषगं वृषाङ्क[1]-
भक्तं यजे कनकभं वृषचक्रशीर्षम् ॥

ॐ ह्रीं गोमुखयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ॥१॥

चक्र त्रिशूल कमलांकुश वामहस्तो-
निस्त्रिंशदण्डपरशूध्वैबराभयपाणिः ।

१-आदिनाथभक्तम् ।

चामीकरद्युति रिभाङ्क[1]नतो महादि--

यक्षोऽर्च्यते गजगतश्चतुराननोऽसौ ॥

ॐ ह्रीं महायक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० । शांतिधारा । पुष्पांजलिः ॥२॥

चक्राशिशृण्युपगसव्यशयोऽन्य हस्तै-

र्दण्डत्रिशूलमुपयन् सितकर्किकां च ।

बा[2]जिध्वजप्रभुनतः शिखिगोऽञ्जनाभ--

स्त्यक्षः प्रतीच्छतु बलिं त्रिमुखाख्य यक्षः ॥

ॐ ह्रीं त्रिमुखयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ॥३॥

उपजाति ।

प्रेङ्खद्धनत्खेटक वाम पाणिं

सकङ्क पत्रास्यपसव्यहस्तम् ।

श्यामं करिस्थं कपिकेतु[3] भक्तं

यक्षेश्वरं यक्षमिहार्चयामि ॥

ॐ ह्रीं यक्षेश्वर यक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० क्रियते० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥४॥

सर्पोपवीतं द्विसपन्नगोर्ध्व-

करं स्फुरद्दान फलान्यहस्तम् ।

कोकाङ्क[4] नम्रं गरूडारूढम्

श्री तुम्बरुं श्यामरुचिं यजामि ॥

१-अजितनतः, २-सम्भवनाथनजः, ३-अभिनन्दननाथभक्तम्, ४-सुमतिनाथनम्रम् ।

ॐ ह्रीं तुम्बरुयक्षायर्घ्यं०।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥५॥

मृगारुहं कुन्तवरापसव्य करं सखेटाभयसव्व हस्तम् ।
श्यामाङ्गमब्ज[1]ध्वजदेवसेवं, पुष्पाख्य यक्षं परितर्पयामि ।

ॐ ह्रीं पुष्पाख्ययक्षायार्घ्यं०

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥६॥

इन्द्रवज्रा ।

सिंहाधिरोहस्थ सदण्डशूल-
सव्यान्यपाणेः कुटिलाननस्य ।
कृष्णत्विषः स्व[2]स्तिककेतु भक्ते-
र्मातङ्गयक्षस्य करोमि पूजाम् ॥

ॐ ह्रीं मातङ्ग यक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।७।

उपजातिः ।

यजेरबाधित्युग्रफलाक्षमाला वरांकवामान्यकरं त्रिनेत्रम् ।
कपोतपत्र प्रभयाख्यया च, श्यामंकृ[3]तेन्दुध्वजदेवसेवम् ।

ॐ ह्रीं श्याम यक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं०, शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।८॥

सहाक्षमालावरदानशक्ति, फलापसव्यापरपाणियुग्मः ।
स्वारूढकूर्मोऽ[4]कांकभक्तो गृह्णातु पूजामजितः सिताभिः

१-पद्मप्रभदेवसेवम्, २-सुपार्श्वनाथभक्ते, ३-कृतचन्द्रप्रभ-देवसेवम्, ४-पुष्पदन्तभक्तः ।

ॐ ह्रीं अजितयक्षायाघ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।। ९ ।।

वसन्ततिलका ।

श्री[1] वृक्षकेतननतो धनुदण्डखेट-

वज्राढ्यभव्यशाय इन्दुसिताम्बुजस्थः ।

ब्रह्मासुरश्च धृतखड्गवरप्रदान-

व्यग्र न्यपाणिरुपयातु चतुर्मुखार्चाम् ।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म यक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।।१०।।

उपजातिः ।

त्रिशूलदण्डान्वितवामहस्तः,

करेऽक्षसूत्रं त्वपरे फलं च ।

विभ्रत्सितो ग[2]ण्डककेतुभक्तो,

लात्वीश्वरोऽर्चांवृषगस्त्रिनेत्रः ।।

ॐ ह्रीं ईश्वर यक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।।११।।

शुभ्रो धनुर्बभ्रुकलाढ्यसव्य, हस्तोऽन्यहस्तेषुगदेष्टदानः ।

लु[3]लायलक्ष्मप्रणतस्त्रिवक्त्रः प्रमोदतां हंसचरः कुमारः ।।

ॐ ह्रीं कुमार यक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।।१२।।

१-शीतलनाथवतः, २-श्रेयोनाथ भक्तः, ३—वासुपूज्यप्रणतः ।

वसन्ततिलका ।

यक्षो हरित्सपरशूगरिमाष्टपाणिः
कौक्षेयकाक्षमणि खेटकदण्डमुद्राः ।
बिभ्रच्चतुर्भिरपरैः शिखिगः किराङ्क[1]-
नम्रः प्रहृष्यतु यथार्थ चतुर्मुखाख्यः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुख यक्षार्घ्यं ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलि ॥१३।

पातालकः सशृनि शूलक जाप सव्य-
हस्तः कशाहल फलाङ्कितसभव्यपाणिः ।
सेधा[2]ध्वजैकशरणा मकराधिरुढो--
रक्तोऽर्च्यतां त्रिफणनागशिरास्त्रिवक्त्रः ।

ॐ ह्रीं पातालयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥१४॥

उपजातिः ।

सचक्रवज्रांकुश वाम पाणिः--
समुद्गराक्षालिवरान्यहस्तः ।
प्रवालवर्णस्त्रिमुखो झषस्थो--
वज्रा[3]ङ्कभक्तोऽञ्चतु किन्नरोऽर्घाम् ॥

ॐ ह्रीं किन्नरयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥१५॥

१-विमलनाथनम्रः, २-अनन्तनाथैकशरणः, ३-धर्मनाथभक्तः ।

उपजातिः ।

वक्राननोऽधस्तनहस्तपद्म, फलोऽन्यहस्नार्पितवज्र चक्रः । मृग[1]ध्वजार्हत्प्रणतः सपर्या, श्यामः किटिस्थो-गरुडोऽभ्य पैतु ।

ॐ ह्रीं गरूडयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ।।१६।।

सनागपाशोर्ध्वकरद्वयोऽध, करद्वयात्तेषुधनुः सुनीलः । गन्धर्वयक्षः स्त[2]भकेतुभक्तः पूजामुपैतुश्रितपत्त्रियानः ॥

ॐ ह्रीं गन्धर्वयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥१७॥

शार्दूलविक्रीडित ।

आरभ्योपरिमात् करेषु कलपन्वामेषु चापं पविं-
पाशंमुद्गदरमकुशं च वरदः षष्ठेन युञ्जन् परैः ।
बाणाम्भोजफलस्रगक्षपटलीलीलाविलासां स्त्रिदृक्-
षड्वक्त्रश्चझ[3]षाङ्कभक्तिरसितः खेन्द्रोऽर्च्यते शंखगः ॥

ॐ ह्रीं खेन्द्रयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥१८॥

पुष्पिताग्रा ।

सफलकधनुदण्डपद्मखड्ग, प्रहरसुपाशवरप्रदाष्टपाणिम् । गजगमनचतुर्मुखेन्द्रचाप, द्युति कलशा[4]ङ्कनतं यजे कुबेरं ।

ॐ ह्रीं कुबेरयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ।।१९।।

१–शांतिनाथप्रणतः, २–कुन्थुनाथभक्तः, ३–अरनाथभक्तः, ४–मल्लिनाथनतं,

इन्द्रवज्रा ।

जटाकिरीटोष्टमुखस्त्रिनेत्रो, वामान्यखेटासिफलेष्टदानः ।
कु१र्माङ्कनम्रो वरुणोवृषस्थ, श्वेतोमहाकाय उपैतु तृप्तिं ॥

ॐ ह्रीं वरुणयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ॥२०॥

उपजातिः ।

खेटासिकोदण्डशरांकुशाब्ज चक्रेष्टदानोल्लसिताष्टहस्तं ।
चतुर्मुख नन्दिग मु२त्पलांक भक्तंजपाभं भृकुटिं यजामि ।

ॐ ह्रीं भृकुटियक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० । शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ॥२१॥

इन्द्रवज्रा ।

श्याम स्त्रिवक्त्रोद्र घणं कुठारं, दण्डं फलं वज्रवरौ
च बिभ्रत् । गोमेद यक्षः श्रित३ शंखलक्ष्मा–पूजां नृवा-
होऽर्हतु पुष्पयानः ॥

ॐ ह्रीं गोमेद यक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा पुष्पांजलिः ॥२२॥

वसन्ततिलका ।

ऊर्ध्वं द्वि हस्तधृत वासुकि रुद्धटाधः–
सव्यान्य पाणि फणिपासवरः प्रणन्ता ।
श्रीना४गराजककुदं, धरणोऽभ्रनीलः
कूर्मश्रितोभजतु वासुकिमौलि रिज्याम् ॥

१–मुनिसुव्रतनम्र । २–नमिनाथ भक्तम्, ३–श्रितनेमिनाथः,
४–श्री पार्श्वनाथ प्रणन्ता ।

ॐ ह्रीं धरणेन्द्रयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥२३॥

उपजातिः ।

मुद्गप्रभो मूर्धनि धर्मचक्रं विभ्रत्फलं वामकरेऽथ यच्छन् ।
वरं करिस्थो ह[1]रिकेतुभक्तो मातङ्गयक्षोऽङ्गतुतुष्टिमिष्टया ।

ॐ ह्रीं मातङ्गयक्षायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥२४॥

स्रग्धरा ।

इत्थं योग्योपचारव्यतिकर परमोज्जागरानुग्रहाग्र-
व्यापाराः शश्वदर्हत्प्रभुसमयमहस्तायिनो यक्षमुख्याः ।
तद्भक्तोद्दर्षहर्षामृत जलधिनिरुच्छ्वासलीलावगाह-
प्रत्यूहापोह कृद्भयः सृजतु परमसौ पर्वपूर्णाहुतिर्वः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतियक्षेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा ।

इति चतुर्विंशतियक्षार्चनम् ।

अथ नवग्रहपूजनम् ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

रक्तस्तुल्य रुगम्बरादियुगिनः[2] श्वेतः शशी लोहितो-
भौमो हेमनिभौ बुधामगुरु गौरः सित[3] श्चासिताः ।
कोण[4]स्थात[5]नुकेतवो जिनमहे हुत्वेह पूर्वादितः-
शश्यूद्ध्वेंऽधिकुशो निवेश्य मुदमाप्यन्ते सवर्णार्चनैः ॥

१-वर्द्धमानभक्तः, २-सूर्यः, ३-शुक्रः, ४-शनि, ५-राहुः ।

पूर्वादि दिक्षु सवर्णाक्षतपुञ्जान् स्थापयित्वा तदुपरि सूर्यादीनां क्रमेण कुंकुमाद्याक्तदर्भासनानि विन्यसेत् ।

इतिदर्भन्यास ।

(पूर्वदिशासे हरएक दिशामें दिक्पालोंकी अनुक्रमसे उड़दसे स्थापना करके उस जगहपर कुंकुम डाले और उस पर दर्भ क्षेपण करे या दर्भका आसन रखे। इसीको दर्भन्यास कहते है।)

प्रारब्धाः फणियक्षभूतपतिभिर्देहार्तिवित्तक्षति-
स्थानभ्रंशरसाद्यसाम्यविपदां नाशाय संकल्पिताः ।
येष्विष्टेषु च तापसादिषु समं यान्त्याशयित्वार्चिते-
ष्वातन्वन्तु गुरुप्रसादवरदास्तेऽर्कादयो वः शिवम् ॥

अनुष्टुप् ।

कुमारदीक्षितेष्वेक तम मर्चयतांरुजः ।
कुजः कुष्माद्ग्रहाः शेषाः सवर्णेषु जिनेषु वः ॥

[आदित्यादीनां सपर्याविध्यनुवादमुखेन प्रभावस्थापनाय प्रतिदिशं पुष्पोदकाक्षतान् क्षिपेत् ।]

अथ प्रत्येक पूजा ।

ग्रहाः संशब्दये युष्मानायात सपरिच्छदाः ।
अत्रोप विशतैतान्वो यजे प्रत्येकमादरात् ॥

ॐ ह्रीं नवग्रहाः ! अत्रावतरत २ तिष्ठत २ सन्निहिताश्च भवत २ वषडितिपुष्पांजलि क्षिपेत् ।

स्रग्धरा ।

ऊर्ध्वे विस्तीर्णमंशान्वसुजलधिमितान् योजनस्यैकषष्टान्-
मुक्त्वाष्टैतच्छतावि क्षितिमनिलधृतं खे सहस्रैश्चतुर्भिः ।
पूर्वाद्याशानुपूर्व्या पृथगिभमृगयोक्षाश्वदेवैर्विमानं-
स्वारूढो नीयमानं दशशतशरदन्वीतपल्योत्तमायुः ॥
त्वं तुष्टया तापसेष्टया कमलकर हरिद्वाहनेतो ! ग्रहाणां-
नैवेद्यैः सानुगोऽर्केन्धनश्रुत परमान्नाद्य सर्पिर्गुडाद्यैः ।
गन्धैः पुष्पैः फलै श्रोत्तम घुसृण जपा पक्व नारङ्गपूर्वै-
स्तादृक्षै श्चाक्षताद्यै रिह हरिहरितिप्रीणितः प्रीणयास्मान् ॥

ॐ ह्रीं आदित्यग्रह ! अत्रागच्छागच्छ, तिष्ठ तिष्ठ, सन्निहिताश्च भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं आदित्यग्रह इदं अर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धमक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलम् बलि स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां२ स्वाहा ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥ १ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

तद्बिम्बादुरु बिम्ब मष्टमिरितो भागैश्चरद्योजना-
शीत्यार्धे न दिबाब्दलक्षयुत पल्यैकायु रग्नेर्दिशि ।
शितांशो ! शरलाज्यकिंशुकसमित्सिद्धान्त दुग्धादिभि-
स्त्वं कापालिक सत्क्रियाप्रिय इह प्रार्चां गृहाण प्रभोः ॥

ॐ ह्रीं सोमग्रह अत्रागच्छ २, तिष्ठ२ सन्निहितश्च भव भव वषट् ।

१-हस्ति, सिंह, वृषभ, हयाकारपरिणतैर्देवैः २-पूर्वस्थां दिशि ।

ॐ ह्रीं सोमग्रहायार्घ्यं ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥२॥

त्र्यूने विम्बमिताङ्क योजनशते क्रोशार्धमात्रं क्षिते-
र्बाह्यं द्वि द्वि सहस्र केशरिमुखो भिक्षाप्रियः शूलभृत् ।
पल्यार्धायु रपाकुजात्रखदिराभृष्टै गुडाद्योत्कटैः
संतुष्ठो यवशक्तुभि घृतयुतै दुर्गादिभि धूप्यसे ।

ॐ ह्रीं अङ्गारकग्रह ! अत्रागच्छागच्छ, तिष्ठ२, सन्निहिताश्च भव२ वषट् ।

ॐ ह्रीं अङ्गारकग्रहान्द्रायर्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा । पुष्पांजलिः ॥३॥

बिम्बं स्वां शशिनोऽष्टयोजनमतीत्योद्ध्वं व्रजद्भू[1]जवत्-
क्रोशार्धप्रमितं कुजथिति मितोवर्णादिमत्पुस्तकम् ।
बिभ्रत्वं विधुजोपवीत युगपामार्गेधसिद्धोदनं-
चीरं सर्जरसाज्यधूपमज[2]गो रक्षोदिशि स्वीकुरुः ।

ॐ ह्रीं बुधग्रह । आगच्छ२, तिष्टत२ सन्निहिताश्च भव २ वषट् ।

ॐ ह्रीं बुधग्रहायर्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ॥४॥

तच्चारा[3]द्रस योजनै रुपरिमात् तद्वद्विमानं मना-
गूनक्रोश मितः सपुस्तककमण्डल्ला[4]क्ष सूत्रोऽब्जगः ।
पल्यैकायुरिहोपवीतरुचरोरस्कः परिव्राडतः
प्रत्यक्पिप्पल पक्वपायस हवि धूपै गुरोऽभ्यर्च्यसे ॥

१-मङ्गलवत्, २-अजवाहनः, ३-षट्याजनै, ४-कमण्डल, इति कमण्डलुवाचको देशी, शब्दः ।

ॐ ह्रीं बृहस्पतिग्रह ! अत्रागच्छागच्छ, तिष्ठ२, सन्निहिताश्च भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं बृहस्पतिग्रहायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा । पुष्पांजलिः ॥५॥

सौम्यात्खेऽध्युषितं त्रियोजनमतिक्रान्तोऽश्रयानं तथा-
प्रेयं क्रोशततं त्रिशूलफणिभृत्याशाचसूत्रैः स्फुरन् ।
प्रीतः पाशुपतैः सवर्षशतपल्यायुः प्लवस्थोमरुत्-
काष्ठायां गुडफल्गुपाचितयवान्नज्यौः कवे ! पूज्यसे ॥

ॐ ह्रीं शुक्रमहाग्रह ! अत्रागच्छागच्छ, तिष्ठ तिष्ठ सन्निहितश्च भव२ वषट् ।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ॥६॥

क्रोशार्घं पृथु योजने स्त्रिभि रुपर्यभ्रे कु[1]जान्मण्डलं-
तद्वद्भ्रन्तृगतोर्द्ध्वपल्यपरमायुष्कस्त्रिसूत्रीयुतः- ।
नीतरतृप्तिमुदक्शमीन्धनश्रृतैर्माखस्तिलैरतण्डूलैः-
रालाज्यागुरुणेज्यसे श्रमणवद्[2]पाल[2]पूज्यः शने ! ॥

ॐ ह्रीं शनैश्वरमहाग्रह ! अत्रागच्छागच्छ, तिष्ठ२, सन्नि० भव २ वषट । ॐ ह्रीं शनैश्वर महाग्रहायर्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ॥७॥

त्यक्त्वारिस्ट दरोनयोजनमतः स्वं व्योमयानध्वज-
चत्वारि व्रजदंगुला न्याहराहः षष्टे च मासे विधोः ।
बिम्बं छादयिता तदंशुनिवहे राहो ! द्विजार्चामहे-
दुर्वापिष्टपयोघृताक्तजतुना धूपेन दिश्यर्च्यसे ॥

१—मङ्गलग्रहान्, २—कुबेरपूज्यः ।

ॐ ह्रीं राहुग्रहा ! अत्रागच्छागच्छ, तिष्ठ तिष्ठ, सन्निहितश्च भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं राहुग्रहायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शांतिधारा, पुष्पांजलिः ॥८॥

षष्ठे षष्ठ उपेत्य मासि तपनस्पन्दस्तमो बिम्बवद्-
बिम्बाद्बिम्ब मधश्चरन्मलिनयत्यशुद्रमै स्तद्बियत् ।
दर्शान्तेऽधिवसन्निहोर्ध्वदिशि तत्वेतो ! सकुल्माषकं-
स्फुर्जत्केतुसहस्रदेह सकूशं विल्बाज्य धूपं भज ॥

ॐ ह्रीं केतुग्रह ! अत्रागच्छागच्छ, तिष्ठ२ सन्निहितश्च भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं केतुग्रहायार्घ्यं० ।

यस्यार्थं० शान्तिधारा, पुष्पांजलिः ॥९॥

एते सप्तधनुः प्रमाण वपुरुत्सेधा नवापि ग्रहाः-
शश्वच्चद्रबलाबलाप्य सदसद्दान स्फुरद्बिक्रमाः ।
सत्कृत्योबहुता इमामिह महे पूर्णाहुतिं प्राभृत-
प्रीतिं व्यक्तय भक्तयाजक नृपादीष्टप दानाद्नुतम् ॥

ॐ ह्रीं नवग्रहदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्रवज्रा ।

धौतादिवर्णप्रमुखानुवर्णैः
कांचीदुकूलै मृदुलाभिरामैः ।
देवाङ्गनासोज्वल दीप्तिमद्भिः-
प्राच्छादयामो निखिलान् ग्रहांस्तान् ।

इति ग्रहाणामुपरि वस्त्राच्छादनं कुर्यात् ।

ॐ ह्रीं ह्रः फट् आदित्यमहाग्रह ! अमुकस्य शिवं कुरु २ स्वाहा । एवं सोमादिष्वपियोज्यम् ।

(ऐसे ही सोम आदि ग्रहोंका नाम उच्चारणकर मन्त्र पढ़ना चाहिये ।)

वसन्ततिलका ।

हुत्वा स्वमन्त्र चित्त मम्बुनि सप्तसप्त–
मुष्टिप्रमाण तिलशालियव प्रशांतिम् ।
नीता घृतप्लुतसमिद्भि रथाग्निकुण्डे
एकादशस्थ वदवन्तु सदा ग्रहाः वः ॥

इत्याशीर्वादः ।

अथैशान्यां दिशि–अनावृतार्चनम् ।

स्रग्धरा ।

जम्बूवृक्षस्य नाना मणिमय वपुषः प्राज्यजम्बूवृतस्या–
पाक्शाखा मावसन्तं नवजलदरुचं पक्षिराजाधिरूढम् ।
कुण्डीशङ्खाक्षमालारथचरणकरं, त्रातनिः शेषजम्बू–
द्वीपश्रीकं यजेऽस्मिन् विधुरविधुतयेऽनावृत व्यन्तरेन्द्रं ।

ॐ ह्रीं दशदिशाधिनाथं त्रैलोक्य दण्डनायकं जम्बूद्वीपाधिपतिं गरुडपृष्ठमारूढं स्निग्धभृङ्गाञ्जनाभ-मक्षस्रकमण्डलुव्यग्रहस्तं चतुर्भुजं शंखचक्रविधृत भुजादण्डं यक्षिणीसहितं सपरिजनं सपरिवार मनावृतदेव माह्वयामीतिस्वाहा ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अनावृतदेव ! अत्रागच्छागच्छ, तिष्ठ तिष्ठ, सन्निहितश्च भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अनावृतदेवाय जल गन्ध मित्यादिकमर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथानन्दनस्तवनम् ।

अनुष्टुप ।

जय देव प्रसिद्धेन स्वनाम्नाङ्गं पुनीहि मे ।
जय शुद्धनय स्वान्तं स्वभक्त्या मेऽनुरञ्जय ॥
जय दिव्याङ्ग गात्राणि, सद्दृष्टया मे कृतार्थय ।
जय तेजोनिधे स्वस्मिन् नेत्राब्जे मे विनिद्रय ॥
यद्दर्शन विशुद्धयादि-भावनादैव्रतं विभो ।
तपस्तप्त्वा जगज्ज्योति--स्तज्ज्योति स्ते न नश्यति ॥
या त्ववज्ञाहतौ पुण्य-स्तद्रागद्वारसंगतैः ।
त्वयि प्रयुज्यते कोपा-लक्ष्मी स्तानेव हन्ति सा ॥
साचेयं विभूतिस्ते, कापि या जगतां दृशः ।
लब्ध्या विशुद्धया तद्वृद्धया, स्वस्याहान्वयशुद्धताम् ॥
भुञ्जानोऽभ्युदय चार्हन्, जनै र्भोगीव लक्ष्यसे ।
बुधै र्योगीव तत्त्वंतु, जानाति त्वादृगेव ते ॥
निर्मलोन्मुद्रितान्त--शक्तिचेतपितृत्त्वतः ।
ज्ञान निःसीब शर्मात्म त्विदं प्रतिपतत्पदे ॥
नमस्ते परमब्रह्मन् नमस्ते परमाव्यय ।
नमस्ते परशान्ताय नमस्ते परमोदय ॥

नमस्तेऽनन्तविज्ञान नमस्ते ज्ञानमूर्तये ।
नमस्ते ज्ञानरूपाय नमस्ते ज्ञानगोचर ॥
नमस्ते निष्कलशम्भो नमस्ते त्रिजगत्पते ।
नमस्तेऽर्हत्सुदेवाय नमस्ते जिनपुङ्गव ॥
नमस्ते सिद्धबुद्धाय नमस्ते नाभिनन्दन ।
नमस्ते मोक्षलक्ष्मीश नमस्ते शिवदायक ॥
नमस्तेऽचिन्त्यचरित नमस्ते त्रिजगद्गुरो ।
नमस्ते त्रिजगन्नाथ नमस्तेऽन्त्यन्तनिःस्पृह ॥
नमस्ते केवलज्ञान नमस्ते केवलक्षण ।
नमस्ते परमानन्द नमस्तेऽनन्तविक्रम ॥
एवमानन्दतः स्तुत्वा शक्रः पूर्ववदादरात् ।
जन्माभिषेककल्याण--क्रियां कृत्वा स्फुटंनटेत् ॥
पश्चाद्भविनतिंकृत्वा चैत्यां पञ्चगुरुंस्तथा ।
साधुभक्तिभिराराध्य ध्यायेन्मत्रं यथाविधि ॥

अथ जन्माभिषेककल्याणकक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं चैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

'णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ॥'

इति मन्त्रस्य नववारान् जापं कुर्यात् ।
(नौ वार णमोकार मंत्रका जाप करे)

अढ़ाह दिवेत्यादि-ॐ नमः परमात्मने-थोस्सामीत्यादि सिद्धाः सिद्धिं मम दिशन्तु ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

भौम व्यन्तरमर्त्यभास्कर सुरश्रेणी विमानाश्रिता:
स्वर्ज्योतिः कुलपर्वतान्तरधरा रन्ध्रप्रबन्ध स्थितीः ।
वन्दे तत्पुरपालमौलि विलसद्रत्न प्रतीपार्चिताः
साम्राज्याय जिनेन्द्रसिद्धगणभृत्साध्याय साध्वाकृतीः ॥

मालिनी ।

समवशरणवासान्मुक्तिलक्ष्मी विलासान्
सकलसमयनाथान् वाक्यविद्यासनाथान् ।
भवनिगलविनाशोद्योग योगप्रकाशन्
निरुपमगुणभावान्स्तुवेऽहं क्रियावान् ॥

इति पंचमहागुरु भक्तिः क्रियते ।

आर्या ।

भवदुःखानलशान्ति, धर्मामृतवर्षजनितजनशान्तिः ।
शिवशर्माभवशान्तिः, शान्तिकरः स्ताज्जिनः शान्तिः ।

शांतिभक्तिः क्रियते ।

ॐ जिन पूजार्थं महाहूता देवाः सर्वे विहितमहामहाः स्वस्थानंगच्छतगच्छतेति विसर्जन मंत्रोच्चारणेन यागमण्डले पुष्पाञ्जलिं वितीर्य देवान् विसर्जयेत् ।

मालिनी ।

इह वहि रवतारप्रत्ययेनावबुद्धां—
मखविधिपरिपाद्यां भावशुद्धिं विधाय ।
वहि रिव रविबिम्बं ध्वान्तमध्यात्ममस्य—
स्फुरतु पुनरखण्डं तत्परं ब्रह्मनोद्यम् ॥

अनेन परब्रह्माध्यात्ममध्याक्षयेत् ।

इति देवता खंसर्जनम् ।

शार्दूलविक्रीडितम् ।

शश्वच्चेतयते यदुत्सवमयं ध्यायन्ति यद्योगिनो–
येनप्राणिति विश्वमिन्द्रनिकरा यस्मै नमस्कुर्वते ।
वैचित्रिजगतो यतोऽस्तिपद्वी यस्यान्तरं प्रत्यये–
मुक्तिर्यत्र भयस्तनोत् जगतां शांन्ति परंब्रह्मवत् ॥

इतिजिनचरणाग्रे शांतिधारांप्रकल्पयेत् ।

अर्घ्यं दद्यात् ।

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः, सिद्धेभ्यो नमः, सूरिभ्यो नमः, पाठकेभ्यो नमः, सर्वसाधुभ्यो नमः । अतीतानागतवर्तमानत्रिकालगोचरानन्तद्रव्यगुणपर्यायात्मकवस्तुपरिच्छेदकः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राद्यनेकगुणगणाधारपञ्चपरमेष्ठिभ्यो नमः । पुण्याहं ३ प्रीयन्ताम् ३। वृषभादिमहावीर पर्यन्त परमतीर्थङ्करदेवास्तत्समयपालिन्योऽप्रतिहतचक्रचक्रेश्वर प्रभृति चतुर्विंशतियक्षाः, आदित्य चन्द्रमङ्गलबुधबृहस्पति शुक्रशनिराहुकेतुप्रभृत्यष्टाशीतिग्रहाः, वासुकिशंखपालकर्कोटपद्म कुलिकानेत तक्षकमहापद्मजयविजयनागाः देवनागयक्षगन्धर्वब्रह्मराक्षसभूतव्यन्तरप्रभृतिभूताश्च सर्वेऽप्येते जिनशासनवत्सलाः, ऋष्यार्यिका श्रावकश्राविका यष्टृ याजकराज मंत्रिपुरोहितसामन्तारक्षकप्रभृतयः समस्त

लोक समूहस्य शांति बुद्धि पुष्टि तुष्टि क्षेम कल्याण स्वायरारोग्यप्रदाभवन्तु । सर्वसौख्यप्रदाः सन्तु । देशे राष्ट्रे पुरेषु च सर्वदैव चौरारिमारीतिदुर्भिक्ष विग्रह विघ्नौध दुष्ट ग्रह भूतशाकिनी प्रभृत्यशेषाण्यनिष्ठानि प्रलयं प्रयान्तु । राजा विजयो भवतु प्रजासौख्यं भवतु । राजप्रभृतिसमस्तलोकाः सततं जिनधर्मवत्सलाः, पूजा-दानव्रत शीलमहामहोत्सवप्रभृतिषूद्यता भवन्तु । चिर कालं नन्दन्तु । यत्र स्थिता भव्यप्राणिनः संसार--सागरं लीलयैवोत्तीर्यानुपमं सिद्धिसौख्यमन्तकाल मनुभवन्ति तच्चाशेष प्राणिगण शरणभूतं जिनशासनं सर्वसौख्यप्रदं भवत्विति स्वाहा ।

पृथिवी ।

अनेन विधिना यथाविभव मर्हतः स्थापनं,
विधाय मह मन्वहं सृजति यः शिवाशाधरः ।
स चक्रिहरि तीर्थकृत्पद कृताभिषेकः सुरैः,
समर्चितपदः सदा सुखसुधाम्बुधौ मज्जति ॥

इति पूजाफलम् ।

इति शान्त्यभिषेकः समाप्तः ।

संवत् १६३५ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे ५ तिथौ श्रीमूल संघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीशुभ्रचन्द्रस्ततपट्टे श्री सुमतिकीर्तिस्तत्पट्टे श्री गुणकीर्ति स्तस्य शिष्यो ब्रह्मचारिवस्तस्तल्लिखितमेतच्छान्तिचक्रव्रतविधा-नोद्यापनमेतत्—

समाप्तम् ।

पूजन व व्रतोद्यापनके लिये हस्तलिखित पक्के रंगीन मांडने

मोटे कपड़ेपर इस प्रकार तैयार है। इसके हम सोल एजन्ट हैं। साइज ४॥×४॥ फीट।

पंचकल्याणक	३५०)	तीस चौबीसी	३५०)
समोशरण	३५०)	तेरहद्वीप	३६०)
इन्द्रध्वज	३६०)	ढाईद्वीप	३६०)
वर्तमान चौबीसी	३५०)	नन्दीश्वर	३५०)
जम्बूद्वीप	३६०)	कर्मदहन	३५०)
चौसठऋद्धि	३६०)	दशलक्षण	३५०)
नवग्रह	३५०)	पंचपरमेष्ठी	३५०)
सोलहकारण	३५०)	रत्नत्रय	३५०)
सुदर्शनमेरु वि.	३६०)	तीन चौबीसी	३५०)
पंचमेरु	३५०)	भक्तामर	३५०)
सिद्धचक्र	३६०)	ऋषिमंडल	३६०)
सहस्त्रनाम	३६०)	शांति विधान	३५०)
वीस विहरमान	३६०)	तीनलोकविधान २॥×२गजका	१५००)
णमोकार मंत्र विधान	३६०)		

सभी मांडने रंगीन व पक्के रंगके हैं मंदिरोंमें कायम रखनेको अवश्य मंगाईये। मांडने मंगवानेवाले २००) एडवांस भेजें एडवांस आने पर ही मांडना भेजा जायगा।

.. कष्ट निव।

... विद्यानुवाद :-

...ये गये है, इसके अलावा ४८ रं...त

...१६ विद्यादेबियोंके चित्र भी ... म...संदर्भग्रंथ आचार्य गणधर

...ये गये है ...के अलावा ४८ रंगीन ...जयमती माताजी द्वारा

अनेक कष्ट निवारण ... मंत्र साधना करनेके आस्त्रव

दिये गये है, इसके अलावा ४८ रं...त बताया गया है। ग्रंथमें

...१६ विद्यादेबियोंके चित्र भी ..., मन्त्र व तंत्र चित्रों सहित

दिये गये है, इसके अलावा ४८ रंगीन कलरमें यक्ष यक्षणियोंके व १६ विद्यादेबियोंके चित्र भी दिये है। मूल्य ३००) रुपये।